॥ श्रीः ॥

भक्तमाल सटीक.

(श्रीनाभादासजीकृत.)

जिसमें

रामानन्द, कबीरदास, नामदेव, सूरदास, ध्रुव, मीराबाई, रैदास, सुल्तानबादशाह, सधनकसाई, इत्यादि भगवद्भक्त महात्माओंकीकथा वर्णित हैं।

और

परमभक्त श्रीमहाराज प्रियादासजीने टीकामें अनेक ग्रंथोंके श्लोकादिकोंसे दृष्टान्त दिये हैं।

जिसको

भगवद्भक्तोंके उपकारार्थ

खेमराज श्रीकृष्णदासने

मुम्बई

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" यन्त्रालयमें

छापकर प्रसिद्ध किया।

संवत् १९५७, शके १८२२.

॥ श्रीः ॥

" श्रीवेङ्कटेश्वर " छापाखानेकी परमोपयोगी

स्वच्छ शुद्ध और सस्ती पुस्तकें।

श्रीः ।

भक्तमाल सटीककी-
अनुक्रमणिका ।

इति श्रीभक्तमालसटीककी अनुक्रमणिका समाप्ता

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ भक्तमाल सटीक.

टीकाकारका मङ्गलाचरण ।

श्रीमन्निम्बाचार्य्याय नमः ॥ तहा अर्थ भक्तमाल में लिख्यो है (भक्त भक्ति भगवन्त गुरु) चार रूप लिखे हैं तहा हरिको स्वरूप नहीं लिख्यो-जाय तापै राजा को चित्रकारको दृष्टांत ॥ दोहा ॥ लिखन बैठि जाकी छबी, गहि गहि गवगरूर ॥ भये न केते जगत के, चतुर चितेरे कूर ॥ १ ॥ चित्र चितेरो जो लिखै, रचि पचि मूरतिबाल ॥ वह चितवनि वह मुरि चलनि कैसे लिखै जमाल ॥ २ ॥ दृग पुतरीलौं श्याम वह, लिख्यो कौन पै जाय ॥ जग उजियारी श्यामता, देखो जीय लगाय ॥ ३ ॥ कोटि भानु जो ऊगवै, तऊ उजास न होय ॥ तनक श्यामकी श्यामता, जो दृगलगी न होय ॥ ४ ॥ मोहन जग व्यवहार तजि, वणिज करो यहि हाट । पीव पदारथ पाइये, जिय कौड़ी के साट ॥ ५ ॥ छबि निरखत अति थकित है, दृग पुतरी ब्रज बाम ॥ फिरन उठी बैठी चुहट, कियो गौर तनु श्याम ॥ ६ ॥ पद ॥ मैया दाऊजी मोहिं बहुत खिझायो । मोसों कहत मोल को लीयो तू यशुदा नहिं जायो ॥ नन्दहु गोरो यशुदहु गोरी तू कित श्याम शरीर । तारी दै दै ग्वाल नचावैं सिखवत हैं बलबीर ॥ सिखवत दे बलबीर चवाई मिथ्यावादी धूत ॥ सूरदास मोहिं गोधनकी सौं मैं जननी तू पूत ॥ ७ ॥ संमोहनी तंत्रे ॥ फुल्ले न्दीवरकांतिमिन्दुवदनंबर्हावतंसप्रियं श्रीवत्सांकमुदारकौस्तुभधरं पीताम्बरं सुन्दरम् । गोपीनांनयनोत्पलार्चिततनुं गोगोपसंघावृतं गोविन्दंकलवेणुवादनपरं दिव्यांगभूषंभजे ॥ ८ ॥ दोहा ॥ प्रेम चितेरे की सुमति, कापैवरणीजाय ॥ मोहन मूरति श्यामकी, हियपट लिखी बनाय ॥ ९ ॥ तीक्षण बहनी बाण सों बेध्यो हियो दुसार ॥ जालरंध्र कीन्हों मनो, प्रेमीघट अँधियार ॥ १० ॥ लिखि स्वरूप चित को दियो, लियो हिये सों लाइ ॥ चित्रकार पर वारितनु

रह्यो पाँइलपटाइ ॥ ११ ॥ कवित्त ॥ श्यामता उज्यारी मुख मुरली अधरधारी रूपमतवारी आँखैं रूपतकि रही है । केश खैंचि बांध्यो जूड़ा वेसमनमांझ चूड़ा प्रेमछबि पूरा द्युति चन्द्रिका सुबही है ॥ अलकैं कपोलनिपै छुटिआईं पुटमानों घटलेत हिये कछु वैसियेबहीहीहै।।श्रीगोविन्दचन्द जूको चित्र लिखि चित्र दियो बढ़ेई विचित्रनिकी मति अति गही है ॥ १ ॥ पद ॥ नमो नमो श्रीभक्ति सुमाल । जाके सुनत महा तम नाशत उर झलकत राधा नँदलाल । गद्गद सुर पुलकत अँग अंगन लोचन वरषत अँशुवनजाल । उतरिजात अभिमान व्यालविष लेत जिवाइ सुरसतिहि काल॥ २॥होत प्रीति हरिभक्त जननसों लेत शीत हठि चरण प्रछाल। तजत कुसंग लेत सतसंगति भाग जगत कोउ अद्भुतभाल । निशि बासर सोवत अरु जागत रोम रोमह्वै करत निहाल । श्री अग्रनारायण दासप्रिया प्रिय प्रगटी जीवनि रसिक रसाल ॥ ३ ॥ हरिको स्वरूप प्रेम रूपी चित्रकार सों लिख्यो जाय और सों नहीं महाप्रभु विशेष काहेते जीव हरिसों विमुख सन्मुख आवै जाय प्राप्तहोइ॥ १ ॥गीतायाम् ॥दैवीह्येषागुणमयीममभायादुरत्यथा ॥ मामेवयेप्रपद्यंते मायामेतांतरंतिते ॥ २ ॥ चैतन्यभागवते ॥ एतेचांशकलाःपुंसःकृष्णस्तुभगवान्स्वयम् ॥ इन्द्रारिव्याकुलंलोकं मृड़यंति युगेयुगे ॥ ४ ॥ मनहरन अक्षर सो कामधेनुहै ॥ राधाचरणदीपिकायां ॥ दृष्टः क्वापिचकेशवोब्रजवधूमादायकांचिद्गतः सर्वाएवविमोचिताःसखिवयं सोन्वेषणीयोयदि ॥ द्वौद्वौगच्छतमित्युदीर्यसहसाराधांगृहीत्वाकरे गोपीवेषधरोनिकुंजभवनंप्राप्तोहरिःपातुवः ॥ ३ ॥ सखीकोउदाहरण ॥ कवित्त ॥ आजु मनमोहनसों मोसों ऐसी होड़ परी और इन आलिनसों कहाधौं विशेषिये । दर्पण निहारि कान्ह कही मेरे बडे नैन हांकही इनहुँ तब बोलीहोंहु तेषिये ॥ दीरघ ढरारे दृग मेरी राधा कुँवरिके हैं केसो करि जानों चलौ ढिगलाइ पेखिये । आये हैं हरावो इन्हैं अहो येहो वलिगई एकबार आंखिन सों आँखै माहिं देखिये॥ ४ ॥जैसीनित

रहतिहै तैसी अँखियांहैं मेरी इनकी अनैसी अरुनई भये तेषिये । चित्तजे चढी हैं प्यारी दीसत न उजियारी ताहीके बल अहोमोहिं अवरेषिये होंहू जानति हौं दोऊ सम कैस ह्वैहैं द्वैते चारि किये प्रेमसों विशेषिये जित घट ह्वैहै तित जोर है सुजान कान्ह कैसे ऐसी आँखिनसों आंखैं माहिं देखिये ॥ ५॥ मीनसम थरथरात उघरत दुरतछुपात बामन मनहरिबेतैं निश्चयकैहेरेहैं। नेकु न निहारै हिय फारे बाराहसम अरिबेतैं परशुराम फिरत न फेरे हैं ॥ तीक्ष्ण नृसिंह नख बोधक अबोलिबेतैं तारिबेतैं राघव गुलाब चित्तनेरे हैं । मोहिबेते मोहन अकलंकविन निहकलंक दशौ अवतार किधौं प्यारी नैन तेरे हैं ॥ १ ॥ वृन्दावन मनहरनपै ॥ श्लोक ॥ कृष्णोन्यायदिसंभूतो यस्तुगोपेन्द्रनंदनम् । वृंदावनंपरित्यज्य पादमेकंनगच्छति ॥ २ ॥ बर्हापीडंनटवरवपुः कर्णयोःकर्णिकारं बिभ्रद्वासःकनककपिशंवैजयंतींचमालाम् ॥ रंध्रान्वेणोरधरसुधयापूरयन्गोपवृंदैर्वृन्दारण्यं स्वपदरमणंप्राविशद्गीतकीर्तिः ॥ ३ ॥ व्रजबासी मनहरणपै॥भागवते ॥ अहोभाग्यमहोभाग्यं नन्दगोपव्रजौकसाम् ॥ यन्मित्रंपरमानंदं पूर्णब्रह्मसनातनम् ॥ ४ ॥ साधमनहरणपै ॥ भागवते ॥ निरपेक्षं मुनिं शांतं निर्वैरंसमदर्शनम् ॥ अनुव्रजन्तिये नित्त्यं ते पूयंत्यंघ्रिरेणुभिः ॥ ५ ॥

आज्ञानरूपनकवित्त ॥ महाप्रभुकृष्णचैतन्यमनहरणजूके चरण को ध्यान मेरे नाम मुखगाइये । ताही समय नाभा जीने आज्ञादई लई धारि टीका विस्तारि भक्तमालकी सुनाइये ॥ कीजिये कवित्त बंद छंद अतिप्यारो लगै जगै जगमाहिं कहि वाणी बिरमाइये।जानों निजमति येपै सुनो भागवतशुकद्रुमनप्रवेशकियोऐसेईकहांइये॥१॥

टीका को नाम स्वरूप वर्णन ।

भगवाननेकह्योहै मैं भक्तनको ऋणियांहौं याते इनकी चरण रेणुमैं शिरपरधारोंहौं क्योंकि मेरो अपराध मिटै ॥ ६ ॥ गीतायाम् ॥ येयथामांप्रपद्यन्ते तांस्तथैवभजाम्यहम् ॥ येदारागारपुत्राप्तान् ॥ ७ ॥ सो कही पै

बनीनहीं क्योंकि इन्होंने घर बार पति पुत्रादि कुल धर्म सब छोडे अरु मोते कछू न छूट्यो याते हौं इनको ऋणियांहौं याते विचारो इनहीं की चरण रेणु शिरपरधारों तब मेरो अपराध मिटैगो सो याते धारोहौं ॥ ८ ॥ ध्यान-मेरे नाममुख गाइये ॥ ९ ॥ तहां दोऊ कैसे बनैं ॥ श्लोक ॥ इंद्रियाणां लयोध्यानम् ॥ तापैदृष्टांतसिद्धके द्वैरूप इन्द्रिनको ॥ १० ॥ ताही समय ॥ ॥ दोहा ॥ पायलपायँलगीरहैं, लगे अमोलक लाल ॥ भोडरहूकी भासि है, बैंदी भामिनि भाल ॥ १ ॥ सुनाइये ॥ सनत्कुमारवाक्ये ॥ सर्वाप-राधकृदपि मुच्यतेहरिसंश्रयः ॥ हरेरप्यपराधान्यः कुर्याद्द्विपदपांसलः ॥ २ ॥ आगमे ॥ यानैर्वापादुकाभिर्वागमनंभगवद्गृहे ॥ देवोत्सवाद्यसेवाच अन्य नामतदग्रतः ॥ ३ ॥ उच्छिष्टेवाप्यशौचेवा भगवच्चन्दनादिकम् ॥ एक-हस्तप्रणामश्च ॥ तत्पुरश्चाप्रदक्षिणम् ॥ ४ ॥ पादप्रसारणंचाग्रे तथापर्यंकब-धनम् ॥ शयनंभक्षणंचापिमिथ्याभाषणमेवच ॥ ५ ॥ उच्चैर्भाषामिथोजल्पो रोदनानिचविग्रहः ॥ निग्रहानुग्रहौचैव नृषुचक्रूरभाषणम् ॥ ६ ॥ कंब-लावरणंचैव परनिंदापरस्तुतिः ॥ अश्लीलभाषणंचैवअधोवायोर्विमोक्षणम् ॥ ७ ॥ शक्तौ गौणोपचारश्च अनिवेदितभक्षणम् ॥ तत्तत्कालोद्भवानांचफ लादीनामतप्पर्णम् ॥ ८ ॥ विनियुक्तावशिष्टस्य प्रदानंव्यजनादिकम् ॥ पृष्ठीकृत्वासनंचैव परेषामभिवादनम् ॥ ९ ॥ गुरौमौनंनिजस्तोत्रं देवता निंदनं तथा ।। अपराधास्तथाविष्णोर्द्वात्रिंशत्परिकीर्तिताः ।। १० ।। नामा श्रयः कदाचित्स्यात्तरत्येवसनामतः ।। नाम्नोपिसर्वसुहृदोह्यपराधात्पत त्यधः ।। ११ ।। नाभाछप्पय ॥ गुरुअवज्ञाकरै साधु निंदाविस्तारै । शि-वकी निंदाकरै ब्रह्ममें भेद विचारै ।। नाम बल कारि अपराध नाम परता-प न जानै । वेदनिशास्त्रउलंघि आप मनको मतठानै ।। बिनश्रद्धा उपदेश और ठगि आयो पोषै । निजइंद्रिनके हेत चेत परि पिण्डह सोषै । ये दश अपराध तजिदेहते साधु संगति सेरलि मिलै । तत्त्ववेत्ता तिहुँ लोकमें राम-नाम तोको फलै ।। १२ ।। गीतायाम् ॥ मूकंकरोतिवाचालं पंगुंलंघयते

गिरिम् ॥ यत्कृपातमहंवंदे परमानंदमाधवम् ॥ १ ॥ कहाइयेपै ॥ दोहा॥ संत कृपा रवि उदयते, मिटै तिमिर अज्ञान ॥ हृदय सरोवर विमलह्वै फूलेहित बुधज्ञान ॥ २ ॥ श्रीभागवतकी सुबुधि, कही कीरकलगान ॥ भक्त माल अभिप्राय जो, जानैं संत सुजान ॥ ३ ॥

रचिकविताईसुखदाईलगैनिपटसुहाई औसचाईपुनरुक्तिलैमिटाई है। अक्षरमधुरताईअनुप्रासजमकाईअतिछबिछाईमोदझरीसीलगाई है। काव्यकीबड़ाईनिजमुखनभलाईहोतिनाभाजूकहाई यातेप्रौढ़कै सुनाईहै। हृदयसरसाई जोपैसुनियेसदाईयह भक्तिरसबोधिनीसोना मटीकागाईहै ॥

रचिकविताईपै ॥ श्लोक ॥ तद्ब्रह्ममातृवधपातकमन्मथारिक्षत्रांतकारि करसंगमपापभीत्या । ऐशंधनुर्निजपुरश्चरणायनूनंदेहंमुमोचरघुनंदनपाणितीर्थे ॥ ४ ॥ दोहा ॥ पियलखि सियकी माधुरी, तृणतोरनके चाइ ॥ भोरैं धनु ष उठाइकै, तोरयो सहज सुभाइ ॥ ५ ॥ श्लोक ॥ कमठपृष्ठकठोरमिदंधनु र्मधुरमूर्तिरसौरघुनंदनः ॥ कथमधिज्यमनेनविधीयतामहहतातपणस्तवदा रुणः ॥ ६ ॥ रचिवोनामरंगकोहै कविताकोकहारंगिबोचीज काढ़िलैबो यही कविताको रँगिबोहै ॥ ७ ॥ सुखदाई सुहाई पुनरुक्ति भई नाहीं सो कविता तीनि प्रकारकी शब्दचित्र अर्थचित्र शब्दार्थचित्र ॥ सवैया ॥ हटके नरहैं भटके पलओट भटू मेरे नैनानि मों बसिके। अटके उतही सटके मनलै-नटकेसे बटा टटकेरसके ॥ लटकेलट छोरनि सों लटके षटके नकटाक्षनके कसके। मटके न घटा छबिके झलकैं न लगे इन चाहनके चसके॥ ८ ॥ पीसौं झुकी रसना विन काज लखे गुणनाम समान तिहारे । नयनचले अति रूखेरहे तुम ताहीते नैन ये नाम धरारे ॥ संत विरुद्ध बक्यो अतिही जियते दुख नेकु टरै नहिं टारे। पाइ सुलक्षण राग अरे करकाहे को नंदलला झिझकारे ॥ १ ॥ दृगहौ तुम दाई अदाई बडे अरु घूंघट माहिं रहे फँसिकै ॥ रसना रस जानति तू न कछू मुख बैन कहेनहिं तै हँसिकै ॥

वर्गौमद्धाम कथंविद्यतिवांछति ॥ ३ ॥ तापैदृष्टांतरांकाबांकाको ॥ ॥ आगमे ॥ आदौश्रद्धाततः साधुसंगाथ भजनक्रिया ॥ ततोनर्थनिवृत्तिश्च ततोनिष्ठारुचिस्ततः ॥ ३ ॥ अथासक्तिस्तथाभावस्ततः प्रेमाभ्युदंचति ॥ साधकानामिदं प्रेम प्रादुर्भावोभवेत्क्रमात् ॥ ४ ॥ मैलअभिमान ॥ जातिर्विद्याग्रहत्वं च रूपयौवनमेवच ॥ यत्नेनपरितस्त्याज्याः पंचैतेभक्तिकंटकाः ॥ ५ ॥ पांचकांटे सोई पांचौमैल ॥ भागवते ॥ नालंद्विजत्वंदेवत्वमृषित्वंवासुरात्मजाः ॥ प्रीणनायमुकुंदस्य नव्रतंनबहुज्ञता ॥६॥ नदानंनतपोनेज्या नशौचंनव्रतानिच । प्रीयतेमलयाभक्त्याहरिरन्यद्विडंबनम् ॥ ७ ॥ मननसुनीर न्हायबेमें आनंदजैसेही मननमें अंगौछा दयामें तीनगुण तेल छुठावे उबटनो अरु मैल श्रद्धाकथामनन ॥ नारदपंचरात्रे ॥ वैष्णवानांत्रयंकर्मदयाजीवेषुनारद ॥ श्रीगोविंदपराभक्तिस्तदीयानांसमर्चनम् ॥ कर्णफूल पांचजातिके जडाऊसोनेके रूपेके रांगके काठके पै सुहाग पांचोंही में रहैं याते करैतौ दोऊकरै साधुसेवा न बनिआवे तो प्रभुकीभी उठाइ धरै ॥ पाद्मे ॥ अर्चयित्वातुगोविन्दं तदीयान्नार्चयंतिये ॥ नतेविष्णुप्रसादस्य भाजनंदांभिकाजनाः ॥ १ ॥ २॥ सतसंगपैभागवते ॥ नरोधयतिमांयोगो न सांख्यंधर्मएवच ॥ नस्वाध्यायस्तपस्त्यागा नेष्टापूर्त्तनदक्षिणा ॥३॥ व्रतानियज्ञच्छंदांसितीर्थानिनियमायमाः। यथावरुंधतेभक्तिःसत्संगोपार्जिताहिमाम् ॥ ४ ॥ अथवा भक्तिके अंग भक्तमालहीमें हैं श्रद्धा सेवामें गदाधरभट कथामें परीक्षित मननसुचोर चतुर्भुजदासकी कथा सुनी ॥ ५ ॥ दया केवल रामसाटोपीटिमें उपड्यो ॥ ॥ ६ ॥ नवंनगोपालदास ·जोवनेरी पनराजा आशकरन नाम आभरण अन्तरूनिष्ट ॥ ७ ॥ हरिसेवारत्नावतीरानी ॥ ८ ॥ साधुसेवा सदावृती मानसी रघुनाथगुसांई सत्संगग्वालभक्त ॥९॥ चाहवारी मधुगोसांई॥१०॥

भक्तिपंचरस ॥ शांतदास्यसख्यवात्सल्यऔशृँगारुचारुपांचौ रससार विस्तार नीके गाये हैं। टीकाको चमत्कार जानौगे [विचा-

रिमन इनके स्वरूप में अनूपले दिखाये हैं ॥ जिनके न अश्रुपात-पुलकितगातकहूंतिनहूं को भावसिद्धबौरेसोछकायेहैं। जौलौंरहैदू-रिरहै विमुखतापूरिहियोहोयचूरिचूरिनेकुश्रवणलगायेहैं ॥ ४ ॥ पंचरससोईपंचरंगफूलथाकिनीके पीकेपहराइबेकोरचिकैबनाइहै। बैजयंतीदामभाववतीअलिनाभानामलाई अभिरामश्याममतिलल-चाईहै ॥ धारीउरप्यारीकिहूंकरतमन्यारीअहोदेखौगतिन्यारीढरि-यामिनिकौआईहै। भक्तिछबिभारतातेनमितशृंगारहोतहोतवश लखैजोईयातेजानिपाईहै ॥ ५ ॥

भक्तिपंचरसपै ॥ सोभक्तिको स्वरूप क्रियात्मकहै सो क्रिया हीते जानीजाइ है ॥ भागवते ॥ देवानांगुणलिंगानामानुश्रविककर्मणाम् ॥ सत्त्वएवैकमनसोवृत्तिःस्वाभाविकीतुया ॥ १ ॥ अनिमित्ताभागवतीभक्तिः सिद्धेर्गरीयसी ॥ जरयत्याशुयाकोशं निगीर्णमनलोयथा ॥ २ ॥ जैसे रसनमें इंद्रि स्वाभाविकीही चलैहैं ऐसेही समस्त इंद्रिय भक्तिमें स्वाभावि-की लगैं या क्रियाते भक्ति जानीजाइ है सो भक्ति पंचप्रकारकी जैसे ईषको रस, खांड़, बुरा, मिश्री, कंद, ओरा स्वाद न्यारे न्यारे तत्त्व एक ॥ ॥ ३ ॥ शांतसर ॥ दोहा ॥ यमकरि मुहतरहाठिपरयो, यह धारि हरि चितलाइ ॥ विषयतृषा परिहरि अजौं, नरहरिके गुणगाइ ॥ ४ ॥ दास्य रस ॥ दासनदास तिहारो ऋणी प्रभु मोते नहीं कछुवै बनिआई। तेदुख-ठावनि मोदबढ़ावनि मोहित भोगकी नींमदिवाई ॥ आपुही में बिसरयो तिनमें पगिताते तहां तुम्हरीको चलाई। पैआप अपनो जानि गहो नहिं जातिअहो तुम्हरी ये बड़ाई ॥ ५ ॥ कवित्त ॥ गुणनगहेहौं मन व्यारमैं बहेहौं तेरी ढीलनदहेहौं पंचरंगको पतंगमें। जितहीकन्यावतहौ तितहीं मैं आवतहौं ऐचैझुकिधावतहौं पवनके संगमें ॥ गयोभारिवाय हारि उषर नरह्यो आइ ताते थिनथांभथँभ्यो थिरकानिके रंगमें। हरे हरे ऐंचिनाथ कीजियेजू अपनी घानातरु अनाथ जात अनंगकी तरंगमें ॥ ६ ॥ सख्य

रस करुणाभर नाटके॥एककहै अस यत्नहिं कीजै। कृष्ण द्वारका जान नदीजै॥ एककहैं हों लेहोंदांव। कहा भयो है आयोराव॥ ७॥ एककहैं आवनतो देहु। तब तुम दांव आपनो लेहु॥ वात्सल्य पद॥ जोपैरा खतहौं पहिंचानि। तौ वे बालक मोहन मूरति मोहिं मिलावो आनि। भली करी कंसादिक मारे सुर मुनि काजकियो। अब इन गाइन कौन चरावै भरि भरि लेत हियो॥ तुम रानी वसुदेव गेहनी हम अहीर ब्रजबासी॥ पठैदेहु मेरे लाल लड़ैते जारौं ऐसी हांसी॥ खान पान परधान विविधसुख जो कोउ लाल लड़ावै। तदपि सूर मेरो कुँवर कन्हैया गोरसही सुखपावै॥ ॥ १ ॥शृंगाररस-कवित्त॥ सीखेरसरीति सीखे प्रीतिके प्रकार सब सीखे केशवराइ मन मनको मिलाइबो॥ सीखे सोंहै खान नटिजान मुसकान सीखे सीखे सैनवैननि में हँसिबो हँसाइबो॥ सीखेचाह चाहसों जु चाह उपजाइबेकी जैसी कोऊ चाहै चाह तैसी चाह चाहिबो। जहां जहां सीखे ऐसी बातैं घातैं तातैं तब तहां क्यों न सीखे नेकु नेहको निबाहिबो॥ ॥ २ ॥ ऊधौकहा कहिये जियकी तिय कौनसी जो न सँभारति हैं। परतासभलौ नहीं या जगमें हमतौ अपने दिन टारति हैं॥ मुखमीठो महाहिरदै कपटी बतियां छतियां नित जारतिहैं। हौं दासनिदास तिहारो ऋणी येई बोल गुपालके शालति हैं॥ ३॥ गहिबो आकाश पुनि लहिबो अथाह थाह अति बिकराल काल व्यालहि खिलाइबो। शेल शमशेर धार सहिबो प्रहारवान गज मृगराज लै हथेरिनि लराइबो॥ गिरिते गिरनपंथ अगिनिमें जरनि काशीमें करवटतन बरफलैंगराइबो। पीबो विष विषम कबुल कवि नागरजू कठिन कराल एकनेह को निबाहिबो॥ ४॥ दोहा॥ नैन मूंदि मुख मूंदिकै, धरौत्रिकुटि मधिध्यान तब आपहिमें देखि हौ, पूरणआतमराम॥ ५॥ कवित्त॥ ओढिबेको कंथा और माइबेको भस्म अंग काननिमें मुद्रा शिरटोपियां धरावैंगी। करमेंकमंडलुकर खप्पर भराइबेको आदेश आदेशकारि शृंगीहू बजावैंगी

कुबिजाको ऋद्धिदई, गोपिनको सिद्धिदई फिरैंगी मशाननि में गोरखै जगावैंगी। एकबार ऊधवजू फेरि समझाइ कहौ एती ब्रजबाला मृगछाला कहाँ पावैंगी॥ १ ॥योगी जग तजैं हम योग जग दोऊ तजैं योगीभखैं पौन हम पौनहूँते हट हैं। योगी करसींगी हम सींगी भई श्याम बिन योगी लावैं धूरि हम धूरिहूते लरि हैं ॥ योगीछेदैं कान हमछेदैं हियोवेधैं प्राण योगी ढूँढैंदंड हमहरिंदंडठटि हैं। आवनकी आश सुधि बीतिगई ऊधोजोतौ योगी कीजुगतिते वियोगी कहा घटिहैं ॥ २ ॥ सुखाइ शरीर अधीन करे-दृगनीरकी बूंदसों माल फिरावै। नेहकी सेली वियोग जटालिये आहकी सींगी सपूर बजावै ॥ प्रेमकी आंवमें ठाढीजरै सुधि आरालै आपनी देह चिरावै। सुजानकहैं कलाकोटिकरौपै वियोगीके भेदको योगी न पावै॥ ३ ॥ श्याम तन श्याम मन श्यामही हमारो धन आठौयाम ऊधौ यहां श्यामही सों कामहै। श्यामहिय श्यामजिय श्मामविन नाहितिय आंवरेकी लाकरी अधार नामश्याम है॥श्यामगति श्यामरति श्यामहीं प्रतापपति श्याम सुखदायी सोभु लाये घरधाम है।तुमभये बौरे यहां पाती आये दौरे योग कहां राखैं हमरोम रोम श्यामहैं ॥ ४ ॥ रूसिरहौ हमसों तो हमें नितही पारि पाइँ नपाँइमनावो। बोलो नबोलो हमैं नित बोलिबो चाहकरौ नकरो हमैं चाहिबो॥ देखे न देखे दयाकरिप्यारे हमैं नितनैननि तैं दरशाइवो।मानो न मानो हमैं यह नेम नयो-नित नेहको नातो निबाहिबो ॥५॥ विचारासन ॥ तापै दृष्टान्त चित्र-की पुतरीको अरु खानखानाको ॥ १ ॥ होइ चूरचूर ॥ कवित्त ॥ बेले ते बिछुरिपान पर पाटिल ह्वै कै कसन कसाइ अंग हाथनि नचतु है। बेशुमार दागिल ह्वै परम कतरनीमें पाइकै मरोरी बहुबिकनि विकतुहै ॥ सरस मसाले अनुमानके लै दियेबीच धरिकै चितौनि रस साजिकै पजतु है। एते पर सखी सुखरसिक हाथ आये कहा चूरचूर भये बिनारंग क्यों रचतु है ॥ १ ॥

सतसंगप्रभाव । भक्तितरुयोधाताहिविघ्नडरछेरीहूकोबारदेवि चारबारसींचोसतसंगसों। लाग्योईबढ़नगोदाचहुँ दिशिकढनसो

चढ़नअकाशयशफैल्योबहुरंगसों ॥ संतउरआलबालशोभितविशा उछाया जियेजीवजालतापगयेयोप्रसंगसों । देखौबढ़बारिजाहिअज-हूकीशंकाहुतीताहीपेंडबांधेझूलैहाथीजोतेजंगसों ॥ ६

सतसंग ॥ भागवते ॥ सतांप्रसंगान्ममवीर्यसंविदो भवंतिहृत्कर्णरसा-यनाः कथाः । तज्जोषणादाश्वपवर्गवर्त्मनि श्रद्धारतिर्भक्तिरनुक्रमिष्यति ॥ १ ॥ दोहा ॥ इष्टमिलै अरु मनमिलै, मिलै भजन रसमीति ॥ मिलियै तहां निशंक ह्वै, कीजै तिनसों प्रीति ॥ १ ॥ एककहै जागे लोचन घूम घुमारे दूसरौ कहै एक निरंजन है अविनाशी ॥ दोहा ॥ बहता पानी निर्मला, बँधा गँधीला होइ ॥ साधू जन रमता भला, दाग न लागै कोइ ॥ २ ॥ वृंदावनशतके ॥ मिलंतुचिन्तामणिकोटिकोटयः स्वयंबहिर्दृष्टिमुपैतुमेनहिं ॥ ॥ कवित्त ॥ वचन विलास में मिठास आइ बासकरै हरै हृदय रोगभोग मानैं जे जियारीके । नयेई जे जातजाति बातन सुहात नेकु पुलकत गात दृग धाराजल न्यारीके ॥ रूपगण मातदेह नाते जितेहातें होत सो तज्यों सलिल मन मिलत जियारीके । और सब संग हम संगके समान किये सोई सतसंग रंग बोरे लाल प्यारीके ॥ ३ ॥ ४॥ सबहींतेबड़ी क्षिति क्षितिहूते बड़े सिंधु सिंधुहूते बड़े मुनि वारिधि अचैरहे । तिनहूंते बड़ो नभ तामें मुनिसे अनेक तारा अरु दारा येन सबयन छ्वैरहे । तिनहूंते बड़ो पग वामन बढ़ाये जब ताहीकी उँचाई देखि तीनोंलोक नैरहे। तिनहूंमें बडे संत साहब अगममेंगम ऐसे हरि बड़े ताके हृदय घरकैरहे ५ ॥

नाभाजूकोवर्णनम् ॥ जाकोजोस्वरूपसोअनूपलैदिखाइदियोकि योयोंकवित्तपटमिहीमध्यलालहै । गुणपैअपारसाधुकहैंआंकचारि हीमें अर्थविस्तारिकविराजटकसारहै ॥ सुनिसंतसभाझूमिरहीअलि श्रेणीमानौं घूमिरहीकहैं यहकहाधौंरसालहै ॥ सुनहेअगरअबजानैंमैं अगरसही चोवाभयेनाभासोसुगंधभक्तिमालहै ॥ ७ ॥

चारहीमें ॥ छप्पय ॥ कहा न सज्जन नवत कहा मुनि गोपी मोहित। कहा दासको नाम कवित में कहियत कोहित ॥ को प्योरो जगमाहिं

कहा क्षिति लागैआवै । को बासरही करै कहा संसारहि भावै ।। कहि काहि देखि कायर कँपत आदि अंतको है शरन ।। यह उत्तर केशवदास दिय सबै जगत शोभाधरन ।। १ ।। कवित्त ॥ चतुर बिहारीजू पै मिलि आइ बालासात मांगति हैं आजु कछु हमको दिवाइये । गोदलै हौफूलदै हौ नाकहिपहिराई मोती पाननकी पातरि हुताशनहूं लाइये ॥ ऊंचेसे अवासके झरोखा बैठाइयेजू मेरीसेज श्यामआजु रतिपति ध्याइये। ग्वालसमुझाइबेको उत्तर सब दीन्ह्यों एक उक्त विशेषभांति वारी नहीं आइ ये ॥ २ ॥ श्लोक ॥ कोदराग्रहमोहाय काप्रियामुरविद्विषः ॥ पदंप्रश्न वितर्केकिं कोदंतश्छदभूषणम् ।। सवैया॥ जसवंतसिंहको रानीनेसिंगरफको सालिख्यौ ।। तामें लालसाबांच्यो जैसे ब्रजसुंदरीने पातीलिखी ॥ दोहा ॥ तर झुरसी ऊपर गरी, कज्जलजल छिरकाइ । पिय पाती बिनही लिखी बांची विरह बलाइ ॥ ३ ॥ दृष्टांत गुलावको औ गुलालाको ॥ ४ ॥

भक्तमालस्वरूप॥कवित्त॥बड़ेभक्तमाननिशिदिन गुणगानकरैं हरैं जगपापजाप हियो परिपूरहै।जानिसुखमानिहरिसंतसनमानसचैं बचे ऊजगतरीतिप्रीतिजानीमूरहै ॥ तऊदुराराध्यकोऊकैरोकैअराध्य सकैसमझो नजातमनकंपभयोचूरहै । शोभिततिलकभालमालउ-रराजैऐपैबिनाभक्तिमालभक्तिरूपअतिदूरहै ॥

मूलमंगलाचरण ॥दोहा॥ भक्तभक्तिभगवंतगुरु, चतुरनामवपुएक॥
इनकेपदवंदनकरै, नाशैविघ्न अनेक ॥ १ ॥

भक्तिरूप अतिदूरहै ।। भागवते ।। तत्कथ्यतांमहाभाग यदि कृष्णकथा श्रयः ।। अथवास्यपदांभोजमकरंदलिहांसताम् ।। १ ।। भक्तभक्तिमंगलाच-रण तीनि प्रकार वस्तु निर्देशात्मक गीतगोविन्दे ।। मेघैर्मेदुरमम्बरंवनभुवः श्यामास्तमालद्रुमैर्नक्तंभीरुरयंत्वमेवतदिमं राधेगृहं प्रापय ।। इत्थंनन्द निदेशतश्चलितयोः प्रत्यध्वकुंजद्रुमं राधामाधवयोर्जयंतियमुनाकूलेरहः

केलयः ॥ नमस्कारात्मकं॥ किरातहूणांध्रपुलिंदपुष्कसा आभीरकंका यवनाः खसादयः।येन्ये च पापा यदुपाश्रयाश्रयाच्छुद्ध्यंति तस्मै प्रभुविष्णवे नमः। ॥ २ ॥ आशीर्वादात्मकं ॥ नृसिंहपुराणे ॥ यःस्तंभाद्गर्जमानो गगडगडगडझालचंद्रार्द्धदंष्ट्रोव्योमोद्भूर्व्याप्यमानो जजडजडजडत्साध्यमानःसटाभिः॥ दंष्ट्राभिःखादमानः ककटकटकटत्तर्जमानोसुरेंद्रं निष्क्रांतोहास्ययुक्तो गगहगहगहत्पातुवः श्रीनृसिंहः ॥ ३ ॥ वपुएक श्लोक ॥ वैष्णवोममदेहस्तु तस्मात्पूज्योमहामुने ॥ अन्ययत्नंपारित्यज्य वैष्णावान्भजसुव्रत ॥ ४ ॥ भक्ति कैसे तैसे फूलमें सुगंध ॥

टीकाविशेषलक्षण, कवित्त॥ हरिगुरुदासनिसोंसांचोसोई भक्तसहीगहीएकटेकफेरिउरतेनटरीहै। भक्तिरसरूपकोस्वरूपयहैछविसारचारुहरिनामलेतअँशुवनझरीहै ॥ वहीभगवंतसंतप्रीतिकोविचारकरै धरै दूरिईशताहू पांडवनसोंकरीहै ।गुरुगुरुताईकोसचाईलैदिखाईजहांगाईश्रीपैहारीजूकीरीतिरंगभरीहै ॥ २ ॥

मूलदोहा॥ मंगलआदिविचारिरह्योवस्तुनऔरअनूप,।हरिजनको यशगावतहैं, हरिजनमंगलरूप ॥ २ ॥ सबसंतनिर्णयकियोमथि, श्रुतिपुराणइतिहास । भजिबेकोदोऊसुघर, कैहरिकैहरिदास ॥ श्रीगुरुअग्रदेवआज्ञादई, भक्तनिकोयशगाइ ॥ भवसागरकेतरनको, नाहिनऔरुउपाइ ॥ ४ ॥

हरिगुरु दासनिसों सांचो । पटनाकी बाईसे रगटको आमिल लाहौर को सुदर्शन खत्री को दृष्टांत ॥ कबित्त ॥ शोचरूप सागरमें सने रघुराई कहैं लंक यह देन कों त लगै कछुघात है ॥ कौन या विभीषणको राखै रोंकि रावण सों जीवजाल माछरी लौं पर्चो पछितात है ॥ लक्ष्मणपाछैं मैंहूंमरन परन लीनों जसराम बुरेभ्यौंत बूडी बुधिजात है । जीवको न लालच वचनको विशेष उर जीव गये वचन बचैतौ बड़ी बात है ॥ १ ॥ भक्त रसरूप को एकादशे ॥ वाग्गद्गदा द्रवते यस्य चित्तं हसत्यभीक्ष्ण रुदति क्वचिच्च ॥ विलज्ज उद्गायति नृत्यतेच मद्भक्ति युक्तो भुवनं पुनाति ॥२॥

निमज्ज्योन्मज्जतांघोरे भवाब्धो परमायणम् ॥ संतोब्रह्मविदः शांता नौर्दृढाविनिमज्जताम् ॥ ६ ॥

टीकाआज्ञासमयकी॥क०-मानसीस्वरूपमेंलगेहैंअग्रदासजबैकरत बयारनाभामधुरसँभारसों । चढ़्योहौजहाजपैजुशिष्यएकआपदामें करेउध्यानखिच्यौमनछुटयोरूपसारसों ॥ कहतसमरथगयोवोहित-बहुतदूरि आवो छबिपूरि फिरिढेरेताहीढारसों ॥ लोचनउघारिकै निहारिकह्यो बोल्योकौन वही जौनपाल्योसीतदैदैसुकुवारसों॥१०॥

मानसी स्वरूप में ॥ तापै भूतको दृष्टांत ॥ दोहा ॥यह मन भूत समान है, दौरे दांत पसारि ॥ बांशगांठि उतरै चढ़े, सब बलजावै हारि ॥ १ ॥ चल दल पत्र पताक पट, दामिनि कच्छप माथ ।। भूत दीप· दीपक शिखा यों मन वृत्य अनाथ ।। २ ।। सवैया ॥ चचल जो मनकी गतिहै अलि रूप मुवन बनमें फिरियै ।। कुण्डल लोल कपोलन में अलकनि झलकनि चितमें धरिय ।। बरबेंदी भाल रसाल दिये अधरनि में मोती थरहरियै । अलबेली लाल विहारिनिको दिन रैन निहारनिही करियै ॥ ३ ॥ मन है तौ भली थिरकै रहितू हरिके पद पंजक में गिरितू । कवि सुन्दर जौन सुभाव तजै फिरिबोः करै तो इहां फिरितू ।। मुरलीपर मोरपखा परहै लकुटी परहै भ्रुकुटी भ्रमितू । इन कुण्डल लोल कपोलनि में घनसे तनमें घिरिकै रहितू ।। ३ ।। करत बयारि नाभा जूने विचारा यह सुख कैसे मिलै ।। टहलते मिलै दृष्टांत मरजिया को ।। ४ ।। सभार सौ क्योंकि मानसी ऐसी कोमल है सो बयारि की चोट लगै ।। ५ ।। सारसौ ।। कवित्त ॥ कंचन जटित भूमि सरतरु रह्यो भूमि तापर सिंहासन सुखा-सन बिछायो है । अष्टदल कमल अमल रघुनाथ तहां अंग अंग मानो कोऊ रंग झरलायो है ।। कुण्डल करणकर कंकण मुकुट कटि किकिणी कि धुनि सुनि मन भरमायो है । चंपके चमेलीके अरु कुंद मंदार के सुहा-रनि में हारिके विचारि बिसरायो है ।। ६ ।।

क०-अचरजदयोनयोयहांलौंप्रवेशभयो मनसुखछयोजान्योसंतनप्र-

भावको । आज्ञातबदईयहभईतौपैसाधकृपाउनहींकोरूपगुणकहोहि येभावको ॥बोल्योकरजोरियाकोपावतनओरछोरगाऊंरामकृपानहीं पाऊंभक्तिदावको । कहीसमुझाइबोईहृदयआइकहैंसब जिन लैदिखाइदईसागरमेंनावको॥११॥श्रीनाभाजीकीआदिअवस्था॥ हनूमानवंशहीमेंजनमप्रसिद्धजाको भयो दृगहीनसोनवीनवातधारिये । उमरिबरषपांचमानिकेअकालआंचमाता वनछोडिगईविपतिविचारिये ॥ कील्हाऔअगरताहीडगरदरशदियो लियेयोंअनाथजानि पूंछीसोउचारिये ॥ बड़ेसिद्धजललैकमण्डलुसों सींचेनैनचैनभयो खुलेचखजोरीकोनिहारिये ॥ १२ ॥

रूप गुण ॥ श्लोक ॥ येकंठलग्नतुलसीनलिनाक्षमाला येबाहुदंडपरिचिह्नितशंखचक्राः ॥ तृतीयो ॥ तितिक्षवःकारुणिकाःसुहृदःसर्वदेहिनाम् । अजातशत्रवःशांता,साधवःसाधुभूषणाः ॥१॥ माता ॥ सवैया ॥ वारिध तातहुते विधिसे सुत आदित सोम सहोदर दोऊ । रंभा रमा तिनकी भगिनी मघवा मधुसूदन से बहनेऊ।।तुच्छ तुसार इतौ परिवार भयो शरमध्य सहाय न कोऊ । सूखिसरोज रह्यो जल में सुखसंपतिमें सबको सब कोऊ ॥ २ ॥ पिता कोऊ कहै अरु कोऊ कहै सुत कोऊ कहै नाना बाबा तन तीनि तापतयोहै । प्रभु कोऊ कहै जन कोऊ कहै मोल लयो तुम अब कहौ ये जू काहि काहि दयोहै ॥ ब्रह्मभने जित तित चलि चलि होइ रही सुख नहीं कहूं बहु हाथ गेंदभयो है । कियो हू तिहारो अरु पाल्योहू तिहारो ही हौं इन बीच लोगन ने बांटो बांटलियो है ॥ सींचे नैन ॥ एकादशे ॥ संतोदिशंतिचक्षूंषि बहिरर्कःसमुस्थितः । देवताबांधवाःसंतः संतआत्माहमेवच ॥ १ ॥

कवित्त।पाइँपरिआंशूआयेकृपाकरिसंगलाये कील्हआज्ञापाइमंत्रअगर सुनायोहै।गलतेप्रगटसाधुसेवासोंविराजमान जानिउनमानताही टहललगायोहै ॥ चरणप्रछालिसंतशीतसोंअनंतप्रीतिजानीरसरीति

तातेहृदय रंगछायोहै॥ भईबढ़वार ताकोपावैकौनपारावार जैसोभक्तिरूप सोअनूपगिरागायोहै ॥ १३ ॥

मंत्र अगर आगमे।। तापःपौंड्रयथानाम मंत्रोयागश्चपंचमः।। एते च पंच संस्काराःपुण्यस्यैकांतहेतवः ।। २ ।। जन्मनाजायतेशूद्रः संस्काराद्द्विजउच्यते। वेदाभ्यासाद्भवेद्विप्रः ब्रह्मजानाति ब्राह्मणः ।। ३ ।। संतशीत नारद वाक्यम् ॥ उच्छिष्टलेपाननुमोदितोद्विजैः ॥ ४ ॥ छायो है ॥ कवित्त ॥ कोऊ यह कहै संस्कारहीसों भक्तहोत विना संस्कार भक्ति कैसे करि पाइये। जान्यो हम सार सब ग्रंथ अनुसार पुनि एपैहै विचार गूढ कहिकै सुनाइये ॥ महिमा अगाध साधु रसिक प्रवीननि की नेकु चितवत काम बन्धु उलटाइये। अंग अंग रंग सतसंग को प्रभाव अहो जैसे दत्तात्रेय बारमुखीहित छाइये ॥ ५ ॥ भई बढ़वारि॥ दोहा ॥ मृतक चीर जूंठनि वचन,काग बिष्ठजन मित्र॥ शिव निरमायल आदिदै,ये सब वस्तु पवित्र ॥ ६ ॥ शुकवाक्यम् ॥ किरातहूणान्ध्रपुलिंदपुष्कसाआभीरकंकायवनाः खशादयः ॥ येन्येचपापाःयदुपाश्रयाश्रयाच्छुशुध्यंतितस्मै प्रभविष्णवेनमः ।। ७ ।।

मूल—जयजयमीनवराहकमठनरहरिबलवावन। परशुरामरघुवीर कृष्णकीरतिजगपावन। बुद्धकलंकीव्यासपृथूहरिहंसमन्वंतर। यज्ञऋषभहयग्रीवध्रुववरदैनधन्वंतर। बद्रीपतिदत्तकपिलदेवसनकादिककरुणाकरो। चौबीसरूपलीलारुचिर श्रीअग्रदासपदउर धरो॥ ८॥ टीका॥क०—जितेअवतारसुखसागरनपारावार करैविस्तारलीलाजीवनउधारको। जाहीरूपमाँझमनलागैजाकोपागैतहीं जागैहियेभाववहीपावेकौनपारको ॥ सबहीहैनित्यध्यानकरतप्रकाशैचित्त जैसेरंकपावैवित्त जोपैजानैसारको। केशनकुटिलताईएसेमीनसुखदाई अगरसुरीतिभाई बसौउरहारको ॥ १४ ॥ मूल ॥ चरणचिह्नरघुवीरके संतनसदासहाइका ॥ अंकुश अंबर कुलिश कमल यव धुजा धेनुपद। शंखचक्रस्वस्तिकजंबूफल

कलशसुधाह्रद ॥ अर्द्धचंद्रषटकोनमीनबिंदुऊर्ध्वरेखा । अष्टकोनत्रैकोन इंद्रधनुपुरुषविशेषा ॥ सीतापतिपदनितबसत एतेमंगलदायका। चरणचिह्न रघुबीरके० ॥ ६ ॥

जैजै मीन बराह ॥ मीन वराह क्यों गाये राम कृष्ण छोंडिकै सब जातिके साधु गाये जाहिंगे कोऊ नीक चढावे याते पहिले हरिहीकी जाति कहीं हौं क्योंकि कोऊ नाकचढावे सो अबहीं चढावो कृष्ण कीर्तिको विषयीही सुनै ॥ १ ॥ तिते अवतार कोऊ कहै गुरुनने आज्ञादई संतनिकी इन्होंने प्रथम अवतार क्यों धरे। बटुआ पहिले आवे साधुपाछे आवे ॥ २ ॥ जाहीरूप जापै फकीर को औ लरिकाको दृष्टांत कोऊ कहै मीन बाराह कैसे सुखदाई सुंदर के संग ते सुंदर होइ केशन के संगते कुटिलता ॥ ३ ॥

टीका॥कवित्त—संतनिसहाइकाजधारेनृपराजरामचरणसरोजनमें चिह्नसुखदाइये । मनहींमतंगमतवारोहाथआवैनहीं ताकेलियेअंकुशलेधारेउहियेधाइये ॥ ऐसेहीकुलिशपापपर्वतकेफोरिबेको भक्तिनिधिजोरिबेकोकंजमनलाइये । जोपैबुधवंतरसवंतरूपसंपतिमें करिलेविचारसबनिशिदिनगाइये ॥ १५ ॥

मनमतंगचतुर्थे। अयंत्वत्कथामृष्टपीयूषनद्यांमनोवारणःक्लेशदावाग्निदग्धः॥ तृषार्तोवगाढंनसस्मारदावंननिष्क्रामति ब्रह्मसंपन्नवन्नः ॥ १ ॥ सदा रहत नवरंगमें मन मतंग विचर्‍योबुरो॥ छप्पय॥धरना धर्म उखारि शरम साकर गहि तोरत। तरुणि करावल लखत शील शालहि गहि मोरत ॥ विनय बाण नहिं वदत ज्ञानअंकुश नहिं मानत। गुरू महावत ताहि चाहि डारन उर आनत॥ लखिलेवो दारुण विषय कुन्दन मद यौवनजुर्‍यो । सदा रहत नवरंग में मनमतंग विचर्‍यो बुरो ॥ २ ॥ कवित्त ॥ जनम जनम तोहिं जहाँ तहाँ घेरे फिर्‍यो मन मुद्र मरद गनीम तेरी पागीहै। कलह प्रसंगी पंचरंगी जंगी जोरावर अलख अनंगी सुउपाधि अनुरागीहै॥ कैदकरि पायो मनी राम नरकाया बीच अबकै जो चूकैगो तो बडो तू अभागी है। सुमिरि

कोऊ सारपांच भूतनिको सरदार मारिऐसी मारतेरी भलीघात लागीहै ॥ ३ ॥ जबको हेत सुनो सदा दाता सब विद्या की सुमतिको संपतिको सुखको निवासहै। क्षणमें सभीतहोत कलिकी कुचालिदेखि ध्वजासों विशेष जानो अभयकोविश्वासहै ॥ गोपदसुह्वैहै भवसागर सुनागर जन जोपै नेकु हियेको लगावै मिटै त्रास है । कपट कुचालि मायाजाल सब जीतिवेको अंबर को दरश कियो जोपै अनायासहै ॥ १ ॥ कामहू निशाचरके मारिवेको चक्रधर्‍यो मंगलकल्याण हेतु स्वस्तिकहूमानिये । मंगलीक जंबूफल फलचारुहूकोफल मनकामनाअनेक पूरणहोध्यानिये ॥ कलशऔसुधाकोसरस हरिभक्तिभर्‍यो नैनपुट पानकीजे जीजे मनआनिये । भक्तिकोबढावैऔघटावैतीनितापनिको अर्द्धचंद्रधारणयेकारणहूं जानिये ॥ २ ॥ विषयभुवंगबलमीकितनुमाहिं बसै दासको नडसैतातेयत्नअनुसर्‍योहै । मीनबिंदुरामचंद्रकीनोंवशीकरण प्राय ताहीते निकाय जनजनजातहर्‍यो है ॥ अष्टकोन त्रैकोन यंत्र किये जीतिवेको जियेजोईजानै जाके ध्यानउरभर्‍यो है। संसार सागरकोपारावारपावैनाहिंऊर्ध्वरेखादासनिकोसेतबंधकर्‍योहै ॥ ३ ॥ धनुषपद्महिंधर्‍योहर्‍योशोकध्यानिनको मानिनको मार्‍यो मान रावणादिशापिये।पुरुष जो विशेषपद कमलबतायोराम हेत अभिरामसुनौंश्याम अभिलाषिये॥सूधेमनसूधेबैनसूधीकरतूतिसब ऐसो जनहोइ मेरोयाहीतेजुराखिये । जोपैब्रुधवंतरसवंतरूपसंपतिमें कारि लै विचार सब निशि दिन भाषिये॥ ४ ॥

दोहा॥दुखमेंतो सब कोउ भजै, सुखमें भजै न कोइ॥ जो सुखमें हरिको भजै, तो दुखकाहेकोहोइ ॥ ५ ॥ कबहुँ न सुखमें हरिभजे, दुखमें कीने यादि ॥ कहिकबीरवाजीवकी, कैसे लगै फिरादि ॥ ६ ॥ जो साहबसों तू मिलै साहब मिलै तो तोहिं ॥ बिनाभजन मिलतोनहीं, सुखकाहेके होहिं ॥ ७ ॥ बसति हृदय जाके दया, रामहिं जानत जोइ । दयाराम पावैतबै, दया राम की होइ ॥ ८ ॥

मूल ॥ विधिनारदशंकरसनकादिककपिलदेवमुनिभूप । नरहरिदासजनकभीषमबलिशुकमुनिधर्मस्वरूप ॥ अंतरंगअनुचरह

रिजूके जोइनकोयशगावै । आदिअंतलौंमंगलतिनकोश्रोतावक्तापा वै ॥ अजामीलप्रसंगयहनिर्णयपरमधर्मकेजान । इनकीकृपाऔर पुनिसमझै द्वादशभक्तप्रधान ॥टीका॥ क०--द्वादशप्रसिद्धभक्तराज कथाभागवत अतिसुखदाई नानाविधिकरिगायेहैं । शिवजूकोबात एकबहुधानजानैकोऊसुनिरससानैंहियोभावउरझायेहैं । सीताकेवि- योगरामविकलविपिनदेखि शंकरनिपुणसतीवचनसुनायेहैं । कैसेये प्रवीणईशकौतिकनवीनदेखो मनैहूंकरतअंगवैसेहूबनाये हैं ॥ १६ ॥ सीताहीसोरूपवेषलेशहूनफेरफाररामजूनिहारिनेकमनमेंनआईहै ॥ तबफिरिआइकैसुनाइदईशंकरको अतिदुखपाइबहुबिधिसमुझाईहै । इष्टकोस्वरूपधारयोतातेतनुपरिहरयो परयोबड़ोशोचमतिअति भरमाईहै । ऐसेप्रभुभावपगेपोथिनमेंजगमगे लगेमोकोप्यारे यहबा- तरीझिगाई है ॥ १७ ॥

अनतरंग ॥ बाणासुरके युद्धमें महादेव कृष्णसों लरे ॥ भागवते ॥ स्वयंभूर्नारदःशंभुःकुमारःकपिलोमनुः । प्रह्लादो जनकोभीष्मोबलिर्वैयासकि र्वयम् ॥ २ ॥ निपुणपरमेश्वरका प्रेमकोस्वादनहीं जैसे पादशाहको फकीरी को नहीं॥ नाटके ॥ यूयंकेवदनाथनाथकिमिदंदासोस्मिते लक्ष्मणः कोहंव- त्सनुआर्यएवभगवान् आर्यश्चकोराघवः । किंकुर्मोविजनेवने तत इतोदेवी भृशं वीक्ष्यते कादेवीजनकाधिराजतनयाहाहाप्रिये जानकि ॥ ४ ॥ मनेहूं करत दोहा—ज्यों जगके राजानिको, भेद न जानै कोइ ॥ तासुअन्त क्यों पाइये, सबको दातासोइ ॥ ५ ॥

मू०-चलेजातमगउभैपेरेशिषदीठिपरेकरै परनामहिंपभक्तिलागीप्या- रिये । पारवतीपूँछैंकियेकौनकोजूकहौमोसों दीसतनजनकोऊतब सोउचारिये । वरषहजारदशबीतेतहां भक्तभयो नयोऔरह्वैहैदू जीठौरबीतेधारिये । सुनिकैप्रभावहरिदासनिसोंभावबढ़्यो रढ़्यो कैसेजातचढ़्योरंग अतिभारिये ॥ १८ ॥

टीका अजामीलकी ॥ धरयोपितुमातनामअजामीलसांचभयो

अजामलरह्योछुटी तियाशुभजातको। कियोमदपानसोसमानगहि दूरडारयो गारयोतनुवाही सों जोकीन्होंलैकैपातकी ॥ करिपरि हासकाहूदुषनैपठायेसाधु आयेघरदेखिबुद्धिआइगईसातुकी । सेवा करिसावधानसंतनिरिझाइलियोनारायणनामधरयोगर्भबालबातकी

वर्ष हजार बाबा नानक अरु मरदाने चेलाको दृष्टांत भागवते ॥ मुक्तानामपिसिद्धानांनारायणपरायणः। सुदुर्लभःप्रशांतात्मा कोटिष्वपि महामुने ॥ १ ॥ नीतौ ॥ गिरौगिरौनमाणिक्यंमौक्तिकंनगजेगजे। साधवो न हिसर्वत्र चंदनं न वनेवने ॥ २ ॥ रंगचढ्यो भागवते ॥ वरमेकंवृणेथापि पूर्णात्कामाभिवर्षणात् । भगवत्युत्तमांभक्तिंतत्परेषुतथात्वयि ॥ ३ ॥ दोहा ॥ सयान ॥ तनक नरहै विरक्तिता, लगै दृगनकी थाप । कहुँपूजा माला कहूँ, कहुँ बटुवा कहुँ आप ॥ ४ करि परिहास तापै शिवजीको दृष्टांत ॥५॥ सातुकीभागवते ॥ नह्यम्मयानितीर्थानिनदेवामृच्छिलामयाः॥ तेपुनंत्युरुकालेनदर्शनादेवसाधवः ॥ ६ ॥ सावधाननीते ॥ आत्मनो मुखदोषेण बध्यंते शुकसारिकाः ॥ बकास्तत्र न बध्यते मौनं सर्वार्थसाधकम् ॥ मोहजाल ॥ श्लोक ॥ अंगंगलितंपलितं मुंडंदशनविहीनं जातं तुंडम् ॥ वृद्धो याति गृहीत्वा दंडं तदपि न मुंचत्याशापिंडम् ॥ १ ॥

आइगयोकालमोहजालमेंलपटिरह्यो महाबिकरालयमदूतदीदिखाइये। वहीसुतनारायणनामजोकृपाकैदियो लियोसोपुकारिसुरआरतसुनाइये ॥ सुनतहीपारषदआयेताहीठौरदौरितोरिडारेपाशकह्यो धर्मसमुझाइये। हारिलैबिडारेजोइपतिपैपुकारेकहीसुनोबजमारे मतिजावोहरिगाइये ॥ २० ॥ मूल ॥ मोचित्तवृत्तनित्ततहांरहौ जहांनारायणपदपारषद ॥ विष्वक्सेनजयविजयप्रबलबलमंगलकारी। नंदसुनंदसुभद्रभद्रजगआमैहारी ॥ चंडप्रचंडविनीतप्रणीतकुमुदकुमुदाक्षकरुणालय। शीलसुशीलसुसेनभावभक्तनप्रतिपालय ॥ लक्ष्मीपतिप्रीननप्रबीनभजनानंदभक्तनिहद । मोचितवृत्तनिततहँरहो जहँनारायणपदपारषद ॥ ८ ॥

आरतभागवते ॥ सांकेत्यं पारिहास्यं वास्तोभं हेलनमेव च॥ वैकुंठनामग्रहणमशेषाघहरं विदुः ॥ १ ॥ धर्म समुझाइ पै । एतेनैवह्यघोनोस्यकृतंस्यादघनिष्कृतिः ॥ यदानारायणायेतिजगादचतुरक्षरम् ॥ २ ॥ स्तेनःसुरापो मित्रध्रुब्रह्महागुरुतल्पगः॥स्त्रीराजपितृगोहंतायेचपातकिनोपरे ॥ ३ ॥ सर्वेषामप्यघवतामिदमेवसुनिष्कृतम् ॥ नामव्याहरणंविष्णोर्यतस्तद्विषयामतिः । ॥ ४ ॥ अहोबतश्वपचोतोगरीयान्यज्जिह्वाग्रेवर्ततेनामतुल्यम् । तेपुस्तपस्तेजुहुवुःसस्नुरार्याब्रह्मन्नूचुर्नामतुभ्यंहियेते ॥५॥ छप्पय ॥ कहा व्रत नेम गजेंद्र कियो कहा वेद पुराणपढी गणिका । अजामील ने कौन अचार कियो निशि वासर पान पुरा पपिका॥ कहा जप जाप बधिक कियो सोहुतो घनजीवनकोहनिका । तुलसी अघ पर्वत कोटिजरे हरिनाम हुताशनको कनिका ॥ ६ ॥ हरिगाइये दूतनि प्रति । नामोच्चारणमाहात्म्यं हरेः पश्यत पुत्रकाः । अजामिलोपि येनैव मृत्युपाशादमुच्यत ॥ ७ ॥

टीका ॥ कवित्त—पार्षदमुख्यकहसोरहसुभावसिद्धिसेवाहीकी ऋद्धिहियेराखीबहुजोरिकै ॥श्रीपतिनरायणकेप्रीननप्रवीणमहाध्यानकरैजनपालैभावदृगकोरिकै ॥ सनकादिकदियोशापप्रेरिकैदिवायो आपप्रगटह्वैकह्यो पियोसुधाजिमिघोरिकै । गहीप्रतिकूलताईजोपै यहैमनभाई यातरीतिहदगाईधरीरंगबोरिकै ॥ २१ ॥ मूल ॥ हरि बल्लभसबप्रार्थौंजिनचरणरेणुआशाधरी ॥ कमलागरुड़सुनंदआदि षोड़शप्रभुपदरति।हनूमंतजाम्बवंतसुग्रीवविभीषणशबरीखगपति ॥ ध्रुवउद्धवअंबरीषविदुर अक्रूरसुदामा । चंद्रहासचित्रकेतुग्राहगजपाण्डव नामा ॥ कौषारवकुंतीबधू,पटऐंचतलज्जाहरी। हरिबल्लभसब प्राथौं, जिनचरणरेणुआशाधरी ॥ ९ ॥

प्रेरिकै दिवायो नीते ॥ लक्ष्मीवन्तो न जानंति प्रायेण परवेदनाम् । शेषे धराभराक्रांते शेते लक्ष्मीपतिस्स्वयम् ॥ १ ॥ पियोसुधाजिमि दोहा॥ तुम मति भूल्यो भूलनो, सुनि मनमोहन मित्त ॥ भूलेपर भलो नहीं, तोहीं सुमिरों नित्त ॥ २ ॥ प्रतिकूल ताई ॥ कवित्त ॥ नरक जो देहि तौन

निदरि विमुख हूजै स्वर्ग जो देहि तौन हर्ष सराहिये । रद्दकरिडारैतौन कीजिये कलेश जिय करै जो कबूल तौन फूलिकै उमाहिये ।। जिहीअंग रंग होइ तिही अंग रंग हूजै येदिल सनेही नेही नीकेकै निबाहिये । चित्त क्यों न चाहमरो आप चाह चूल्हे परो प्रीतम जो चाहै चाह सोई चाह चाहिये ।। ३ ।। दोहा ।। दियो सुशीश चढ़ाइलै, अच्छी भाँति अपेर ।। जासों सुख चाहत लयो, ताके दुखहि न फेर ।। ४ ।। चरणरेणु ॥ श्लोक॥ रहूगणोतत्तपसा नयाति नचेज्ययानिर्वणाद्गृहाद्वा।।नच्छंदसानैवजलाग्निसूर्याद्विनामहत्पादरजोभिषेकम्।।५।। लज्जाहरि ॥ दोहा ॥ पट ऐंचत मटकी नहीं,भुजबल भई अनाथ।।तुलसी कीन्हों ग्यारहों, बसन रूप रघुनाथ।।६।।

टीका॥कवित्त—हरिकेजेवल्लभहैंदुर्ल्लभभवनमांझ तिनहींकी पद-रेणुआशाजियकरीहै । योगीयतीतपीतासोंमेरोकछुकाजनाहिं प्रीति परतीतिरीतिमेरीमतिहरीहै । कमला गरुड़जाम्बवानसुग्रीवआदि सबैस्वादरूपकथापोथिनमें धरी है । प्रभुसोंसचाईजगकीरतिचलाईअतिमेरेमनभाई सुखदाईरसभरीहै ॥ २२ ॥ टीका हनूमान जूकी ॥कवित्त ॥ रतनअपारक्षीरसागरउधारकिये लिये हितचायकैबनाइमालाकरीहै । सबसुखसाजरघुनाथमहाराजजूके भक्तसों-विभीषण जूआनिभेंटधरीहै । सभाहीकीचाहअवगाहहनूमानगरैडारिदईसुधिभईमतिअखरीहै । रामबिनकामकौनफोरिमणिदीनोडारिखोलितुचानामहौदिखायोबुद्धिहरीहै ॥ २३ ॥

डारिदई ॥ रामायणे ।। कंकणे नैव जानामि नैवजानामि कुण्डले ।। नूपुरावेव जानामि सदा पादाभिवंदनात्।।१।।छप्पय॥राम चरणताजि आन रति गज तजि मनु गद है चढ़ौ ।। वहै नीच वहै पोच वहै आतम बड़ पापी । वहै अविद्या मूल वहै गुरुद्रोहि सुरापी । वहै दीन मतिहीन वहै नरकनि में नामी । वहै कृतघ्नी कुटिल वहै बड़ लोन हरामी । अगर कहैं ताहिगति नहीं तीनि तापसो हियदढ़ौ । रामचरण तजि ।। २ ।। फोरि मणि दीनी । कि कंठभूषणं ३ खोलितवचा ।। कवित्त ॥ न्यारी न्यारी

दीसैं जैसे कागजकी चीरीपर मसी की डँडीरी ऐसी मज्जनकी पांसुरी । मारि गयो गात येरी पात सो पुरानो हैकै पान पान रही परचो लेतहै उसासुरी । तेरी ये तलब तेरे तालवदिवानौको है देखत हवाल वाको आवत है आंसुरी । लेरी अब लैलै उरलाइ लेरी अपनी सों फेरिप छितैहै जब माटी मिलै मांसुरी ॥ ४ ॥

टीका विभीषणजूकी ॥कवित्त॥ भक्तिसोंविभीषणकीकहैऐसो कौन जनऐपैकछुकहीजातिसुनो चितलाइकै । चलतजहाजपरअटकिवि-चारिकियोकोऊअंगहीननरदियो लै बहाइकै । जाइलग्योटापूताहि राक्षसिनिगोदलियो मोदभरिराजापासगयेकिलकाइकै । देखतसिंहा-सनतेकूदिपरेनैनभरे याहीकेअकाररामदेखैभागपाइकै ॥ २४ ॥ रचिसोसिंहासनबैठाये ताहीक्षणराक्षसनरीझिदेतमानी शुभयरीहै ॥ चाहतमुखारविंदआतिहीअनंदभरि ढरकतनैन नीरटेकिठाढ़ो छरीहै । तऊनप्रसन्नहोतक्षणक्षणक्षणज्योतिन्हजियेकृपालमतिमेरी अतिहरीहै ॥ करोसिंधुपारमेरेयहीसुखसारदियेरतनअपारलाये वाहीठौरफरीहै ॥ २५ ॥ रामनामलखिशीशमध्यधरिदियोयाकोयही जलपारकरैभावसांचोपायोहै । ताहीठौरबढ़्योमानोनयोऔररूपभ योगयोजोजहाजसोईफेरिकरिआयोहै ।लियोपाहिंचानिपूँछेउसबसोब-खानकियोहियोहुलशायोसुनिविनयकैचढ़ायो है॥ परचोनीरकूदिने-कुमायानेप्रवेशकियो ह्योमनदेखिरघुनाथनामभायो है ॥ २६ ॥

दियो लै बहाइ । नीते । वनानि दहतो वह्नेः सखा भवति मारुतः ॥ स एव दीपनाशाय कृशे कस्यास्ति सौहृदम् ॥१॥ अश्वं नैव गजं नैव सिंहं नैव चनैव च । अजापुत्रं बलिं दद्याद्देवोदुर्बलघातकः ॥ २ ॥ जाइ लग्यो ॥ दोहा ॥ कबिरातेरेनामपद, कियो सुराई लौन ॥ जिन्हैंचलायो पंथतुम, तिन्हैं भुलावै कौन॥३॥राम नाम श्लोक॥राम त्वत्तोधिकं नाम इति मे नि-श्चिता मतिः॥त्वया तु तारिताऽयोद्ध्या नाम्ना च भुवनत्रयम्॥४॥रामनामके

लिखे तरेपाषाणरे । दुष्टअजामिलतर्‍यो नामते जानरे । सबतजिभजिहरि नाम सुनो सब जंतरे नामबिना है नरक सुनो भाई संतरे ॥ ५ ॥

शबरोजोकोटीका ॥ वनमेंरहतिनामशबरीकहतसबबाहतटहल साधुतनन्यूनताईहै । रजनीकेशेषऋषिआश्रमप्रवेशकियोलकरीन बोझधरिआवै मनभाईहै । न्हाइवेकोमगझारिकांकरनिबीनिडारि बेगिउठिजाइकोऊजातनलखाईहै। उठतसबारेंकहैकौनधोबहारिगयो भयोहियेशोचकोऊबडोसुखदाईहै ॥ २७ ॥ बडेईअसंगवे मतंगरस रंगभरेधरेदेखिबोझकह्योकौनचोरआयोहै । करैनितचोरीअहोगहो वाहिएकदिनबिनायापैप्रीतिवाकीमनभरमायोहै। बैठेनिशिचौकीदेत शिष्यसबसावधान आइगईगहिलईकांपै तनुनायोहै । देखतहीऋ षिजलधाराबहीनैननते बैननसोंकह्योजातकहाकछुपायोहै ॥२८॥

बनमें रहत दोहा॥ लाल पनन सों जेभरे, उघरे डांक लगाइ॥ कर्णफूल झूलतरहैं काननही में आइ ॥ १ ॥ सवैया ॥जाइये न जहां तहां संगतिकु-संगतिहै कयारके संगशूरभागिहैपै भागिहै । फूलनिके बास वश फूलनि की बासहोति कामिनीके संग काम जागिहै पै जागिहै । घरबसेघरबसे घरमें वैरागकहा मायामोहममतामें पागिहै पैपागिहै । काजर की कोठरीमें कै-सोहू सयानो बैठे काजर की एकरेख लागिहै पै लागिहै ॥ २ ॥ निशि बासर वस्तु विचारि करै सुख सांचहिये करुणाधनहै । अघनिग्रहसे ग्रह धर्म कथा सुपरिग्रहसाधनको गन है । कहि केशव भीतरयोगजगै अति ऊपर भोगनि में तनहै। मन हाथ सदा जिनके तिनको वनही घरहै घरही वनहै ॥ ३ ॥ रसरंगभरे॥ "रसो वै सरसं ह्येवायं लब्ध्वानंदी भवति इति" श्रु-तेः । कोइकहै विरक्तह्वैके रसरंगमें कैसेभरे जैसे शुकदेवजी चीरहरणकी लीलादुलराइ के गाई ॥ ४ ॥

डीबिहूनसोंहींहोतिमानितनगोतछोतपरी जायशोचसोतकैसेकै निकारिये । भक्तिकोप्रतापऋषिजानतनिपटनीकेकैऊकोटिविप्रता ईयापैवारिडारिये । दियोबासआश्रममेंश्रवणमैनादियो कियोसु-

निरोषसबैकीनीपांतिन्यारिये । शबरीसोंकह्योतुमरामदरशनकरौ मैंतौपरलोकजातआज्ञाप्रभुपारिये ॥ २९ ॥ गुरुकोवियोगहियेदारुणलैशोकदियोजियोनहींजाततऊरामआशालागीहै । न्हाइवेकोघाटनिशिजातिहीबुहारिसब भईयों अवारऋषिदेखिव्यथापागीहैछुयोगयोनेककहूंखीजतअनेकभांतिकरिकै विवेकगयोन्हानयहभागीहै । जलसोंरुधिरभयोनामाक्रमभारिगयोनयोपायोशोचतौहूजानैनअभागीहै ॥ ३० ॥ लावैवनबेरलागीरामकीऔसेरभल चाखैधरिराखैफिरमींठेउनयोगहैं। मारगमेंरहैजाइलोचनबिछाइकभूंआवैंरघुराइदृगपावैंनिजभोगहैं । ऐसेहीबहुतदिनबीतेमगजोवतही आइगयेऔचकसुमिटेसबशोगहैं ।ऐयैतन नूनताईआई सुधिछीपीजाइ पूछै आप शबरीकहांठाढेसबलोगहैं ॥ ३१ ॥

भक्तिकोप्रतापइतिहास ॥ शिवलिंगसहस्राणि शालग्रामशतानि च ॥ द्वादश कोटयो विप्राः श्वपचं त्वेकवैष्णवम् ॥ १॥ हरिभक्तिलतिकायाम् ॥ व्याधस्याचरणं ध्रुवस्य च वयो विद्या गजेंद्रस्य का,कुब्जायाःकिमुनामरूपमधिकं किं तत्सुदाम्नो धनं ॥ वंशः को विदुरस्य यादवपतेरुग्रस्य किंपौरुषं भक्त्या तुष्यति केवलं न तु गुणैर्भक्तिप्रियो माधवः ॥ २॥नामादियो ॥ षंचरात्रे । यावद्गुरुर्न क्रियते सिद्धिस्तावन्न लभ्यते ॥ तस्माद्गुरुर्हि कर्त्तव्यो नैव सिद्धिर्गुरुं विना ॥ ३ ॥ अभागी है छप्पय ॥ मत्सर क्रोध मिलि रह्यो गर्व गिरिपरयो जुगाजै ॥ क्रोध गोद हिय मध्य वृन्द मद मदन विराजै लोभ भँवर हृदकमलकोश भीतर तिहि आसन । कपट झूंठ झिलि मिलै शिष न मानत विश्वासन ॥ मन मोह कोह कंदर परयो अपरस ह्वै भीटन डरै । भनि लाल बाल हरिवंशहित बिन प्रसाद तमको हरै ॥

पूंछिपूंछिआयेतहांशबरीस्थानजहांकहां वहभागवतीदेखौंदृगप्यासेहैं । आइगईआश्रममेंजानिकैपधारेआपदूरहीतेसाष्टांगकरौचषभासेहैं । रवकिउठाइलईव्यथातनुदूरगईनईजैननीरझरीपरेप्रेमपासेहैं । बैठेसुखपाइफलखाइकैसराहेवेकह्योकहाकहौंमेरेमगदु

खनाशे हैं ॥ ३२ ॥ करतहैंशोचसबबैठेऋषिआश्रममें जलकोविगा रसोसुधारिकैसेकीजिये । आवतसुनेहैंबनपथरघुनाथकहूंआवैंजबक हैंयाकोभेदकहिदीजिये । इतनेहीमांझसुनीशबरीकेविराजेआनिगयो अभिमानचलोपगगहिलोजिये । आयखुनसाइकहोनीरकोउपाइक हौ गहौपगभीलिनीकेछुवौस्वच्छभीजिये ॥ ३३ ॥

इतनेही ॥ नीते ॥राज्यहीना नराः सर्वे बुद्धिहीना भवंति हि ॥ बुद्धिही- ना नराः सर्वे राज्यहीना भवंति हि ॥१॥ खाइकै ॥ पद ॥ मीठेमीठेचाखि चाखि बेरलाई भीलनी । कौनसी अचारवती नहीं रूप रंग रती जातिहू म कुलहीन बड़ी है कुचीलनी ॥ जूँठे फल खाये राम सकुचे न भावजा- नि तुमतौ प्रभु ऐसी कीनी रसकी शीलनी । कौनसी तपस्या कीनी वैकुंठ पदवी दीनी विमानमें चढ़ीजात ऐसी है सुशीलनी ॥ सांची प्रीति करै कोई अमरदास तरै सोई प्रीतिहीसो तीरगई गोकुल अहीरनी ॥ २ ॥ कही नीर नीर ॥ नीते । शठं प्रति शठं कुर्यादादरं प्रति चादरम्॥त्वया च लु विते पक्षे मया ते मुण्डितं शिरः ॥ ३ ॥ तापै तोताको अरु वेश्याको दृष्टांत ॥ ४ ॥ स्वच्छ भीजियै ॥ दोहा ॥ अधिक बढ़ावत आपते, जन महिमा रघुवीर ॥ शबरी पद रज परशते, शुध भयो सरिता नीर ॥ ५ ॥ हरि भगतनिको मिलत हैं, भगवतके यश हाथ ॥ हृदय बीचको फलत है, समु- झो आपहि आप ॥ ६ ॥ अभिमानी ऋषि छोंडि शबरीके गये ॥

जटायुकीटीका ॥ जानकीहरणकियोरावणमरणकाजगुनिसीता वाणीखगराजदौरेउआयोहै । बड़ीपैलड़ाईलीनीदेहवारिफेरिदीनी राखेप्राणरामसुखदेखिबोसुहायोहै ॥ आयेआपगोदशीशधारिदृग धारसीच्यो दईसुधिलईगतितनहूंजरायोहै । दशरथवतनानकियो जलदानयहअतिसनमाननिजरूपधामपायोहै ॥ ३४ ॥

अंबरीषजूकीटीका॥अंबरीषभक्तकीजुरीसकोऊकरैऔर बड़ोमतिबौर किहूंजातनहिंमाषिये। दुर्वासाऋषिशिषसुनीनहींकहूंसाधुमानिअपरा धशिरजटाखैंचिनाखिये ॥ लईउपजाइकालकृत्याविकरालरूपभूप

महाधीररह्योठाढ़ोअभिलाषिये । चक्रदुखमानिलैकृशानु तेजराख करीपरीभीरब्राह्मणकोभागवतसाखिये ॥ ३५ ॥

गोद शीश ॥ सवैया ॥ श्री रघुनाथजू लै खग हाथ निहारैं औ नैननि ते जल डारैं । टूकह्वै जात हैं सीता बिथाकै सो याकी सनेह कथाकै विचारैं ॥ तजि मोहिं चले लगि नीको तुम्हैं हमैं सौंह तिहारी है संग तिहारैं । योंकहि राम गरो भरिफेरि जटायुकी धूरि जटान सों झारैं ॥ १ ॥ लईगति दोहा ॥ मुये मरत मरिहैं सकल, घरी पहरके बीच ॥ लही न काहू आजुलौं,गीधराजकी मीच ॥ २ ॥ दई सुधि ॥ रघुवर विकल विहंग लखि, सो विलोकि दोउ वीर ॥ सियसुधि कहि सिय राम कहि, देह तजी मतिधीर ॥ ३ ॥ घरीजनावत ही रहैं, घरीभजे नहिं राम । घरीभई सब पुण्यकी, खरी सुमति बेकाम ॥ ४ ॥ रीखकोऊ ॥ नवमे ॥ स वै मनः कृष्णपदारविंदयोर्वचांसि वैकुंठगुणानुवर्णने । करौ हरेर्मंदिरमार्जनादिषु श्रुतिं चकाराच्युत सत्कथोदये ॥५॥ मुकुंदलिंगालयदर्शने दृशौ तद्भृत्यगात्रस्पर्शें गसंगमम् ॥ घ्राणंचतत्पादसरोजसौरभेश्रीमत्तुलस्यारसनातदर्प्यते ॥ ६ ॥ पादौहरेःक्षेत्रपदानुसर्प्पणे शिरोहृषीकेशपदाभिवंदने ॥कामंचदास्येनतुकामका-म्ययायथोत्तमश्लोकगुणाश्रयारतिः ॥ ७ ॥

भाज्योदिशादिशासबलोकलोकपालपासगयो नयोतेजचक्रचून कियेडारेहैं । ब्रह्माशिवकहीयहगहीतुमटेवबुरीदासनिकोभेदनहींजा-न्योवेदधारेहैं । पहुँचेवैकुंठजाइकह्योदुखअकुलाइ हायहायराखोप्रभु खरोतनजारे हैं । मैंतोहौंअधीनतीनिगुणकोनमानमेरे भक्तवात्स-ल्यगुणसबहीकोढारे हैं ॥ ३६ ॥ मोकोअतिप्यारेसाधुउनकीअगा-धमतिकरौअपराधतुमसह्योकैसेजातहै । धामधनवामसुतप्राणतनु-त्याग करेढरे मेरीओरनिशिभोरमोसोंबातहै । मेरेउनसंतबिनुऔरु कछुसांचीकहौंजाओवाहीठौर यातेमिटैउतपातहै । बड़ेईदयालस-दादीनप्रतिपालकरैं न्यूनतानधरैंकहूंभक्तिगातगातहै ॥ ३७ ॥

ब्रह्मावाक्य ॥ लक्ष्मीःप्राणाधिकाशश्वन्नास्तिकापिततोधिका ॥ भक्ता-

न्द्वेष्टिस्वयंसाचेत् तूर्णंत्यजतितांविभुः ॥ १ ॥ शिववाक्य ॥ महतिप्रलयेब्रह्मन्ब्रह्मांडेपिजलप्लुते ॥ नतत्रनाशोभक्तानांसर्वेषांचविशिष्यते ॥ ॥ २ ॥ हाय हाय ॥ पद ॥ हरि भक्तनिसों गर्व न करिबो । यह अपराध परमपदहूते उतारि नरकमें परिबो ॥ गजसिंहासन अश्व ऊंट चढि भवसागर नहिं तरिबो । हमकुलवंत धनीये भिक्षुक नीच न मनमें धरिबो ॥ यह मत भली नहीं आपुन बड नर कूकर अनुसरिबो । हरिसेवी यशगाइक कोलघु मानत नेकुनडरिबो।अपनेदोष निपटआधेपर दोषकुतर्कनि जरिबो॥ वृथा चातुरीवाद जनम ते भले गर्भमें गरिबो । खानपान ऐडान भले जो बदन पसारि न मरिबो ॥ श्री कृष्णदास हित धरि विवेक चित साधन संग उबरिबो ॥ ३ ॥ आधीन नवमें ॥ अहं भक्तपराधीनोह्यस्वतंत्र इवाद्विजः ॥ साधुभिर्ग्रस्तहृदयो भक्तैर्भक्तजनप्रियः ॥ ४ ॥ धामधन भागवते ॥ येदारागारपुत्राप्तान्प्राणान्वित्तमिदंपरम् ॥ हित्वामांशरणं याताःकथं तांस्त्यक्तुमुत्सहे ॥ ५ ॥ नाहमात्मानमाशासे मद्भक्तैःसाधुभिर्विना॥ श्रियंचात्यंतिकींब्रह्मन् येषांगतिरहंपरा ॥ ६ ॥ तीननामशरणागतपालक आरतनाशन ब्रह्मण्यदेव ॥ भलोगर्भमें गरिबो ॥ ७ ॥

ह्वैकरिनिराशऋषिआयोनृपपासचल्योगर्वसोंउदासपग गहैदीन भाष्योहै । राजालाजमानिमृदुकहिसनमानकरयोढरयोचक्रऔर करजोरिअभिलाष्योहै । भक्तिनिशिकामकहूंकामनानचाहत है चाहत है विप्रदूरिकरो दुखचाख्योहै । देखिकैविकलताईसदासंत सुखदाई आईमनमांझसबैतेजढांपिराख्योहै ॥ ३८ ॥ एकनृपसुतासुनिअंबरीषभक्तिभावभरयोहियभावऐसोबरकरिलीजिये । पितासों निशंकह्वैकेकहीपतिकियोमैंहीं विनय मानिमेरी वेगिचिट्ठीलिखिदीजिये । पातीलैकैचल्योविप्रछिप्रवाहिपुरी गयोनयोचावजान्योऐपैकै सेतियाधीजिये । कहौतुमजाइरानीबैठीसत आइमोको बोल्योनस हाइप्रभुसेवामांझभीजिये ॥ ३९ ॥

गर्भसोंउदास ॥ पद ॥ हमभक्तनिसोंभूलिबिगारी । जान्योंनहीं

इतोबल इनको ये हरिके अधिकारी । कमल पराग भँवरभल जानैं वहै वासना विहारी । निपट नालके निकट मेडुका भयो कीचकोचारी । काम क्रोध मद अतिशय जड़मति तप बल बढ़्यो बिकारी । अंगी-कारकिये हरि इनको यह कछु हम न विचारी । दुर्वासा अम्बरीष आगे करी दीनताभारी । अग्रदास अभिमान पोटरी ऋषिशिरते तबडारी ॥ १ ॥ निशंक हैकै ॥ सवैया ॥ चन्दन पंक गुलाबको नीर सरो-जकी सेज उठाइ धरौरी । तूलभयो तनुजात जरेउ यह वैरी दुकूल उता-रि धरौरी । शंभुजू झूंठेसबै उपचार यो माह तुषारके भारपरौरी । लाज-केऊपर गाज परै ब्रजराज मिलैं स्वइलाजकरौरी ॥ २ ॥ जरिजाहु जोलाज सो काजबिगारे ॥ ३ ॥ तियाधीजियेतियाधीजियेके सरानी की लौंडी पण्डितको दृष्टान्त चोरसाहूकारको दृष्टान्त ॥ दो व्याह।का न्याय ॥ नखीनांचनदीनांचशृंगिणांशस्त्रपाणिनाम् । विश्वासोनैवकर्त्तव्यः स्त्रीषुराजकुलेषुच ४ दृष्टांतनानकशाहको ॥ ४ ॥

कहीनृसुतासोंजोकीजियेयतनकौनपौनजिमिगयो आयोका मनाहींवियाको । फेरिकैपठायोसुखपायोमैंतौजान्योवह बड़ोधर्मज्ञ वाकेलोभनहींतियाको।बोलीअकुलाइमनभक्तिहीरिझाइलयो कि-योपतिमुखनहींदेखो औरपियाको । जाइकैनिशंकयहबात तुममेरी कहौचेरीजोनकरौतौपैलेवौपायजियाको॥ ४ ॥कहीविप्रजाइसुनि चाइभहराइगयोदयौलैखड़गयासोंफेरिफेरिलीजिये।भयोजूबिवाहउ तसाहकहूंमातन।हींआईपुरअंबरीष देखिछबिभींजिये । कह्योनवमं-दिरमेंझारिकैबसेरादेवोदेहुरावभोग विभवनानासुखकीजिये । पूर बजनमकोऊमरेभक्तिगंधहुतियातेसनबंधप।यो यहैमानधीजिये ॥ ॥४१॥रजनीकशेषपतिभवनमेंप्रवेश कियो लियेप्रेमसाथढिगमंदि रकेआइये।वाहरीटहलपात्रचौकाकरिरीझि हीगही कौन जाइजामे होतनलखाइये । आवतहीराजादेखिलगैननिमषकहूं कौनचोरआयो

मेरीसेवालेचुराइये । देखीदिनतीनिफिरिचीन्हिके प्रवीनकही ऐसो मनजोपेप्रभुमाथेपधराइये ॥ ४३ ॥

बाली अकुलाई ॥ ऋषभदेववाक्यम् ॥ गुरुर्न सःस्यात् स्वजनो नसस्यात् पिता न स स्याज्जननी न सा स्यात्॥देवो न स स्यात् न पतिश्चस स्यान्न मोचयेद्यःसमुपेतमृत्युम् ॥ १ ॥ पतिभवनमें ॥ लक्ष्मीवाक्य ॥ सवैपतिःस्यादकुतोभयः स्वयं समंततः पाति यातुरंजनम् । सएकएवतरथ मिथोभयं नैवात्मलाभादधि मन्वतेपरम् ॥ २ ॥ बिनाटहल तौ भक्ति प्राप्ति नहीं होइहै अनेक उपायकरौ बिनाहरिकी कृपाकहौ कहांते आवै जैसे रसयनीकी रसायनि बिना टहल नहीं पावै जब टहल करिकै प्रसन्न करै तब मिलै ॥ ३ ॥

लईबातमानिमानोमंत्रसैसुनायोकान होतहीबिहानसेवानीकीपधराईहै । करतिशृंगारफिरअपहीनिहारिरहै लैहेनहींपारदृगझरीसीलगाई है । भईबढ़वारिरागभोगसों अपारभावभक्तिविस्ताररीतिपुरीसबछाईहै । नृपहूसुनतअबलागीचोपदेखिबेकी आयोततकालमतिअतिअकुलाई है॥ हरेंहेंपावधरैंपौरियानमनेकरैंखरैंअरबरैंकबदेखोभागभारीको । मयेचलिमंदिरलैंसुंदरनसुधिअंगरंगभीजरहीदृगलाइरहेझारीको । बीणलैबजावेगावैलालनरिझावै त्योंत्योंअतिसनीभावैकहैधन्ययहघरीको । द्वारपैनरह्योजाइगयेललचाइढिग भईउठिठाढ़ादेखिराजागुरुहरीको ॥ ४४ ॥ वैसहीबजाओबीनतानानिनवीनलैकैझीनसुरकान परैजातमतिखोइये । जैसे रंगभीजिरहीकहोसोनजातिमापैएथैमननैनचैनकैसेकारिगोइये ॥ करिकैअलापचारोंफेरिकैसँभारितानआइगयो ध्यानरूपताहीमाँझभोइये । प्रीतिसरूपभई रातिसबबीतिगईनईकछूरीतिअहोजामेंनहींसोइये ॥ ४५ ॥

लईबातमानि ॥ गीतायाम् ॥ जन्मांतरसहस्रेषुतपोध्यानसमाधिभिः ॥ नराणांक्षीणपापानां कृष्णे भक्तिः प्रजायते ॥ रीझिये ॥ पंचरात्रे ॥ नाहं

हूंसामिवैकुण्ठे योगिनांहृदयेनच ॥ मद्भक्तायत्रगायन्ति तत्रतिष्ठामिनारद ॥ २ ॥ भईउठिठाढीन्याये ॥ नराणांचमराधिपः ॥ ३ ॥ एकउपदेश कर्तागुरु ॥ एक पति परमेश्वर सो तीन नाते जानिकै उठी नहीं सोइये रोगी भोगी योगिया वपु जेही पर काज ॥ शमन इनके हगन में नींदें आवे लाज ॥ नासिकेत ॥ एकाक्षरप्रदातारं यो गुरुंनैव मन्यते । श्वानजन्मश तंगत्वाचांडालेष्वभिजायते ॥ ४ ॥

बातसुनोरानीऔरराजागयेनईठौर भईशिरमौरअबकौनवाकोस-रिहै । हमहूंलैसेवाकरैपतिमतिवशकरैंधरैंनितध्यानविषयबुद्धिराखी धरिहै ॥ सुनिकैप्रसन्नभये अतिअंबरीषईशलागीचौफूफैलगईभक्ति घरघरहै । बढैदिनदिनचावऐसोईप्रभावकोईपलटैसुभावहोतआनंद कोभरहै ॥ ४६ ॥ टीकाविदुरजीकी ॥ न्हातिहीविदुरनारिअंगनि पखारिकरिआइगयेद्वारकृष्णबोलिकै सुनायोहै । सुनतहीसुरसुधि डारिलैनिदरिमानों राख्योमदभरिदौरिआनिकै चितायोहै । डारि दियोपातपटकटिलपटाइलियोहियोसकुचायो वेसवेगिही बनायोहै । बैठीढिगआय केराछीलिछीलकाखवायआयोपतिखिज्योदुखकोटि गुणोंपायोहै ॥ ४७ ॥

पलटै ॥ तापै दृष्टांत राजाकी बेटीको अरु फकीरको ॥ १ ॥ बीस इहु रसिकहैजेहैं ॥ पालपरैं ज्यों आव मिटै हैं ॥ १ ॥ आइगये ॥ श्लोक इंद्रप्रस्थं वृकप्रस्थं जयंतं वारणावतम् ॥ देहिनश्चतुरोग्रामान् पंचमं कंचिदेवतु ॥ २ ॥ विनायुद्धेनदातव्यंसूच्यग्रं नैवकेशव ॥३॥ यद्वाह्ययंमंत्रकृद्वोभगवा नखिलेश्वरः ॥ पौरवेंद्रगृहंहित्वाप्रविवेशात्मसात्कृतम् ॥ ४ ॥ ॥कवित्त ॥ नाहीं नाहीं करैं थोरो मांगे सब देनकहैं मंगनको देखि पटदेत बारबार हैं । जिनके मिलेते भली प्रापतिकी घरीहोति ऐसे करतार किये ऐसे निरधारहैं ॥ भोगी ह्वैरहत बिलसत अवनीके मध्य कनकन जोरैंदान पाठ परिवारहैं । सेनापति समझि विचारिदेखौ चारदाता अरु सूम दोनों कियेएकसारहैं ॥ ५ ॥ दुर्योधनघर त्यागतभये ॥ अपनोमानि विदुरकेगये ॥ ६ ॥

बोलिकै ॥ दोहा ॥ सुधि सुरताल अरु तानकी, रह्यो न सुर ठहराइ ॥ येरी राग बिगरिगयो, बैरी बोल सुनाइ ॥ ७ ॥ रही दहेंड़ी ढिग धरी, भरी मथनियां वारि। फेरतकर उलटी रई, नई बिलोवनहारि ॥ ८ ॥ कवित्त ॥ सोवतसमाधिते जगाइ दिये मुनिगण पशुहू चकितचित्त करै नाचरनको। गाइनते बछरा छुटाये जे पिवतक्षीर अद्भुत कथा तेरी कहां लौं बरनको ॥ आन हथकरी गोपी सबै हैं डरनि डरी तेऊ तहां परीते गई धरा धरनको। बांसुरी मैं तोहिं पूछौं बारबार तूहै लागी लालके अधर में अधर मैं करनको ॥ ६ ॥ कवित्त ॥ फूली सांझके शृंगार सूही सारी जुहीहार सोने सों लपेटी गोरी गौने कीसी आईहै। आलम न फेरफंद जानेकछू चंद्रमुखी दीपक बरावनको नंदभवन लाईहै। ज्योतिके जुरतही में जुरेनैना दुरेजाइ चातुरी अचेतभई चितयो कन्हाई है। बाती रही हाती छबि छाती रस माती पूर पागुरी भई है मति आंगुरीलगाई है ॥ १ ॥ गीतायाम् ॥ पत्रं पुष्पं फलं तोयं योमेभक्त्या प्रयच्छति। तदहं भक्त्युपहृत-मश्नामि प्रयतात्मनः॥ २॥सवैया॥सूहीसीसारी सुहाईहै सांझमें नैननमांझ मि-जाजमईहै। कोहै कहांकीहै कौनकीहै घर कौनकेआई नवेली नई है। ठौरठगे उमँगेसे ममारष रीझिरहे आलीभेंटभई है। कोवलि या गलियामें गई सुदिया लेगई सो जिया लेगई है ॥ ३ ॥ प्रेमको विचार ॥ तत्सुख स्यसुख ॥ दोहा ॥ पूजि भवानी भाइसों, मांगत यह वरदेहु ॥ ब्रजमें सुं-दर सांवरो, हमसोंकरै सनेहु ॥ ४ ॥ सवैया॥ हमकूं तुम एक अनेक तुम्हैं उनहींके विवेक बनाइ बहौ। इतचाह तिहारी तिहारी उतै घर बाहर प्रेम सदा निबहौ। मनभावै ममारष सोई करौ अनुराग लता जिन बोयद-हौ। घनश्याम सुखीरहौ आनँदमें रहौ नीकेरहौ उनहींकेरहौ ॥ ५ ॥ नाकचढै सीवीकरै, जितैछबीलो छैल॥ फिरि फिरि भूल वहै गहैं, पियकक-रीली गैल ॥ ६ ॥ ततवेत्तातिहुँलोकमें, भोजन किये अपार ॥ कैश-बरी कै विदुरघर, रुचिमानीहै बार ॥ १ ॥

प्रेमकोविचारिआपलागेफलसारदेनचैनपायोहियेनारीबड़ी दुख दाईहै। बोलेरीझिश्यामतुमकोनोबडोकामऐपै स्वादअभिराम

वैसीवस्तुमेंनपाईहै । तियासकुचाइकरकाटिडारौंहाइ प्राणप्यारे कोखवायछीलिछीलकानभाईहै ॥ हितहीकीबातदोऊकोऊपारपावै नाहिं नीकेलैलड़ावैसोइजानैयहगाईहै ॥ ४८ ॥

टीका॥ सुदामाजूकी ॥ बडोनिशिकामसेरचूनहूंनधामढिगआईनिज बामप्रीतिहरिसोंजनाईहै। सुनिशोचपरेउहियोखरोअरबरेउमन गाढो लैकैकरेउ बोल्योहांजुसरसाईहै। जावोएकबारवहवदननिहारिआवो जोपैकछुपावोलावोमोकोसुखदाई है। कहीभलीबात सबलोकमेंकलं कहैहै जानीपति याहीलिये कीनो मित्रताई है ॥ ४९ ॥

मित्रताई (कवित्त) बोल्यो मुसिकाइ नारि बावरी कहांधौं आई मोतनिपै मांगे सो कपूतनिको रावहै । गिरिहूंतेभारे ऐसे दारिद हमारे भाग दई फिटकारे तिन्हैं कहौ कहांठामहै । खैबेको नरोटी ऐसी आपदाहै मोटी सात थेगरीकछोटी सो सुदामा मेरो नामहै । जौलौंगावैंश्यामघन मांगेपावैं भीखकन तौलौं मानिलीजै शिरछत्रनकी छामहै ॥ २ ॥ आवतिहै लाज भारीजातब्रजराजजूपै वसनसमाजदेखिखरोमरिजाइये । एकहीपिछौरीसोतो ठौरठौरफाटिरही ओढ़ियेनिशाको जासों प्रातउठि न्हाइये । भेंटऐसी नाहीं जोलैजाइये भगवंतजूपै अंतकभईहैनारि कौलौंसमुझाइये । देहपरमांस जौलोंनासिकामेंश्वास तौलौं बडोउपहासमांगि मीत ना सताइये ॥ ३ ॥

तियासुनिकहैकृष्णरूपक्योंनचहैजाहिदहैदुखआपहीसोंवचनसु- नायेहैं । आईसुधिप्यारेकीविचारैमतिटारैतबधारेपगमगझूमिद्वा रावतीआयेहैं । देखिकैविभूतिसुखउपज्योअभूतकोऊ चल्योमुख माधुरीकेलोचनतिसायेहैं । डरपति हियो ड्योढ़ी लांघिमनगाढ़ो कियोलियो करचाहतबतहांपहुँचायेहैं ॥ ५० ॥ देख्यो श्याम आयो मित्र चित्रव तरहेनेकुं हितकोचरित्र दौरि रोयगरेलागे हैं।मानोएकत नुभयो लयोऐसे लाइ छाती नयोयहप्रेम छुटै नाहिंअंगपागेहैं।आईदु बराईसुधिमिलनिछुटाई ताते आनै जलरानीपगधोये भागजागेहैं।सेज पधराइगुरुचरचाचलाइसुखसागरबढ़ाइआइअतिअनुरागेहैं ॥ ५१ ॥

आईसुधि ॥ सवैया ॥ हेकरतारहौं तोसोंकहों कबहूं जनिदीजिये काहूकेटोटो। और लिखो जिनि काहूके भागमें मालके काजे महीपनि मोटो। तूहू तो जानतहै अपनेजिय मांगिबेते कछु और न खोटो। जोगथोमांगन तूबलि द्वारतो याहीते ह्वै गयो बावनछोटो ॥ १ ॥ मति मांगि मतिमांगि जाको नाम मांगना २ मनगाढोकियो ॥ दोहा ॥ मोमरने को नेमहै, मरौंतौ हरिकेद्वार ॥ कबहूं तो हरिबूझिहैं, कौन मऱ्यो दरबार ॥ ३ ॥ सवैया ॥ कैसे बिहाल बिवाइन सों पग कंटक जाल गडे पुनिजोये। हाय महादुख पायो सखा तुम आयेइतै न कितैदिन खोये। देखि सुदामाकी दीनदशा करुणा करिकै करुणानिधि रोये। पानीपरातको हाथ छुयो नहीं नयननके जलसों पगधोये ॥ ३ ॥

चिरवाछिपायेकांखपूछैंकहालायेमोको अतिसकुचायेभूमितकैं दृगभीजेहैं। खैंचिलईगांठिमुठीएकमुखमांझदई दूसरीहूलेतस्वादपायोआपरीझेहैं। मह्योकररानीसुखसानोप्यारीवस्तुयहै खावोबांटिमानौश्रीसुदामाप्रेमधीजेहैं। श्यामजूविचारिदोनीसंपतिअपार बिदाभयेपैनजानीसारबिछुरनछीजेहैं ॥ ५२ ॥

दियेमुखमांझ ॥ कवित्त ॥ हूलहियरामें काम कामिनि परीहैरौर भेंटतसुदामैं श्यामैं बनैना अघातही। शिरोमणि ऋद्धिन् में सिद्धिनमें शोर परेउ काहिधौं बकसि ठाढ़ी कांपै कमलातही। नरलोक नाग लोक नगलोक नागलोक थोकथोक कांपैंहरि देखिमुसकातही। हालो परेउ हालन में लालो लोकपालन में चालो परेउ चक्रनिमें चिरवा चबातही ॥ १ ॥ रमाकर पकरेउ हो याहीते सुदामा कहै कहां तुच्छतंदुल कहैं जगत गुसाईं हैं। यहू न जानै दीन क्षीण तीनि पैसा दैकै. सुखंतीनिलोक बिभव मिलिकि करिपाई है। हरि सकुचाइ कछु द्विजको मैं दियो नाहिं ताते यासों कहैं मेरी बड़ी हीनताई है। दीनोहौं सुदानताको ब्राह्मणी बिना न जानै जाके धन यौवन पुलोमजा लजाई है २ बिदाभये कवित्त ॥ बिदाकरि दीनो द्विज प्रगट न कीनो कछु भेंटि भुज चल्यो

मनमें विषाद भायोहै । याहीते उदास प्रभु पास न रहनपायो याहीते सु-खींहौं मोहिं कछु न दिवायोहै । एक दुखभारी मेरी ब्राह्मणी है खुट-सारी ताहूको तौ उत्तरु मैं सरस बनायो है । मैं जुनिधिपाईही सो राह में छिनाई काहू मोबिना हमारो सब कुटुँब बुलायो है ॥ ४ ॥

आयनिजग्रामवहैअतिअभिरामभयो नयोपुरद्वारकासोदेखिम-तिगईहै । तियारंगभीनीसंगतरुनसहेलीलीनी कीनीमन,हारियों प्रतीतिउरभईहै । करैहरिध्यानरूपमाधुरीको पानवहै राखे निज प्राणजाके प्रीतिनितनई है । भोगकी नचाहऐसे तननिरवाहकरै ढरै सोईचाल सुखजालरसमईहै ॥ ५३ ॥

मतिगई है ॥ कवित्त ॥ याही ते जनम भरिगयो नहीं श्यामजूपै मेरोकह्यो वचन पँडाइनि नहिंमानै हो । जाहुजाहु लै रहौ न मानति अनाजखाइ ऐंड़ी मैंड़ी बातैं तौ गोविंद की न जानै हो । द्रौपदी को चीर दये गोपिनके छीनिलये ग्राहते बचायो गजरंगभूमि भानैहो । ब्राह्मणी समेत कहूं खेतते उखाऱ्यो घर यातहूं बचायो वाको कह्यो मैं न मान्यो है ॥ १ ॥ चौतरा उजारि काहू चामीकर धामकीन्हों छानितौ छवाय डारी छाई चित्रसारीजू । जौहूं होतो घर तौपै काहेको बननदेतो होन-हार ऐसी खोटी दशाही हमारीजू । हौंतो होतो काहल हलाहल दिखाय करि जाहल उठाइ देतो देह मुखगारीजू । लोभकी सवारी दुखभूखकी दलनहारी भैयाबनवारी काहू रोऊ मारि डारीजू ॥ २ ॥ तियारं-गभीनी । आलिनके यूथ ज्यों ज्यों आदरसों बोलैं आइ त्यों त्यों डर-पाइ मग आगेको नदेतहै । पंडित न ज्योतिषी न वेदवा न कौतुकी हौं रानी जू बुलावति है कहौ कौन हेतहै । द्वारकाके राजाते मिलेते घर छीनो गयो रानी कहा छीनैगी फल्यो न मेरो खेतहै । मोसों कहा नातो तुम जाइ कहौ वाते मोहिं भूलि ना सुहातो कोऊ ऐसे पर लेतहै ॥ ३ ॥ नईहै॥दोहा जे गरीब सों हितकरैं, धनि रहीम वे लोग । कहा सुदामा बापुरो, कृष्ण मि-त्रता योग ॥ ४ ॥ भोगकी न चाह ॥ गीतायां ॥ युक्ता हारविहारस्य

युक्तचेष्टस्य कर्मसु ॥ युक्तस्वभावबोधस्य योगो भवति दुःखहा ॥ ५ ॥

टीका चन्द्रहासकी ॥ हुतोनृपएकताकोसुतचन्द्रहासभयो परी योंविपतिधाइलाईऔरपुरहै । राजाकोदिवानताके रहीघरआनि-बाल आपनोसमानसंगखेलेरसटरहै। भयोब्रह्मभोजकोई ऐसोईसं-योगबन्यो आयेवैकुमारजहां विप्रनिकोसुरहै। बोलिउठेसबै तेरी सुताकोजुपतिहै यहुबोलचाहैजानीसुनिगयोलाजघुरहै ॥ ५४ ॥ पर्‍योशोचभारीकहाकरोयोंविचारीअहोसुतजोहमारीताकोपतिऐसो चाहिये । डारोंयाहिमारियाकोयहैहैविचारतबबोलेनीचजनकह्यो मारोहियेदाहिये । लैकैगयेदूरिदेखिबालछबिपूरहमजौनपरोधूरि दुखऐसोअवगाहिये । बोलेअकुलाइतोहिंमारेंगेसहाइकौनमांगोएक बातजबकहौंतबचाहिये ॥ ५५ ॥

कवित्तआदिपुराणे॥यस्य तुष्टो ह्यहं पार्थ वित्तं तस्य हराम्यहम्। करोमि बंधुविच्छेदं सर्वकष्टेन जीवितम्॥ १॥तस्यापि येन संतुष्टो ददामि अव्ययं पदम् ॥ २ ॥ दोहा ॥ तुलसी जो होतव्यता, प्रगटै तैसी तौन । करशा-यलके सींगको, कहो उमेठै कौन ॥ ३ ॥ वाहिपै आदिपुराणे ॥ यदिवा-तादिदोषेण मद्भक्तोमांचविस्मरेत् ॥ तर्हिस्मराम्यहंभक्तंसयातिपरमांगतिं ॥४॥ गीतायां ॥ ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन् ॥ यः प्रयाति त्यजन्देहं स याति परमां गतिम् ॥ ५ ॥ अंतकाले च मामेव स्मरन् मुक्त्वा कलेवरम्॥ यः प्रयाति स मद्भावं याति नास्त्यत्र संशयः॥६॥यंयं चापि स्मर-न् भावं त्यजत्यंते कलेवरम्॥तंतमेवेति कौंतेय सदा तद्भावभावितः ॥ ७ ॥ सहाय॥छप्पय॥जिन राखो ऋषि यज्ञ जनक नृपको पनराखो। जिनराखो पितबोल काक कपटि जिनराखो। जिनराखे ऋषि सकल विकल दंडक वन वासी। जिनराखो सुग्रीव वसत गिरि त्रसत उदासी । अनुज बिभीषण पगपरत लंकदई सनमानिकै॥सुप्रेम सखापति राखिहैं दीनबंधु जन जानिकै ॥

मानिलीन्होंबोलिसोकपोलमध्यगोलएकगंडकीकोसुतकाटिसेवा नोकीकोनीहै। भयोतदाकारयोनिहारिसुखभारभरिनैननिकोकोरही

सोंआज्ञावधदीनीहै ।गिरेमुरझाइदयाआइकछूभाइभरेढरेप्रभुओरम-ति आनँदसों भीनीहै। हुतीछिठीआँगुरीसुकाटिलईदुखनहो भूषणही-भयोजाइकहीसांचचीन्हीहै ॥ ५६ ॥ वहैदेशभूमिमेंरहतलघुभूप औरऔरसुखसबैएकसुतचाहभारीहै । निकस्योविपिनआनिदेखि पाहिमोदमानिकीनीखगछांहघिरी मृगीपांतिसारीहै । दौरिकैनिशं कलियोपाइनिधिरंकजियो कियोमनभायोसोबधायोश्रीवारीहै।कोऊ दिनबीतेभयेनृपचितचीतेदियोराजकोतिलकभावभक्तिविस्तारोहै ॥ ॥ ५७ ॥ रहेजाकेदेशसोनरेशकछुपावैनाहिं बांहबलजोरिदियोस-चिवपठाइकै । आयोघरजानिकियो अतिसनमानसोंपिछानि लियो वहेबालमाऱ्योछलछाइकै । दईलिखिचिट्ठीजाहुमेरेसुतहाथदीजे कोजैवहीबातजाकोआयोलैलिखाइकै । गयेपुरपासबागसेवामति पगकरी भरीदृगनींदनेकुसोयोसुखपाइकै ॥ ५८ ॥

आज्ञावध ॥ दोहा ॥ तुलसीतेरहसैवरष, यद्यपिलगीसमाधि ॥ तदपि-भांडकी नागई,दुष्टवासनाव्याधि ॥ १ ॥ बाहुबल ॥ नीते ॥ उ-त्खातान् प्रतिरोपयन्कुसुमितांश्चिन्वन् लघून्वर्द्धयन् उत्तुंगान्नमयन्नतान् समुदयन् विश्लेषयन् संहतान् । क्षुद्रान् कंटकिनो बहिर्निरसयन् म्लानान् समुत्सेचयन्मालाकार इवप्रयोगनिपुणो राजा चिरं नंदति ॥ २॥ कवित्त ॥ छोटेछोटेगुलनि को शूरनिकी वारिकरो पातरेसे योधातिन्हैं पानीदैदैपालि-बो।। नीचेगिरिगये तिन्हैं दैदैटटके ऊँचेकरौ ऊंचेबढिजाइँ ते जरूरकाटिडा-रिबो । फूलेफूलेफूल सबबीनिइकठौरेकरो घनेघनेरूख एक ठौरते उखारिबो। राजनिको मालनीको नितप्रतिदेवीदास चारिघरीरातिरहे इतनो बिचारिबो ॥ ३ ॥ तापै राजाको अरु गांडेको दृष्टांत ॥ ४ ॥ माथोकाटिवेते अंगुली कटी ॥ ५ ॥ चिट्ठी ॥ श्लोक ॥ विषमस्मै प्रदातव्यं त्वया मंदनशत्रवे ॥ कार्याकार्यं न कर्त्तव्यं कर्त्तव्यं किल मेत्प्रियम् ॥ १ ॥

खेलतिसहेलिनिमोंआइवाहीबागमांझकरिअनुरागभईन्यारीदेखि रीझिये । पागमतिपातीछबिमातीझुकिखैंचलईबांचीखोलिलिख्यो

विषदैनपिताखीझिये । विषयासुनामअभिरामदृगअंजनसो विषया-
बनाइमनभाइरसभीजिये । आइमिलीआलिनमें लालनकोध्यानहिये
खियेमदमानोगृहआइतबधीजिये ॥ ५९ ॥

नामअभिराम ॥ मैंजानोंमेरोनाम सबते बुरोहै क्योंकि काहूको कन-
कमंजरी काहूको रूपलतापररिसैं अबजाती विषयाही अभिराम हैं याते यह
बात बनीघरी एक ।। कुण्डलिया ॥ हरिसन्मुख सुख पाइये, विमुख भये
दुख होय । विमुख भये दुख होइ देखि दशग्रीव विभीषण । देखीसुरुचि-
सुनीति देखिप्रह्लादपितातन । देखि दक्षको यज्ञ देखि पृथु वेणु विनीता ।
कंसजनकसुतअंध देखि पांडव जगजीता । अगर मुकर प्रतिबिम्बमें अपनो
आननजाइ । हरि सन्मुख सुख पाइये ॥ १ ॥ श्लोक ॥ यस्यास्ति भक्ति-
र्भगवत्यकिंचना सर्वै गुणास्तत्र समासते सुराः ॥ हरावभक्तस्य कुतो महद्गुणा
मनोरथेनाप्यतिधावतोबहिः ॥ २ ॥ तापैदृष्टांत हपसीके दर्पणको ॥ ३ ॥

उव्योचंद्रहासजिहिपासलिख्योलायोजायो देखिमनभायोगाढ़ेग-
रेसोंलगायोहै । दईकरपातीबातलिखीमोंसुहातीबोलिविप्र घरीएक-
मांझव्याहउघरायोहै ॥ करीऐसीरीतिडारेबड़ेनृपजीति श्रीदेतगई-
बीतिचावपारपैनपायोहै । आयोपितानीचसुनिघूमिआईमीचमानों
बानोलखिदूलहकोशूलसरसायोहै ॥ ६० ॥ वैव्योलैइकांतसुतकरी-
कहाभ्रांतयह करेउसो नितांतकरपातीलैदिखाईहै ॥ बांचिआंचला-
गीमैंतोबड़ोईअभागी ऐयेमारौमतिपागीबेटीरांड़हूसुहाईहै । बोलिनी-
चजातिबातकहीतुमजावोमठआवैतहांकोऊमारिडारौमोहिंभाईहै ।
चंद्रहासजूसोंभाष्योदेवीपूजिआवोआजु मेरीकुलपूजिसदारीतिचलि-
आईहै ॥ ६१ ॥ चलेईकरनपूजादेशपतिराजाकहीमेरेसुतनाहिंरा-
जवाहीकोलैदीजिये । सचिवसुवनसोंजुकह्योतुमलावोजावोपावोनहीं
फेरिसमयअबकामकीजिये ॥ दौरेउसुखपाइचाइमगहीमेंलियोजाइ-
दियोसोपठाइनृप रंगमाहिंभीजिये । देवीअपमानतेनडरोसनमान-
क्रोजातमारिडारेउयासोंभाष्योभूपलीजिये ॥ ६२ ॥

शूलसरसायो ॥ कवित्त ॥ भावनि बनाये जे बधाये ते सुनाये सुनि अतिही रिसाये दुखसागर बुडायोहै । नगर नगारे नगहूते गूंजैं भारेसुनि याके शिर मानों काहू आरासो फिरायो है ॥ आंगनमें जातिहि सुअंगनि में आगि लागी अंगना के करसों सुकंकना खुलायोहै । पाती लेत हाथही सुमारीशिर माथही सुविषयाके बांचे विषयाके लपटायो है ॥ १ ॥

काहूआनिकही सुतमारेउतेरोनीचनिने सींचनशरीरजलदृगझ-रीलागीहै । चल्योततकालदेखिगिरयो ह्वैविहालशीशपाथरसोंफो रिमरयोऐसोहीअभागीहै । सुनिचंद्रहासचलिवेगिमठपासआयो घ्यायेपगदेवताकेकाटेअंगरागीहै । कह्योतेरोदोषीयाहिक्रोधकरिमा-रेउमैंहींउठैंदोऊदीजैदानाजियैबड़भागीहै ॥ ६३ ॥ करयोऐसोराज सबदेशभक्तराजकरेउ ढिगकोसमाजताकीबातकहाभाषिये । हरि-हरिनामअभिरामधामधामसुनै औरकामनाहिंसेवाआतिअभिलाषि-ये ॥ कामक्रोधलोभमदआदिदैकैदूरिकरैंजियैनृपपाइऐसोनैननिमें राखिये । कहीजितीबातआदिअंतलौंसुहातिहिये पढ़ैउठिप्रातफल-जैमुनिमेंसाखिये ॥ ६४ ॥ टीकासमुदाइकी ॥ कौषारवनामसोब-खानाकियोनाभाजूनेमैत्रेअभिरामऋषिजानिलीजैबातमें । आज्ञाप्रभु दईजाहुविदुरहैभक्तमेरोकरौउपदेशरूपगुणज्ञातगातमें ॥चित्रकेतुप्रे-मकेतुभागवतख्यातजातेपलटयोजनमप्रतिकूलफलघातमें। अक्रूर-आदिध्रुवभयेसबभक्तभूपउद्धवसेप्यारेनकिख्यातपातपातमें ॥६५॥

बेटीरांडहू सुहाइ ॥ दोहा ॥ अगर दुष्टताजीवकी, शिर तजि अपयश लेइ ॥ सन्तन खाल कढ़ाइके, परतन बंधन देइ ॥ २ ॥ बडभागी है दोहा ॥ दुष्ट न छांडै दुष्टता, सज्जन तजै न हेत ।। कज्जल तजै न श्याम-ता, मोती तजै न श्वेत ॥ १ ।। सज्जन ऐसो कीजिये, जैसो आको दूध ॥ अवगुण ऊपर गुण करै, तौ जानै कुल शुद्ध ॥ २ ॥ भक्तराज॥राजनीते अश्वायांजायते वत्सः मिथ्यावदतिभूपतिः ॥ वस्त्रंजलाग्निनादग्धंयथाराजा तथाप्रजा ॥ ३ ॥ पलटयोजन्म ॥ दोहा ॥ जामरने सों जग डरै, सोमेरे

आनंद ।। कब मरिहौं कब भेंटिहौं, पूरबपरमानंद ।। ४ ।। वृत्रासुरवधोपेतं यदि भागवतमिष्यति ।। ५ ॥

कुन्तीकरतूतिऐसीकरैकौनभूतप्राणी मांगतविपतिजासोंभाजैं सबजनहैं ॥ देख्योमुखचाहौंलालदेखेबिनहियेशाल हूजियेकृपालनहींदीजैबासबनहैं । देखिबिकलाइप्रभुआंखिभरिआई फेरिघरहीकोलाई कृष्णप्राणतनधनहैं । श्रवणवियोगसुनि तनकनरह्योगयो भयोवपुन्यारो अहोयहीसांचोपनहैं ॥ ६६ ॥

मांगतविपति ॥ भागवते । विपदः सन्तु नःशश्वत्तत्रतत्र जगद्गुरो । भवतो दर्शनं यत्स्यादपुनर्भवदर्शनम् ॥ १ ॥ जन्मैश्वर्यसुतश्रीभिरेधमानमदःपुमान् ॥ नैवार्हत्यभिधातुं वै त्वामकिंचनगोचरम् ॥ २ ॥ दोहा ॥ प्रीतमनहीं बजारमें, सोइय जारउजार ॥ प्रीतम मिलै उजारि में, सोई उजारिबजार ॥ ३ ॥ कहाकरौंवैकुंठलै, कल्पवृक्षकी छांह ॥ अहमदढांकसुहावने, जो प्रीतमगलबाँह ॥ ४ ॥ घरहीकोलाइये ॥ गमनसमयअंचलगह्यो, छांडनकह्यो सुजान ॥ प्राणपियारे प्रथमहीं अंचलतजौं किप्रान ॥ ५ ॥ बपुन्यारा ॥ जासों मिलिसुखझिलिरहे, दीनों दुख बिसराइ । फिरि जो जाके बिछुरते, फट्यो न उर कहि हाइ ।। ६ ।। मन बँदूक तनु जामगी, हियरंजक जियसाज ।। प्रेमपलीता दगिगई, निकसी आहि अवाज ।।

द्रौपदीसतीकीबातकहैऐसोकौनपटुखैंचतहीपटपटकोटि गुने भयेहैं । द्वारकाकेनाथजबबोलीतबसाथहुतेद्वारकासोंफेरिआयेभक्तवाणीनयेहैं । गयेदुर्वासाऋषिवनमेंपठायेनीचधर्मपुत्रबोलेविनयआवैपनलयेहैं॥भोजनंनिवारित्रियाआइकहीशोचपर्‌यो चाहैतनुत्यागयोकह्योकृष्णकहूंगयेहैं ॥ ६७॥ सुन्योभागवतीकोवचनभक्तिभावभर्‌योकर्‌योमनआयेश्यामपूजेहियेकामहैं। आवतहीकहीमोहिंभूखलागीदेवोकछूमहासकुचायेमांगैंप्यारोनहींधामहै । विश्वकेभरणहारधरेहैंअहारअजू हमसोंदुरावोकहीवाणीअभिरामहैं । लग्योशाकपत्रपत्र जलसंगपाइगयेपूरणत्रिलोकीविप्रगनैकौननामहैं ॥ ६८

पटकोटिगुणै॥दोहा॥वसंतऋतुयाचकभई,रीझिदियेद्रुमपात॥यातेनवपल्लवभये, दियोदूरिनहिंजात ॥ ८ ॥ कवित्त ॥ दुश्शासनदुमनदुकूलगह्यो दीनबन्धु दीनह्वैके द्रुपददुलारीयोंपुकारी है । छांडे पुरुषारथकोठाढ़ेपिय पारथसे भीममहाभीमग्रीवानीचेकोनिहारीहै । अंबरजो अंबर अमरकिये वंशीधर भीषम करण द्रोणशोभा यों निहारीहै । सारीमध्यनारीहै किनारी मध्यसारीहै किसारी है किनारीहै किसारिहीकीनारीहै ॥ ९ ॥ नये हैं ॥ भारते ॥ यदि गोविंदेति चुक्रोश कृष्णा मां दूरवासिनम्॥ऋणमेतत्प्रवृद्धं मे हृदयान्नापसर्पति ॥ १ ॥ आयेश्याम ॥ पद ॥ तौहूंपावनविरदलजाऊं ॥ जो जनकें संकट में राजा सुमिरणसमयनआऊं ॥ सुनौअजातशत्रुकरुणामय करुणासिंधुकहाऊं।अनवअनाथनि दीनजानिकै गरुडासनबिसराऊं।शीघ्र सुकाजभक्तअपनेके जहांतहां उठिधाऊं । लघुभगवानप्रतिज्ञामेरे यशत्रैलोकबढाऊं ॥ १ ॥ कौननामहै ॥ षष्ठे ॥ यथा हि स्कंधशाखानां तरोर्मूलनिषेचनम् ॥ एवमाराधनं विष्णोः सर्वेषामात्मनश्च हि ॥ यथातरोर्मूलनिषेचनेन तृप्यंति तत्स्कन्धभुजोपशाखाः ॥ प्राणोपहाराच्चयथेंद्रियाणांतथैव सर्वार्हणमच्युतेज्या ॥ ४ ॥ कोऊअगस्त्यको मंत्रउचारै । कोऊचूरणको हाथपसारै ॥ कोऊअमलवेतको यांचै । कोऊपेटपीटिकैनांचै ॥ ५ ॥ एक भगवतनाम औषधबिना रोग नहीं कटै कोटियतन करौ ॥ ६ ॥

मूल ॥ पदपङ्कजवंदौंसदा जिनकेहरिनितउरबसैं । योगेश्वरश्रुतिदेवअंगमुचुकुंदप्रियव्रतजेता । पृथुपरीक्षितशेषसूतशौनकपरचेता । शतरूपात्रयसुतासुनीतिसतीसबहीमंदालश । यज्ञपत्नी व्रजनारिकियेकेशवअपनेवश । ऐसेनरनारीजितेतिनहींकेगाऊंयसैं । पदपङ्कजवंदौंसदाजिनकेहरिनित उरबसैं॥११॥टीकासमुदायकी ॥ कवित्त॥जिनहींके हरिउरनितबसैं जिनहींकेपदरेणुचैनदैनआभरणकीजिये । योगेश्वरआदिरसस्वादमेंप्रवीणमहावीणश्रुतिदेव ताकीबातकहिदीजिये । आयेहरिघरदेखिगयोप्रेमभरिहियोऊंचोकरकरिपटफेरिमतभीजिये । जितेसाधुसंगतिन्हैंविनयनप्रसंगकियो कियो-

उपदेशमोसोंबाढ़िपावलीजिये ॥ ७० ॥ मूल ॥ अंघ्रीअंबुजपांशु-कोजनमजनमहौंयाचिहौं । प्राचीनबर्हिसत्यव्रतरघुगणसगरभागी-रथ । बालमीकिमिथिलेशगयेजेजेगोविंदपथ । रुकमांगदहरिचंद-भरतदधीचिउद्धारा । सुरथसुधन्वाशिवसुमतिअतिबलिकीदारा । नीलमोरध्वजताम्रध्वजअलरककीरतिराचिहौं । अंघ्रीअंबुजपांशुको-जन्मजन्महौंयांचिहौं ॥ १२ ॥

प्रेमभरि दशमे ॥ धन्योहं कृतकृत्योहं पुण्योहं पुरुषोत्तम ॥ अद्य मे-सफलं जन्म जीवितं सफलं च मे ।। १।। ऋषि संगऋषी श्लोक ॥ दाराः पुत्रो नराणां स्वजनपरिकरो बन्धुवर्गः प्रियो वा माता भ्राता पिता वा श्वशुर बुधजनौ ज्ञातिरैश्वर्य्यवित्तम् । विद्या नीतिर्विपुलसुहृदो यौवनं मानगर्वं मिथ्याभूतं मरणसमये धर्ममेकः सहायः ।। १ ।। कुंडलिया ।। कोऊकाहूको नहीं देखो ठोंकि बजाइ । देख्यो ठोंकि बजाइ नारिपट भूषण चाहै । सुतसोषे नित प्राण सुता प्रत्यक्ष अवगाहै ।। तात मातकरे वैरुबधूनित चित्तबिगारी । स्वारथताके सजन दास दासी देगारी ।। अगरकामहरि-नामसों संकट होतसहाइ । कोऊ काहूको नहीं देखो ठोंकि बजाइ ।। २ ।।

टीका—उभयबाल्मीकिजीकी॥क०-जनमपुनिजनमको नमेरेकछुशो-चअहोसंतपदकंजरेणुशीशपरधारिये । प्राचीनबर्हिआदिकथाप्रसि-द्धिजग उभै बालमीकिऋषिबातजियतेनटारिये । भयेभील संगभी-लऋषिसंगऋषिभयेभयेरामदरशनलीलाविस्तारिये ॥ जिन्हैंजगगा-इकहूंसकैनअघाइचाइभाइभरिहियोभरिनैंनभरिढारिये ॥ ७१ ॥

टीका॥सुपचबाल्मीकिकी॥क०-हुतोबाल्मीकिएकश्वपचसुनामाता कोइयामलैप्रगटाकियोभारतमेंगाइये । पांडवनिमध्यमुख्यधर्मपुत्ररा-जाआपकीनोयज्ञभारीऋषिआयेभूमिछाइये । ताकोअनुभावशुभ-शङ्खसोंप्रभावकहैजोपैनहींबाजैतौ अपूरणताआइये । सोईबातभईब हुबाज्योनाहिंशोचपर्योपूछैं प्रभुपासयाकीन्यूनता बताइये ॥७२॥

तिन्हैंजगगाइ ॥ छप्पय ॥ मुक्तिसुवनिताश्रवणआभरणअक्षयद्वैकहि।

मुनिमनपक्षीपक्षिदासजै रामतासगहि । जगतसमुद्रअपार तीरभुवनैन वेद भल । कलिपातक तमप्रबल हरणको रवि शशि मंडल । विपरीति नाम उच्चार किय बालमीकि ऋषि भये तदा । जिहि तिहि प्रकार सब काम तजि रामनाम सुमिरौं सदा ॥ १ ॥ रामायणे ॥ चरितं रघुनाथस्य शतकोटिप्रविस्तरम् । एकैकमक्षरं पुंसां महापातकनाशनम् ॥ २ ॥ बालमीकि बुधवंतसदासीतापतिगावैं । रामायणशतकोटि राम राघव मन भावैं ॥ तेंतीसकोटि तेंतीसलाख तेंतीस हजारा । तीनशत बहुरि और श्लोक तेंतीस विचारा । दश दश अक्षर और भक्ति भजिबेको कीना ॥ रामनाम दोउ अंक मांगि शंकर तब लीना । ततवेता तिहुँलोकमें रामचरित विस्तारि रह्यो ॥ एकनाम सुमिरतसदा महापाप परले गयो ॥ ३ ॥ दोहा ॥ तुलसी रघुवर नामको, रीझि भजो कै खीज । उलटा सुलटा जामिहै, परे खेतमें बीज ॥

बोलेकृष्णदेवयाकोसुनौसबभेव ऐपै नीकेमानिलेवोबातदुरीसमझाइये । भागवतसंतरसवंतकोऊजैयौनाहिंऋषिनसमूहभूमिचहूँदिशिछाइये ॥ जोपैकहैंभक्तिनाहींनाहींकैसेकहौंगहों गासएकऔरकुलजातिसोवहाइये । दासनिकोदासअभिानकीनबासकहूं पूरणकीआशतोपैऐसोलैजिमाइये ॥ ७३ ॥ ऐसोहरिदासपुरआसपासदीखे नाहिं बासबिनकोऊलोकलोकनिमेंपाइये । तेरेईनगरमांझनिशिदिन भोरसांझ आवैजाइऐपैकाहूबातनलखाइये । सुनिसबशोचपरेभाव-अचरजभरे हरेमननैनअजूवेगिहीजताइये । कहानामकहाठामजहां हमजाइदेखैंलेखैंकरिभागधाइपाइलपटाइये ॥ ७४ ॥ जितेमेरेसाधुकभूचहैंनप्रकाशभयो करौंजोप्रकाशमानैमहादुखदाइये । मोकोपरयोशोचयज्ञपूरणकीलोचहिये लियेवाकोनामजिनिगामतजिजाइये ॥ ऐसेतुमकहौजामैंरहैन्यारेप्यारेसदाहमहींलिवाइलावैंनीकेकैजिमाइये । जावोबालमीकिघरबड़ोअवलोकसाधुकियोअपराधहमदियोजोबताइये ॥ ७५ ॥

बासाबिन ॥ सवैया ॥ नखबिन कटादेखे योगी कनफटा देखे शीश भारी जटा देखे छारलाये तनमें । मौनी अनबोल देखे जैनी शिरछोल देखे करत कलोल देखे बनखंडी वनमें । गुणी अरु कूरदेखे कायर औ शूरदेखे मायाके अपूर देखे पूरिरहे धनमें । आदि अंत सुखी देखे जनमके दुखीदेखे ऐसे नहींदेखे जिन्हें लोभ नाहिं मनमें ॥ १ ॥ जावो वाल्मीकि घर ॥ भागवते ॥ न मे प्रियश्चतुर्वेदी मद्भक्त श्वपच प्रियः । तस्मै देयं ततो ग्राह्यं स च पूज्यो यथा ह्यहम् ॥ १२ ॥ अवलीक ॥ दोहा ॥ पेट कपट जिह्वा कपट, नैना कपट निराट। तुलसी हरि कैसे मिलैं, घटमें औघट घाट॥ ॥ ४ ॥ अहमद या मन सदन में, हरि आवैं किहि बाट। बिकट जुरैं जौलौं निपट, खुटै न कपट कपाट ॥ ५ ॥ भक्त्याऽहमेकया ग्राह्यः श्रद्धया त्मा प्रियः सताम् । भक्तिः पुनाति मन्निष्ठा श्वपाकानपिसंभवात् ॥ ६ ॥

अर्जुनऔभीमसेनचलेईइनिमंत्रणको अंतरउघारिकहीभक्तिभावदूरिहै । पहुँचेभवनजाइचहुँदिशिफिरिआइपरेभूमिझूमिघरदेख्योछबिपूरिहै ॥ आयेनृपराजनिकोदेखितजेकाजनिकोलाजनिसोंकांपिकांपिभयोमनचूरिहै । पावनकोधारियेजूजूंठनिकोडारियेजू पापग्रह टारियेजू कीजेभागभूरिहै ॥ ७६ ॥ जूंठनिलैडारौंसदाद्वारकोबुहारौंनहींऔरकोनिहारौंअजूयहीसांचोपनहै । कहोकहाजैवोकछूपाछेलैजिमाओहमजानिगयेरीतिभक्तिभावतुमतनहै ॥ तबतोलजानोहियकृष्णपैरिसानोनृप चाहौसोईठानौमेरेसंगकोऊजनहै । भोरहीपधारौअबयहीउरधारौऔरभूलिनविचारौकहीभलोजोपैमनहै ॥ ७७ ॥ कहीसबरीतिसुनिधर्मपुत्रप्रीतिभईकरीलैरसोईकृष्णद्रौपदीसिखाईहै। जेतिकप्रकारसबव्यंजनसुधारिकरो आजुतेरेहाथनिकीहोतिसंफलाई है ॥ लायेजालिवाइकहैबाहिरजिमाइ देवोकहीप्रभूआपलावोअंकभरिभाईहै । आनिकैबैठायोपाकशालामेंरसालग्रासलेतबाज्योशंखहरि दंडकीलगाईहै ॥ ७८ ॥

पापग्रहटारिये ॥ प्रथमे ॥ येषांसंस्मरणात्पुंसांसद्यःशुद्ध्यंतिवैग्रह ।

किंपुनर्दर्शनस्पर्शपादशौचासनादिभिः ॥ १ ॥ साधुजगमें तीरथ है जा घरमें आवै सब तीर्थहीआवैं ॥ २ ॥ सफलाईहै ॥ एकादशेमद्भक्तपूज्याभ्यदिका ॥ ३ ॥ कृष्णद्रौपदीसिखाई ॥ नैवेद्यं पुरतो न्यस्तं चक्षुषा गृह्यते मया। रसं च दासजिह्वायामश्नामि कमलोद्भव ॥ ४ ॥ नष्टप्रायेष्वभद्रेषु नित्यं भागवतसेवया। भगवत्युत्तमश्लोके भक्तिर्भवति नैष्ठिकी ॥ ५ ॥ अंकभारिभक्तिकोनातो दुनिया को मिलाप छोटोतुच्छजानिये व्याधि उत्पत्ति करै याते परिहारेये ॥ ६ ॥

सीतसीतप्रतिक्योंनबाज्योकछुलाज्यो कहा भक्तिकोप्रभावनहिंजानतयोंजानिये। बोल्योअकुलाइजाइपूंछोअजूद्रौपदीको मेरोदोष नाहींयहआपमनआनिये ॥ मानिसांचिबातजातिबुद्धिआईदेखियाहिसबहीमिलाइमेरीचातुरीबिहानिये। पूंछेतकहींहैवालमीकमेंमिला योयाते आदिप्रभुपायोपाऊंस्वादउनमानिये ॥ ७९ ॥

सीतासतितप्रति ॥ श्लोक ॥ ग्रासेग्रासेकृतेनादे कृष्णताडनिप्रष्टके। लोपितोभक्तिःप्रतापासिक्थे सिक्थे न नादितः ॥ १ ॥ जातिबुद्धि आई ॥ पाद्मे ॥ अर्चावतारोपादानंवैष्णवोत्पत्त्यचिंतनः ॥ मात्रयोनिपरीक्षाय तुल्यमाहुर्मनीषिण ॥ २ ॥ उनमानिये ॥ ऊंचनीचमानेनहिंकोई ॥ हरिकोभजैसोहरिकोहोई ॥ ३ ॥ आशंका इकउपजी मनमें। अर्जुन कहेउ कृष्णसों क्षणमें ॥ कोटिनयज्ञब्राह्मणजैये। पूरेउनहीं सुकौनेहेत ॥ ४ ॥ कहेश्रीकृष्ण सुनोहोपाण्डव कोउनसंतआयो तिहारेवार ताते येयज्ञ पूरोहोतो वाजेदेवद्वार ॥ प्रभुहम ऊंचऊंचकुलपूजे हम जान्यो यह निर्मल भाइ। इनहूंसों कोऊ निर्मलहैहै तौ हमभूले देहु बताइ। वालमीकिहै जातिसरगरौ जाके राजा आयेधाइ। बाजै येजग पूरोह्वैहैमनसापूरण कार्य सँवारि। अर्जुन भीम नकुल सहदेवा राजासहितसुपहुँचेजाइ। करिदंडवत चरणगहि लीन्हें वालमीकि के लागेपाइ। तुमतो ऊंचकल जनमे हमतौ नीच महाकुल माहिं। ऊँचनीचकी शंकाआवै तात ।तहर आवैं नाहिं ॥ ७ ॥ तुमतौ या जग सकल शिरोमणि तुम समतूल और नहिं

कोई ॥ कृपाकरौ अरु भवन पधारौ तुम्हैं चले यज्ञ पूरण होई ॥ ८ ॥ जब वाल्मीकि राजाके आयो प्रेमप्रीति सों लियो अहार । जितनेग्रास जेंवतेलीने शंखजु बाज्योतितनीबार ॥ ९ ॥ भूधर कहैं हाथसोंमाजों खंडखंड करिहौं चकचूर । हमरोसाधु जेंवतेग्रासजुकणिकणिकाहेनबाज्योकूर ॥ १० ॥ देवदेव मोहिं दोष न दीजै दोषजुकोई द्रौपदी माहिं ॥ ऊंच नीचकी शंका आई याते कणिकणि बाज्यो नाहिं ॥ ११ ॥ परख्यासाधु पारखा आई जगमें न्योति जिमायो सोइ । जाजैयें जग पूरण हूवो नाम देव कहैं शिरोमणि सोइ ॥ १२ ॥

टीकारुक्मांगदराजाकी ॥ रुक्मांगदबागशुभगंधफूलपागिरह्योकरिअनुरागदेववधूलेनआवहीं ॥ रहिगईएककांटाचुभ्योपगबैंगनको सुनिनृपमालीपासआयोसुखपावहीं ॥ कहोकोउपाइस्वर्गलोककोप ठाइवीजैकरैएकादशीजलधारैकरजावही । व्रतकोतौनामयहग्रामको ऊजानेनाहिंकीनोहींअजानकालिहलावोगुनगावही ॥ ८० ॥ फेरीनृपडोंडीसुनिबनिककीलौंडीभूखीरहीहीकनौडी निशिजागीउनमारिये। राजाढिगआइकरिदियोव्रतदानभइतियायोंउडानिनिजलोककोपधारिये ॥ महिमाअपारदेखिभूपनेविचारियाकोकोऊअन्नखाइताकोबांधिमारिडारिये । याहीकेप्रभावभावभक्तिविस्तारभयोनयो चोजासुनौसबपुरीलैउधारिये ॥ ८१ ॥ एकादशीव्रतकीसचाईलैदिखाईराजासुताकीनिकाईसुनौनीकेचितलाइकै । पिताघरआयोपतिभूषनैसतायोअति मांगैतियापासनहींदियोयहभाइकै ॥ आजुहरिवास रसोतासरणपूजैकोऊ डरकहांमीचकोयोंमानीसुखपाइकै । तजेउनप्राणपायेवेगिभगवानवधूहियेसरसानभईकह्योपनगाइकै ॥ ८२ ॥

याहीके प्रभाव ॥ ब्रह्मवैवर्ते ॥ सर्वपापप्रशमनं पुष्पं मात्येतिकंयया। गोविंदस्मरणंनृणांयदेकादस्यपारणम् ॥ १ ॥ सबही को कर्तव्यहै ॥ नीते ॥ कष्टाधिकष्टंसततंप्रवासी ततोधिकष्टं परगेहवासी ॥ ततोधिकष्टं कृपणस्यसेवा ततोधिकष्टंधनहीनसेवा ॥ २ ॥ अपनको सेवा ते भूखी

रही एकादशी के माहात्म्यसे इतिहासकी कथा है एकराजाकी स्त्री देखिके मगनभये पूछी महाराज आपकैसे मगन भये तबकही एकादशी के प्रताप सों राज्यपायो याते मगनभये ॥ २ ॥ नृगराजा शिकार को गये देवलऋषिसों पूछी भद्रश्रयाखंड अगस्त्यजी गये हैं ॥ ३ ॥

टीका समुदायको ॥ सुनोहरिचंद्रकथाव्यथाबिनद्रव्यदियो तथानहींराखीबेंचिसुततियातनहै । सुरतसुधन्वाजूसोंदोषकेकरत मरेशंखऔलिखितविप्रभयोमेलोमनहै ॥ इंद्रओआगिनिगये शिबीपै परीक्षालेन काटिदियोमांसरीझिसांचोजान्योपनहै । भरतदधीचिआ दिभागवतबीचगायेसबनिसुहाये जिनदियोतनधनहै ॥ ८३ ॥ टीका बिंध्यावलीकी ॥ बिंध्यावलीतियासी न देखीकहूंतियानैन बांध्योप्रभुपियादेखिकियोमनचौगुनो । करिअभिमानदान दैन बैठ्योतुमहीको कियोअपमानमैंतोमान्योसुखसौगुनो ॥ त्रिभुवनछी निलियेदियेबैरोदेवतानि प्राणमात्ररहेहरिआन्योनाहिंऔगुनो । ऐसी भक्तिहोइजोपैजागोरहौसोइ अहो रहेभवमांझएपैलागेनहींभौगुनो ॥ ८४ ॥ टीकामोरध्वजराजाजूकी॥ अर्जुनकेगर्वभयो कृष्णप्रभु जा- निलयोदियोरसभारीयाहिरोगयोंमिटाइये । मेरोएकभक्तआइतोकोलै दिखाऊंताहि भयेविप्रवृद्धसंगबालचलिजाइये ॥ पहुँचतभाष्योजा- इमोरध्वजराजाकहां बेगिसुधिदेवोऋाहूबातयोजनाइये । सेवाप्रभु करौनेकरहौपाँवधरौजाइकहौ तुमबैठोकहीआगिसीलगाइये ॥८५ ॥

दियोतनधन है भागवते ॥ जहौ युवैव मलवदुत्तमश्लोकलालसः ॥ १ ॥ करि अभिमान ॥ दोहा ॥ नारी काहू रंक की, अपनी कहै न कोइ ॥ हरिनारी अपनी कहैं क्यों न फजीहत होइ ॥ २ ॥ नहीं भौगुनो ॥ साधूजन जगमें रहैं, ज्यों कमला जलमाहिं । सदा सर्वदा सँग रहै, जलको परशत नाहिं ॥ गर्वभयो ॥ भागवते ॥ तपो विद्या च विप्रा- णां निश्श्रेयसकरेउभे । तएवदुर्विनीतस्यकल्पतेकर्तुमन्यथा ॥ ४ ॥ सेनयो- रुभयोर्मध्येरथंस्थापयमेच्युत ॥ ५ ॥ दोहा ॥ तिमिरगयो रवि देखिकै,

कुमतिगई गुरुज्ञान । सुमतिगई परलोभते, भक्तिगई अभिमान ॥ ६ ॥
कवित्त-चलेअनखाइपाइँगहिअटकाइजाइ नृपकोसुनाइततकालबौरे आयेहैं। बडी कृपाकरी आजुफरीबेलिचाहमेरीनिपटनवेलिफलपायो यातेपायेहैं॥ दीजैआज्ञामोहिंसोइकीजैसुखलीजैवहीपीजै वाणीरसमेरे नैनलै सिरायेहैं।सुनिक्रोधगयोमोदभयो सोपरिक्षाहियेलिये चितचाव ऐसेवचनसुनायेहैं ॥ ८६ ॥ देवकीप्रतिज्ञाकरोंकरीजूप्रतिज्ञाहमजाही भाँतिसुखतुम्हैंसोईमोकोभाईहै । मिल्योमगसिंहयहबालककोखाये जातकहीखावोमोहिं नहींयहीसुखदाईहै ॥ काहूभाँतिछांडौनृपआधो जोशरीरआवै तौहीयाहितजौंकहिबातमोजनाईहै । बोलोउठितिया अरधंगीमोहिंजायदेवोपुत्रकहैमोकोलेवोऔरसुधिआईहै ॥८७॥ सुनौ एकबात सुततियालैकरौतगात चीरैं धीरैं भीरैनाहि पीछेउनभाषिये। कीनोंवाहीभाँति अहोनासालगिआयोजब ढरेउद्दगनीरभीरवाकरन चाषिये । चलेअनखाइगहिपाइँसोसुनायेबैन नैनजलआयो अंगकामकिहि नाखिये। सुनिभरिआयो हियो निजतनुश्यामकियो दियोसुख रूप व्यथागईअभिलाषिये ॥ ८९ ॥

कीन्हों वाही भांति ॥दोहा॥ कांच कथीर अधीर नर,कसे न उपजै प्रेम ॥ पर कसनी साधू सहैं, कै हीरा कै हेम ॥ १ ॥ कवित्त ॥ अगिनि कनक जारे चन्दन खंडित आरे शिलाघसे शीतल तो बासना घटातिहै । क्षीरमथे माखन बटुरि आवै येदिलहै मुकुर मलिन माजें मूरति दिखात है ॥ तारेहूं सरस अरु मोरेहू सरस रस छीलैं छाटैं काटैं ओटैं अधिक मिठातिहै । रचिबेकी कहा कहौ बिरचैं सहस गुनो सज्जन सनेह कहूं बातनि सिठातुहै ॥ १ ॥ सुनायेबैन ॥ नाटके ॥
गृह्णात्येष रिपोः शिरः प्रतिपदं गृह्णात्यसौ वाजिनं नीत्वा चर्म धनुश्च याति पुरतःसंग्रामभूमावपि ॥ द्यूतं चौर्य्यपरस्त्रियश्च शपथं जानाति नायंकरो दानानुद्यमतां निरीक्ष्य विधिना शौचाधिकारी कृतः ॥ १ ॥

मोंपैतौनदियोजाइनिपटरिझाइलियो तऊरीझिदियेबिना मेरे

हियेशालहै । मांगौबरकोटिचोट बदलोनदूकतहै सूकतहैमुखसुधि आयेवहांहालहै ॥ बोल्योभक्तराजतुमबड़ेमहाराजकोऊथोरोईकरत काजमानोकृतजालहै । एकमोको दीजै दाव दोयोजूबखानोंवेगि साधुपैपरिक्षाजिनिकरौकलिकालहै ॥ ९० ॥

कलिकालहै ॥ दोहा ॥ चारिसवेरी चारि अबेरी, इतनी देगोपाला । इतनी मेते एकघटै तौ, यहले अपनी माला ॥ २॥ जब अर्जुन को गर्वगयो तबबोले ॥ पद ॥ कहौं कहांलौं कृपा तिहारी । कुलकलंक सबमेटि हमारे किये जगत यशपावनकारी । द्विजकानीन हमारो आजा गोलक पिता वंशकोगारी । हमतौ कुंड सबै जग जानैं ताहूमें औरैग तिन्यारी । महाकष्टकरि ब्याहजुकीनों ह्वै गइ तियापंचभर्तारी । बड़े ब्यसन दूषण युत राजा हमते अधिक जु अग्रजुवारी । याकुकर्मकी अवधि कहालौं जोतिय राजसभामें हारी । हते पितामह बंधु विप्र गुरु लोभी नीच स्वारथीभारी । समझत नहीं कौन विधिरीझे हमतौ ऐसे अधम विकारी । अति आतुरह्वै रक्षाकीनी अशन बसनकी सबै सँभारी । यह तौ साधनको फलनाहीं बार बार हम यहै विचारी । बीरभद्र केवल कृपाते बिगरतिगई सो सबै सुधारी ॥ ३ ॥

टीका अलरककी॥कवित्त॥अलरककीकीरतिमेंराच्योनितसांचोहिये कियेउपदेशहूनछूटैविषयवासना । माता मंदालसाकीबड़ीयेप्रतिज्ञासुनौ आवैजोउदरमांझ फेरिगर्भआसना । पतिकोनिहोरोताते रह्योछोटेकोरोताको लैगयेनिकासिमिलि काशीनृपशासना । मुद्रिकाउघारिऔनिहारिदत्तात्रेयजूको भयेभवभावकरीप्रभुकीउपासना ॥ ९१ ॥ मूल ॥ तिनचरणधूरिमोभूरि शिर जेजेहरीमाया तरे ॥ रिभुइक्ष्वाकुअरुऐलगाधि रघुरैगैशुचिशतधन्वा । अमूरति अरुरंतिदेवउतंकभूरिदेवलैववस्वतमन्वा । नहुषययातिदिलीपपूरि यदुगुहमानधाता । पिप्पलनिमिभरद्वाज दक्षसभागेवैसंघाता ॥

संजयसमीकउत्तानपादयाज्ञवल्क्ययशजगभरे । तिनचरणधूरिमोभूरिशिरजेजेहारिमायातरे ॥ ९२ ॥ टीकारंतिदेवकी ॥ अहोरंतिदेवनृपसंतदुसकंतवंशअतिहीप्रशंससोअकाशवृत्तलईहै । भूखेकोनदेखिसकैआमैसोउठाइदेत नेतनहींकरैभूखेदेहक्षीणभईहै । चालीसऔआठदिनपाछेजलअन्नआयो दियोविप्रशूद्रनीचइवानयहनईहै । हरिहीनिहारैउनमांझतबआयेप्रभु भायेजगदुखजितेभोगोंभक्तिछईहै

मुद्रकानि ॥ मदालसावाक्यं॥संगः सर्वात्मना त्याज्यःयदि त्यक्तुं न शक्यते । सद्भिरेव प्रकर्त्तव्यः सत्संगो भवभंजनः ॥ १ ॥ हरिही निहारे ॥ गीतायाम् ॥ विद्याविनयसंपन्नेब्राह्मणेगविहस्तिनि । शुनिचैवश्वपाकेच पंडिताःसमदर्शिनः ॥ सवैया ॥ अहौसौरहजारमें लाखकरोरमेंएकघटैटिकैनौहीसही । इहांऐसेहीदृश्यप्रपंचकेमाहिं गहैअविवेकरहैसुवही । पुनिनोनमें एकमिलाइलिखै होइऔरकीऔरसुजाइचही । यहीब्रह्मसवैसुअवोधहिपाइ भयो भवशोधकबोधयही ॥ ३ ॥ दुर्लभवैष्णवीनारीदुर्लभोविप्रवैष्णवः । दुर्लभोवैष्णवोराजाअतिदुर्लभदुर्लभः ॥ ४ ॥

राजागुहकोटीका॥कवित्त॥भिल्लनिकोराजागुहरामअभिरामप्रीति भयोबनवासमिल्योमारगमेंआइकै । करौयहराजजूविराजिसुखदीजेमोको बोलेचैनसाजितज्योआज्ञापितुपाइकै । दारुणवियोगअकुलाइहगअश्रुपात पाछेलोहूजाततबसकैकौनगाइकै । रहैनैनमूंदिरघुनाथविनदेखैकहाअहा प्रेमरीतिमेरेहियेरहीछाइकै ॥ ९३ ॥

भयो बनवास ॥ रामचन्द्रिका ॥ पढ़ौविरंचि वेद मौन जीवसोर छंडिरे । कुबेर बेरकै कही न यक्षभीर मंडिरे । दिनेश दूरिजाइ बैठु नारदादि संगही । न बोल चंद मंदबुद्धि इंद्रकी सभानहीं ॥ १ ॥ दोहा ॥ नाममंथरा मंदमति, चेरि कैकयीकेरि । अयशपिटारी ताहिकरि, गईगिरा मतिफेरि ॥ २ ॥ इन्द्रके युद्धके द्वैवर ॥ कुंडलिया ॥ पुत्र प्राण सबते बड़े, चारों युग परमान । ते राजा दोऊ तजे, वचन न दीनेजान । वचन न दीनेजान बड़ेनकी यहै बड़ाई । वचन रहे सो कार्य और सर्वसकिनजाई।

कहि गिरिधर कविराय भये दशरथ नृप ऐसे । प्राण पुत्र परिहरे वचन परिहरे न तैसे ॥ ३ ॥ रही न रानी कैकयी, अमर भई यहबात । काहू पूरब योगते, बन पठये जगतात ॥ बन पठये जगतात पिता परलोक सिधारे। जिहिहित सुतके कार्य फेरि नहिं बदन निहारे । कहि गिरिधर कविराय लोकमें चली कहानी । अपकीरतिरहिगई कैकयी रही न रानी ॥ ३ ॥ **सवैया** ॥ अहोपूत कहां चलिहौ अबहीं तुम सांची कहौ किन मोसों लला । सुनि नयननमें जलसोंभरिकै जैसे बोझपरे नइजात पला ॥ सियके मुखकीछबि यौं न घटै मनोंद्विजसोंलै द्विजराजकला । सुधिराखनहेत सियाबरकी पलट्यौ कनकी अँगुरीको छला ॥ ४ ॥ जानकी तिहारे संग जानत न एकौ दुख याके लाइ बेटा तुम बनहू में सहियो। पायँनको चलिबो है जोलौं पांय चलो जाइ आगे जनिचलौ याहि संगलै निवहियो ॥ लक्ष्मणको मनरूखो भूखो जनिदेखि सको आवै कोऊ उतते संदेशोताहि कहियो । उतरत जाहु काहू ग्रामन के बीचपूत मेरे बनवासी मेरी सुधिलेत रहियो ॥ ५ ॥ **हनुमान नाटके** ॥ सद्यः पुनःपरिसरेपि शिरीषमृद्वी सीताजवात्त्रिचतुराणिपादानि गत्वा गंतव्यमस्ति कियदित्यसकृद्ब्रुवाणा रामाश्रुणः कृतवती प्रथमावतारम् ॥ १ ॥ पुरते निकसी रघुबीरबधू करिसाहस धीर दई डगद्वै । भरिभाल कनी निकसीश्रमकी पटसूखिगये अधरामृतद्वै । पुनि पूँछत यों चलनों व कितौ कहै पर्णकुटी करिहौ कितवै । तुलसी सियकी लखि आतुरता पियके युगनयनचले जलच्वै॥ २॥ भोरहीके भूखे ह्वैहैं प्यास मुख सूखे ह्वैहैं चलैंपग दूखे ह्वैहैं फिरैं मग रातको। रविकी किरणिलागे लालकुम्हिलाने ह्वैहैं झार लपटाने झँगाफाटेह्वैहैं गात के । अबतौ भई है सांझ वेहैं बनमांझ हम रही क्यों न बांझ हियेफटे क्यों न मात के । मेरेरी बेछौना गये तजिकै घरौना हांगे तरुके तरौना सो बिछौना किये पातके ॥ ३ ॥ मगमें परतपग सुंदर भरत डग कोमल विमलभूमि छोड़तहैं धनको । जिहि ठौर कांटेकाठ कांकर परत आइ तिहि ठौर धरत हैं आपने चरणको । जिते छांह

सीरी तितै कीजत हैं प्यारी नीरी जितै घाम तितै कीजै नीरद से तन को। गहे रघुनाथ निजहाथन सों हाथ ऐसे जानकी को लियेसाथ चले-जात बनको ॥ ४ ॥ मुख सूखि गये रसनाधर मंजुल कंजसे लोचन चारुचितै। करुणानिधि कंत तुरंत कहेउ कि दुरंत महावन भूरिअवै। सरसीरुह लोचन नीर चितै रघुनाथकही सियसोंजुतलै ॥ अवहीं बन-भामिनी पूँछतिहौ तजि कौशलराज पुरी दिनद्वै ॥ ५ ॥ जासुके नाम अजामिलसे खल कोटि नदी भव छंडतकाढ़े। जो सुमिरैं गिरि मेरु शिला कन होत अजाखुर बारिध बाढे। तुलसी जिहिके पद पंकजसों प्रगटी तटनी जुहरै अघगाढ़े। ते प्रभुहैं सरिता तरिबेकहँ मांगत नाव करारपैठा ढे ॥ २ ॥ इति घाटते थोरिकदूरि अहो कटिलों जलथाह बताइहोंजू। परशेपगधूरि तरै तरणी घरणी घर क्यों समुझाइहों जू। बरुमारिये मोहिं विनापगधोये हौंनाथ न नाव चढाइहोंजू। तुलसी अवलम्ब न और कछू लरिका किहिभांति जिवाइहोंजू ॥ ४ ॥ रावरेदोषनि पाँयनि को पगधूरि को भूरि प्रभावमहाहै। पाहनतेबलवानन काठकी कोमल है जलखाइरहा-है। तुलसी सुनि केवटके बरबैन हँसे प्रभु जानकी और हहाहै। पावन पांव पखारिकै नाव चढाइहौं आयसु होत कहाहै ॥ ५ ॥ प्रभु रुखपाइकै बुलाइबाल वरणि कूं वंदिकै चरण चहुँदिशिबैठे घेरिघेरि। छोटोसो कठौवाभरि आन्यों पानी गंगाजूको धोइपाइँ पीवतपुनीतवारि फेरिफेरि। तुलसी सराहैं ताको भागसानुराग सुर बरषैं सुमनजयजय कहैं टेरिटेरि। विबुधसनेहसानी बानी सुसयानी सुनि हँसे रामजानकी लषण तनहेरिहेरि ॥ ६ ॥ लक्ष्मणसों हमसों इकसाथ सिया पुनि साथहि छांडि न देहैं। बानर ऋक्ष जितेकहि केशव ते सब कंदरखोह समै हैं। छोड़िकै आनि मिल्यो हमसों तिनको यह संग कहा करि ऐहैं। औरसबै घरके बन के कहु कौनके भौन विभीषण जैहैं ॥ ७ ॥

कवित्त॥चौदहबरषपाछेआयेरघुनाथनाथ साथकेजेभीलकहैंआयेप्रभु देखिये। बोल्योअबपाऊंकहांहोतनप्रतीतक्योंहूं प्रीतिकरिमिलेराम

। परसपिछानेलपटानेसुखसागर समानेप्राणपाये-मानो भालभागलेखिये । प्रेमकीजुबातक्योंहूंबानीमेंसमातनाहिं अ-तिअकुलातकहौकैसेकैविशेषिये ॥९४॥ मूल ॥ निमिअरुनवयोगे श्वरा पादत्राणकहींहौंशरण॥कविहरिकरिभाजनभक्तरत्नाकरभारी। अंतरिक्षअरुचमस अनन्यतापधतउधारी ॥ प्रबुधप्रेमकीराशि भूरिदाआविरहोता । पिप्पलद्रुमलप्रसिद्धभवाब्धिपारकेपोता ॥ जयंतीनंदनजगतिके त्रिविधतापआमयहरण। निमिअरुनवयोगेश्वरा पादत्राणकीहौंशरण ॥ १३ ॥ पदपरागकरुणकरौ जेनियंतानवधा भक्तिके ॥ श्रवणपरीक्षितसुमति व्याससावककरितन । सुठिसुमिर णप्रह्लादपृथुपूजाकमलाचरन । नाभनबंदकसुफलकसुवन दासदी पति कपीश्वर । सख्यत्वेपार्थसमर्पनआत्माबलिधर ॥ उपजीवो इननामकेराते त्राताअगतिके, पदपरागकरुणाकरौ जेनियंतानवधा भक्तिके ॥ १४ ॥

दोहा ॥ यान पुष्पमय एकलिय, चढे लषण सिय श्याम ॥ करतस्तुति सबदेवमुनि, चलेअवधपुरराम ॥ १ ॥ रघुवर आगम सुनि अवध, घरघरघु रत निशान ॥ मिले भरतपरिजनप्रजा, प्रथमहिं गुरुसतमान ॥ १ ॥ पादत्रा-णकीहौं शरण ॥ वेदाचार्य्यवाक्यं ॥ कर्मावलंबकाः केचित् केचित् ज्ञानावलम्बकाः । वयं तु हरिदासानां पादत्राणावलम्बकाः ॥ २ ॥ भक्ति के भागवते॥ श्रीविष्णोः श्रवणे परीक्षिदभवद्वैयासकिः कीर्तने।प्रह्लादःस्मरणे तदंघ्रिभजने लक्ष्मी पृथुः पूजने ॥ अक्रूरस्त्वभिवंदने कपिपतिर्दास्ये च सख्येऽर्जुनः ॥ सर्वस्वात्मनिवेदने बलिरभूत्कृष्णाप्तिपारंपरा ॥ ५ ॥

श्रवणरसिककहूंसुनेनपरीक्षितसे पानहूंकरतलागैकोटिगुनीप्या-सहैं । मुनिमनमांझक्योंहूंआवतनध्यावतहू वहीगर्भमध्य देखिआ-योरूपरासहै । कहीशुकदेवजूसोंटेवमेरीलीजैजानिप्राणलागेकथा-नहींतक्षककात्रासहै।कीजियेपरीक्षाउरआनीमतिसानीअहो बानीवि-रमानीजहांजीवननिरासहै ॥ ९५ ॥ शुकदेवकीशंका ॥ गर्भतेनिक-

सचलेबनहींमेंकीनों बास व्याससे पिताको नहीं उत्तरहूदियोहै। दशमश्लोकसुनिगुणमतिहारिगई नईभईरीतिपढ़िभागवतलियोहै। रूपगुणभरसह्योजातकैसेकरिआये सभानृपढारिभीज्योप्रेमरसहियोहै। पूछैंभक्तभूपठौरठौरपरैंभौरजाइ गाइउठैंजबैमानोरंगझरिकियोहै॥ १६॥

प्यासहै॥ पारनो॥ प्रवराश्चातको हंसः शुको मीनादयस्तथा। अवरा वृक भूरण्डवृषोष्ट्राद्याःप्रकीर्तिताः॥ १॥ छप्पय॥ अन्य मनादृगलोलपदछेदक असमंजस। स्थित अधीर श्रुति मंद पलक झपकैनिद्रावस। प्रश्न प्रसंगति मिलै मधुर अनुमोदन अक्रिय। बादर सिरसकछहर अभिनज्ञ अलापत प्रियाप्रिय। रसिक अनन्य विशालमति बातकहत अनुभवसुकृत। दश दोषरहित श्रोतामिलै तौ उज्ज्वल रस वरषै अमृत॥ २॥ दशमश्लोक॥ दशमे॥ अहो बकीयं स्तनकालकूटं जिघांसयापाययदप्यसाध्वी। लेभे गतिं धात्र्युचितां ततोऽन्यं कं वा दयालुं शरणं व्रजेम॥ ३॥ परिनिष्ठितोपि नैर्गुण्येउत्तमश्लोकलीलया॥ गृहीतचेता राजर्षे आख्यानंतदधीतवान्॥ ४॥ परैंभवरजाइ॥ कवित्त॥ सूझत न वारापार लिख्यो प्रेमहै अपार मिलन अथाह देखि धीरज हिरातुहै। पातीको अधारपाइ पैरत सनेह सिंधु बिरह की लहरि मांझ हियरा हिरात है। नवल गुणबंधीबूडि ढूंढ़तरतन औधी मूरति मरजियाकी नेकन थिरात है। एक बेरबांचि पुनि फेरि खोलि फेरि बांचि बांचि बांचि प्राणप्यारी बूड़ि बूड़िजातिहै॥ ५॥

प्रह्लादकीटीका॥ सुमिरणसांचोकियोलियोदेखिसबहींमें एकभगवानकैसेकाटैतरवारहै। काटिबोखड्गजलबोरिवोसकतिजाकी ताहीकोनिहारैचहुँओरसो अपारहै। पूँछतेबतायोखंभतहांहींदिखायोरूप प्रगटअनूपभक्तवाणीहींसोप्यारहै। दुष्टडारचोमारिगेरेआंतैंलईडारितऊक्रोधको न पारकहाकियोयोंविचारहै॥ १७॥

पूंछेते॥ श्लोक॥ तत्साधु मन्ये सुरवर्य देहिनां सदा समुद्विग्नधियामसद्ग्रहात्। हित्वात्मपातं गृहमंधकूपं वनंगतो यद्धरिमाश्रयेतम्॥ १॥ श्रवणं की-

र्तनं विष्णोःस्मरणं पादसेवनम् ॥ अर्चनं वन्दनं दास्यं सख्यमात्मनिवेदनम् ॥ कवित्त ॥ पानिसों बांधिकै अगाध जलबोरि राखे तीर तरवारनि सों मारि मारि हारे हैं । गिरिते गिराय दिये डरपे न नेकु तब मतवारे परवत से हाथीतरडारे हैं ॥ फेरे शिर आरा लै अगिनिमांझ जारे पुनि पूंछि मीडिगातनु लगाये नागकारे हैं । भावते के प्रेममें मगन कछू जानै नहिं ऐसे प्रह्लाद पूरे प्रेम मतवारे हैं ॥ ३ ॥ व्याल कराल महा विषपावक मत्त गयन्दनिके रद तोरे ॥ ताते निशङ्क चले डरपे नहीं किंकरते करनी मुख मोरे ॥ नेक विषाद नहीं प्रह्लादहि कारण केहरि केवल होरे । कौनकी त्रास सहै तुलसी जोपै राखिहै राम तौ मारिहै कोरे ॥ ४ ॥ छप्पय ॥ गगन गूंज गूंजरत शोर दशहूं दिशि पूरण । हरत धरति कलमलत शेष शंकर विषचूरण । उसरसंक सकपकत धीर धंपकत धमक सुनि । भगत भीर भहराइ खंभ फहराइफटितपुनि ॥ अति विकट दंत कट कट करत चट पटाइ नख करत तप । लफ लफतजीभ दुर्जन दलन सुजय जय श्रीनृसिंह वपु ॥ ५ ॥ अति भक्तिके काज सुधारनको अद्भुत अवतार मुरारि धरे ॥ ६ ॥

कवित्त॥डरेशिवआदिकहुँदेख्योनहींक्रोधऐसे आवत न ढिगकोऊलक्ष्मीहूंत्रासहै । तबतौपठायोप्रह्लादअह्लादमहा अह्लाभक्तिभावपग्योआयोप्रभुपासहै । गोदमेंउठाइलियोशीशपरहाथदियो हियोहुलशायोकहीवाणीविनयराशहै ॥ आईजगदयालगिपरेउश्रीनृसिंहजूकोअरयोयोंछुटावोकरौमायाज्ञाननाशहै ॥ ९८ ॥

वाणी विनयराशिहै ॥ पाद्मे ॥ कुलं पवित्रं जननी कृतार्थी वसुंधरा सा वसती च धन्या । स्वर्गे स्थितास्तत्पितरोपि धन्या येषां कुले वैष्णवनामधेयम् ॥ १ ॥ छप्पय ॥ मनोरथ मनके भाव असत्त कहत अधिकारीसों हम निपट असत्य न आतहि देखि सुपनैतिय संगमः सोऊ झूठ जो होय तऊ नहिं कामसतावै । जो मनके अनुभाव जासु तिहि जगत डरावे ॥ सुपनोंहूं है सांच पुन जगतमिटै पहिंचानिये । योंहीं

विषय निवेशता गये सांचसो जानिये ॥ २ ॥ श्लोक ॥ विषयान् ध्याय-तश्चित्तं विषयेषु विसज्जते ॥ मामनुस्मरतश्चित्तं मय्येव प्रविलीयते ॥ ३ ॥ कवित्त ॥ उबटि अन्हाइ लालधोती झमकाइ पट पीताम्बर छोरन झु-राई झमकाइकै । मेलिकै अतरु वह चतुर किशोर वर बांध्यो केशजूरा कर चूरा चमकाइ कै । पहिरिखराऊं मणि रचित खचित तान बानमुसकान पानखात उठ्यो गाइकै । ठाढ़ोसिंह पौरिकर चन्दनकी खौरि चितै कऱ्यो मनकोरतन शिऱ्यो भौंरखाइकै ॥ ४ ॥

अक्रूरकीटीका ॥ चलेअकरूरमधुपुरीतेविसूरनैनचलीजलधारा-कबदेखौंछविपूरको । शकुनमनावै एकदेखिबोईभावै देहसुधिबिसरा वैलोटयोलखिपगधूरिको।वंदनप्रवीन चाह निपटनवीन भई दईशुक देव कहिजीवनकी मूरिको। मिलेरामकृष्णझिलेपाइकैमनोरथको हिलेहगरूपकिये चूरिचूरिचूरिको ॥ ९९ ॥ टीकाबलिजूकी ॥ दियो सर्वसुकरि अतिअनुरागबलि पागिगयोहियो प्रह्लाद सुधिआई है । गुरुभरमावैं नीतिकहिसमुझावैंबोल उरमेंनआवैंकिती भीतिउपजाईहै ॥ कह्योजोईकियोसांचोभावपनलियोअहो दियोडर हरिहूनेमतिनचलाई है । रीझेप्रभुरहेद्वारभयेवशहारिमानी श्रीशुक-बखानीप्रीतिरीतिसोईगाई है ॥ १०० ॥ मूल ॥ हरिप्रसादरसस्वा दकेभक्तइतेपरमान ॥ शङ्करशुकसनकादि कपिलनारदहनुमाना । विष्वक्सेनप्रहलाद वलिरु भीषमजगजाना ॥ अर्जुन ध्रुव अम्बरीष विभीषणमहिमाभारी । अनुरागीअक्रूरसदाउद्धवअधिकारी ॥ भगवन्तभक्तअवशिष्टकी कीरतिकहनसुजान । हरिप्रसादरसस्वाद-के भक्तइतेपरमान ॥ १९ ॥

चूरिचूरि चूरिको॥कबित्त॥बांधिकै मुकेसी चीरा कलँगी जटित हीरा तुर्राढिगगोचपेंचललितही सँवाऱ्योहै । झुंगा एकलमकामकंचन बदरंग होत एक छोर पटकाको छैलतासों ढाऱ्योहै । धुकधुकी कंठ मध्य हीरा नग मोती जरे शोभित गलमाल आजु लालमैं निहाऱ्यो है । पहुँचनिमें

पहुँची सुन्दर रतन जरी अमैट करे नैन अमैटि मनडार्‌यो है ॥ १ ॥ कह्यो जोई ॥ श्लोक । असंतुष्टा द्विजा नष्टा संतुष्टश्च महीपतिः ॥ सलज्जा गणिका नष्टा निर्लज्जा च कुलांगना ॥ २ ॥ हरिप्रसाद ॥ पाद्मे ॥ बलिर्विभीषणो भीष्मः कपिलो नारदोऽर्जुनः ॥ प्रह्लादो जनको व्यासो अम्बरीषः पृथुस्तथा ॥ ३ ॥ विष्वक्सेनो ध्रुवोऽक्रूरो सनकाद्याः शुकादयः ॥ वासुदेवप्रसादान्नं सर्वे गृह्णन्तु वैष्णवाः ॥ ४ ॥

ध्यानचतुर्भुज चितधर्‌यो तिन्हैं शरणहौं अनुसरौं । अगस्त्यपुलस्त्यपुलह चमनवशिष्ठसौभरऋषि । कर्दमअत्रिरिचीकगर्गगौतमव्यासाशिषि ॥ लोमशभृगुदालभ्यअंगिराशृङ्गीप्रकाशी । मांडवविश्वामित्र दुर्वासासहसअठासी ॥ यावलियामदग्निमयादर्शकश्यपपरचतपाराशरपदरजधरौं । ध्यानचतुर्भुजचितधर्‌यो तिन्हैंशरण हौं अनुसरौं ॥ १६ ॥

चतुर्भुज ॥ छप्पय ॥ क्रीट मुकुट अरु तिलकभाल राजतछबि छाजत । पीतबसन तनुश्याम कामकोटिक लखिलाजत ॥ कंठत्रिवली श्रीवत्ससुभग शोभित मनमोहत। वैजंतीवनमाल कौनउपमा कवि टोहत ॥ कर शंख चक्र गदा पद्मधर रूपअमितगुण गरुड़ध्वज । गोविंद चरण वंदत सदा जय जय जय श्रीचतुर्भुज ॥ १ ॥

साधनसाध्यसत्रहपुराणफलरूपीश्रीभागवत ॥ ब्रह्मविष्णुशिवलिंगपद्मस्कंधविस्तारा । बावनमीनवराहअग्निकूरमऊदारा ॥ गरुड़नारदीभविष्य ब्रह्मवैवर्त्तश्रवणशुचि । मार्कंडब्रह्मांडकथानानाउपजैरुचि ॥ परमधर्मश्रीमुखकथितचतुरश्लोकीनिगमसत । साधनसाधिसत्रापुराणफलरूपीश्रीभागवत ॥ १७ ॥ दशआठस्मृति जिनउच्चारी तिनपदसरसिजभालभो ॥ मनुस्मृतिआत्रैवैष्णवीहार्त्तिकजामी । याज्ञयल्क्यअंगिराशनैश्चरसामृतकनामी कात्यायनिसांखिल्यगौतमीवशिष्ठीदाखी । सुरगुरुआशाताप पराशरकृतमुनिशाखी । आशापासउदारधी परलोकलोकसाधनसो । दश-

आठस्मृतिजिनउच्चरीतिनपदसरसिजभालभो ॥ १८ ॥ मूल ॥ पावैंभक्तिअनपायनीजेरामसचिवसुमिरणकरैं । सृष्टिविजयीजयंत नीतिपरशुचिरविनीता । राष्ट्रविवर्द्धननिपुणसुराष्ट्रपरमपुनीता ॥ अशोकसदाआनन्दधर्मपालकतत्त्ववेता । मंत्रीवरज्यसुमंतचतुर्जग-मंत्रीजेता ॥ अनायासरघुपतिप्रसन्नभवसागरदुस्तरतरैं । पावैंभ-क्तिअनपायनीजेरामसचिवसुमिरणकरैं ॥ १९ ॥

फलरूपी श्रीभागवत ॥ मंगल रूप अनूप निगम कल्पद्रुमको फल । बीजवकुलते रहित मधुररस सहित विमल कल ॥ कहत सुनत सुख देत अधिक हरि भक्ति बढावत । सब सारनिको सार व्याससुत शुक मुख गावत ॥ तिमिर हरणको सूरसम श्रीगुविंद जगजगमगत । पूरन पुराणपति प्रगट नित जय जय जय श्रीभागवत ॥ २ ॥ प्रथमे ॥ निगमकल्पतरोर्गलितं फलं शुकमुखादमृतद्रवसंयुतम् । पिबत भागवतं रसमा लयं मुहुरहो रसिका भुवि भावुकाः ॥ ३ ॥ छप्पय॥एकवेदके चारि सह-सशाखा विस्तारी । साठि लाख इतिहास महाभारत कियो भारी ॥ चारिलाख अरु अर्द्ध व्यास वेदांत बखान्यो । अष्टादश किये पुराण हृदय हरिनाम न जान्यो ॥ कहत पढ़त सीखत सुनत दाह न हिरदय-को गयो । तत्त्ववेत्तानारद मिले तब व्यास हृदय शीतल भयो ॥ ४ ॥ दशहजार ब्रह्म पुराण, इकतालीस हजार विष्णु पुराण, छिहत्तरि हज़ार शिव पुराण, ग्यारह हजार लिङ्गपुराण, पचपन हज़ार पद्मपुराण, एकसौ इक्यासी हजार स्कंद पुराण, दश हजार बावन पुराण, चौदह हज़ार मीन पुराण, चौबीस बाराह पुराण, पंद्रह अग्नि पुराण, सत्रह कूर्म्म पुराण उनईस गरुड पुराण, पचीस नारद पुराण, चौदह भविष्य पुराण, अठारह ब्रह्मवैवर्त पुराण, नवमार्कंडेय पुराण, बारह ब्रह्मांडपुराण, अठारह हजार श्रीभागवत श्लोक एवं पुराण संदोहाश्चतुर्लक्षउदाहृता ॥ १ ॥ कृष्णतन छप्पय ॥ प्रथम द्वितीय दोऊ चरण तृतीय चतुर्थदोऊ उरु । पंचमनाभि गंभीर हृदय षष्टम सुख पुरु ॥ सप्तम अष्टम भुजा नवम कंठ विराजै ।

दशम वदन सुखसदन भाल एकादशराजै ॥ द्वादश शिर शोभित सदा मंगल रूपी सुमिरनमन। तत्त्ववेत्ता तिहुँलोकमें कीर्तिरूपी कृष्णतन ।। २ ।। नवमे ॥ मात्रास्वस्रा दुहित्रावा नविविक्तासनोभवेत्। बलवानिंद्रियग्रामो विद्वांसमपकर्षति ।। ३ ।। तापै संन्यासीको दृष्टांत ।।

शुभदृष्टिवृष्टिमोपरकरौ जेसहचररघुवीरके ॥ दिनकरसुतहरि राजबालिवच्छकेशरीऔरस ॥ दधिमुखद्विविदमयंदऋच्छपतिसम-कोपैरस । उल्कासुभटसुसेनदरीमुखकुमुदनीलनल ॥ सरभांगवे-गवाछपनस गँधमादन अतिबल॥पद्मअठारहयूथपाल रामकाजभद्र-भीरके । शुभदृष्टिवृष्टिमोपरकरौ जेसहचररघुवीरके ॥२०॥ मूल ॥ ब्रजबड़ेगोपपरजन्यकेसुतनीकेनवनंद ॥ धरानंद ध्रुवनंद तृतियउप नंद सुनागर । चतुर्थतहां अभिनंदनंदसुख सिंधुउजागर ॥ सुठि-सुनंदपशुपालनिर्मलनिश्चयअभिनंदन । करमाधरमानंद अनुज विदितवल्लभजगवंदन ॥ आसपास वा वगरके जहांविहरतपशुपशु छंद । ब्रजबड़ेगोपपरजन्यकेसुतनीकेनवनंद ॥ २१ ॥

बालवच्छ ॥ कवित्त ॥ हरगिरि हाल हद मेरुगिरि हाल पुनि उद्र-गिरि हाल और रुद्रगिरि हालवी । सप्तपाताल हाल दशो दिग्पाल हाल पलपल हाल ऊपर उझालवी । केशवदास लंकको विपुल दल बलहाल दशशीश हाल उभ्यो भुजबीश हालवी । लोक हाल और भूलोक हाल एकबालि बलवंत सुतपग नहीं हालवी ॥ १ ॥ पादरज भागवते ॥ तद्भूरि भाग्यमिह जन्म किमप्यटव्यामिह गोकुलेपि कतमांघ्रिरजो-भिषेकम् । यज्जीवतंतु निखिलं भगवान् मुकुंदस्त्वद्यापि यत्पदरजः श्रुति-मृग्यमेव अहो भाग्यमहो भाग्यं नंदगोपव्रजौकसाम् । यन्मित्रं पर-मानंदं पूर्णब्रह्म सनातनम् ॥ आशामहो चरणरेणुजुषमहं स्याम् वृन्दा-वने किमपिगुल्मलतौषधीनाम् । या दुस्त्यजं स्वजनमार्यपथं च हित्वा भेजुर्मुकुंदपदवी श्रुतिभिर्विमृग्याम् ॥ ३ ॥ या दोहने वहनने मथनो-पलेपप्रेखेंखनाभरुदितेक्षणमार्जनादौ ॥ गायंतिचैनमनुरक्तधियोऽश्रुकं-

ह्यो धन्या ब्रजस्त्रिय उरुक्रमचित्तपानाः ॥ ४ ॥ षष्टिवर्षसहस्राणि मया तप्तं तपः पुरा ॥ नन्दगोपव्रजस्त्रीणां पादरेणूपलब्धये ॥ ५ ॥

बालवृद्धनरनारिगोप हौंअरथीउनपादरज ॥ नंदगोपउपनंदध्रुव धरानंदमहरियशोदा कीरतदावृषभानुकुँवरि सहचरिविहरतमनमोदा ॥ मधुमंगलसुबलसुबाहुभोजअर्जुनश्रीदामा । मंडलग्वालअनेकश्यामसंगीबहुनामा ॥ घोषनिवासनकीकृपा सुरनरबांछितआदि अज । बालवृद्धनरनारिगोप हौंअर्थीउनपादरज ॥२२॥ मूल ॥ ब्रजराजसुवनसँगसदनबनअनुगसदातत्पररहैं ॥ रक्तकपत्रक और पत्रिसबहीमनभावैं । मधुकंठौवमधुवर्त्तरसालबिशानसुहावैं । प्रेमकंदमकरंदआनंदसदाचंद्रहासा । यादवकुलरसदानशारदाबुद्धिप्रकासा ॥ सेवासमयविचारिकै चारुचतुरचितकीलहैं । ब्रजराजसुवनसंगसदन वनअनुगसदातत्पर रहैं ॥ २३ ॥ मूल ॥ सप्तद्वीपमेंदासजेतेमेरेशिरताज । जंबूऔरपलछिशाल्मलिबहुतराजऋषि।कुशपवित्रपुनिक्रौंचकीनमहिमाजानैंलखि ॥ शाकविपुलविस्तारप्रसिद्धनामीअति पुहकर । पर्वतलोकालोक ओकटापूकञ्चनधर॥हरिभृत्यवसतजेजेजहांतिनसोंनितप्रातिकाज । सप्तद्वीपमेंदासजे ते मेरेशिरताज ॥ २४॥

मनमोदा ॥ कवित्त ॥ कहा इतरात जाइ अहो आवो कहैं बात सुनेमनकंठ सुखगात न समाइगो । थोरे बैस ओरे भाइ चोरे लेत लकचित्त कुंडल झलकेहरि हियराहिराइगो ॥ तुमकाह्नसाँवरे पधारि देखौ एकबार मेरो गोरो कन्ह लखै मनललचाइगो । ग्रीवकी लटक मुरि भौंहकी मटकबीच वीराकी चटकमें अटकि मन जाइगो ॥ १ ॥ ॥ दोहा ॥ राधा हरि हरि राधिका, बनिआये संकेत । दंपति रति विपरीति रस सहज सुरति सुखलेत ॥ २ ॥

मध्यद्वीपनवखण्डमें भक्तजितेममभूप । इलावर्त्तआधीशसङ्कर्षणअनुगसदाशिव । रमनकमलमनुदासाहिरण्यकूरमअर्जुनइव । कुरुबराहभूभृत्यवरिषहरिसिंहप्रह्लादा । किंपुरुषरामकपिभरतनारायण

वीनानादा ॥ भद्रासुग्रीवहयभद्रस्रवकेतुकामकमलाअनूप । मध्यद्वीपनवखण्डमेंभक्तजितेममभूप ॥ २६ ॥ मूल॥ श्वेतद्वीपमेंदासजेश्रवणसुनोंतिनकीकथा । श्रीनारायणकोबदननिरंतरताहीदेखें । पलकपरैजोबीचकोटियमजातनलेखें ॥ तिनकेदरशनकाजगयेजहँवीणाधारी। श्यामदईतहँसेनउलटिअबनहिंअधिकारी । नारायणीअख्यानदृढ़तहांप्रसंगनाहिंनतथा । श्वेतद्वीपमेंदासजेश्रवणसुनोंतिनकीकथा ॥ २७ ॥ टीका ॥ श्वेतद्वीपवासीसदारूपकेउपासी गयेनारदविलासीउपदेशआशलागीहै । दईप्रभुसेनजिनिआवोइहिऐनदृगदेखेसदाचैनमतिगतिअनुरागीहै । फिरेदुखपाइजाइकहीश्रीवैकुण्ठनाथसाथलियेचलेलखोभक्तिअंगपागीहै । देख्योएकसरखगरह्योध्यानधरिऋषि पूंछैंहरिकहोकह्योबड़ोबड़भागीहै ॥ १०१ ॥

पलक परै जो बीच ॥ कवित्त ॥ मंजु मोर मुकुट लटकि घुँघुवारी लटैं झुमिझूमि कुण्डल कपोलनिमें झलकैं । बारिज बदन रस रूपको सदन लखि दमकै रदन भारि भारि छबि छलकैं। कानन छुवतकोपे ऐन मैन कोटि मोहे शोभा सर लखि लखि मन मीन ललकैं । देखिबेको श्याम शोभा देतो दृग रोम रोम सोन करो विधि औ अविधि करी पलकैं ॥ १ ॥ दोहा ॥ बड़ो मन्द अरबिंद सुत, जिहि न प्रेम पहिंचानि ॥ पियमुख निरखनि दृगनिको, पलकरची बिच आनि ॥ २ ॥

वरषहजारबीतेनहींचितचीते प्यासोईरहत ऐपैपानी नहींपीजिये पावैजोप्रसादजबजीभसोंसवादलेतलेतनहींऔरयाकीमतिरसभीजिये । लीजैबातमानिजलपानकरिडारिदियोचोंचभरिदृगभरबुधिमति धीजिये। अचरजदेखिचपलगैनानिमेषकहूं चहूंदिशिफिरचोअबसेवा याकीकीजिये ॥ १०२ ॥ चलेआगेदेखेकोऊरहैनपरेखोभावभक्तकरिलेखोगयेद्वीपहारिगाइये । आयोएकजनधायआरतीसमयविहायखैंचिलियेप्राणफेरिबधूयाकीआइये ॥ नहीइनकहीपतिदेखोनहीं महीपरचोचरचोयाकोजीवतनगिरचोमनभाइये । ऐसेपुत्रआदिआ-

येसांचेहितमेंदिखाये फेरिकैजिवायेऋषिगायेचितलाइये ॥ १०३ ॥

मूल ॥ उरगअष्टकुलद्वारपालसावधानहरिधामाथिति ॥ इलापत्रमुखअनन्तअनन्तकीरतिविस्तारत । पद्मसंकुपनप्रगटध्यानउरतेनहिंटारत ॥ अश्रुकमलबासुकीअजितआज्ञाअनुवर्ती । करकोटकतक्षकसुभटसेवाशिरधरती ॥ आगमोक्तशिवसंहिताअगरएकरसभजनरत । उरगअष्टकुलद्वारपालसावधानहरिधामाथिति ॥ १७ ॥

उरग अष्ट ॥ दोहा ॥ दोइ जीभ तनु श्याम हैं, वाकचलन विष खानि ॥ तुलसी गुरुके मंत्रपै शीश समर्पत आनि ॥ १ ॥ अनंत कीर्ति ॥ कवित्त ॥ दीननिको है दयाल दासनिको रक्षपाल सबको शिरोमणि है सदा अविकार है । धन धनहीन को है गुनिन गुनीनकोहै रूपहै विरूप को अनूप है उदारहै । आनंदको कंद भवसिंधुकोपगार दुख द्वंदकी हरण हार महिमा अपारहै ॥ श्रीगोविंद हरिजूके नामको उचार चारु सारन को सार निरधारको आधार है ॥ २ ॥ दोहा ॥ मैं मानस सौं चित्तते, मनदीनो रत्रि सो ॥ मैं आवा जावानित्त मैं तू नजरि न आवदा ॥ २ ॥

चौबीसप्रथमहरिवपुधरे त्योंचतुर्व्यूहकलियुगप्रगट । श्रीसमानुजउदारसुधानिधिअवनिकल्पतरु । विष्णुस्वामिवोहित्यसिंधुसंसारपारकरु ॥ माध्वाचारजमेघभक्तिसरऊसरभरिया । निंबादित्यआदित्य कुहरअज्ञानजुहरिया॥ जनमकरमभागवतधरमसंप्रदायथापींअघट।चौबीसप्रथमहरिवपुधरेत्योंचतुरव्यूहकलियुगप्रगट ॥ २९ ॥

चौवीस ॥ एकादशे ॥ कृतादिषु प्रजा राजन् कलाविच्छन्ति संभवम् । कलौ खलु भविष्यंति नारायणपरायणाः ॥ १ ॥ गीतायां ॥ परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् । धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे ॥ २ ॥ ननु भागवता लोके लोकतत्त्वविचक्षणाः । व्रजन्ति सर्वे संदिष्टा हृदि स्थितेन महात्मना ॥ ३ ॥ भगवानेव भूतानां सर्वत्र कृपया हरिः । रक्षणाय चरेल्लोकान्भक्तरूपेण नारद ॥ ४ ॥ आदि-

पुराणे ॥ भक्तानने वसेद् ब्रह्मा शिरस्येव वसाम्यहम् ॥ नाभौ च शंकरो देवः पदे गंधर्वकिन्नराः ॥ ५ ॥ दोहा ॥ दंभ सहित कलिधर्म लखि छलहि सहित व्यवहार ॥ स्वारथ सहित सनेह सब, समैरुचित आचार ॥ ६ ॥ श्लोक ॥ घोरे कलियुगे प्राप्ते सर्वधर्मविवर्जिते ॥ वासुदेवपरा भक्तास्ते कृतार्था न संशयः ॥ ७ ॥ कलियुगप्रगट ॥ छप्पय ॥ दया स्वर्ग उठि गई धर्म धँसिगयो धरणिमें। पुण्य गयो पाताल पाप भयो वरण वरण में। प्रीति रीति सब गई वैर भयो घर घर भारी। आप आपनी परी जिते जगमें नर नारी। कविराज कहत सांचो सबै निपट पलटि समयो गयो ॥ रे नर निरंध सुन कानदै अब प्रत्यक्ष कलियुग भयो ॥ ८ ॥ दोहा—कलियुग कालकरालकी, वरणि न जाइ अनीति। वैर बढ्यो चार्‍यो बरन, आप समय भयभीति ॥ २ ॥

निंबादित्यनामजातेभयोअभिरामकथाआयोएकदंडग्रामन्योतोकरिआयेहैं ॥ पाककोअबारभई संध्यामानिलईयतीरतीहूनपाऊवेदवचनसुनायेहैं । आंगनमेंनीमतापैआदित्यदिखायोवाहिभोजनकरायो पाछेनिशिचिह्नपायेहैं । प्रगटप्रभावदेखिजान्योभक्तिभावजग दावयाव नामपर्‍योहर्‍योमनगायेहैं १०८ दोहा ॥ रमापद्धितरामनुज, राजैविष्णुस्वामित्रिपुरारि ॥ निम्बादित्यसनकादिकामधुकर गुरुमुखचारि ॥ ३० ॥ मूल ॥ संप्रदायशिरोमणिसिंधुजारच्योभक्तावित्तान । विष्वक्सेनमुनिवर्य्यसपुनषटकोपपुनीता । चोपदेवभागवतलुप्तउद्धर्‍योनवनीता । मंगलमुनिश्रीनाथपुंडरीकाक्षपरमयश । राममिश्ररसरासप्रगटपरतापपरांकुश । यामुनिमुनिरामानुजातिमिरहरणउदयभान । संप्रदायशिरोमणिसिन्धुजारच्योभक्तवित्तान ॥ ३१ ॥ मूल ॥ सहस्रआस्यउपदेशकरिजगतउद्धरणयत्नकियो। गोपुरह्वै आरूढ़उच्चसुरमंत्रउचार्‍यो । सूतेनरपरेजागवहत्तरश्रवणनिधार्‍यो । तिननेईगुरुदेवपद्धतिभइन्यारीन्यारी । कुरतारकशिष्यप्रथमभक्ति वपुमं-

गलकारी। कृपणपालकरुणासमुद्ररामनुजसमनहिंवियोसह ॥ ३१॥

वेदवचन ॥ भागवते ॥ संध्याकाले च संप्राप्ते चतुष्कर्माणि वर्जयेत्। आहारं मैथुनं निद्रां स्वाध्यायं च विशेषतः ॥ १ ॥ आहारे जायते व्याधिः गर्भदुष्टिश्च मैथुने ॥ निद्रायां हरते लक्ष्मीं स्वाध्याये मरणं ध्रुवम् ॥ ॥ २ ॥ आदित्य दिखायो ॥ समये ॥ यस्यास्ति भक्तिर्भगवत्यकिंचना सर्वै गुणास्तत्र समासते सुराः ॥ हरावभक्तस्य कुतो महद्गुणा मनोरथे नासति धावतो बहिः ॥ ३ ॥ रमा पद्धति ॥ पाद्मे ॥ कलौखलुभ-विष्यंतिचत्वारःसंप्रदायकाः ॥ श्रीब्रह्मरुद्रसनकावैष्णवाःक्षितिपावनाः॥ ४ ॥

टीका ॥ आस्यसोबदननामसहसहजारमुखशेषअवतारजानोव-हीसुधिआईहै ॥ गुरुउपदेशमंत्रकह्योनीकेराखोअंत्रजपतहोश्यामजू-नेमूरतिदिखाईहै । करुणानिधानकहीसबभगवानपावै चढ़िदरवाजे-सोपुकारचोधुनिछाईहै । सुनिसीखिलियोयों बहत्तरिहीसिद्धभये नयेभाक्तिचौजयहरीतिलैहैगाईहै ॥ १०६ ॥ गयेनीलाचलजगन्नाथ-जूकेदेखिबेको देख्योअनाचारसबपंडादूरिकियेहैं । संगलैहजाराशि-ष्यरंगभरिसेवाकरैं धरैंहियेभावगूढ़मतदरशायेहैं । बोलेप्रभुवेईआवैं-करैंअंगीकारमैंतो प्यारहीकोलेतकभूँअवगुणनालियेहैं । तऊहढ़की-नीफिरकहीनहींकानकीनीलीनीवेदवाणीविधिकेसेजातछियेहैं ॥ ॥ १०७ ॥ जोरावरभक्तसोंबसाइनहींकहीकितीरतीहूनलावैमन-चोजदरशायोहै । गरुड़को आज्ञादईसोईमानिलईउनाशिष्यनिसमेत निजदेशछोड़िआयोहै । जागिकैनिहारैठौरओरहीमगनभरोदयेयों-प्रगटकरगूढ़भावपायोहै । वेईसबसेवाकरैंश्याममनहरैंसदा धरैंसांचो प्रेमहियेप्रभुजूदिखायोहै ॥ १०८ ॥

मूरति दिखाई है ॥ यह तो बड़ो आश्चर्य्य है ततकाल मूर्ति कैसे देखी तीन वस्तु शुद्धहोहिं तौ खेत में बीज ऊगै बीज घुनौ भूंजो न होइ खेतकर बंजर न होइ, किशान को भाग होइ चेला निर्वासक होइ यह खेत शुद्ध गुरु निर्वासक यह बीजशुद्ध गुरु के भाग ॥ दोहा ॥ गुरु

लोभी शिष्य लालची, दोऊखेलैं दाव ॥ दोऊबूडे बापुरे, चढ़ि पाथरकी नाव १ पाथरकी नाव पै मल्लाहू बूडै चढ़न हारहू बूडै सब भगवान पावै तापै कुठारीजू वाको दृष्टांत ॥ श्लोक ॥ अपिचेत्सुदुराचारो भजते मामनन्य भाक् ॥ साधुरेवसमंतव्यः सम्यग्व्यवसितो हि सः ॥ २ ॥

मूल ॥ चतुरमहंतादिग्गजचतुरभक्तिभूमिदाबेरहैं । श्रुतिप्रतापश्रुतिदेवऋषे वपुहकरइभऐसे । श्रुतिधामाश्रुतिउदधिपराजितवामन जैसे । श्रीरामानुजगुरुबंधुविदितजगमंगलकारी । शिवसंहिताप्रणीतज्ञानसनकादिकसारी ॥ इंद्रापद्धितउदारधीसभासापिसारगकहैं । चतुरमहंतादिग्गजचतुरभक्तिभूमिदाबेरहैं ॥ ३२ ॥ आचारजजामातकी कथासुनतहरिहोइरति । कोऊमालाधारीमृतक बह्योसरितामें आयो । दाहकृत्यज्योंबंधुन्योतिसबकुटुंबबुलायो ॥ नाकसकोचैंविप्रतब हरिपुरतेहरिजनआये । जेंवतदेखेसबनितबकोहूनहिंपाये । लालाचारजलक्षुधाप्रचुरभईमहिमाजगत । श्रीआचारजजामातकीकथासुनतहरिहोइरत॥३३॥टीका॥कवित्त॥आचारजकोजामातबाततापाकी सुनौंनीकेपायोउपदेशसंतबंधुकरमानिये । कीजैकोटिगुणीप्रीत ऐपैनवनतरीतितातेइतिकरौयातेघटतीनआनिये । मालाधारीतनसाधुसरितामेंबह्योआयोलायोघरफेरके विमानसबजानिये । गावत बजावतलैनीरतीरदाहकियो हियोदुखपायोसुखपायोसमाधानिये ॥ चतुरमहंत ॥ श्लोक ॥ अद्यापिनोज्झतिहरः किलकालकूटं कूर्मोबिभर्तिधरणीखलुपृष्ठभागे ॥ अंभोनिधिर्वहतिदुःसहवाडवाग्निमंगीकृतं सुकृतिनः परिपालयंति ॥ १ ॥ लालाचार्य्यपैस्कंधे ॥ तुलसीकाष्ठजांमालांकंठस्थां वहतेतुयः ॥ अशौचश्चाप्यनाचारोमामेवैतिन संशयः ॥ १ ॥ केशरि कश्मीरमोंहोइ है सो राजा जैसिंहसवाई ने अजमेर में लगाई सो नहीं भई तब पूंछी काहेते न भई महाराज जल आवै तौ होइ जहां जलहू मँगायो तऊ न भई महाराज माटी आवै-

तौ होइ माटीहू आई तऊना भई महाराज हवाआवै तौ होइ जैसेही प्रेम हृदयते उपजे खैंचेते न आवै ॥ ३ ॥

कियोसोमहोछोज्ञातिविप्रनिकोन्योतोदियोलियोआयेनाहिंआनी शंकादुखदाहिये । भयेइकठोरेमायाकीनेसबबौरेकछूकहैबातऔरे मेरोदेहवहोआहिहै । यातेनहींखातवाकी जानतनजातिपांति बड़ो उतपातघरलाइजाइदाहिये । मगअवलोकउतपऱ्योसुनशोचहिये जियेआइपूंछैगुरुकैसेकैनिबाहिये ॥ १२० ॥ चलेश्रीआचार्य्यजूपै वारिजवदनदेखिकरीसाष्टांगबातकहीसोजनाइये । जावोजूनिशंकवे प्रसादकोनजानेरंक जानैंजेप्रभावआवैवेगिसुखदाइये। देखेनभभूमि द्वारऐहैनिरधारजन वैकुंठनिवासीपांतिढिगह्वैकेआइये । इन्हेंअब जानदेवोजिनकछूकहोअहोकरो हांसिजबैघरजाइनिजपाइये॥ १२१

आयेनहिं ॥ आगमे ॥ माला धारक मात्रोपि वैष्णवो भक्ति वर्जिताः ॥ पूजनीय प्रयत्नेन ब्राह्मणा किंतु मानुषैः ॥ १ ॥ प्रसाद कोन जानैरंक ॥ स्कांदे ॥ महाप्रसादे गोविंदनाम्नि ब्राह्मण वैष्णवे ॥ स्वल्प पुण्यवतां राजन् विश्वासो नैव जायते ॥ २ ॥ घरजाइ खाइये ॥ प्रतिमामंत्रतीर्थेषु भेषजे वैष्णवेगुरौ ॥ यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी ॥ ३ ॥ कवित्त ॥ मल्ल जानै कुलिश नरेश नरजानैं पुनि नारीजानैं मीनकेत मूरति रसालहै। गोपजानैं स्वजन महीप जानैं दंडदेन यादव यों जानैं इष्ट देवता कृपालहै । अज्ञानी विराट जानै गोपी परतत्त्व जानैं रंगभूमि रामकृष्ण गये ऐसे हालहैं । नंद जानैं बालक गुविंद प्रतिपाल जानैं शाल शत्रु वंश जानैं कंस जानैं कालहै ॥ २ ॥

आयेदेखिपारषदगयोगिरिभूमिसद हदकरीकृपायह जानिनिज जनको पायोलैप्रसादस्वादकहिअहलाददयो नयोलयेमोदजान्यो सांचोसंतपनको।विदाह्वैपधारेनभमगमेंसिधारेविप्र देखतविचारेद्वार व्यथाभईमनको । गयोअभिमानआतमंदिरमगनभये नयेदृगलाज बीनबीनिलेतकनको ॥ १२२ ॥ पाइलपटाइअंगधूरिमेंलुटाये कहैं

करौमनभायोऔरदीनबहुभाष्योहै। कहीभक्तराजतुम कृपामेंसमा जपायोगायो जोपुराणनमेंरूपनैनचाष्योहै। छांडोउपहासअबकरौ निजदासहमैं पूजीजिय आश मन जतिअभिलाष्योहै। कियेयेप्रशं समानौहंसयेपरमकोऊऐसेसेजलाखभांतिघरघरराख्योहै ॥ १२३ ॥

मूल ॥ श्रीमारगउपदेशकृतिश्रवणसुनौ अख्यानशुचि गुरुगमन कियोपरदेशशिष्यसुरधुनीदृढ़ाई। इकमंजनइकपानएकहृदयबंद नाकराई। गुरुगंगामेंप्रवेशशिष्यकोवेगिबुलायो। विष्णुपदीभयजा निकमलपत्रनपरधायो। पादपद्मतादिनप्रगटसबैप्रसन्नमनपरम रुचि श्रीमारगउपदेशकृतिश्रवणसुनौआख्यानशुचि ॥ ३५ ॥

गयोगिरिभूमि ॥ पद ॥ संत चरण परशीश धऱ्यो। राखिलियो बहुभांति कृपाकरि मनते संशय शूल हऱ्यो। हमरे अवगुण मेटि दूरि घट मैं हरिरस अमृत भऱ्यो। कीटभृंग ज्यों मृतकजिवायो जीवकागते हंस कऱ्यो ॥ दूरि कियो अज्ञान अँधेरो ज्ञान रतन जब दीप बऱ्यो। हरिहि दियाइ कियो हरिहीसो इहि सुखमायादुरितत-यो। प्रभुवश भये साधुकी सेवा साधु संगते काजसऱ्यो। राम राइके हित भगवानैं साधु-सगको अमल पऱ्यो ॥ १ ॥

टीका ॥ देवधुनीतीरसोंकुटीरबहुसाधुरहैं रहैगुरुभक्तएकन्यारो-नहींह्वैसकै। चलेप्रभुगांवजिनितजोबलिजांवकही करौदाससेवागं-गामेंहींकैसेछ्वैकै। क्रियासबकूपकरैविष्णुपदीध्यानधरै रोषभरेसंत श्रेणीभावनहिंभैसकै। आयेईशजानिदुखमानिसोबखानकियो आनि मनजानिबातअंगकेसेध्वैसकै ॥११४॥ चलेलैकेन्हानसंगगंगमेंप्रवेश कियो रंगभरिबोलेसोअँगोछावेगिलाइये करतविचार शोचसागर-नवारापार गंगाजूप्रगटकह्योकंजनपरआइये।चलेईअधरपगधरैसोम धुरजाइप्रभुहाथदियोलियोतीरभीरछाइये। निकसतधाइचाइपाइल पटाइगये बड़ोपरतापयहनिशिदिनगाइये ॥ ११५ ॥

देवधुनीकैसीहै॥तृतीये॥याबैसच्छीतुलसीविमिश्रा कृष्णांघ्रिरेण्वभ्य

धिकांबुनेत्री ॥ पुनाति लोकानुभयत्र शेषान्कस्मान्न सेवेत मारस्यमाणः ॥ ॥ १ ॥ आदिपुराणे ॥ दृष्ट्वा जन्मशतं पापं स्पृष्ट्वा जन्मशतद्वयम् ॥ स्नात्वा पीत्वा सहस्राणि हंति गंगा कलौ युगे ॥ २ ॥ तापै दृष्टांत भूतको अरुसिद्धको॥भो दरिद्र नमस्तुभ्यं सिद्धोहं तव दर्शनात्॥पश्याम्यहं जगत्सर्वं न मां पश्यति कश्चन ॥ कवित्त ॥ कारोकुलकंटक डरारो बोलभारो जाको तीरथके तीरपगकबहूं न लैगयो । कहैंकविगंगकारेकागहूते सरस-आप आनियमप्रेरचो तबखाटमें कुपैगयो । गंगाजीकी धोई चादरि बकुचामें धरी करी ताके अंग लागतही तारागणलैगयो । चाहचौर-ठौरै सबदेवता निहोरै वा गंगाजीकी चादरि सोंचत्रभुजह्वैगयो ॥ ४ ॥ ऐसो गंगाको प्रताप ताको क्यों न उठिधाइये ॥ ५ ॥

मूल ॥ श्रीरामानुजपद्धतिप्रतापअवनिअमृतह्वैअनुसऱ्यो ॥ देवाचारजद्वितीयमहामांहमाहारंयानंद । तस्यराघवानंदभयेभक्त-नद ॥ पत्रावलंबपृथिवीकरिवकाशीअस्थाई । चारिवरण हीकोभक्तिदृढ़ाई ॥ तिनकेरामानंदप्रगटविश्वमंगलजिह-श्रीरामानुजपद्धतिप्रताप अवनिअमृतह्वैअनुसऱ्यो॥३६॥ दरघुनाथज्योंद्वितीयसेतजगतरनकियो।अनंतानंदकबीरसु पद्मावतनरहारि।पीयाभावानदरैदासधनासेनसुरसुरकीधर रौशिष्यप्रशिष्यएकतेएकउजागर।विश्वमंगलआधारभक्तिद आगर ॥बहुतकालवपुधारिकैप्रणतजननिकोपारदियो।श्रीरा घुनाथज्योंद्वितीयसेतजगतरणकियो३७अनंतानंदपदपरशकै लसेतेभये।योगानंदगयेशकरमचंदअल्हपैहारीसारी।रामदास आरगअवधिगुणमहिमाभारी॥तिनकेनरहरिउदित मुदितमोहामंगल तन।रघुबरयदुवरगायविमलकीरतिसंच्योधन ॥हरिभक्तिसिंधुवेलार-चैपानिपद्मजाशिरदये।अनंतानंदपदपरशकैलोकपालसेतेभये॥३८॥

चारिवर्ण एकादशे॥मुखबाहूरुपादेभ्यः पुरुषाः स्वाश्रमैः सह । चत्वा-रो जज्ञिरे वर्णा गुणैर्विप्रादयःपृथक् ॥ परावपुरुषं साक्षादात्मप्रभवमीश्वरम् ।

न भजंत्यवजानंति स्थानभ्रष्टाः पतंत्यधः ॥ २ ॥ वारैसिषयेवारैहीसेत रूपीहोतभये ॥ छप्पय ॥ जगत समुद्र अपार तासकै जनममरनतट । काम क्रोध मद लोभ तासमेंलहरि महाभट ॥ मोहग्राहतम प्रबल निगलि जावै सीसारा। तामें गोताखातनाहिंकोउतनक अधारा ॥ दुखपाये बूड़न ललत हैं सुखपाये उछरत जानि।दीनानाथ रघुनाथ बिन कौनछुटावैआनि॥

टीका ॥ द्योसाएकगावतहां श्रीरंगसुनामरहैबनिकसरावगीकी- कथालैबखानिये। रहतोगुलामगयोधर्मराजधामवहां भयोबड़ोदूत- कहीयेरेसुनिवानिये।आयेबनिजारेलेखितूदिखावैचैन खेलि बैलशृङ्ग मध्यपैठिमारयोपहिचानिये । बिनहरिभक्तिसबजगतकीयहीरीति- भयोहरिभक्तिश्रीअनंतपदध्यानिये ॥ १२६ ॥ सुतकोदिखाईदेत- भूतनितसूक्योजातपूछैंकहीबाततनवाहीठौरस्वायोहै । आयोनि- शिमारबेकोधायोयहरोषभरयो देवोगतिमोको उनबोलिकैसुना- योहै । जातकोसुनारपरिनारलगप्रेतभयो लयोतेरोशरणमैं ढूंढ़जग- पायोहै । दीनोंचरणामृतलैकियोदिव्यरूपवाकोअतिहीअनूपसुनो भक्तिभावगायोहै ॥ १२७ ॥ मूल ॥ निर्वेदअवधिकलिकृष्णदास- अन्नपरिहरियपयानकियो । जाकेशिरकरधरयोतासुकरतरनहिं- आडयो। अप्योंपदनिर्वाणशोचनिर्भयकरिछांडयो । तेजपुंजबल- भजनमहामुनिऊरधरेता । सेवतचरणसरोजराइराणाभुविजेता । दहिनवंशदिनकरउदयसंतकमलहियसुखदियो । निर्वेदअवधिक- लिकृष्णदासअन्नपरहरियपयानकियो ॥ १९ ॥

धर्मराजधाम ॥ सवैया ॥ जागत के हम पाहरू हैं पुनि सोवतकै गठिया सरकावैं । षटकोन करैं परकोधन चोरत दोरत चोरके शोरसु- नावैं । हमहीं शिरभूत चढाइ सुजाइके पांइधुवाइके प्याइछुड़ावैं । याहीते नाथ बरोबरिहो कहु धर्म अधर्म की बात चलावैं॥ १ ॥ चरणामृत॥ पाद्मे ॥ गंगासागरसहस्राणि द्वारकाणां शतैरपि ॥ एवं तीर्थादिकं पुण्यं सतां पादोदकं पिबेत् ॥ २ ॥ शिरकर धाऱ्यो ॥ स्वाने ॥

गुकारो ह्यंधकारस्तु रुकारोस्यै विनाशकृत् ॥ अंधकारविनाशश्च गुरु-रित्यभिधीयते ॥ ३ ॥

टीका॥कवित्त॥जाकेशिरकरधरयोतातरनऔडयोहाथदीनोबड़ो-वरराजाकुल्हकोजुसाखिये। परवतकंदरामेंदरशनदीन्योआनिदियो-भावसाधुहरिसेवाअभिलाखिये। गिरीजोजलेबीथारमांझतेउठाइबाल भयोहियेशालबिन अरपितचाखिये । लैकरिखड्गताहि मारणउ-पाइकियो जियोसंतऔटफिरमौलकरिराखिये ॥ १८ ॥ नृपसुत भक्तबड़ोअबलौंविराजमानसाधुसनमानमेंनदूसरोबखानिये। संतब-धूगर्भदेखिउभयपनवारेदियेकहीगर्भइष्टमेरो ऐसोउरआनिये। कोऊ-भेषधारीसोल्योहारी पगदासनकोकहीकृपाकरोकहाजानेऔरप्रानि-ये । ऐपैताजिबोक्रियादेखिजगबुरोहोत जोतिबहुदईदामरामम्मति सानिये ॥ ११९ ॥ मूल ॥ पैहारीपरसादते शिष्यसबैभयोपारकर। कील्हअगरेकेवलचरणव्रतहठीनरायन । सूरजपुरुषापृथुतपूरहादि-भक्तपरायन। पद्मनाभगोपालटेकटीलागदाधारी। देवाहेमकल्याण गंगागंगासमनारी । विष्णुदासकन्हररंगाचांदमशवरीगोविंदपर । पै हारीपरसादते शिष्यसबैभयेपारकर ॥ ४० ॥

विनअर्पित ॥ श्लोक विनार्पितं तु गोविंदे भोजन कुरुते यदि ॥ श्वानो विष्ठा समं चान्नं तोयं च सुरपासमम् ॥ १ ॥ भागवते ॥ येषां संस्मरणात्पुंसांसद्यः शुद्धयन्ति वै गृहाः ॥ किं पुनर्दर्शनस्पर्शपाद शौचासनादिभिः ॥ २ ॥ आगमे ॥ मालाधारकमात्रोपि वैष्णवो भक्तिवर्जितः ॥ पूजनीयः प्रयत्नेन ब्राह्मणाः किंतु मानुषैः ॥ ३ ॥ माला-तिलकसंचिह्नैः संयुक्तो यः प्रदृश्यते । चांडालोपि महीपाल पूजनीयो न संशयः ॥४॥ साधुके गुण अवगुण कछू न देखै भगवत्स्वरूपजानै ॥ ५ ॥

गांगेयमृत्युगंज्योनहीं त्योंकील्हकरणनहिंकालवश । रामचरण चितवतरहतनिशिदिनलवलागी । सर्वभूतशिरनमितसूरभजना-नँदभागी। सांख्ययोगमतिसुदृढ़कियोअनुभवहस्तामल । ब्रह्मरंध्र-

करिगोनभयेहरितनकरणीबल । सुमेरदेवसुतजगविदित भुवविस्तारयोविमलयश । गांगेयमृत्युगंज्योनहींत्योंकील्हकरणनहिंकालवश ॥ ४१ ॥ टीकासुमेरदेवकी ॥ श्रीसुमेरदेवपितासूबेगुजरातहुते भयेतनुपातसोविमानचढ़िचलेहैं । बैठेमधुपुरीकोमानसिंहराजाढिगदेखेनभतातउठिकहीभलेभलेहैं । पूछेनृपबोलेकासोंकैसेकप्रकाशोंकहोंकह्योहठपरे सुनअचरजरेलेहैं । मानसपठायेसुधिलायेसांच आंचलागी करोसाष्टांगबातमानीभागफलेहैं ॥ ११९ ॥ ऐसेप्रभुलीननहींकालकेअधीनबातसुनियेनबीनचाहैरामसेवाकीजिये । धरीहीपिटारेफूलमालहाथडाऱ्यो तहांब्यालकरकाट्यो कह्योकेरिकाढ़िलीजिये । ऐसेहीकटायोबारतीनिहुलसायोहियो कियोनप्रभावनेकसदारस पीजिये । करिकेसमाजसाधु मध्ययोविराजमान तजेदशेद्वारयोगीथकेसुनिजीजिये ॥ १२० ॥

चितवनि दशमे ॥ मर्त्यो मृत्युव्यालभीतः पलायल्लोकान्सर्वान्निर्भयंनाध्यगच्छत् ॥ त्वत्पादाब्जंप्राप्ययदृच्छयाद्यस्वस्थः शेते मृत्युरस्मादपैति ॥ सप्तमे ॥ तस्माद्रजोरोगविषादमन्युर्मानस्पृहाभयदैन्याधिमूलम् । हित्वागृहंसंसृतिचक्रवालंनृसिंहपादंभजताकुतोभयम् ॥ ३ ॥ ज्ञानवैराग्ययुक्तेनभक्तियोगेनयोगिनः ॥ क्षेमायपादमूलंमेप्रविश्यंत्यकुतोभयम् ॥ ३ ॥ दोहा ॥ मारिये मरिजाइये, छूटिपरै संसार ॥ अहमद मरनोकोवदे, दिनमें सौसौबार ॥ ४ ॥ तापैदृष्टांतराजाकेगुलामनेविषकी गोलीखाईसोमरेउनहीं॥

मूल ॥ श्रीअग्रदासहरिभजनबिन कालवृथानहिंवित्तयो । सदाचारज्योंसंतप्रीतिजैसेकरिआये । सेवासुमिरणसावधानचरणराघवचितलाये । प्रसिद्धबागसोंप्रीतिसुहथकृतकरतानिरंतर । रसनानिर्मलनाममनोवर्षतधाराधर । श्रीकृष्णदासकृपाकरीभक्तदत्तमनवचक्रमकरिअटलदियो । श्रीअग्रदासहरिभजनबिनकालबृथानहिंवित्तयो ॥ ४२ ॥ टीकाअग्रदासजीकी ॥ दरशनकाजमहाराजमानसिंहआयोछायोबागमाहिंबैठेद्वारद्वारपालहैं ॥ झारिकैपतौवागये

बाहिरलैडारिबेको देखेभीरभाररहेबैठियेरसालहैं ॥ आयेदेखिना भाजूनेउठिसाष्टांगकरी भरीजलऔरचलेअँशुवनिजालहैं । राज मगचाहहारीआनिकै निहारेंनैन जानीआपजातीभयेदासनिदया-लहैं ॥ १२१ ॥

काल वृथानहिं बित्तयो ॥ कुण्डलिया ॥ आगिलगंते झोपरा जो निकसै सो लाभ । जो निकसै सोलाभ देखिमानुष तनुचोरी । जेलेखेकी श्वास जात आवत न बहोरी । ज्योंकर अंजलि माहिं घटतजल थिर न रहाई । करि आरत हर भजन साखिकायाबधगाई । अगरकहांलगिथे गरीदीजैफाटेआभ । आगिलगंते झोपरा, जो निकसैसो लाभ ॥ १ ॥ सो श्रीअग्रदास अष्टपहर भजनहींमें लगे रहैं सोतो काल दोनोंहींको गयो अभजनीहूं को और भजनी हूं को गयो हाथ तौ काहूके न आयो एक ब्राह्मण ने रुपैया साधुनको खवायो एक के गैलमें लूटिलिये ऐसे एक को तो माल ठिकानेगयो एकको वृथाही गयो ऐसे अग्रदासजीको माल ठिकाने जाय जैसे नाव बहुतभरो तो बूडिही जाइ थोरीभरीहोइ तो पारलगि जाइ ऐसेही व्योहारी थोरो व्होहार करे तो हरिको भजन करि पार उतरिजाइ बहुत करे तो संसार में बूडिजाइ ॥ २ ॥

मूल ॥ कलियुगधर्मपालकप्रगटआचारजशंकरसुभट । उतशृं खलअज्ञानजितअनईश्वरवादी । बौधकुतर्कीजैनऔरपाखंडहैआदी । विमुखनिकोदियो देडऐंचिसनमारगआनैं ॥ सदाचारकीसीवविश्वकी रतिहिंबखानैं । ईश्वरअंशअवतारमहिमर्य्यादामाड़ीअघट । कलियुगधर्मपालकप्रगटआचारजशंकरसुभट ॥ ५३ ॥ टीका ॥ शं-कराचार्यकी ॥ विमुखसमूहलैकैकियेसनमुख श्यामअतिअभिराम-लीलाजगविस्तारीहै ॥ सेवराप्रबलवासेकेवराज्योंफैलिरहेगयेनहीं जाहिवादीशुचिबातधारीहै । तजिकैशरीरकान्ह नृपमेंप्रवेशकियो दियोकरिग्रंथमोहसुन्दरसुभारीहै । शिष्यनिसोंकह्योकभूंदेहमें अवे-शजानों तबहींबखानोंआनिसुनिकीजैन्यारीहै ॥ १२२ ॥ जानिकै

अवेशतनशिष्यनेप्रवेशकियो शवलेमैंदेखिसोइलोकलैउचारचोहै। सुनतहीतज्योतनुनिजतनुआयलियोकियोसोप्रणामदास प्रणपूरो-पारचोहै । सेवराहरायेवादीआयेनृपपासऊंचोछातिपरबैठिएकमा-याफन्दडारचोहै। जलचढ़िआयोनावभावलैदिखायोकहैं चढ़ोनहीं-बूढ़ोआपकौतुकसोंधारचोहै ॥ १२३ ॥

कलियुग धर्म ॥ एकादशे ॥ कृते यद्ध्यायतो विष्णुं त्रेतायां यजतो मखैः ॥ द्वापरे परिचर्य्यायां कलौ तद्धरिकीर्त्तनात् ॥ १ ॥ हरेर्नामैव नामैव नामैव मम जीवनम् ॥ कलौ नास्त्येव नास्त्येव नास्त्ये व गतिरन्यथा ॥ २ ॥ प्राप्ते सन्निहिते मरणे नहि नहि रक्षतिडुकृञ्क-रणे ॥ भज गोविंद भज गोविंदं भज गोविंदं मूढमते ॥ ३ ॥ शृं-गारः शुचिरुज्ज्वल इत्यमरः ॥ ४ ॥ नलिनीदलगतजलवत्तरलं तद्वज्जीवनमतिशयचपलम् ॥ क्षणमपि सज्जनसंगतिरेका भवति भवार्णवतरणे नौका ॥ ५ ॥ कुण्डलिया ॥ मीयाधरानि कासियै तरकस कहाधरौं। तरकस कहांधरौं प्रथम जीवन निर्णयकरि ॥ पल-कमाहिं प्रस्थान जीवपुनि चलि है परिहरि । यावत गहरी नींव सदन नोहराबगीचा। अश्व गजरथ परवान कोऊ ऊंचा अरु नीचा। अगर डरत ते मृत्युते तिन ते अधिक डरौं। मीया धरानिकासियो तर्क० ॥

आचारजकहीयोंचढ़ावोइनसेवरानिराजानेचढ़ायेगिरिद्दगउड़िग येहैं। तबतौप्रसन्ननृपपांइपरचोभावभरचोकह्योजोइकह्योधर्मभाग-वतलयेहैं । भक्तिहीप्रवारपाछेमायावादडारिदीनोंकीनोंप्रभुकह्यो-कितैविमुखहूभयेहैं । ऐसेसोगम्भीरसंतधीरवहरीतिजानैंप्रीतिहीमें सानेहरिरूपगुणनयेहैं ॥ १२४ ॥ मूल ॥ नामदेवप्रतिज्ञानिर्वहीज्यों त्रेतानरहरिदासकी। बालदशाबीठलयपानजाकेपयपीयो । मृतक-गऊजिवाइपरचोअसुरनिकोदीयो । सेजसलिलतेकाढ़िपहलेजैसीही-होती । देवलउलटोदेखिसकुचिरहेसबहीसोती। पंडुरनाथकृतिअ-

तुगत्योंछानिसुकरछाईदासकी। नामदेवप्रतिज्ञानिर्वहीज्योंत्रेतानर-हरिदासकी॥ ४२॥

कीनों प्रभु कह्यो॥ पद॥ द्वापरादौ युगे भूत्वा कलया मानुषादिषु। स्वागमैः कल्पितैस्त्वं हि जनान्मद्विमुखान्कुरु॥ १॥ आससो गंभीर॥ नमश्चक्रपाणे हरे वासुदेव प्रभो ते भवारेमुरारे मुकुंद॥ नमस्तुभ्यमित्यालपंतं मुदा मां कुरु श्रीपते त्वत्पदांभोजभृंगम्॥ २॥ प्रतिज्ञापद॥ आये मेरे अंधेरे घरके मदनराइ। चाकी चाटैं चूपनखाइ॥ तुरु गुरु गरूग प्रभुजूकी चालि। पूंछहलै ज्यों जौकी बालि॥ चूल्हे माहिं जुप्रभुजूकी सेज। छींकेकीनो अधिके तेज॥ कातिक में जु प्रभु जीको भोग। लैलै लकुट खिजावैं लोग॥ तीनि पाप प्रभु मेटन योग। नामदेवस्वामि बन्यो संयोग॥ २॥ परजापतिके चितरहीं चढै। मंजारी के पुत्र अवां में उबारे॥ आंचलगैनतपै तनु बासन। राखिलये हरिने विश्वासन॥ ३॥

टीका नामदेवजूकी॥ छीपाबामदेवहरिदेवजूकोभक्तबड़ोताकी-एकबेटीपतिहीनभईजानिये। द्वादशबरषमांझभयोतबकहीपितासे-वासावधानमननीकेकरिआनिये। तेरेजेमनोरथहैंपूरणकरनयेईजो-पैदत्तचित्तह्वैकै मेरीबातमानिये। करतटहलप्रभुवेगिहोप्रसन्नभये कीनीकामबासनासपोषीउनमानिये॥ १२५॥ विधवाकोगर्भताकी बातठौरठौरचलीदुष्टशिरमौरनिकोभईमनभाइये। चलतचलतबाम देवजूकेकानपरिकरीनिरधारप्रभुआपअपनाइये। भयोजूप्रगटपाल नामनामदेवधर्योकर्योमनभायोसबसंपतिलुटाइये॥दिनदिनबढ्यो-कछुऔररंगचढ्योभक्तिभावअंगमढ्योकढ्योरूपसुखदाइये१२६। खेलतखिलौनाप्रीतिरोतिसबसेवाहीकी पटफहरावैंपुनिभोगकोलगा वहीं। घंटालेबजावैंनीकेध्यानमनलावैं त्योंत्योंअतिसुखपावैंनैननीर आवहीं। बारबारकहैनामदेवबामदेवजूसोंदेवोमोहिंसेवामांझ अतिहोसुहावहीं। जाऊँएकगांवफिरिआवोंदिनतीनमध्यदूध-कोपिवावोंमतिपीवोमोहिंभावहीं॥ १२७॥

विपत्ति ॥ दोहा ॥ बड़ेबड़ेभोगैंविपति,छोटेदुखतेदूर ॥ तारेन्यार-रहे, गहतचंदअरुसूर ।। १ ।। कामबासना ॥ द्वितीये ।। अकामःसर्वका-मो वा मोक्षकाम उदारधीः । तीव्रेणभक्तियोगेन भजेत पुरुषं परम् ।। २ ।। प्रीतिरीति ॥ छप्पय ॥ कठिन प्रीतिकी रीति कठिन तन मन वशकरि-बो । कठिनहै कर्मनिकंद कठिनभवसागर तारिबो । कठिनसंकटमें दान क-ठिन संभ्रमकोसमता । कठिनहै परउपकार कठिनमन मारनममता । वचननिबाहन अतिकठिन निधन नेहपालनकठिन । मुनिईश्वर सिखवन चतुर नर ज्ञान युद्ध जीतन कठिन ॥ ३ ।।

कौनवहबेरजिहिबेरदिनफेरिहोइ फेरिफेरिकहैबहोबेरनहींआइहै । आई वहबेरलैकराहीमांझहेरिदूधडा-योयुगसेरमननीकेकैबनाइये । चौंपकेढेरलागीनिपटऔसेरदृगआयोनीरघेरिजिनिगिरे घूंटिजाइ-ये । माताकहैटेर करीबड़ीतेअबेरअबकरौमतिझेरअजू चित्तदैऔटा-इये ॥ १२८ ॥ चल्यौप्रभुपासलैकटोराछबिराशितामें दूधसोसुबास-मध्यमिश्री मिलाइये । हियेमेंहुलासनिजअज्ञताकोत्रासऐसे करैजो-पैदासमोहिं महासुखदाइये । देख्योमृदुहासकोटिचांदनीकोभास-कियो भावको प्रकाशमतिअतिसरसाइये । प्याइबेकीआशकरि ओटकछुभ-योश्वासदेखिकैनिराशकह्योपीवोजूअघाइये ॥ १२९ ॥

फेरिफेरि ॥ कवित्त ॥ दिनतोनघटत औ घटत प्राण पल पल लाल मुखचंदको विरोधी पलनाटरै । कबकी निहारिरही रबिन तजतठौर बीत युगकोटि तऊनेकहू नहींटरै ॥ तूतोरी कहत श्याम रजनी मिलाय देहौं मिलिबो न मेरेबांट मरिबोहूलैधरै । जानि पति बरनिबनाईहुती विधिने जुफेरि मनआई मेरेरात्रिदिनको करै ।। १ ।। चौपाई ॥ कुँवरिकहै सखि या शशिराजै । राहुराड क्यों गिलिगिलिछाजै ।। सखिकहै राहुअमृत जब पियो । तेरे कंतखंड बिबिकियो ।। उदरनहीं तौनै यहपचै । निक-सि निकसि विरही जनतचै ।। कुँवरिकहै दोउखंडनि माहीं । जरा आ-निकिनि लेहु जुराहीं ।। २ ।। दोहा ॥ कै अहरानि परधरि मुकुर, सुकर

लोहघनलेहु । जबहीं आनिपरै जहां, तबहीं ता शिरदेहु ॥ ३ ॥ कौन दिवस आयो है सजनी ॥ इंदुअनलबरषैहैरजनी ॥ भलोकरै जो यादिनमाहीं । प्राण पियारो आवैनाहीं ॥ ४ ॥

ऐसेदिनबीतदोइराखीहियेबातगोइ रह्योनिशिसोइयेपैनींदन-हींआवही । भयोजूसवारोफेरिवैसेहीसुधारिलियोहियोकियोगाढ़ोजाइधऱ्योपीवोभावही । बारबारपीयोकहुँअबतुमपीवोनाहिं आवै भोरनानागरैछुरीदैदिखावही । गहिलियोकरजिनिकरिऐसीपीवोमैं तोपीवेकोलगेईनेकराखौसदापावही ॥ १३० ॥ आयेबामदेवपाछे पूछैनामदेवजूसों दूधकोप्रसंगअतिरंगभरिभाषिये । मोसोंनपिछानिदिनदोइहानिभईतब मानिडरप्राणतज्योंचाहौअभिलाषिये । पियोसुखदियोजबनेकुराखिलियो मैं तौ जियोसुनिबातैंकहीप्यायो कौनसाखिये । धऱ्योपैनपीवैअऱ्योप्यायोसुखपायोनाना यामेंलै दिखायोभक्तवशरसचाखिये ॥ १३१ ॥

सदापावही तब तौ भगवान् ने हँसिदियो ॥ भागवते ॥ न देवो विद्यते काष्ठे न पाषाणे न मृन्मये । देवो हि विद्यते भावात्तस्माद्भावो हि कारणम् ॥ १ ॥ प्रतिमामंत्रतीर्थेषु भेषजे वैष्णवे गुरौ । यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी ॥ २ ॥ जिवाइ गाइ ॥ पद ॥ विनती सुनु जगदीश हमारी ॥ तेरोदास आशमोहिं तेरी इतकरो कान मुरारी । दीनानाथ दीनह्वै टेरत गाइहि क्यों नहिं ज्यावो । आछे सबै अंगहैं याके मेरे यशहि बढ़ावो । जो कहुँ याके कर्मनमें नहिं जीवन लिख्यो विधाता । तौ नामदेवकी आयुर्दा सों होहु तुमहिं प्रभुदाता ॥ ३ ॥ भक्त बछल भगवान्हैं दृष्टांत व्यासको ॥ शिशु शूकै जब व्यासजी लै गये तब मऱ्यो ॥ वेदशास्त्रप्रमाणं तु न करोत्यधमो नरः । अज्ञानी च मम द्रोही नरकं याति नित्यशः ॥ ४ ॥

नृपसोंमलेच्छबोलिकहीमिलसाहिबको दीजियेमिलाइकरामाति दिखराइये । होइकरामातितोपेकाहेकोकसबकरैभरैदिनऐसेबाटि संतनसोंखाइये । ताहीकेप्रतापआपयहांलोबुलाइये हमैंदीजियेजिवा

यगाइघरचलिजाइये । दैलैजिवाइगायसहजसुभावहीमें अतिसुख पाइपाइपरौमनभाइये ॥ १३२ ॥ लेवोदेशगांवयातेमेरोकछूनाम होइ चाहिये न कछूदईसेजमणिमईहै । धरिलईशीशदेउसंगदशबी सनरनाहींकरआयेजलमांझडारिदईहै ॥ भूपसुनिचौंकपऱ्योलावो फेरिआयेकहौकहीनेकुआनिकैदिखावोकीजैनईहै । जललेनिका सिबहुभांतिगहिडारीतट लाजियेपिछानिदेखिसुधिबुधिगईहै ॥ ॥ १३३ ॥ आनिपऱ्योपाइँप्रभुपासतेबचाइ लीजे कीजे एकबात कभूसाधुनदुखाइये । लेइयेहीमानि फेरिकीजिये नसुधिमेरी लीजिये गुणनि गाइ मंदिरलों जाइये । देखी द्वारभीर पगदासी कटिबांधी धरि करसों उछीर करिचाहैं पदगाइयेदेखिलीनी बेईकाहू दीनीपांच सात चोट कीनी धकाधुकीरिसमनमेंनआइये॥१३४॥बैठे पिछवारे जाइकीनीजुउचितयहलीजोलगाइचोटमेरेमनभाइये । कानदैकै सुनोअबचाहतनऔर कछूठौरमोकोयहीनितनेमपदगाइये । सुनत हीआनिकरिकरुणाविकलभजे फेऱ्योद्वारइतेगहिमंदिरफिराइये ॥ जेतिकबेसातीमोती आवसीउतरिगई भईहियेप्रीति गह्योसबसुख दाइये ॥ १३५ ॥

साधुन दुखाइये ॥ दोहा ॥ साधु सताये तीन हानि, अर्थ धर्म अरु बंश । टीलानीके देखिले, कौरव रावण कंस ॥ १ ॥ सुधि मेरी ॥ अति शीतलता कहकरै, कालूके डैलागि । मथत मथतही ऊपजै, चंदन हूतेआगि ॥ २ ॥ घास बासना हियेबन, ऊपरते जरि जाइ । विषयी बरषाके मिले, ऊगै अंकुर पाइ ॥ ३ ॥ पदगाइये ॥ पद ॥ हीनहो जातिमेरी यादवराइ कलिमें नामा इहां काहेको पठाइयो तालपखाव ज बाजे पातुरि नाचै हमरी भक्ति बोठल काहेकोराचै ॥ पंडव प्रभुजू वचन सुनीजै । नामदेव स्वामी दरशन दीजै ॥ ४ ॥ मंदिरके पिछवारे बैठिकै यह पदगायो तव प्रभुने विचारो यह भजन मेरे ऊपर कहेउ प्रसन्न ह्वैकै तुरत आइ मिले अब तू कहै सो करौं ॥ ५ ॥ मंदिर फिरायो ॥

पद ॥उठि भई नाम देवपरै है जाइ यहां दुबे तिवारी बैठे आइ । ब्राह्मण बनिया उत्तमलोग । यहां नहीं नामदेव तुम्हारो संयोग । नामदेव कमरी लई उठाइ । मंदिर पाछे बैठे जाइ । पायँनघुँघरू हाथनि ताल । नामदेव गावैगुण गोपाला । मंदिर ऊपर ध्वजा फरहरै ॥ उलटि द्वार-नामातन करै । नामदेव नरहरि दर्शनपाये । बाँहपकरि ढिग लैबैठाये । दोऊ हिलिमिलि एकै भये । दासकबीर अचंभैरहे ॥ १ ॥

औचकहीघरमांझसांझही अगिनिलागीबड़ोअनुरागीरहिगई सोऊडारिये । कहैआयोनाथसबकीजियेजूअंगीकार हँसेसुकुवारहरि मोहीकोनिहारिये । तुमरोभवनऔरुसकेकौनआइ यहां भयेयोप्रस न्नछानिछईआपसारिये । पूंछैंआनिलोगकौनेछाईहोछवाइलीजैदीजे-जोईभवैतनमनप्राणवारिये ॥ १३६ ॥ सुनौऔरपरचेजेआयेनक-वित्तमांझबांझभईमाताक्योंनजौनमातिपागीहै । हुतौएकसाहतुला-दानकोउछाहभयो दयोपुरसबैरहौनामदवरागी है ॥ लेवौजूबुलाइ-एकद्वोइतौफिराइदियेतीसरेसोंआयेकहाकहौंबडभागीहै । कीजियै जूकछूअंगीकारमेरोभलोहोइभयोभलोतेरोदीजैजोपैआशलागीहै ॥ ॥१३७॥जाकेतुलसीहैऐसेतुलसीकेपत्रमांझ लिख्यो आधोरामनाम यासोंतौलिदीजिये । कहापरिहासकरौढरौहैदयालुदेखिहोतकैसे ख्यालयाकोपूरोकरौरीझिये। लायोएककांटौलेचढ़ायोपातसोनासंग भयोवड़ोरंगसमहोतनाहिंछीजिये । लईसोतराजूजासोंतुलैपनपांच सातजातिपांतिहूंकोधनधरेउपन्नधीजिये॥ १३८ ॥ परचोशोचभा-रीदुखपावैनरनारीनामदेवजूबिचारीएककामऔरकीजिये । जिते-ब्रतदानऔस्नानाकियेतीरथमें करियेसंकलपयापैजलडारिदी-जिये । करेहुउपाइपातपलाभूमिगाड़ेपाइ रहेवेखिसाइकह्यो-इतनोहीलीजिये । लैकैकहांधरैंसरवरहूनकरैंभक्ति भावसोंलैभरे हियेमतिअतिभीजिये ॥ १३९ ॥

कीजियेजू अंगीकार ॥ श्लोक ॥ जले विष्णुस्थले विष्णुर्विष्णुः पर्व-

तमस्तके।ज्वालामालाकुलेविष्णुः सर्वंविष्णुमयंजगत् ॥ पूछैं आनि लोग बैठि पादियोतजाइमाई । लोग परोसिन पूछैरे नामा किनि यह छानि छवाई । ताते अधिक मँजूरी देहौं वेगिहि देहु बताई । बैठिया प्रीति मँजूरी मांगे जो कोइ छानि छवावै । भाईबंधु संगेसों तोरे बैठिया आपहि आवै। जूँठेफल शबरीके खाये ऋषिस्थान बिसरावै । दुर्योधनके मेवात्यागे शाक विदुर घर खावै । कंचन छानि पन्नपट दीने प्रीतिकी गांठिजुराई । गोविंदके गुण भनै नामदेव जिन यह छानि छवाई ॥ जाके तुलसीहै ॥ दशमे । कच्चित्तुलसि कल्याणि गोविंदचरणप्रिये ॥ १ ॥ तापैस्कंद पुराणकी कथामेंहै इंद्रलोकते पारिजात लाये नारदजी याते व्रतदानको बड़ो अभिमान हो ताके खोइबे को यतन कियो । जैसे ऊपर को ज्वर गयो भीतर को विषम ज्वर खोयो चाहै व्रतदान धरवायो सो पूर न भये श्लोक ॥ गोकोटिदानं ग्रहणेषु काशी माघप्रयागे यदि कल्पवासी । यज्ञायुतं मेरुसुवर्णदानं गोविंदनाम्ना न भवेच्च तुल्यम् ॥ २ ॥ कवित्त ॥ मेरु सम हेमदान रतन अनेक दान गजदान भूमिदान अन्नदान करहीं । मोतिनके तुलादान मकर प्रयाग दान ग्रहणमें काशीबास चित्तमाहिं धरहीं । सेजदान कन्यादान कुरुक्षेत्रमें गोदान येते मैं पापहूं तौ नेकु नाहिं हरहीं । कृष्णके शरीरको नाम इकबार लियो ध्रुव पापी तीन लोक केशव क्षण माहिं तरहीं ॥ ३ ॥ गऊ दान कैसो है जैसे च्यवन ऋषीश्वरको ॥ ४ ॥

कियोरूपब्राह्मणकोदूबरोनिपटअंगभरयोहियेरंगब्रतपरचैकोलो-जिये । भईएकादशीअन्नमांगतबहुतभूखोआजतौनदेहौंभोरचाहै-जितौलीजिये । करयोहठभारीमिलिदोऊताकोशोरपरयोसमझावै नामदेवयाकोकहाखीजिये । बीतेयामचारिमरिरहेयोंपसारिपाइभाव पैनजानैदई हत्यानहींछीजिये ॥ १४० ॥ रचिकैचिताकोविप्रगोदलै कैबैठेजाइदियोमुसुकायमैंपरीक्षालीनीतेरीहै । देखीसोसचाईसुखदाईमनभाईमेरेभयेअंतर्द्धानपरेपांइप्रीतिहेरीहै । जागरणमांझहरिभक्त

नकोप्यासलागीगयेलेनजल प्रेतआंनिकीनीफेरीहै । फंटतेनिकासि तालगयोपदततकालबड़ेईकृपालुरूपधरयोछबिहेरीहै ॥ १४१ ॥

गायोपद तत्काल ॥ पद ॥ ये आये मेरे लंबकनाथ। धरणी पाइ स्वर्गलों माथो योजन भरि भरि हाथ। शिव सनकादिक पार न पावैं तैसेइ सखा बिराजत साथ। नाम देवके स्वामी अन्तर्य्यामी कीनों मोहिं सनाथ ॥ १ ॥ नवरस ॥ छप्पय ॥ श्रीवृषभानुकुँवरि हेत शृंगाररूप भय। हास्य वास्यरस हरे मात बंधनकरुणामय। केशीप्रति अति रुद्रवीर मारयो वत्सासुर। भय दावानल पान कियो बीभत्स वकीउर। अति अद्भुतवच विरंचमति शांत सुसंतति शोच चित। कहिकेशव सुमिरौं मैं सदा नवरस में ब्रजराज नित ॥ २ ॥ कवित्त ॥ वीरही को कामयाते समर मनाइबेको करुणा दिखाइ दूती बिरह सुनाई है ॥ उलटि विहा-रसो अद्भुतको लखि सीखी सवर घृनिते हास्यरीतिपाई है। गुरुजनकी अहट भयानक विभत्स अंत संतहू मनाइबो न आइबो रुदाई है। औरनिके सदन माहिं रसराज जान कैसे राजाके सदन माहिं सबकी समाई है॥ जयदेव कवि भड़ो बक्तराज है ॥ ४ । ५ । ६ ॥

मूल ॥ जयदेवकविनृपचक्कवैखंडमंडलेश्वरआनिकवि । प्रचुर भयोतिहुँलोकगीतगोविंदउजागर । कोककाव्यनवरससरसशृंगार कोआगर। अष्टपदीअभ्यासकरैतिहिबुद्धिबढ़ावै । राधारमणप्रसन्न सुनतहांनिश्चैआवै । संतसरोरुहखंडकोपदमावतिसुखजनकरवि । जयदेवकविनृपचक्कवैखंडमंडलेश्वरआनिकवि ॥ ४४ ॥ टीकाजय-देवकी ॥ किंदुबिलुग्रामतामें भयेकविराजराज भरयो रसराजहिये-मनमनचाखिये । दिनदिनप्रतिरुखरूखतरजाइरहे गहेएकगूदरी कमंडलुकोराखिये । कहींदेवैविप्रसुताजगन्नाथदेवजूको भयोयाको समयचल्यो देनप्रभुभाखिये । रसिकजयदेवनाममेरोई स्वरूपता-हि देवो ततकालअहोमेरीकहोसाखिये ॥ १४२ ॥

सुखजन ॥ दोहा ॥ जलजमीन जलरविनादिन, खुलैं निवारण धाम ॥

निशिको अमृत पीवयह, जानिमुदे अभिराम ॥ १ ॥ रूखरूख तर ॥ भागवते ॥ सत्यांक्षितौकिंकशिपोः प्रयासैर्बाहौस्वसिद्धेह्युपबर्हणैःकिम् ॥ सत्यंजलौकिंपुरुधान्नपात्र्यादिग्वल्कलादौसतिकिन्दुकूलैः ॥ २ ॥ चीराणिकिंपथिनसंति दिशंतिभिक्षांनैवांघ्रिपाः परभृतः परितोप्यशुष्यन् । रुद्धा गुहाःकिमजितोवतिनोपसन्नान्कस्माद्भजंतिकवयो धनदुर्मदांधान् ॥ ३ ॥ सवैया ॥ मीतजोशीत सतावे शरीरतो चोरिलैपंथके कंथाबनाइये । प्यास लगै वह तो जल पीजिये भूखलगै फल रूखके खाइये । छांहचहे तो गुहा गिरिको गहि कानसों आनन रक्षकपाइये । क्योंधनअंधपै जाइ सुहाइ कितेहित आपनपेको दिखाइये ॥ ४ ॥ जे कोई भक्तजनहैं ताको यही शिक्षाकहै उपेक्षाहै जैसे जयदेव कविको सांच प्रभू को आयो हाथ पांव कटाये पै मनमें विषाद न आयो अपने शरीरही को दोषलगावै ॥ ऐसे सांच विश्वास आवै अरु युगयुगके प्रणाम प्रतापी कहावै जयदेव कवि बड़ेभक्तहैं ॥ ५ ॥

चल्योद्विजतहांजहांबैठेकविराजराज अहोमहाराजमेरीसुतायह लीजिये । कीजियेविचारअधिकारविस्तारजाकेताहीकोनिहारिसुकुमारियहदीजिये ॥ जगन्नाथदेवजूकीआज्ञाप्रतिपालकरौटरौमतिधरौ हियेनातोदोषभीजिये । उनकोहजारसोंहैंहमको पहारएकतातफिरि जावोतुम्हैंकहाकहिखीजिये ॥ १४३ ॥ सुतासोंकहततुमबैठीरहौ याहीठौरआज्ञाशिरमौरमेरेनहींजातटारिये ॥ चल्योअनखाइसमझाइहारेबातनिसोंमनतूसमुझिकहाकीजैशोचभारिये । बोलेद्विजबालकीसोंआपनोविचारकरौ धरौहियेध्यानमोपैजातनसँभारिये । बोली करजोरिमेरोजोरनचलतकछूचाहोसोईहोहुयहवारिफेरिडारिये ॥ ॥ १४४ ॥ जानीजबभईतियाकियोप्रभुजोरमोपेतौपैएकझोपड़ीकी छायाकरिलीजिये । भईतबछायाश्यामसेवापधराइलई नईएकपोथी मैंबनाऊंमनकीजिये । भयोजूप्रगटगीतसरसगोविंदजूको मनमें

प्रसंगशोशमंडनकोदीजिये । यहीएकपदमुखनिकसतशोचपरयो धरयोकैसेजातलाललिख्योमतिरीझिये ॥ १४५ ॥

मनतूसमुझ कुण्डलिया ॥ बाप न मारी पोदनी बेटा तीरंदाज । बेटा तीरंदाज विषैत्यागी न ननक मन । कहा इन्द्रियनि सधै दुखनि में रधै बृथातन ॥ नफा आपनेकुसब और तौ मूल गवावै । यों मनके अनुसार चलै तनहूं सुख पावै ॥ यह विचारि चित चेतिये नातरुहोइ अकाज । बाप न मारी पोदनी बेटातीरंदाज ॥ १ ॥ छायाकरि लीजियै॥ श्लोक ॥ द्वाविमौ पुरुषौ लोके शिरःशूलकरौ परौ । गृहस्थश्च निरारंभो यतिनश्च परिग्रहः ॥ २ ॥ शशिमंडलस्मरगरलखंडनं मम शिरसि मंडनं देहि पदपल्लवमुदारम् ॥ ३ ॥ लिख्योमतिरीझिये जयतिपद्मावतीर मण जयदेवकविभारतीभणितमति शांतकंयोप्रबंधः ॥ ४ ॥

नीलाचलधामतामेंपंडितनृपतिएक करीवहीनामधरिपोथीसुखदाइये । द्विजनिबुलाइकहीवहीहैप्रसिद्धकरौलिखिलिखिपठौदेशदेशनिचलाइये । बोलेमुसकाइविप्रक्षिप्रसोंदिखाइदई नईयहकोईमतिअतिभरमाइये । धरीदोउमंदिरमेंजगन्नाथदेवजूके दीनीयह डारिवहहारलपटाइये ॥ १४६ ॥ परयोशोचभारीनृपनिपटखिसानोभयोगयोउठिसागरमेंबूडोयहबातहै । अतिअपमानकियोकियोमैंबखानसोई गोइजातिकैसेआंचलागीगातगातहै । आज्ञाप्रभुदईमतिबूड़ैतूसमुद्रमांझ दूसरोनग्रंथवैसोवृथातनपातहै । द्वादशश्लोकलिखिदीजैसर्गद्वादशमें ताहीसंगचलैजाकीरख्यातपातपातहै ॥ १४७ ॥ सुताएकमालीकीजुबैंगनकीबारीमांझ तोरैबनमाली गावैकथासर्गपांचकी । डोलैंजगन्नाथपाछेकाछेअंगमिहीझंगा आछें कहिघूमैसुधिआवैविरहआंचकी । फटयोपटदेखिनृपपूछीअहोभयोकहाजानतनहमअबकहौबातसांचकी ॥ प्रभुहीजनाईमनभाईमेरे वहीगाथालायेवहबालकीकोपालकीमेंनाचकी ॥ १४८ ॥

बोले मुसिकाई ॥ दोहा ॥ अकथ कहानी प्रेमकी, कही न याने कोय

कोइकाजाने खलकमें, जाशिर बीती होय ॥ १ ॥ जैसे लैलैने मजनूका बुलायो अग्नि में तापै पोस्तीको दृष्टांत अरु पतंग माखी को ॥ २ ॥ विरह आंचकी ॥ श्लोक ॥ धीरसमीरे यमुनातीरे वसति वने वनमाली । गोपीपीनपयोधरमर्दनचंचलकरयुगशाली । पीनपयोधरभारभरेण हरिं परिरभ्य सरागम् । गोपवधूरनुगायति काचिदुदंचितपंचमरागम् ! कापि विलासिविलोलविलोचनखेलनजनितमनोजम् ॥ ३ ॥

फेरोनृपडोंडीयहओडीबातजानीमहा कहाराजारंकपढ़ैनीकी ठौरजानिकै । अक्षरमधुरऔरमधुरसुरनिहीसोंगावैजबलालप्यारी ढिगहीलैमानिकै । सुनोयहरीतिएकमुगलनेधारिलई पढ़ैचढ़ैघोरे आगेश्यामरूपठानिकै । पोथीकोप्रतापस्वर्गगावतहैंदेववधू आपु हीजोरीझेलिख्योनिजकरआनिकै ॥ १४९ ॥ पोथीकीतौबा- तसबकहीमैंसुहातहियेसुनोऔरबातजामेंअतिअधिकाइये । गांठ- मेसुहरमगचलतमेंठगमिले कहौकहांजातजहांतुमचलिजाइये । जानिलईआपखोलि द्रव्यपकराइदियोलियोचाहोजोईसोईसोईमो- कोलाइये । दुष्टनिसमझिकहीकीनीइनविद्याअहो आवैजोनगरइ- न्हैंवेगिपकराइये॥ १५० ॥

श्यामरूपठानिकै ॥ मीर माधव लाहौरके मुगल फकीर भये सो ॥ पद ॥ दिल जानप्यारे श्याम टुकगली असाडी आवरे । सांवरे वदन ऊपर कोटि मदनवारे ॥ तेरी जुलफैं दिलदी कुलफैं दोऊ नैन हैं सितारे ॥ तेरी खूबीके देखनेको नैन तरसैं हमारे । जल जो कठोर होवै मीन क्यों जावै विचारे । कृपा कीजै दर्शन दीजै मीरमाधव को नंदके दुलारे ॥ १ ॥ पोथो को प्रताप ॥ राजा बीर बिक्रमाजीत की सभामें देवता आये तब राजाने सभा में गीतगोविंद गवायो देवताओंने कही याको तो हमारे सदा गावैहैं याको फल सुखकी उत्पत्ति करैहै ॥ २ ॥ द्रव्य- पकरायो ॥ श्लोक ॥ लोभमूलानि पापानि रसमूलानि व्याधयः ॥ स्नेहमूलानि दुःखानि तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत् ॥ ३ ॥ समझही दुष्ट

तीनि प्रकारके हैं। उत्तम मध्यम कनिष्ठ सज्जन तीनि प्रकारकेहैं। आगे गुणिन वेद निगुणाविंदकरि बतावेहैं ॥ ४ ॥

एककहैडारोमारिभलोहैविचारयही एककहैमारोमातिधनहाथ आयोहै। जोपैलेपिछानिकहूंकोजियेनिदानकहाहाथपांवकाटिबड़े गाढ़पधरायोहै। आयोतहांराजाएकदेखिकैविवेकभयो छपोउजियारोऔप्रसन्नदरशायोहै। बाहिरनिकसिमानौचंद्रमाप्रकाशराशि पूँछोइतिहासकह्योऐसोतनुपायोहै ॥ १८१ ॥ बड़ोईप्रभावमानिसकैकोबखानिअहो मेरेकोऊभूरिभागदरशनकीजिये। पालकी बिठायलियेकियेसबढूंढ़िनोकेजीकेभायेभयेकछुआज्ञामोहिंदीजियेकरौहरिसाधुसेवानानापकवानमेवा आवैजोईसंततिन्हैंदेखिदेखिभीजिये। आयेवेईठगमालातिलकबिलकिकियेकिलकिकैकहीबड़ेबंधुलखिलीजिये ॥ १८२ ॥ नृपतिबुलाइकही हियेहरिभायभरठेतेरेभागअबसेवाफललीजिये। गयोलैमहलमांझटहललगायेलोग लागेहोनभोगजियशंकातनुछीजिये। मांगैबारबारबिदाराजानहिंजानदेत अतिअकुलायकहीस्वामीधनदीजिये। देकैबहुभांतिसोपठायेसंगमानसहू आवोपहुँचाइतबतुमपररीझिये ॥ १८३ ॥

हाथ पाँवकाटे ॥ भगवान् में भलो सनेह कियो तहां टीकाकार ने लिख्योहै जयदेव मेरोही रूप है सो हाथ पांव कटाइ कै आपसों कियो ॥ फेरि ख्यात करिबेको आछे करिदिये कहे नाम कौनको लीजै कोऊ काल कोऊ ईश्वर कोऊ गृह ये न जान्यो साक्षात् धर्महीहैं ऐसे परीक्षित सोंकहीही हिये हरिभाव भारेही हृहरणे धातु है ॥ हरिणी जो चोरी ताके अर्थ विषयवर्त्त हैं। ताते समझौती में समझाये हैं ॥ श्रीदामोदर नारायण वृंदावन वासुदेव मधुसूदन मुरारी ॥ १ ॥

पूंछैनृपनरकोऊतुम्हरीनसरवरिहैजितेआयेसाधुऐसोसेवानहिंभईहै। स्वामीजूसोंनातो कहाकहोहमखाहिंहाहाराखियेदुरायराहबात अतिनईहै। हुतेइकठौरेनृपचाकरीमेंतहांइनकियोईबिगारुमारिडा-

रौआज्ञादई है । राखेहमहितजानिलेनिदानहाथपाँववाहीकेईशानह-मअबभरिलई है ॥ १५४ ॥ फाटिगईभूमिसबठगवेसमाइगये भयेयेचकितदौरस्वामिजूपैआयेहैं । कहीजितीबातसुनिगातगातकां पिउठेहाथपांवमोडेभयेज्योंकेत्योंसुहाये हैं । अचरजदोऊनृपपास जाप्रकाशकिये जियेएकमुनिआयेवाही ठौरधायेहैं । पूँछेवारवारशी शपाँयनमेंधारि रहे कापिहै उघारि कैसे मेरेमनभाये हैं ॥ १५५ ॥

भरिलई ॥ दोहा ॥ सिंह खाल गाडर पहिरि, भेष सिंहको धारि । बोलनि बोली भेड़की, कूजनिडारी फारि ॥ १ ॥ फाटिगई भूमि तौ दंड क्यों न दियो भेषजानि दण्ड न दियो भेषमें वट्टो न लगै जैसे अपरस गुरु सपरस चेला ॥ कोऊ ने बस्तर उठाइकै मारे अपरस बनोरहै राजा के प्यादे ने जान्यों प्रह्लाद या बलि होहिंगे सो इच्छाचारी सिद्ध होइँगे वैकुंठ लोक ते आये पाताल लोकको गये जैसे दण्डहू दियो उत्कर्ष न राख्यो ॥ २ ॥ ॥ दोहा ॥ घटि बढ़ि बातें भेषकी, कीजै नाहिं बनाइ । गुरुको बानो परशुराम, लीजै कंठ लगाइ ॥ ३ ॥ साधन को घर दूरि है, समझौ चित्त लगाइ ॥ ४ ॥ प्रगट अवगुण दीसै तौ जैसे नारद सनकादिकन में भलोइ करै चेला सो कही कोऊ कैसोई बुरो कहै ये तू मति कहै ऐसे वृक्ष समयमें फल होइ ऐसे हाथ पांउ पुण्य पापको फल सम प्राप्तिहोय ॥

राजाअतिअरगहीकहीसबबातखोलि निपटअमोलयहसंतनको भेसहै । कैसोअपकार करौतऊउपकारकरैंढरैंरीतिआपनीहीसरस-सुदेशहै । साधुतानतजैंकभूजैसेदुष्टदुष्टतान यहीजानिलीजैमिलैं रसिकनरेशहै । जान्योजबनामठामरहोइहांबलिजांव भयोमैंसनाथ प्रेमभक्तिभई देश है ॥ १५६ ॥ गयोजालिवाइल्याइकविराजराज तियाकियालैमिलायआपरानीढिगआईहै । मन्योएकभाईवाको भईयोंभौजाईसती कोऊअंगकाढ़िकोऊकूदिपरीधाईहै । सुनतहीनृप बधूनिपटअचंभवभयो इनकोनभयोफेरिकहिसमुझाई है । प्रीतिकी नरीतियहबड़ीविपरीतिअहो छूटैतनुजबैप्रियाप्राणछुटिजाईहै॥१५७

प्रीतिकी न रीति ॥ सोरठा ॥ मुख देखे की प्रीति, सब कोऊ ऐसी-करै ॥ वेतोन्यारे रीति, जिये जियें मूये मुरैं ॥ १ ॥ ॥ कवित्त ॥ सती कहैं येरी मेरी मतिहौं सुमति कहा प्रेम हैं लजावै मति यहै पीव जोइये । साखिदै अगिनि जार हथलेवा हाथ जोरे जाके साथ दीजै ताके साथ जीव खोइये ॥ कौन आगि को न आंचबरै ताहि लिये बरै ताको कहा बरै काहु कहे काज रोइये । जाके संग घनेदिन सेज माहिं सोय खोये ताके संग एकदिना आगिहूं में सोइये ॥ कवित्त ॥ अंगराग अंगकरि मोती माल ग्रीव धरि बैठी बाल सोहै अति चांदनी विमल में । आँगी अंग पहरै सुराग रंग गहरै औ बारम्बार बलकै यों यौवनकै बलमें । त्योंहीं काहू आली नंदनंदन आगम कह्यो सामुही निहारि मानों वारि है अनल में । मोतिन के हार की न छार रहो उरपर अंगराग उड़ि गयो अबीर ह्वैकै पलमें ॥ २ ॥ दोहा ॥ सफल फलै मनकामना, तुलसी प्रेम प्रतीति ॥ तिरिया अपने कारणे, लिखि पूजति हैं भीति ॥ ३ ॥ साधुता न तजै ॥ जैसे शिष्यपै वेगार गुरु कही गारी दै ऐसे ॥ ४ ॥

ऐसीएकआपकहिराजासोंयहीं लैकेजावौबागस्वामीनेकुदेखौंप्री-तिको । निपटबिचारीबुरीदेतमेरे गरेछुरी तियाहठमानकरीएसेही प्रतीतिको । आनिकहैंआपपायेकहीयाहींभांतिआइ बैठीढिगति-यादेखिलोढिगईरीतिको । बोलीभक्तबधूअजूवेतौहौं बहुतनीके तुमकहाऔचकहीपावतहौंभीतिको ॥ १५८ ॥ भईलाजभारी पुनिफेरिकैसँभारीदिनबीतिगयेकोऊतबतबवहीकीनी है । जानि-गईभक्तबधूचाहतपरीक्षालियोकहीअजूपायेसुनितजीदेहभीनीहै । भयोमुखश्वेतरानी राजाआयेजानीयह रचीचिताजरौंमतिभई-मेरीहीनीहै । भईसुधिआपुकोजुआये वेगिदौरिइहांदेखीमृत्युप्रा यनृपकहीमेरीदीजीहै ॥ १५९ ॥ बोल्योनृपअजूमोहितरेई बनतअब सबउपदेशलैकैधूरिमेंमिलायोहै । कह्योबहुभांतिएवेआ वतनशांतिकहूं गाईअष्टपदीसुरदियोतनज्यायो है । लाजनकोमा-

रच्योराजाचाहैअपघातकियो जियोनहींजातभक्तिलेशहूनआयोहै। करिसमाधाननिजग्रामआये किंदुविल्व जैसोकछूसुन्यों यहपरचौलैगायो है ॥ १६० ॥

राजाको जयदेवजी के संगको रंग क्यों न लग्यो ॥ १ ॥ हरिविलासकाव्ये ॥ भवज्वरनिवृत्तये पतितपावन त्वत्पदं । प्रबलमिदमौषधं हृदि सकृत् सुधीर्द्धारयेत् ॥ २ ॥ अपथ्यमिहवर्जयेद्विषयवासनासंज्ञकं वसेतविजनेवने फलदलांबु सेवेदलम् ॥ ३ ॥ गीतगोविन्दे ॥ वहति मलयसमीरे मदनमुपनिधाय स्फुटति कुसुमनिकरे ॥ विरहिहृदय दलनाय तव विरहे वनमाली सखि सीदति ॥ ४ ॥ करि समाधान ॥ ॥ दोहा ॥ गई मित्रकी मित्रता, रहेउ कथा को भाव। तोहिं न बेटा भूलही, मोहिं पूछको घाव ॥ ५ ॥

देवधुनीसोतहौअठारहकोशआश्रमते सदास्नानकरैंधरैंयोगताईको। भयोतनुवृद्धतऊछांड़ैनहींनित्यनेमप्रेमदेखिभारीनिशिकहीसुखदाईको। आवोजनिध्यानकरौकरौजानिहठऐसो मानीनहीं आऊंमैंहींजानौंकैसेआईको फूलेदेखौंकंजजबकीजियोप्रतीतिमेरीभईवाहीभांतिसेवैअबलौंसुहाईको ॥ १६१ ॥ मूल ॥ श्रीधरश्रीभागवतमेंपरमधर्मनिर्णयकियो। तीनिकांडएकत्वसानिकेउअज्ञवखानत। करमठज्ञानीऐंचिअर्थकोअनरथवानत। परमहंससंहितविदितटीकाविस्तारचो। षट्शास्त्रअविरुद्धवेदसंमतहिविचारचो। परमानंदप्रसादतेमाधौसुकरसुधारिदियो। श्रीधरश्रीभागवतमेंपरमधर्मनिर्णयकियो ॥ ४९ ॥

छांड़ैनहीं नित्यनेम ॥ दोहा ॥ उत्तम मध्यम अधमनर, पाहन सिकतापानि। योति अनुक्रम जानिये, वैर व्यतिक्रम मानि ॥ १ ॥ सांचौ पनकै गंगाजी आपही पधारीं झूंठे पनवारिनको मूठी चनाहू न मिलै जैसे छप्पन भोगीको दृष्टांत घोडाके मलीदाको अरु देखन हारेको ॥ २ ॥ साईं शक्कर खोरको, शक्करहू पहुँचावे। वेविश्वासीजीव एकापर

ज्यों घिघावै ॥ ३ ॥ श्रीधरगीतायाम् ॥ सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज। अहं त्वा सर्व पापेभ्यो मोक्षयिष्यामि माशुचः ॥ ४ ॥ षट-शास्त्रछप्पय ॥ कर्ममिमांसाकहै देहवशकरैसुपावै। कालाधीन वैशेषन्याय करतार बतावै ॥ नित्यानित्य विचार सांख्यमत ऐसो भावै । पातंजलि हठज्योति योग अष्टांग दिखावै । सबमें व्यापक ब्रह्म है वेदांत शास्त्र ऐसी कहै। षटशास्त्र सकल विरुद्ध ये हरि ज्ञानी द्रष्टा ह्वैरहै ॥ ५ ॥ परम धर्म ॥ प्रथमे ॥ सवै पुंसां परोधर्मोयतोभक्तिरधोक्षजे । अहैतुक्यप्रतिहता ययात्मासंप्रसीदति ॥ ६ ॥

टीकाश्रीधरस्वामीजीकी ॥ पंडितसमाजबड़ेबड़ेभक्तराजजिते भावगतटीकाकरिआपसमेंरीझिये । भयोजूविचारकाशीपुरीअवि-नाशीमांझसभाअनुसारजोवसोईलिखिदीजिये । ताकोंतौप्रमाण-भगवानबिंदुमाधव जूहैशोधोयहीबातधरिमंदिरमेंलीजिये । धरेसब-जाइप्रभुसुकरबनाइदियोकियोसवौंपरिलैचल्यौमतिधीजिये १६१॥

मूल ॥ कृष्णाकृपाकोपरप्रगटाबिल्वमंगलमंगलस्वरूपकरुणामृत सुकवित्तउक्तिअनुचिष्टउचारी । रसिकजनानिजीवानिहृदय जैहा-रावलिधारी । हरिपकरायोहाथबहुरितहँलियोछुटाई । कहाभयो-करछुटैं वदौतौहियेतेजाई । चिंतामणिसँगपाइकै ब्रजवधूकेलिवरणी अनूप । कृष्णकृपाकोपरप्रगटाबिल्वमंगलमंगलस्वरूप ॥ ४६ ॥

कांडकरंडे कपूर कपास धरी दोऊ ॥ श्लोक ॥ वागीशा यस्यवदने लक्ष्मीर्यस्यतु वक्षति। यस्यास्ते हृदये संवित् तं नृसिंहमहं भजे ॥ १ ॥ दोहा ॥ श्रीधर स्वामी तोमनो. श्रीधर प्रगटे आन ॥ तिलक भागवत को कियो, सब तिलकन परमान ॥ २ ॥ अवनाशी ॥ सोरठा ॥ मुक्ति जन्म महिजानि, ज्ञान खानि अघहानिकर । जहँ बस शम्भु भवानि सोकाशी सेइय कसन ॥ ३ ॥ कहाभयो ॥ श्लोक ॥ हस्तमुत्सृज्यातो सि वलात्कृष्णकि मद्भुतं ॥ हृदयाद्य दिनि र्यासि पौरुषं गणयामिते ४

चिंतामणि ॥ पाइकै ॥ दोहा ॥ पण्डित पूजा पाकदिल, ये दिमाग मतिलाव ॥ लगै जरब अँखियानकी, सबै गरब उडिजाव ॥ ५ ॥ मांझ ॥ बोलनि हँसनि चलनि बानैतनि लै महबूब जुधाया। धीरज धरम सरम समझ का दरबर गोल भगाया ॥ भर भर बासा कियो अकेला इस्के लिये ठहराया। वल्लभ रसिक इन इश्क दुजागी योगी मन पकराया ॥ ६ ॥ दोहा ॥ताने तान तरंगकी, बेधन तनमन प्रान । कला कुसुमशर शरन की, अतिअयान तनुत्रान ॥ ७ ॥

टीकाबिल्वमंगलकी ॥ कृष्णवैनातीरएकद्विजमतिधीररहै ह्वैगयोअधीरसंगचिंतामणिपाइकै । तजीलोकलाजहियेवाहीकोजुराज भयो निशिदिनकाजवहैरहैघरजाइकै । पिताकोसराधनेकुरह्योमन साधिदिनशेषमेंअवेशचल्योअतिअकुलाइकै । नदीचढ़िरहीभारीपैयैनअवारी नाव भाव भरयोहियोजियोजातनंघिजाइकै ॥ १६२ ॥ करतविचारवारिधारमेंनरहैंप्राणतातेभलीधारमित्रसन्मुखको जाइये । परेकूदिनीरछ्छूसुधिनाशरीरकीहै वहीएकपीरकबदरशनपाइये । पावतनपारतनहारिभयोबूड़िबेको मृतकनिहारिमानौंनावमनभाइये । लगेईकिनारेजायचल्योपगधाइचाइआयेपटलागेआधीनिशिसोविहाइये ॥ १६३ ॥ अजगरघूमिझूमिभूमिकोपरसकियो लियोईसहाइचढ़ोछातपरजाइकै । ऊपरकेवारलगेपरयोकूदिआंगनमें गिरयोयोंगरतरागिजागीशोरपाइकै । दीपकबरायजोपैदेखैं बिल्वमंगलहै बड़ोईअमंगलतूकियोकहाआइकै । जलअन्हवायसूखे पटपहरायहाइकैसेकरिआयो जलपारद्वारधाइकै ॥ १६४ ॥

हिये वाहीको जुराज्य भयो ॥ कवित्त ॥ मरकतके सूत किधौं पन्नग के पूत किधौं राजत अभूत तमराज कैसे तार हैं । मखतूल गुणग्राम शोभित सरस श्याम काम मृग कानन कुहूके ये कुवार हैं ॥ कोप की किरणि जल नीलके जराके तंत उपमा अनंत चारु चमर श्रृंगार है । कारे सटकारे भीने सोंधेते सुगंधवास ऐसे बलभद्र नव बाला तेरेबारहैं १

झूलना ॥ गुलौं बिचौं गुलचन्यो सेसु ल्यानहीं पर खुलसी। जलौं गुलकलंमतआसी बाहुहुसन तेरी घुलसी। दाने देखि दिवाने थासी अकलतिनादा भुलसी। अबजी पाकनजरिकै देखन वारे छत्रतिना शिरढुरसी ॥ २ ॥ दोहा ॥ तनक न रहै विरक्तता, लगैं दृगनकी थाप। कहुँ गीता माला कहूं, कहुं बटुवा कहुं आप ॥ ३ ॥

नौकापठाइद्वारनावलटकाईदेखि मेरेमनभाइमैंतौतबैलईजानिके। चलौदेखेंअहोयहककहाधौंप्रलापकरै देख्योविषधरमहाखीजीअपमानिकै। जैसोमनमेरेहाड़चामसोंलगायोतैसोश्यामसों लगावै तोपैजानियेसयानकै। मैंतोभयेभोरभजौंयुगलकिशोरअब। तेरीतुहीजानै चाहौ करौममहानिकै ॥ १६५ ॥ खुलिगईआंखैंअभिलाखैं रूपमाधुरीको चाखैं रसरंगऔउमंगअंगन्यारिये। बीणलेबजाईगाईविपिनानिकुंजक्रीड़ा भयोसुखपुंजजापैकोटिविषैवारिये। बीतिगईरातिप्रातचलेआपआपकोजु हियेवहींजायदृगनीरभरिडारिये। सोमगिरिनामअभिरामगुरुकियोआनिसकैकोबखानिलालभुवननिहारिये ॥ १६६ ॥

प्रलापोऽनर्थकंवचःइत्यमरः ॥ १ ॥ हाड़ चामसों ॥ कवित्त ॥
देह तौ मलीन मन बहुत बिकार भरे ताहू मांझ जरा वात पित्त कफ खांसीहै। कबहुँक पेटपीर कबहुँक शिरबाहु कबहुँक आंखि कान मुख में बिथासी है ॥ औरहू अनेक रोग मल मूत्र भरे सदा हरि तजि और भजै साधुकरै हांसीहै। ऐसो जो शरीर ताहि अपनो करि मानिरहै सुंदर कहत यामें कौन सुखराशीहै ॥ १ ॥ मांसकी गैरथीं कुच कंचन कलश कहै मुख कहै चंद्र जो शलेषमा को घरु है। दोऊ भुज कमल मृणालनाभि कूप कहै हाडहीके खंभा तासों कहैं रंभातरु है। हाडहीके दशन आहि हीरा मोती कहैं तासों चामको अधर तासों कहै बिम्बाफरु है। ऐसी झूठी युगति बनावैं वे कहावें कवि तापर कहत हमैं शारदा को वरुहै ॥ २ ॥ ओस कोसो मोती और पानीको बबूला जिमि सांचोकरि मान्यो सोई

बूड्यो मंझधारहै । एकस्त्री को पुत्रगुरु पायसो साधुपै छुटायो ऐसे चिन्तामणिकही भोर मैंतौ जाहुँगी तेरी तू जानैं ॥

रहेसोबरसरससागरमगनभये नयेनयेचोजकेश्लोकपढ़िजीजिये । चलेवृन्दावनमनकहैकबदेखौंजाइआयेमगमांझएकठौरमतिभीजिये । परचोबड़ोशोरदृगकोरकैनचाहैकाहूतहांसरतियान्हातदेखिआखैंरी । झिये । लगेवाकेपाछेकाछकाछेकीनसुधिकछू गईघरआछेरहैद्वारतनुछीजिये ॥ १६७ ॥ आयोवाकोपतिद्वारदेखेभागवतठाढ़ेबड़ेभागवतअतिपूछीसोजनाइये । कहीजूपधारौपाँवधारौगृहपावनकोपाँवनिपखारौंजलधारोंशीशभाइये ॥ चले भौनमांझमनआरतामिटाइबेको गाइबेकोजोईरीतिसोईकोबताइये । नारिसोंकह्योहोतूशृंगारकारिसेवाकीजैलीजियोंसुहागजामेंवेगिप्रभुपाइये ॥ १६८ ॥ चलीहैशृंगारकरिथारमेंप्रसादलैकैऊंचीचित्रसारीजहांबैठेअनुरागीहैं । झनकमनकजाइजोरिकरठाढ़ीरही गहीमतिदेखिदेखिनूनवृत्यभागीहैं । कहीयुगसुईलावौलाइदईगहीहाथफोरिडारीआँखैंअहोबड़ीयेअभागीहैं । गईपतिपासश्वासभरतनबोलिआवैबोलिदुखपाइआये पांयपरेरागीहैं ॥ १६९ ॥

लागेवाकेपाछे ॥ भागवते ॥ पाठकापाठकाश्चैवयेचान्ये शास्त्रचिंतकाः ॥ सर्वेव्यसनिनोमूढा यः क्रियावान्सपंडितः ॥ १ ॥ कुंडलिया ॥ कूकर चौक चढाइये, चाकी चाटन जाइ।चाकी चाटन जाइ आदिअभ्यास न छाडै । बरजत वेद पुराण विषय पकरत हठि हाड़े ॥ बच्छ पयोधर पान कहौ तेहि कौन सिखावै । अनभोजनम अनेक अविद्याहीको धावै ॥ अग्रदासको वशकहा परै कूपतनधाइ । कूकर चौक चढाइये चाकी चाटनजाइ ॥ २ ॥ शंकराचार्यजीकृत नूतन वृत्तभागी हैं । नारीस्तनभरजघननिवेशं दृष्ट्वा माया मोहावेशम् ॥ एतन्मांसविषादविकारं मनसि विचारय वारंवारम् । भजगोविंदं भजगोविंदं गोविंदं भज मूढमते ॥

कियोअपराधहमसाधुकोदुखायोअहो बड़ेतुमसाधुहम साधुना-

मधरचोहै । रहौअजूसेवाकरैंकरीतुमसेवाऐसी तैसोनहींकाहूमांझ-मेरोउरहरचोहै । चलेसुखपाइहगभूतसेछुटाइदिये हियेहीकोआं-खिनसोंअबैकामपरचोहै । बैठेबनमध्यजाइ भूखेजानिआपआये भोजनकराइचलो छायादिनढरचोहै ॥ १७० ॥ चलेलैगहाइकर-छायाघनतरुतरचाहतछुटायोहाथछोडैकैसेनीकोहै । ज्योंज्योंबल-करै त्योंत्योंतजतनयेऊ अरेलियोइंछुड़ाइमह्योगाढ़ोरूपहीकोहै ॥ ऐसेहीकरतवृन्दावनघनआइलियेपियोचाहैरससबजगलाग्योफीको है । भईउतकंठाभारीआयेश्रीविहारीलालमुरलीबजाइकैसुकियो भायोजीकोहै ॥ १७१ ॥

हमनाम साधु ॥ दोहा ॥ गलियनिमें हर्षतफिरैं, साधुकहैं सब कोइ ॥ श्वान नाम बाघा धरचो, खोजी बाघ न होइ ॥ १ ॥ रूपही काहै ॥ हाथ छुडाये जातहो, निबलजानिकै मोहिं ॥ हियमेंते जब जाहुगे, सबल वदौंगी तोहिं ॥ २ ॥ ॥ कवित्त ॥ प्रीतम सुजान मेरे हितके निधान कहौ कैसे रहैं प्राण जोपै अनखि रिसाइहो । तुम तो उदार दीनहीन आइ परचो द्वार सुनिये पुकार याहि कौलौं तरसाइहौ ॥ चातक हौं रावरो अनोखो मोहिं आवरो सुजान रूपबावरो वदन दरशाइहौ । विरह नशाइ दया हियमें बसाइ आइ हाइ कब आनँदको घनबरसाइहौ ॥ ३ ॥ तापै सूरदासजी अरु साहूकार की स्त्रीको दृष्टांत ॥ ४ ॥ ऐसे जबकही तब करुणानिधान हँसे प्रीतिके वशभये ॥ ५ ॥

खुलिगयेनयनज्योंकमलरविउदयभये देखिरूपराशिबाढ़ीको-टिगुणीप्यासहै । मुरलीमधुरसुररास्योमदभरिमानोंढरिआयोका ननमेंआननमेंभासहै । मानियेप्रतापचिंतामणिमनमांझभई चिंता-मणिजैतिआदिबोलेरसरासहै ।करुणामृतग्रंथहृदयग्रंथकोविदारिडा-रै बांधैरसग्रंथपंथयुगलप्रकासहै ॥ १७२ ॥ चिंतामणिसुनीबनमां झरूपदेख्योलाल ह्वैगईनिहालआईदेहनातोजानिकै । उठिबहुमान कियोदियोदूधभातदोना दैपठावैनितहारिहितूजनमानिकै । लियो

कैसेजायतुम्हैंभाइसोंदियोजोप्रभु लैहौनाथहाथसोंजोदेहैंसनमानिकै। बैठेदोऊजनकोऊपावैनहींएककन रीझेश्यामघनदीनोदूसरोहूआनिकै ॥ १७३ ॥

चिन्तामणि जयतिआदि ॥ श्लोक ॥ चिन्तामणिर्जयति सोमगिरिर्गुरुर्मेशिक्षागुरुश्चभगवाञ्शिखिपिच्छमौलिः ॥ यत्पादकल्पतरुपल्लवशेखरेषु लीलास्वयंवररसंलभतेजयच्छ्रीः ॥ १ ॥ करनाव्रतग्रंथ ॥ अद्वैतवीथीपथिकैरुपास्यास्वानंदसिंहासनलब्धदीक्षा ॥ शठेनकेनापिवयंहठेन दासीकृतागोपवधूवटेन ॥ २ ॥ कोऊ पावै ॥ दोहा—निकट न देख्यो पारथी, लग्यो न देख्यो बाण ॥ मैं तोहि पूछौं हेसखी, केहि विधि निकसे प्राण ॥ ३ ॥ जल थोरो नेहा घनो, लगे प्रीतिकेबाण । तूपी तूपी करिमरे, इहिविधि छांडेप्राण ॥ पुमन आवमांगे आनन ॥४॥ देखा ज्ञानकर्म नाम सों शुद्धहोइ अरु गीतामें भक्ति योग चित्त शुकने लिख्यो ज्ञान कर्म आशा पाश शुद्ध होई बीचमें भक्तियोग भाष्यमें लिख्यो है भक्ति रत्नके दोऊ ढकनाहैं चक्रवर्तिने लिख्यो है दोऊ लैंगे नहीं बीचमें भक्तियोगकरके है दोउनको ॥ ५ ॥

मूल ॥ कलिजीवजंजालीकारणे विष्णुपुरीबडनिधिशची ॥ भगवतधर्मउतंगआनधर्मआननदेखा । पीतरपटितरविगतनिषकज्योंकुंदनरेखा ॥ कृष्णकृपाकरिबेलफलतसंगदिखायो । कोटिग्रन्थकोअर्थतेरहाविरंचनमेंगयो ॥ महासमुद्रभागवततेभक्तिरतन राजीरची । कलिजीवजंजालीकारणैविष्णुपुरीबडनिधिशची॥४७॥ टीका ॥ जगन्नानक्षेत्रमांझबैठेमहाप्रभूजबै चहूंओरभक्तभूपभीरअतिछाईहै । बोलेविष्णुपुरीपुरीकाशीमध्यरहैं याते जानियतमोक्ष चाहनीकीमनआईहै । लिखीप्रभुचीठीओपमणिगुणमालएकदीजिये पठाइमोहिंलागतसुहाईहै । जानिलईबातनिधिभागवतरतनदाम दईपठैआदिमुक्तिखोदिकैबहाईहै ॥ १७४ ॥ मूल ॥ विष्णुस्वामि संप्रदायदृढ़ज्ञानदेवगंभीरमति ॥ नामतिलोचनशिष्यसूरशशिसदृश

उजागर । गिरागंगउनहारिकाव्यरचनाप्रेमाकर ॥ आचार जहरिदासअतुलबलआनँददाइन। तिहिमारगबल्लभाविदितपृथुपाधितपराइन ॥ नवधाप्रधानसेवासुदृढ़मनवचक्रमहरिचरणरति । विष्णुस्वामिसंप्रदायदृढ़ज्ञानदेवगंभीरमति ॥ ४८ ॥

श्लोकदिके बहाइ हनुमन्नाटके ॥ भवबंधच्छिदेतस्मैनस्पृहयामि मुक्तये । भवान्प्रभुरहंदास इतियत्रविलुप्यते ॥ १ ॥ सालोकसार्ष्टिसामीप्यसारूप्यैकत्वमप्यत । दीयमानंनगृह्णंति विनामत्सेवनंनराः ॥ २ ॥ विष्णुपुरीवाक्यम् ॥ मुक्तावपिनिःस्पृहाःप्रतिपदं प्रोन्मीलदानंददायामास्थायसमस्तमस्तकमणीं कुर्वंतियंस्वेवशे । तान् भक्तानपितांचभक्तिमपितंभक्तिप्रियं श्रीहरिं वंदेसंततमर्थयेनुदिवसं नित्यंशरण्यंभजे ॥ मुक्तिनिस्पृहा कथाएकपुराणकी। एक समय श्रीनारदजी श्रीवृन्दावन में आये श्रीलालजीकी लीलादेखिकै बहुत प्रसन्न भये पीछेते रोवनलगे यह बड़ो आश्चर्य्यहै ॥ ५ ॥

ज्ञानदेवजूकीटीका ॥ विष्णुस्वामिसंप्रदायबडेईगँभीरमतिज्ञानदेवनामताकीबातसुनिलीजिये । पितागृहत्यागिआइग्रहणसंन्यासकियोदियोबोलिरूठतिया नहींगुरुकीजिये । आईसुनिबच्छपाछे कह्योजान्योमिथ्यावादभुजनपकरिमेरेसंगकरिदीजिये। आईसोलिवाइजातिअतिहीरिसाइदियोपांतिमेतेडारिरहे दूरिनहिंछीजिये ॥ ॥ १७५ ॥ भयेतीनिपुत्रतामेंमुख्यबड़ोज्ञानदेवताकीकृष्णदेवजूसोंहियेकीसचाईहै। वेदनपढ़ावैकोईकहैसबजातिगईलईकरिसभाअहोकहामनआईहै । विनसोंब्रह्मत्वकहीश्रुतिअधिकारनाहिबोल्योयोंनिहारिपढ़ै भैंसालैदिखाइये । देखिभक्तिभावचाव भयो आनिगहेपाव कियोईशभाववहीगहीदीवताईहै ॥ १७६ ॥

काव्यरचनापद ॥ माईआजु होनिशान बाजे दशरथ राइके । रामजन्म सुनि रानी गावति आनँद बधाइके । उमँगे ऋषिविश्वामित्र पढत वशिष्ठ तंत्र चैत्रमासनौमी शुक्लपक्ष पाइके । उमँगे दलह किधों जल उमँगे उमँगे मत्तगज उमँगे महल सब कंचन जराइके । उमँ पौरी पगार उमँगे बीथी

बजार उमँगी अयोध्यापुरी रह्यो सुखछाइके । उमँगे सूरज कुल धरम असुरकुल लंकके कँगूरा ढये अगम जनाइके।उमँगे वृक्ष सब सूखे हरेभये अबे उमँग्यो वनदंडक अधिकजिवाइके । उमँगे वृद्ध बाल सुर मुनि जेते ईश उमँगे गौतम जानि त्रिया मोक्षदाइके । उमँगे बादर रीछ हनूमान पूजाईश सुग्रीव रिपुको नाशकरि हानिये नशाइके । उमँग्यो सरयूको नीर मज्जन करिहैं रघुवीर उमँगे सबजीव जन्तु कोउ न सकै सताइके । उमँगी सभा विराजै अपने अपने समाजै उमँगे उमँगे तिलक जवमस्तक चढ़ाइके । उमँगे उघटत संगीत उमँगे तृवट गीत मृदंगी मन मृदंग बजाइके । उमँगे मुनि समाजैं बहुविधि बाजे बाजैं महाराज दान दीजै सजिकै तुलाइकें । उमँगे ढाढिया गावे ठाढे बजावें उमँगि अशीश देत नृपमाथो नाइके । उमँगेनाचै लागदाट तालसांचै रीझि वस्तुदेत जो जाहीलाइकै । उमँगी कौशल्या रानी सुत जायो शारंगपानी उमँगे जन ज्ञान देव सीताराम गाइके १ मुताख्या ब्राह्मणकला सोपान देव महान देव ज्ञान देव ऐसे तीन जैसे धायपुत्र परोसी साखी ऐसे मखनमें ब्राह्मण साखी यह जानि लीजै सो भैंसा पढ्यो प्रमाण कौन ॥

टीकातिलोचनजूकी ॥ भयेउभैशिष्यनामदेवश्रीतिलोचनजूसूरशशिनाहींकियोजगमेंप्रकाशहै । नामीकीतौबातसुनिआये सुनो दूसरेकीसुनेईबनतभक्तकथारहैपासहै । उपजेवणिककुलशैवकुलअच्युतकोऐयेनहींबनैएकतियारहैपासहै । टहलुवानकोऊसाधुमननिकोजानिलैयहीअभिलाषसदादासनिकोदास है ॥१७७॥आयेप्रभुटहलुवारूपधरिद्वारपर फटीएककामरीपन्हैंयांटूटीपाइहै । निकसतपूछैंअहोकहांतेपधारेआप बापमहतारीऔरदेखियेनगाइहै । बापमहतारीमेरेकोऊनाहिंसांचीकहौंगहौजोटहलतौपैमिलतसुभाइहै । अनमिलबातकौनदीजिये जनायवहखाऊंपांचसातसेरउठतरिसाइहै ॥ १७ ॥ चारिहीबरनकीजुरीतिसबमेरेहाथ साथहूनचहौंकरौनीकेमनलाइकै । भक्तनकीसेवासोतौकरतहीजनमगयोनयोकछु-

नाहिं डारेवरषबिताइकै ॥ अंतर्यामीनामकेरोचेरोभयोतेरोहौंतो बोल्योभक्तभावखावोनिशंकअघाइकै । कामरीपन्हैयांसबनईकरि दई औरु मोड़िकैन्हवाइकैतनुमैलकोछुड़ाइकै ॥ १७९ ॥

अनमिलपै ॥ सवैया ॥ अरसात जम्हातलगे नखगात कितौ तुतरात सुबोलत हूं । कवि सुन्दर ऊलटि और सुनौ इतनैं पर सौंहकरै अजहूं ॥ तिनसों वकहा कहिये जिनके सुपनेहूँ न लाज भई कबहूँ । जग में सखी ओषधि है सब की पै स्वभावकी ओषधि नाहिंकहूं ॥ १ ॥ मनलाइकै ॥ दोहा ॥ चारि वरणकी चातुरी, सरै न मेरो काम ॥ भक्त सेवजो जानिहौं, तो रहौ हमारे धाम ॥ २ ॥ भक्तनकी सेवा ॥ गीतायाम् ॥ यद्यद्वांछति मद्भक्तस्तत्तत्कुर्य्यामतंद्रितः ॥ ३ ॥ बाप महतारी नहीं ॥ जयतिजगनिवासो देवकी जन्मवादो शास्त्रजन्मभावैं अजन्मभावैं दोऊ सत्तः भक्ति बेटा मित्र सखा ऐसे जानिये ॥

बोल्योघरदासीसोंतूरहैयाकीदासी होइ देखियोउदासीदेतऐसो नहींपावनो । खाइसोखवावोसुखपावोनितनित्तहिये जियेजगमाहिं जौलौंमिलिगुणगावनो । आवतअनेकसाधुभावतटहलुहिये लिये चावदाबेपांवसबनिलड़ावनो । ऐसेहीकरतमासतेरहव्यतीतभये भयेउठिआपनेकुवातकोचलावनो ॥ १८० ॥ एकदिनगईहोपरो सिनिकेभक्तवधूपूंछिलईबातअहोकाहेकोमलीनहैं । बोलीमुसिकाइ वेटहलुवालिवाइलाये कहूंनअघाइखोटिपीसितनुछीनहैं ॥ काहूसों नकहौयहगहोमनमांझयेरीतेरीसोंसुनैगोजोपैजातरहैभीनहैं । सुनि लईयहांनेकुगयेउठिहूतौटेकदुखहूअनेकजैसेजलबिनमीनहैं ॥१८१॥ बीतेदिनतीनिअन्नजलकरिहीनभयेऐसोसोप्रवीनअहोफेरिकहांपाइ ये।बड़ीतूअभागीबातकाहेकोकहनलागी रागीसाधुसेवामेंसुकैसेकरि लाइये । भईनभवानीतुमखावोअन्नपानीयहमैंहींमातिठानमोको प्रीतिरीतिभाइये । मैंतोहौंअधीनतेरेघरहीमेंरहौंलीनजोपै कहौस द्रासेवाकरिबेकोआइये ॥ १८२ ॥ कीनेहरिदासमैंतोदासहूनभयो

नेकु बड़ोउपहासमुखजगमेंदिखाइये । कहैजनभक्तकहाभक्तिहमकरी कहोअहोअज्ञताईरीतिमनमेंनआइये ॥ उनकीतौबातबनिआवैसब उनहींसोंगुनहीकोलेतमेरेअवगुणछिपाइये । आयेघरमांझताऊमूढ़ मैंनजानिसक्यों आवैअब क्योंहूंधाइपाँइलपटाइये ॥ १८३ ॥

आवत अनेक साधु ॥ गीतायां ॥ अपिचेत्सुदुराचारो भजते मा मनन्यभाक् । साधुरेव समंतव्यो सम्यसग्व्यवसितोहिसः ॥ १ ॥ अन्न जल करि हीन ॥ श्लोक ॥ वैष्णवः परमोधर्मो वैष्णवः परमंतपः ॥ वैष्णवः परमोराध्यो वैष्णवः परमंगुरुः ॥ २ ॥ चारों वेदमें अरु अठारह पुराण-में अरु श्रीभागवतमें यह सुनीहै वैष्णव स्वरूप सर्वोपरि श्रीभगवत रूपी साक्षात् है ॥ ३ ॥

टीकावल्लभाचार्य्यजीकी ॥ हियमेंस्वरूपसेवाकरिअनुरागभरे ठरेओरजीवनिकीजीवनकोदीजिये । सोईलैप्रकाशघरघरमेंविलास कियो अतिहीहुलासफलनयननकोलीजिये । चातुरीअवधि नेकुआतुरीनहोतिक्योंहूं चहूं दिशिनानारागभोगसुखकीजिये । वल्लभजूनामलियोपृथुअभिरामरीति गोकुलमें धामजानिसुनिअति रीझिये ॥ १८४ ॥ गोकुलकेदेखिबेकोगयोएकसाधुसूधो गोकुलम गनभयोरीतिकछुन्यारिये । छोकरकेवृक्षपरबटवाझुलाइदियोकियो जाइदर्शनसोभयोसुखभारिये । देखेआइनाहिंप्रभूफेरिआपपासआ यो चितासोंमलीनदेखिकहीजानिहारिये ॥ वैसोईस्वरूपकैईगईसुधि बोल्योआनि लीजियोपिछानिकहांसेवानितधारिये ॥ १८५ ॥

गोकुलके देखिबेको ॥ कवित्त ॥ जौलौं ब्रज वीथिन में विथकै न येरेमन तौलौं कुटिलाई की सुकालिमा जनाइये । तौलौं नवनीत चोरचि-त्त में न आनै नेकु जौलौं और साधनमें स्वच्छता न पाइये । स्मृति पुराण वेद पण्डित प्रवीणताई करि अभिमान शेष पंकलपटाइये । पैजकरि कहतु हौं प्रवीणन सों कान खोलि सोकल मलीन जहां गोकुल नगाइये ॥ १ ॥ बेर गोधूलिकै सुनत तिया गौरी गान दामिनी निकरसी निकर गृहतेघिरैं ॥

गोधनके पाछे आछे नटवर वेष काछे श्याम चलत कटाछे तियनैन नैनसों- भिरैं। जारिनि किवारिनि अटारिनि झरोखनिते जित तित फूलपाती गैल छैलपै परैं। होति जब सांझ इन गोकुल गलिन मांझ कोटि वैकुंठसुख सहज बहे फिरैं ॥ २ ॥ नाहीं प्रभु ॥ दोहा ॥छतौनेह कागदहि पै, भये लिखा इनटांक ॥ आंचलगै उघऱ्यो अबै, सेहुंडकोसो आंक ॥ ३ ॥ स्नेह बिछुरनि में उखरि आवै वैसोई रूप ॥ दोहा ॥ प्रेम एकइक चित्तसों,एकै संग समाय ॥ गंधीको सोंधो नहीं, स्वजननहाथ विकाय ॥ ४ ॥ नैन कोफल ॥ बर्हायितेतेनयनेनराणां लिंगानि विष्णोर्ननिरीक्षतोये ॥ ५ ॥

खुलिगईआंखैंअभिलाखैंपहिचानिकीजैदीजैजुवताइमोहिंपावैनि जरूपहै। कहीजाइवाहीठौरदेखौप्रेमलेखौहियेलियेभावसेवाकरोमा रगअनूपहै। देखिकैमगनभयोलयोउरधारिहरिनयनभरिआये जा न्योभक्तिकोस्वरूपहै। निशिदिनलग्योपग्योजग्योभागपूरणहो पू रणचमतकारकृपाअनुरूपहै ॥ १८६ ॥ मूल ॥ संतसाखि जानैस बै प्रगटप्रेमकलियुगप्रधान। भक्तदासइकभूपश्रवणसीताहरकीनो। मारिमारिकरिखड्गबाजिसागरमेंदीनो ॥ नृसिंहकोअनुकरणहोइहिर णाकुशमारचो। वहैभयोदशरथरामबिछुरेतनुडारचो ॥ कृष्णदा मबांधेसुनेतिहिक्षणदीनेप्रान। संतसाखिजानैंसबैप्रगटप्रेमकलियुग प्रधान ॥ ५० ॥ टीका—संतसाखिजानैकलिकालमेंप्रगटप्रेमबड़ोई असंतजाकेभक्तसोंअभावहै। हुतौएकभूपरामरूपततपुरमहाराम हीकोलीलागुणसुनैंकरिभावहै। विप्रसोंसुनावैसीताचोरीकौनगावै हियो खरौभरिआवैवहजानतसुभावहै ॥ परचोद्विजदुखीनिज सु वनपठाइदियो जानैंनसनायो भरमायोकियोघावहै ॥ १८७ ॥ कलियुग प्रधान ॥ प्रेमते दर्शन प्रेमते वाको स्वरूप प्रेमते वाके स्वरू पको बाप प्रेमते स्वरूपके बाप को शिक्षाकार याते प्रधान ॥ १ ॥ घावहै ॥ कुंडलिया ॥ धोबीबेटा चांदसा सीटी और पटाक।सीटी और पटाक प्रेमहरि भक्ति नजानै। अनकनरहै न टांक छालनी सों मनछानै ॥

श्वास धवनि ज्यों धवै अंग मूसा ज्यों दाढै । ऐसो महा अचेत थौस कूकर ज्यों काढै । अगर कहैं निर्फलगई सेमरि फूली पाक । धोबीबेटा चांदसा सीटी और पटाक ॥ २ ॥ दोहा ॥ कबहुँ न सुखमें हरिभजे, भक्तन मिले न दौरि ॥ तीनों पन योंहींगये, फिरत पराई पौरि ॥ ३ ॥

मारिमारिकारेकरखड्गनिकासिलियो दियोघोरसागरमेंसोअवेशआयोहै । मारौं याहीकालदुष्टरावणविहालकरौंपावनकोदेखौंसीताभावदृढ़छायोहै ॥ जानकीरमणदोऊदरशनदीनोआनि बोलेविनप्राणकियोनीचफलपायोहै । सुनिसुखभयोगयोशोकसबदारुण जो रूपकीनिहारिनयेफेरिकैजिवायो है ॥ १८८ ॥ नीलाचलधाम तहांलीलाअनुकरणभयोश्रीनृसिंहरूपधारिसांचेमारिधारयोहै । कोऊकहैदासकोऊकहतअवेशतापै करौदशरथकियोभावपूरोपारयो है ॥ हुतीएकबाईकृष्णरूपसोंलगाईमतिकथामेंनआईसुतसुनीकहेउधारयोहै ॥ बांधेयशुमतिसुनिऔरभईगतिकारिदईसांचोरतितनतज्योमानौवारयोहै ॥ १८९ ॥

सोये समस्त भाव प्रेमसों होतभये जैसे श्रीगोपिकानके प्रेमसों भाव होत भये ॥ १ ॥ तापै दृष्टांत एक प्रेम के द्वै स्त्री एकतो आनंदिता एक व्याकुलता तिनके एकएक पुत्र आनंदिताके तो सुनन्द व्याकुलताके विरह ता विरहकी स्त्री तदात्मककोस्वरूप ॥ २ ॥ सवैया ॥ वैर बढ्यो सुखक्यो अतिही अबके कहिको लरिकौनको सूझै । कैसी भई हरि हेरतही अबको हियके जियकी गतिबूझै । बाहरहू घरहूमें सखी अँखियां निबहै छवि आनि अरूझै । सांवरो रूप रम्यो उरमें सगरोजग सांवरो सांवरो सूझै ॥ ३ ॥ ब्रह्मवैवर्त्तपुराणे ॥ यास्यामि तीर्थमद्यैव कंठेकृत्वातु वालुकम् ॥ अथवात्वं गृहाद्गच्छ त्वयामे किंप्रयोजनम् ॥ ४ ॥ ऐसे नन्दजी में वैठिकै सो बाईने कहो तदात्मकको पुत्रतद्वत् तद्वत्को स्वरूपसोकहैं ५॥

कवित्त ॥ श्याम को जपतिहुती श्यामाजू स्वरूपभरी पमी प्रेम पूरणते ह्वैगई कन्हाई है । सुरति लिखी जो चिट्ठी प्यारी पिय ततकाल भामिनी

वियोगभयो अतिदुखदाई है । व्याकुल विहाल अति प्यारीके विरहतन राधे राधे रटि पुनिभई राधिकाई है । चकित सचेत कहैं बेर बेर हेरिपाती पथिक न आयो यह पाती कैसे आईहै ॥ १ ॥ पद ॥ दुहुँ दिशिको अति विरह विरहिनी कैसे कै जुसहै । सुनो सखी यह बात श्यामसों को समुझाइकहै ॥ जब राधा तबहीं मुख माधो माधो रटतिरहै । जब माधो ह्वैजाति क्षणकमें राधा विरह दहै ॥ पहले जानि अगिनि चन्दनसी सतीहोन उमहै। समाचार ताते सीरेके पाछे कौनकहै । उभय दारुह्वै कीटमध्यज्यों शीतलताहिचहै । सूरदास प्रभु व्याकुल विरहिनि क्योंहूं सुखनलहै ॥ २ ॥ दोहा ॥ पियके ध्यान गही गही,रही वही ह्वैनारि ॥ आय आपही आरसी, लखि रीझत रिझवारि ॥ ३ ॥ श्लोक ॥ तटभुवितरलाक्षो लक्षतो यासमंतादिहवसतिसधूर्त्तः शीघ्रमायात यूयम् । असकृदिति वदंती कामिनी कापिवालं कपिकिमपितमालं गाढमालिंगतिस्म ॥ ४ ॥ तापै एक दृष्टांत लंकामें त्रिजटा अरु सीताजीको ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ भृंगीभयते भृंगहोइ वहकीट महाजड । कृष्ण प्रेमतेकृष्णहोइ कछु अचरज नहिंवड ॥ ६ ॥ प्रेमहि पीवहि अंतरुपै तो । बीसि तीनि साठिहैं जेतो ॥ ७ ॥ एक सिद्ध अमलीके नीचे बैठ्यो तप करतरहो ता मग श्रीनारदजी आये सो पूछी हरि मिलैंगे सो परमेश्वर ते पूछी नारदजी कही अमलीके पत्ता इतने युग तब नाच्यो मिल्यो तापै राजाकी बेटीको अरु द्वै मित्रन को दृष्टांत ॥८॥

मूल ॥ प्रसादअवज्ञाजानिकें पाणितज्योएकैनृपति ॥ हौंकहा कहौंबनाइबातसबहीजगजानै । करतैदोनोभयोश्यामसौरभराचिमानै ॥ छप्पनभोगतेयहलखीचकरमाकोभावै ॥सिलिपिल्लेकेकहतकुँवरिपैहरिचलिआवै ॥ भक्तनिहितसुतविषदियोभूपनारिप्रभुराखिपति । प्रसादअवज्ञाजानिके पाणितज्योएकैनृपति ॥ ६१ ॥ पुरुषोत्तमकाशीराजा ॥ प्रसादकीअवज्ञातेतज्योनृपकरएककरिकैविवेकसुनोजैसीभांतिभईहै । खेलैनृपचौपरिकोआयोप्रभुभक्तमेश दाहिनेसेफासेबांयोछुयोमतिगईहै । लैगयेरिसाइकेफिराइमहादुः

खपाइ उठ्योनरदेवगेहगयोसुनिनईहै । लियोअनसनहाथतज्यो यहीछिनतब सांचोमेरोपनबोलिविप्रपूँछिलईहै ॥ १९० ॥ काटे हाथकौनमेरोरहैगहिमौनयातें पूँछतसचिवकहाशोचयोंविचारिये । आवैएकप्रेतमोदिखाईनितदेतनिशि डारिकैझरोखाकरशोरकरि भारिये । सोऊढिगआइरहौआपकोछिपाइतब डारैहाथआनितबहीं सुकाटिडारिये । कहीनृपभलेचौकीदेतमेंघुमायोभूप डारयोउठिआ निछेदन्यारोकियोवारिये ॥ १९१ ॥ देखिकैलजानो कहाकियोमैं अयानोनृप कहीप्रेतमानोनहींप्रभुसोबिगारिये । कहीजगन्नाथदेव लैप्रसादजावोवहांलावोहाथबोवौबागसोईउरधारिये । चलेतहांधाइ भूपआगेमिल्योआइहाथ निकस्योलगाइहियेभयोसुखमारिये । लाये करफूलताकेभयेफूलदोनाके नितहीचढ़तअंगगंधहरिप्यारिये १९२

प्रसादअवज्ञा ॥ श्लोक ॥ प्रसादं जगदीशस्य अन्नपानादिकं च यत् ॥ ब्रह्मवन्निर्विकारंहि यथा विष्णुस्तथैवतत् ॥ १ ॥ पूँछि लई है ॥ दोहा ॥ वाम बाहु फरकत मिलै, ज्यों प्रीतमरस मूरि ॥ त्यों तोहीसों भेंटिहौं, राखि दाहिनोदूरि ॥ २ ॥

करमाबाईकीटीका ॥ हुतीएकबाईताकोकरमासुनामजानि विनारीतिभांतिभोगखीचरीलगावही । जगन्नाथदेवआइभोजनकरत नीके जितेलागैंभोगतामेंयहअतिभावही । गयोतहांसाधुमानिबड़ो अपराधकरे भरैवहश्वाससदाचारलैसिखावही । भईयोंअबारदेखै खोलिकैकिवारतोपैजूंठनिलगीहै मुखधोयेबिनआवही ॥१९३॥पूँछी प्रभुभयोकहाकहियेप्रगटखोलि बोलिहूनआवैहमैंदेखिनईरीतिहै । करमासुनामएकखीचरीखवावै मोहिं मैंहूंनितपाऊंजायजानीसांची प्रीतिहै । गयोमेरोसंतरीतिभांतिसोंसिखाइआयो मतमोअनतबिन जानेयोंअनीतिहै । कहीवाहीसाधुसोंजुसाधिआवौवहीबात जाइके सिखाईहियआईबड़ीभीतिहै ॥ १९४ ॥ सिलपिल्लेउभैबाईकीटी का ॥ सिलिपिल्लेभक्तउभैबाईसोई कथासुनौ एकनृपसुताएकसु

ताजिमीदारकी। आयेगुरुघरदेखिसेवाढिगबैठीजाइ कहीललचाइ पूजाकीजेसुकुवारकी। दियोशिलटूकएकनामकहिदियोवही की जियेलगाइमनमतिभवपारकी। करतकरत अनुरागबाढ़िगयोभारी बड़ीयेविचित्ररीतियहीशोभासारकी॥ १९५॥

वैष्णव प्रेमको समझै नहीं ॥ वेदसमझै याते करमाबाईको वेदही सिखायो॥ दोहा॥ लकरि धोवै भ्योंसनै, करै छतीसौ पाक ॥ जाको षट षटकरम हैं,ताको भावै छाक॥१॥सो प्रेमको समुझै नट गोपाल कपट क्यों भावै कोटिक स्वांग बनावै॥२॥बड़ी भीति है॥ साधुको फेरिआया देखिकै डरी। आप कहा सिखाइ गयो तब साधु बोले री तूडरे मतिरी॥ यह क्रिया ब्राह्मणकी है तेरी नहीं तब पोथी देखी तब जानी तू वैसेही कन्यो करि तब साधु हँसे कही ललचाइ॥ ३॥

पाछिलेकवित्तमांझदुहुनिकीएकैरीति अबसुनौन्यारीन्यारीनी केमनदीजिये। जिमींदारसुताताकेभयेउभयभाईरहैंआपसमेंवैरगाम मारचोसुवेछीजिये। तामेंगईसेवाइनबड़ोईकलेशकियोतियोनहीं जातखानपानकैसेकीजिये। रहेसमुझाइयाहिकछुनसुहाइ तबकही जायलावौतेरेदोऊसमधीजिये॥१९६॥ गईवाहीगांवजहांदूसरोसुभा ईरहैबैठ्योहैअथाईमांझकहविहीबातहै॥ लेहुजूपिछानीतहांबैठ्योइ कठौरेप्रभुबोलि उठेउकोऊबोलिलीजेप्रीतिगातहै। भईआंखि राती लगीफाटिबेकोछातीसो पुकारीसुरआरतसोमानोतनुपातहै। हियेआ इलागेसबदुखदूरिभागेकोऊबड़ेभागजागेघरआईनसमातहै॥१९७॥

भई आँखिराती॥ कवित्त॥ कंचनमें आंचदई चुनी चिनगारीभई दूषण भयेरी सब भूषणउतारिले। पियहै विदेश वाही देश क्यों न परै धाइ ससकि ससकि उठै मनहूं विचारिलै। परघर आगि आली मांगन क्यों जाति अब आगिमेरे अंग चिनगारी चारिझारिलै। सांझ समैसांच सुनबाती क्यां न देति आली छाती सों छुवाइ दिया बाती क्यों न बा रिलै॥ १॥ वसन डसन भये हसन रसन होत श्वासनिसों जागिहै वियोम

आगिआगरी। धामतौ उजार से हैं छारसे हैं काम काज आलिनके यूथ जाल ऐसे हाल नागरी। भोजन हलाहल कुलाहल सो नाद जाति वाद है विवाह ऐसे विशदनिकी सागरी। आपुनु मृगीके तूल कामदेव शारदूल बचि है न मूल शूल उठी है उजागरी ॥ २ ॥ दोहा ॥ धवल महल शय्या धवल, धवल शरदकी रैन। एक श्याम विन विकल सब, ज्यों पुतरी बिन नैन ॥ ३ ॥

टीकानृपसुताको ॥ सुनोनृपसुताबातभक्तिगातगानपगीभजी सबविषयव्रतसेवाअनुरागीहै। व्याहीहीविमुखघरआयोलेनवहेवर खरी अरवरीकोइचितचिंतालागीहै। करिदईसंगभरीआपनेहीरंग चली अलीहूनकोऊएकवहीजासोंरागीहै। आयोढिगपतिबोलिकि योचाहैरतियाकोऔरभईगतिमतिआवोविथापागीहै ॥ १९८ ॥ कौनवहविथाताकोकीजियेयतनवेगिवड़ोउदवेगनेकुबोलिसुखदोजि ये। बोलिबोजोचाहौतौपैकरौहरिभक्तिहियेबिनहरिभक्तिमेरोअंग जिनिछीजिये। आयोरोषभारीतबमनमेंविचारीवापिटारीमैंजुकछु सोईलैकेन्यारोकीजिये। करीवहीबातमूसिजलमांझडारिदईनईभई ज्वालाजियोजातनहिंखीजिये ॥ १९९ ॥ तज्योजलअन्नअबचाहत प्रसन्नकियो होतक्योंप्रसन्नताकोसरबसालियोहै। पहुँचेभवनआइ दईसोजताइबातगातअतिछीनदेखिकहाहठकियोहै। सासससमझावे कछूहाथसोंखवावेयोकोबोल्योहूनभावेतबधरकतहियोहै। कहैसोई करैंअबपरैपांइतेरेहमबोलीजबवेईआवेतौहीजातजियो है ॥ २०० ॥

तज्यो जल अन्न ॥ दोहा ॥ शठसनेहसों डरपिये, नंद और भय नाहिं। सांपिनि सुत हित जानि कै, गिले पेट पचि जाहिं ॥ १ ॥ कवित्त ॥ समरमें लऱ्यो जाहि गिरह ते गिऱ्यो जाइ गगनमें फिऱ्यो जाइ पावकको दाहिवो। काननमें रह्यो जाइ व्यालकर गह्योजाइ बिरहदु सह्योजाइ और कहा कहिवो। हलाहल पियोजाइ सरबस दियो जाइ करवत लियो चाइ वारिधिको बहिबो। और दुख याहुते जु दुसह

कठिन ऐसो जैसो कहूं विमुख संग एकछिनरहिबो ॥ २ ॥ ऐसो सत्संग मन में जानिबो ॥ ३ ॥

आयेवाहीठौरभौंरआइतनभूमिगिरचो गिरचोजलनैनसुरआरत पुकारीहै। भक्तिवशश्यामजैसेकामवशकामीनर धायलागेछातीसों जुसंगसोंपिटारीहै । देखिपतिसासुआदिजागतविवाहमिटचो वादि हीजनमगयोनेकुनसँभारीहै । कियेसबभक्तहरिसाधुसेवामांझपगे जगेकोऊभागघरवधूयोंपधारीहै ॥२०१॥ भक्तनकेहेतुसुतविषदियो उभयबाईकीटीका ॥ भक्तनकेहेतुसुतविषदियोउभैबाई कथासरसा ईबातखोलिकैजताइये । भयोएकभूपताकेभगतअनेकआवैंआयो भक्तभूपतासोंलगनलगाइये। नितहीचलतऐयेजलननदेतराजा चितयोबरषमांझकह्योमोरजाइये । गईआशटूटितनछूटिबेकोरीतिभई लई बातपूंछिरानीसबैलैजनाइये ॥ २०२ ॥

आयो भक्तभूप ॥ श्लोक ॥ मदाश्रयां कथामिष्टाः शृण्वंति कथयंति च ॥ तपंति विविधास्तापानैतान्मद्गतचेतसः ॥ १ ॥ साधुसेवामें कहा लाभ ॥ तुलयामल वेनापि न स्वर्गं न पुनर्भवम् ॥ भगवत्संगिसंधस्य मर्त्यानां किमुताशिषः ॥ २ ॥ प्रथमे ॥ वासुदेवे भगवति भक्तियोगः प्रयोजितः ॥ जनयत्याशु वैराग्यं ज्ञानं च यदहैतुकम् ॥ ३ ॥ सप्तमे ॥ वासुदेवे भगवति भक्तिमुद्वहतां नृणाम् ॥ ज्ञानवैराग्यवीर्याणां नेह कश्चिद्विपाश्रयः ॥ ४ ॥

दियोसुतविषरानीजानीनृपजीवैनाहिं संतहैस्वतंत्रसोइन्हेंकैसेराखिये । भयेबिनभोरवधूशोरकरिरोइउठीभोइगईरावलमेंसुनीसाधुभाषिये । खोलिडारीकटिपट भवनमेंप्रवेशकियोलियोदेखिबालककोनीलतनुसाखिये। पूंछचोभूपातियासोंजुसांचकहिकियोकहा कहीतुमचल्योचाहौनैनअभिलाषिये ॥ २०३ ॥ छातीखोलिरोयेसंतवोलहूनआवैमुख सुखभयोभारीभक्तिरीतिकछुन्यारिये । जानोहूनजातिपांतिजाकोसोविचारकहा अहोरससागरसोसदाउरधारिये।

हरिगुणगाइसाखिसंतनिबतायदियोबालकजिवाइलागीठौरवहप्यारि ये । संगकेपठाइदियेरहेजेबेभीजेहिये बोलेआपजाऊंजौनमारिकै बिडारिये ॥ २०४ ॥ सुनौंचित्तलाइकहीदूसरोसुहाइहिये जियेज गमाहिंजौलौंसंतसंगकीजिये । भक्तनृपएकसुताव्याहीसोअभक्तम हा जाकेघरमांझजनबामनहिंलीजिये । पल्योसाधुशीतसोंजुशरीर हगरूपपले जोभचरणामृतकेस्वादहीसोंभीजिये । रह्योकैसेजाइ अकुलाइनबस्याइकछु आवैंपुरप्यारेतबविषसुतदीजिये ॥ २०५ ॥

जानीहूं न जातिपांति ॥ कुंडलिया ॥ सोईनारिसुतेबडीजाकीको ठीज्वारि। जाकी कोठीज्वारि जाहि यादवपति भावै । श्रवण सुनत हरिकथारसनगोविंद्गुणगावै ॥ आरज विदुष उदार सुमति सुकुलीनी सो ई। हृदय बसत हरिचरण जगत ड्योकरि छोई ॥ अगर कहे तादासपर तन मन दीजैवारि।सोई नारि सुतेबाडि जाकी कोठी ज्वारि ॥ १ ॥ दोहा ॥ यद्यपि सुन्दर सुघर पुनि, सगुनो दीपक देह । तऊ प्रकाश करै तितौ, भरिये जितौ सनेह ॥ २ ॥ एकादशे ॥ मल्लिंगमद्भक्तजनदर्शनस्पर्शनार्चनम् ॥ परिचर्य्यास्तुतीप्राह गुणकर्मानुकीर्त्तनम् ॥ ३ ॥ हारिगुणगावैसाखि- संतन ॥ आदिपुराणे ॥ मद्भक्ता यत्र गच्छंति तत्र गच्छामि पार्थिव ॥ भक्तानामनुगच्छंति भुक्तयो मुक्तिभिः सह ॥ ४ ॥

आयेपुरसंतआइदासीनेजनाइकही सहीकैसेजातिसुतविषलैकै दियोहै । गयेवाकेप्राणरोइउठीकिलकारिसबभूमिगिरेआनिदुकभयो जातहियोहै । बोलोअकुलाइएकजीवेकोउपायजोपै कियोजायपि तामेरेकोउबारकियोहै । कहैसोईकरैहगभरेलावोसंतनिको कैसेहोत संतपूँछोचेरोनामलियोहै ॥ २०६ ॥ चलीलैलिवायचेरीबोलिबोसि खाइदियो देखिकैधरणिपरीपांइगहिलीजिये । कीनीवहीरीतिहगधा रामानोंप्रीतिसत करीयोंप्रतीतिगृहपावनकोकीजिये । चलेसुखपाइ दासोआगेहीजनाईजाहि आइठाढ़ीपौरिपांइगहेमतिभीजिये।कहीहरे बातमेरेजानौपितामातमैंतौअंगमेनमातआजुप्राणवारिदीजिये २०७

रीझिगयेसंतप्रीतिदेखिकैअनन्तकह्यो होइगीजुवहीसोप्रतिज्ञातैजु करीहै । बालकनिहारिजानीविषनिरधारदियो दियोचरणामृतको प्राणसंज्ञाधरीहै ॥ देखतविमुखजाइपाइततकाललिये कियेतबशिष्यसाधुसेवामतिहरीहै । ऐसेभूपनारिपतिराखी सबसाखी जन रहैअभिलाषी तोषैदेखोयह घरी है ॥ २०८॥

दियोचरणामृत ॥ श्लोक ॥ अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधिविनाशनम् । विष्णुपादोदकं पीत्वा शिरसा धारयाम्यहम् ॥ १ ॥ देवताननें कही शुकदेवजीसों श्रीभागवत हमैं देहु अमृत राजा परीक्षितकोदेहु सो इन भागवत न दयोहै याते हरिको बालकको चरणामृत दियो ॥२॥ दोहा ॥ धन्यसन्त जहँजहँ फिरैं, तहँ तहँ करत निहाल। चरणामृत मुखडारिकै, फेरि जियायोबाल ॥ ३ ॥ श्लोक ॥ वरं हुतवहज्वालापिंजरांतर्व्यवस्थितिः । नासौ श्रीविष्णुविमुखो जनसंवासवैशसम् ॥ ४ ॥

मूल ॥ आशैअगाधदोउभक्तकोहरितोषनअतिशयकियो ॥ श्री रंगनाथकोसदनकरनबहुबुद्धिविचारी । कपटधर्मरविजेंद्र द्रव्यहितदेहबिसारी । हंसपकरनेकाज वधिक बानोंधरिआये । तिलकदामकीसकुचजानितिहिआपबँधाये ॥ सुतवधहरिजनदेखिकैदैकन्याआदरदियो । आशैअगाधदोउभक्तको हरितोषनअतिशयकियो ॥ ॥ ६२ ॥ टीका आशैसौअगाधदोउभक्तमामाभानजेकोदियोप्रभु पोषताकीबातचितधारिये । घरतेनिकसिचलेवनकोविवेकरूपमूरतिअनूपबिनमंदिरनिहारिये । दक्षिणमेंरङ्गनाथनामअभिरामजाको ताकोलैबनावैधामकामसबटारिये । धनकेयतननफिरैभूमिपैनपायोकहूँचहूँदिशिहेरिदेख्योभयोसुखभारिये ॥ २०९ ॥ मंदिरसरावगीकोप्रातिमासोपारसकीआरसनकियोबेदनूनहूंबतायोहै । पावैंप्रभुसुखहमनरकहूगयेतौकहा धरकनआईजाइकानलैफुकायोहै । ऐसीकरी सेवाजासोंहरीमतिकेवराज्यों सेवरासमाजसबनीकेकैरिझायोहै।दियो सौंपिभारतबलेबेकोविचारकरैहरैकोनराहभेदराजनपैपायो है२१०॥

घरसे निकसिचले ॥ कवित्त ॥ चाहैंधन धाम वाम सुत अभिराम सुख कह्यो नाहीं नाहीं कछू सरत न काजहै । चतुरन आगे कोटि चातुरी न काम आवै बातन बनाइ सुनि उपजत लाज है । जोपै कहीं सांच यामें झूंठ न मिलाव नेकु तोपेश्वान से क्यों कहूं रोंक्यो गजराज है । वृन्दावन चाहे तौ न चाहै जीवतनहूंको मनहूंको दूरि ऐसे मिलत समाज है ॥ वेद नूनहूं बतावै ॥ श्लोक ॥ गजैरापीडयमानोपि नगच्छेज्जैनमंदिरे । याविनी नैव वक्तव्या प्राणैः कण्ठगतैरपि ॥ १ ॥ रङ्गनाथ ॥ कावेरी विरजा चैव वैकुण्ठं रंगमंदिरम् । प्रवासदेवरंगेशप्रत्यक्षं परमं पदम् ॥ २ ॥

मामारह्योभीतरऔऊपरसों भानजोहो कलसभँवरकलीहाथसों फिरायोहै । जेवरलैफांसिदियोमूरतिसुखैंचिलईऔरबारबहुआपनी कैचढ़िआयोहै । कियोहोजोद्वारतामैंफूलितनफँसिबैठेउअतिसुख पाइतबबोलिकैसुनायोहै । काढ़िलेबोशीशईशभेषकीनानिंदाकरैं भरे अंकवारिमनकीजियोसवायोहै ॥ २११ ॥ काढ़िलियोशीशईश इच्छाकोबिचारकियोजियोनहींजाततऊचाहमतिपागीहै । जोपैत नुत्यागकरौंकैसेआशसिंधुतरौवाहीओरआयो तहांनीमखुदीलागीहै। भयोशोकभारीहमैंह्वैगईअवारीकाहूऔरनेविचारीदेखैंवहीबडभागी । भरिअंकवारिमिलेमंदिरसँवारिझिलेखिलेसुखपाइनयनजानेसोई रागीहै ॥ २१२ ॥ कोढ़ीभयोराजाकियोयतनअनेकऐयेएकहूनला भैकह्योहंसनिमँगाइये । वधिकबुलाइकहीवेगिहीउपायकरो जहांतहां ढूँढ़िअहो इहाँलगिलाइये । कैसेकरिलावैंवेतोरहैंमानसरमांझलावौ गेछुटौगेतबजनेचारिजाइये । देखतहिउडिजातजातिकोपिछानिलेत साधुसोनडरैंजानिभेषलैबनाइये ॥ २१३ ॥

मामारह्यो भीतर ॥ दोहा ॥ साधुसती अरु शूरमा, ज्ञानी अरु गजदंत। येतेनिकसि न बाहुरें, जो युगजाहिं अतंत ॥ १ ॥ श्लोक ॥ स्वर्गापवर्गनरकेष्वपि तुल्यार्थदर्शिनः । सर्वधर्मान्परित्यज्यमामेकं शरणं व्रजेति ॥ २ ॥ अग्रेवह्निः पृष्ठेभानुः सायंचिबुकसमर्पितजानुः । करतल

भिक्षा तरुतलवासस्तदपि नमुंचत्याशापाशः ॥ ३ ॥ दोहा ॥ जौन युगति पिय मिलनकी, धूरि मुक्ति मुख दीन । जो लहिये सँग सजन तौ, धरक नरकहू दीन ॥ ४ ॥ ईशइक्षा भलीकरी ॥ यद्यद्वांछति मद्भक्तः ॥ इनकही मुँह कैसे दिखावेंगे सेवराके चेला भये याते काढ्यो प्रथम पाप पुण्य भोगे ऐसे ओषधि ऋषीन व्यवहार के लिये वैद पसारी ऐसे कोढी भयो खर कुत्ता नहीं भले मनुष्य पै है ॥

गयेजहांहंससंतवानोसोप्रशंसदेखि जानिकेबँधायेराजापासलैके आयेहैं । मानिमतिसारप्रभुवैद्यकोस्वरूपधारिपूंछिकैबजारलोगभू पढिगलायेहैं । काहेकोमँगायेपक्षीआछीहमदेहकरैं छांड़िदीजैइन्हैं कहीनीठिकरिपाये हैं । औषधीपिसाईअंगअंगनिमिलाइकियेनोके सुखपाइकहीउनकोछुड़ाये हैं ॥ २१४ ॥

जानिकै बधाये ॥ दोहा ॥ हंसकहै सुनि हंसिनी, सुनो पुरातन साखि ॥ बधिकभेद जानेनहीं, पति बानैकीराखि ॥ १ ॥ वैद्यकी ॥ कवित्त ॥ तप बैल हजूर हरौल चंडौल कफवाइ मूलहूल हलकारा काहली विचारिये । कोटकोतवालको तो दादहै दिवानफोरा फौजदार पित्तीपदचर हंकारिये । तिजारी तापतिल्ली संग्रहणी सेठ मानिलेहु खई खाज खांसी राजपत्नी निहारिये । शीत अतीसार युग मंत्री विषम बादशाह भाजि वैदराज आयो सेना लिये भारिये ॥ २ ॥ आई मनजूनके जनून बड़ीनून सेती भूनिडारे रोग अरुण आमल बैठायोहै । अरक फरकसेतो प्यादिनके यूथ बहु चूरण चतुर चोबदार मनभायो है । गोली किधौं गोला क्काथ कटक भुशुण्डी मानों उसन सलिल शीत बातको नशायो है । अंजन सुगन्ध लेप मर्दन कराइ पुनि सेन चतुरंग साजि वैदराज आयो है ॥ ३ ॥ छप्पय ॥ नारद शुक सदवैद ग्रंथ भागवत बतावैं । करै सतसंग जब वृत्ति कुपथ होने नहिंपावैं । ओषधि नवधाभक्ति यतन प्रभुको आचारा । चरणामृत करिकाथ हरै सो सकल विकारा ॥ संत चूरण रजधोइकै तौइमारौ करिदीजै । पथदै महाप्रसाद अन्न रसना

नहिं लीजै । त्रिगुण दोष वाई चौरासी जनम मरणकोहठिहरै । तत्त्ववेत्ता तिहुँलोकमें फिरि न रोगतिहिं संचरै ॥ ४ ॥

लेवोभूमिगांवबलिजांवयादयालुताकीभागभालजाकेताकोदरश नदीजिये । पायोहमसबअबकरोहरीसाधुसेवामानुषजनमजाकीस फलताकीजिये । करिलैनिदेशदेशभक्तिविस्तारभई हंसहितसार जानिहियेधरिलीजिये । वधिकनजानीजासोंखगनिप्रतीतिकोनी ऐसोभेषछाड़िये नराख्योमतिभीजिये ॥ २१५ ॥ महाजनसदाव्रती कीटीका ॥ महाजनसुनोसदाव्रतीताकोभक्तपन मनमें विचारसेवा कीजैचितलाइकै । आवतअनेकसाधुनिपटअगाधमतिसाधलेतजैसे अवेसुबुधिमिलाइकै । संतसुखमानिरहिगयोघरमांझसदा सुतसोंस नेहानितखेलैसंगजाइकै । इच्छाभगवानमुख्यगोनलोभजानि मारि डारचोधूरिगाड़िगृहआयोपछिताइकै ॥ २१६ ॥ देखैमहतारी मगबेटाकहांरह्योपगिबीतिचारियामतऊधाममेंनआयोहै । फेरीनृप डौंडीजाकेसंतसंगआयलौंडीकह्योयोंपुकारिसुतकौनेबिरमायोहै । वेगिदेवताइदीजैआभरणदियोलीजैकहीसोसंन्यासीयहमारचोमन लायोहै । दईलैदिखाइदेहबोल्योयाकोगहिलेहुयाहीनेहमारोपुत्रमारे उनीकेपायोहै ॥ २१७ ॥

हिये ॥ श्लोक ॥ आराधनानां सर्वेषां विष्णोराराधनं परम् ॥ तस्मात्परतरं देवि तदीयानां समर्चनम् ॥ १ ॥ भक्ते तुष्टो हरिस्तुष्टो हरौ तुष्टे च देवताः ॥ भवंति सिक्ताः शाखाश्वतरोर्मूलनिषेचनात् ॥ २ ॥ आरंभगुर्वी क्षयति॰क्रमेण लघ्वी पुरा वृद्धिमती च पश्चात् ॥ दिनस्य पूर्वार्द्धपरार्द्धभिन्ना छायेव मैत्री खलसज्जनानाम् ॥ ३ ॥ मनमें विचार ॥ नवमे ॥ मन एव मनुष्याणां कारणं बंधमोक्षयोः ॥ ४ ॥ चितलाइके ॥ कर नहीं तौ भक्ति डिगिजाइ जैसे पाथर चढ़ावते तौ बडी बेर चढ़े चित्तविना नेक में गिरिपरे हैं ॥ ५ ॥ साधुलेत अनेक प्रकारके साधु आवे हैं ॥ जिन में न्यारी न्यारी क्रिया महादेवकीसी रीतिजानो ॥ ६ ॥

बोल्योअकुलाइ मैंतौदियोहैबताइमोकोदेवौजूछुड़ाइनहींझूंठक छुभाषिये । लेवौमतिनामसाधुजोउपाधिमेंटेउचाहौजावौंउठिऔर कहुँमानिछोरिनाखिये । आइकेविचारकियोजानीसकुचायोहियोबो लिउठीतियासुतदेकैनीकेराखिये । परेउबधूपांइतेरीलीजियेबुलाइ पुत्रशोककोमिटाइऔरखरीअभिलाषिये ॥ २१८ ॥ बोलिलियोसं तसुताकीजियेजुअंगीकारदुखसोअपारकाहूविमुखकोदीजिये । बो ल्योसुरझाइमैंतौमारयोसुतहाइमोपैजियेहूनजाइ मेरोनामनहींली जिये । देखौंसाधुताईधरोशीशपैबुराईइनरतीहूनहोसकियोमेरुसम रीझिये । दईबेटीव्याहिकहिमेरोउरदाहमिटेउकीजियेनिवाहजगमा हि जौलौंजीजिये ॥ २१९ ॥ आयेगुरुघरसुनिदीजैकीनसाखिबड़े संतसुखदाईसाधुसेवालेबताईहै । कह्योसुतकहांअजूपायोसुतकैसी भांतिकहिकोबखानेजगमीचुलपटाईहै । प्रभुनेपरीक्षालईसोईहमैंआ ज्ञादई चलियेदिखावौजहांदेहको जराईहै । गयोवाहीठौरशिरमौरह रिध्यानकियोजियोचल्योआयोदासकीरतिबड़ाईहै ॥२२०॥ मूल ॥ चारोयुगचतुर्भुजसदाभक्तिगिरासांचीकरन दारुभईतरवारिमारुप यरचीभुवनकी । देवाहितसितकेशप्रनिज्ञाराखीजनकी । कमध्वज केकपिचारुचितापरकाष्ठलाये । जैमलकेयुद्धमाहिंअश्वचढ़िआपन धाये। घृतसहितभैंसचौगुर्णाश्रीधरसंगशायकधरन । चारोंयुगचतु र्भुजसदाभक्तिगिरासांचीकरन ॥ ८२ ॥

लेवोमति नाम साधु ॥ कुंडलिया ॥ भुस ऊपरको लीपनो अरु बा- रूकी भीति ॥ भूनकी मानो मिठाई ॥ बाजीगरको बागस्वप्नमें नवविधि पाई ॥ अजा स्तन ज्यों कंठ तुच्छ चादरकी छाया । पूरववस्तु बि- सारि पश्चिमदिशि ढूँढन धाया । आन उपासक रामबिनु अगर सुऐ- सीरीति । भुस ऊपरको लीपनो अरु बारूकी भीति । कर्त्तुमकर्त्तुमन्यथा कर्त्तुं समर्थः ॥ ऐसे भीतिमें अवगुणदीखे जैसे मजनू की सहनकफोरी जब नाच्यो ॥ १ ॥

भुवनचौहानकीटीका ॥ सुनोकलिकालबात औरहैपुराणख्यात भुवनचौहानजहांरानाकीदुहाईहै । पट्टायुगलाखखातसेवाअभिलाष माधुचल्योई शिकारनृपभोरेसँगधाईहै । मृगीपाछेपरेकरेटूकहाति भवनजे आइगईदयाकहाकाहेकोलगाई है । कहैमोकोभक्तक्रियाकरौंमैंअभक्तनिकी दारुतरवारिधरौयहैवनभाईहै ॥ २२१ ॥

सुनों कलिकालहै तीन युगनमें तौ पुराणन मे विख्यातहैं सतयुगमें तौ ध्रुव, त्रेतामें प्रह्लाद हैं दूसरो दास राजा रामाश्वमेधमें कथा है द्वापरमें भीष्मपितामह अरु द्रौपदी तीन युगन में हरि प्रकट दर्शन देते कलियुगमें तौ जीव लगोहहैं याते कलियुगके जीव अधिकारी नहीं शून्य हैं सो नहीं और युगनमें बरदेके छुटि जाते दश दश हजार वर्ष तप करिकै स्त्री धनमाल मांगते सोहै छुटिते और ये कलियुग के जीव तनकहू दर्शन देहिंतौ चिपटि जाहिं क्योंकि गोपिनने द्वापरमें कृष्ण देखिकै घरछोडेहैं कलिके जीव कागज देखिके घर छोडिदेहैं फिरि घरको मुख न देखैंगे पीतौ घरहूको आई ॥ १ ॥ कवित्त ॥ रसिकप्रवीणनिकी कविताई नाना भाँति गाई रसस्वादही सो होति सफलाई है । यहै जानि मोहनजू भोग भोगता बनाये आये चलेभुरिही सो सबनिजनाई है ॥ त्रियुग प्रकट रूप देखे नितनैनन सों बैनमें स्वरूप लखिहोति अधिकाई है।कल कलिकालके लगोहैं येरसाल जीव छोडिहैं नक्योंहू हरि मूरति छिपाईहै ॥ २ ॥ ये वाणीमें साक्षात् मूरतिही देखे है अधिकाई तो येईहै याते प्रगट दर्शन नहीं देहैंहारि ॥ ३ ॥ कृपा ॥ श्लोक ॥ वैष्णवानां त्रिकर्माणि दया जीवेषु नारद ॥ श्रीगोविन्देपराभक्तिस्तदीयानां समर्चनम् ॥ ४ ॥

औरएकभाईतानेदेखीतरवारिदारुसक्योनसँभारिजाइरानाकोजनाईहै । नृपनप्रतीतकरैकरैयहसौंहनानाबानोप्रभुदेखितेजबातनचलाईहै । ऐसेहीबरषएककहतव्यतीतभयोकहैमोहिमारिडारोजोपैमैं बनाईहै । करीगोटकुंडजाइपाइकैप्रसादबैठे प्रथमनिकासिआपसबन दिखाईहै ॥ २२२ ॥ क्रमसोंनिहारिकहीभुवनविचारिकहाकह्योचा-

हैदारुमुखनिकसतसारहै। काढ़िकैदिखाइमानोंवीजुरीचमचमाइआ ईमनमांझबोलेउवाकोमारोभारहै। भक्तकरजोरिकैबचायोअजु मारियेक्योंकहींबातझूंठनहीकरीकरतारहै। पटादूनादूनपावैआवो मतिमुजराकोमैंहींघरआऊँ होइमेरोनिस्तारहै॥ २२३॥

मारिडारिये॥ एतेसत्पुरुषाः परार्थघटकाः स्वार्थंपरित्यज्यये। सामा न्यास्तु परार्थमुद्यमभृतः स्वार्थाविरोधेन ये॥ तेऽमी मानुषराक्षसाः परहितं स्वार्थाय निघ्नन्तिये ये निघ्नंतिनिरर्थकं परहितं ते केन जानीमहे॥ २॥ कवित्त॥ तजि स्वारथ औ परमारथको चित्तदैकै सुधारत देवतजे।स्वारथहू परमारथहू चित्तदैके सँभारत मानुष ते। परमारथ को तजि स्वारथ चित्त-दैकै सुधारत राक्षस जे। स्वारथहू परमारथहू चित्तदैकै जे बिगारत जानो नते॥ ३॥ अरिल्ल॥ भई तला यागै।ठजुरेजाहि चक्कवे। परचोनीजै आ-जु खाइहै लष्यवे। परमेश्वर पतिराखी बात नहिं कहनकी। बिजुली ज्यों तरवारी चमकी भवनकी॥ ४॥

रूपचतुर्भुजकेपंडाकीटीका। दरशनआयोरानारूपचतुर्भुजजूकेर हेप्रभुपौढ़िहारशीशलपटायेहैं। वेगिदेउतारिकारिलैकेगरेडारिदियो देखिवारकहेउधौरौधौरेयेआये हैं। कहततोकहिगईसहीनहींजाति अब महीपतिडारिमारहरिपदध्यायेहैं। अहोऋषीकेशकरौमेरेलिये सेतकेशलेशहूनभक्तिकहीकियेदेखौछायेहैं॥ २२४॥ मानिराजा त्रासदुखराशिसिंधुबूड़ोहूतोसुनिकैमिठासवाणीमानोफेरिजियोहै॥ देखिश्वेतवारजानीकृपामोअपारकरी भरीआंखिनीरसेवालेशमैंनकि योहै। बड़ेईदयालुसदाभक्तप्रतिपालकरैमैंतोहौंअभक्तएयेहियोसकु चायो है। झूंठेसम्बंधहूतेनामलीजैमेरोहीजूतातेसुखसाजैयहदरशा इदियो है॥ २२५॥ आयोमोररानासेजवारसोनिहारिरहे केश काहूऔरकेलैपंडानेलगायेहैं। ऐंचिलियोएकतामेंखैंचिकैचढ़ाईना करुधिरकीधारानूपअंगछिरकायेहैं। गिरयोभूमिमुर्छाह्वैकैतनुकी न

सुधिकछूजाग्योयामबीतेअपराधकोटिगाये हैं । यहअबदंडराजबैठे सोनआवैइहांअबयोंहूंआनमानिकरै जे सिखाये हैं ॥ २२६ ॥

हरपदध्याइये ॥ कुंडलिया॥ खटिया टूटे भ्यो शरन भजा भगन भये ग्रीव । भुजा भगन भये ग्रीव दंड यमराज धरैगो । तहां धराहर और रामबिन कौन करैगो । मात तात सुत सुता प्रीय परिजन कहिचारो । सब सों पन्यो बिछोह सुदिन हरिनाम संभारो । अगर आसरो और तजि रामनाम दृढसींव । खटिया टटेभ्योशरन भुजा भगन भयो ग्रीव ॥ १ ॥ अहो ऋषिकेश ॥ गीतायां ॥ यंत्रस्य गुणदोषत्वं क्षमत्वं पुरुषोत्तम ॥ अहं यंत्र भवान् यंत्री नमे दोषो नमे गुणः ॥ २ ॥ झूंठे सम्बंध ॥दोहा॥ परसा झूंठे भक्तको, हरि राखत सनमान ॥ जैसे प्रोहित कुपढ़को, देतदान यजमान ॥ ३ ॥ खरौखरौ सब लेतहै, परखि पारखी सार ॥ खोटेदास अनन्यके, गाहक नंदकुमार ॥ ४ ॥ मन बुद्धि चित्त अहंकार सो इनके प्रेरक नंदकुमार ॥ ५ ॥

भयेचारिभाईकरैंचाकरीवेरानाजूकी तामेंएकभक्तिकरैवनमेंबसेरोहै । आइकैप्रसादखावैफेरिउठिजाइतहांकहैनेकुचलौतौमहीनालीजैतेरोहै । जाकेहमचाकरहैंरहतहजूरसदामरैतौजरावैकौनवहीजाकोचेरोहै । छूटेउतनवनरामआज्ञाहनुमानआये कियो दागधूवांलागिप्रेतपारनेरोहै ॥ २२७ ॥

एकभक्ति ॥ श्लोक ॥ तुल्यं भूभृति जन्म तुल्यमुभयोस्तुल्यं च मूल्यं वपुस्तुल्यं दार्ढ्यमुदग्रटंकखननं तुल्यं च पाषाणयोः ॥ एकस्याखिल वंदनाय विधिना देवत्वमारोपितम् ॥ तद्द्वारे विहिता परस्परपदाघातास्पदं देहली ॥ १ ॥ दोहा ॥ ज्ञाति गोत सब परिहारे, प्रभु सेवाकी आश रंक हरिहिको ह्वैरहै, सो कहिये निजदास ॥ २ ॥ जाके हम चाकर हैं ॥ सवैया ॥ जिनके चिरदै पतितैं अति पावनहै वचनै इमि छंदनिके ॥ सुबड़ेइ कृपालु बड़ेइ दयालु बड़े गुणदुःख निकंदनि के । कवि सूरतिजे रणागतश पालहैं दायक सुख आनंदनिके । कृपालुवड़े करुणाकरहैं हम

चाकरहैं रघुनंदनके ॥ २ ॥ नरनकी करै सेव बड़े अहमद भेव पाछे काम क्रोध लोभ मोह अधिकात है । तासों जीव हिंसा झूंठ निंदा आदि कर्म ह्वैहै ताहीके कुसंग नर दुःख दरशातहै । मेरेजान बीच सब दोषनि को चाकरीहै सोई ताहि भावै मद अंध उतपातहै । पूजा परमेश्वरकी परिहरै पुण्य पाप जैसे पौन परसेते पात उड़िजातहै ॥ ३ ॥ नेक मुजरा करिआव ॥ गीतायां ॥ मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु ॥ मामेवैष्यसि सत्यंते प्रतिजाने प्रियोसि मे ॥ ४ ॥

सवैया ॥ होहुनिचिंतकरैमतिचिंततू चोंचेंदईसोईचिंतकरैगो । पाइपसारिपरेउरहिसोइतूपेटदियोसोइपेटभरैगो । जीवजितेजलके थलकेपुनिपाहनमेंपहुँचाइधरैगो । भूखहिभूखपुकारतुहैनरतूकहां सुन्दरभूखमरैगो ॥ ३ ॥ कुण्डलिया ॥ यहतौगलोगुपालबनायो सोखालीक्योंरहिसी । सोखालीक्योंरहिसीसंतौगलोगुपालबनायो । पांचमहीनापीछेजनम्यो दूधअगाऊआयो । निरधनकेघरचाकीहोती अन्नकहूंनहिंदीसे । ताहूकोहरिविमुखनराखे आनिपरोसिनिपीसे । कृष्णायहबरजातबतायो धृकमनमाहींवैसी । यहतौगलोगुपालबनायो सोखालीक्योंरहिसी ॥ ४ ॥ ॥ पद ॥ नारदजीमेरोसाधुतेअन्तरनाहीं । जोमेरेसाधुतेअंतररावेतेउनरकमेंजाहीं । जहँजनजैहैतहँ मैंजैवोजहँसोवेतहँसोऊं । जोकबहूंमेरोभक्तदुखपावे कोटियतन करिखोऊं ॥

सवैया—पाइँदिये चलिये फिरिबेको हाथ दिये हरि कर्म कमायो ॥ कान दिये सुनिये हरिको यश नैन दिये हरि दरश दिखायो । नासिका दीनी हुतीरस सुंघन जीभदई हरिको यश गायो । ये सब साज दिये अतिसुंदर पेटदियो किधौं पाप लगायो ॥ पांडवगीतायाम् ॥ भोजने छादने चिंता वृथाकुर्वंति वैष्णवाः ॥ योसौ विश्वम्भरो देवः कथं भक्तानुपेक्षते ॥ १ ॥ हाथ हलाये विन तौ पंखाहू न पवन देहै हाथतौ हलायोई चाहि-

ये ॥ यत्न करि खाऊं ॥ लक्ष्मीमेरी अर्द्ध शरीरी हरिदासनकी दासी ॥ सब तीरथ दासनिके चरणन कोटि गंग अरु कासी । जहँ जहँ मेरो हरियश गावैं तैंहीं कियो मैं बासा । आगे साधु पाछे उठि धाऊं मोहिं भक्तकी आसा । मन वच क्रम करि हिरदै राखे सोइ परमपद पावै । कहत कबीर साधुकी महिमा हरि अपने मुख गावै ॥ ५ ॥ हरि अरु हरिजन एक समाना । खोजिलेहु सब वेद पुराना ॥ याते सबही संसार रूपी माया से छुटावै अरु हरिकी भक्तिको बढ़ावै हरिमार्ग लगावै ॥

मेरातौप्रथमवासजैमलनृपतिताकोसेवाअनुरागनेकुखटकौनभावई । करैंघरीदशतामेंकोऊजोखबरिदेतलेतनाहिंकानऔरठौरमरवावई । हुतोएकभाईवैरीभेदयहपाइलियोकियोआनिघेरोमाताजाइकेसुनावही । करैंहरिभलीप्रभुघोराअसवारभये मारीफौजसबैकहैलोगसचुपावही ॥ २२८ ॥ देखैंहाफेघोराअहोकौनअसवारभयोआगेजबैदेखौ कहीवहीवैरीपरचोहै । बोल्योसुखपाइअजूसांवरोसिपाईकोहो अकेलेहीफौजमारीमेरोमनहरचोहै । तोहीकोदिखाइदईमेरेतरफतनैन बैननिसोंजानीवहीश्यामप्रभूटरचोहै । पूछिकैपढ़ाइदियोवानेपनयहलियोकियोइनदुःखकरैभलीबुरोकियोहै ॥ २२९ ॥

खटको न भावई ॥ गीतायाम् ॥ चंचलं हि मनः कृष्ण प्रमाथि बलवद्दृढम् ॥ तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम् ॥ कवित्त ॥ छिन में प्रवीन छिन मायामें मलीन पुनि छिनमेंहीं दीन छिनमांहि जैसो शक्रहै । लिये दौरि धूप छिन छिनकमें अनंतरूप कोलाहलठाने मथानकैसों तक्रहै । नटकोसो थार किधौं हारहै रहटकोसो धाराकोसो भँवरकै कुम्हारकोसों चक्रहै । ऐसो मन भ्रामकसो अब कैसे थिरहोत आदिहीको चंचल अनादिहीको वक्रहै ॥ श्लोक ॥ यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्रपार्थो धनुर्द्धरः ॥ तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ॥ ३ ॥ पूछिकै पठाइ दियो कवित्त ॥ काहेको कपूर चूरि चंदनमें सानतहौ काहेको गुलाबनिको कीजत पतनु है।कहैं ऊधो राम राग औरे लग औरे ठठै दौरे कहाहोत यहां

जारत अतनुहै । वेई तरुणी बरुणी वेई सुई लालडोरे उनहींके टांके होत दुखको हतनुहै । छांडि देव पापनिको दूरिकै चवाइनिको आंखिनके घाइ- निको आंखेही यतनुहै ॥ ४ ॥

कवित्त ॥ भयोएकग्वाल साधुसेवासोरसालकरै परैजोईहाथलैकैसं तनखवावही । पायोपकवानवनमध्यगयोखवाइबेकोआइबेकोढीलचो रभैंसिसोचुरावही । जानिकैछिपाईबातमातासोंबनाइकही दईविप्रभू खेघृतसंगफिरिआवही । दिनहोदिवारीकोसो उनपहरायोहांस आ ईघरजामलियेरांभिकैसुनावहो ॥ २३० ॥ भागवतटीकाकरिश्री धरसुजानिलेहु गृहमेंरहतकरैंजगतब्योहारहै । चलेजातमगठगमि लकहेकौनसंगसंगरघुनाथमेरोजीवनअधारहै । जानिइनकोईनाहिं मारिबोउपावकरैं धरेचापबाणआवैवहीसुकुवारहै । आयेघरलायेपू छैश्यामसोंस्वरूपकहां जानिबेतौदारकियेआपडारचोभारहै२३१॥

मूल ॥ भक्तनसँगभगवाननितज्योंगऊवच्छगोहनफिरै ॥ निहिंकिच नइकदासतासकेहरिजनआये । विदितबटोहीरूपभये हरिआपलुटा ये । साखिदैनकोश्यामखुरइहांप्रभुहिपधारे । रामदासकेसदनराइरन छोरासिधारे । आयुधछाततनुअनुगके बलिबंधनअपुवपुधरे । भक्तनसंगभगवाननितज्योंगऊवच्छगोहनफिरे ॥ ९४ ॥

आईघर ॥ दोहा ॥ छल करि बलकरि बुद्धि करि, साधनके मुख देहिं ॥ हुंडीकेसे दामको, हरिजू सों गनिलेहिं ॥ १ ॥ धरे चाप बाण ॥ कोटि विघ्न शिरपररहै, कोटि दुष्टकोमाथ ॥ तुलसी कछू न करिसकैं जो सहाइ रघुनाथ ॥ २ ॥ गोहन फिरै ॥ ब्रह्मवैवर्त्ते ॥ भक्तसंगेभ्रम- त्येव छायेव सततं हरिः ॥ चक्रेण रक्षते भक्तान् भक्त्या भक्तजनप्रियः ॥ ३ ॥ कृष्ण कृष्णेति कृष्णेति संभयाति भवेन्नरः ॥ पश्चान्मद्गमनं पार्थ सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥ ४ ॥

टीका ॥ भक्तनकेसंगभगवानऐसेफिरचोकरैंजैसेवच्छसंगगाफिरैने वहतीगाईहै । हरिपालनामविप्रधाममेंजनमलियोकियोअनुरागसा

धुदईश्रीलुटाईहै । केतिकहजारलेबजारकेकरजआये गरजनसरै कियोचोरीकोउपाईहै । विमुखकोलेतहरिदासकोनदेतदुखआयेघर संततियागसंबतराईहै ॥ २३२ ॥ बैठकृष्णरुक्मिणीमहलतहांशोच घरचोहरचोमनसाधुसेवासाहरूपकियोहै । पूछिचलेकहाकहीभक्त हैहमारोएक मैंहूआऊंआवोआयेजहांपूछिलियोहै । अजूंमगचल्यो जातघड़ोउतपातमध्यकोऊपहुंचाइदेवोलैरुपइयादियोहै । करौस माधानसंतमैंलिवाइजाउइन्हैंजाइवनमांझदेखिबहुधनजियोहै॥२३३॥ देखिजोनिहारिमालातिलकनसदाचार होहिंगेभंडारघनजोपैइतोला यो है । लीजियेछिनाइयेहीबारकहेडारिदेवोदियोसबडारिछलाछि गुनमिंछायोहै । अंगुरीमरोरिकहीबड़ीतूकठोरअहो तोको कैसेछाड़ौ सतजैबैमोकोभायोहै । प्रकटदिखायोरूपसुन्दरअनूपवह मेरोभक्त भूपलैकैछातीसोंलगायोहै ॥ २३४ ॥

चोरी को उपाय ॥ श्लोक ॥ वैष्णवो बंधुसत्कृत्य ॥ विजयरथ कुटुंबबैठे कृष्ण रुक्मिणी महल ॥ वर्जयित्वा महाराज श्रीमद्भगवदाल- यम् ॥ १ ॥ हर्यो मनसाधु सेवा ॥ साधवो हृदयं मह्यं साधूनां हृदयं त्वहम् । मदन्यं ते न जानन्ति नाहन्तेभ्यो मनागपि ॥ २ ॥ कोउ पहुँचावै विमुख को लेत बनिया ह्वैकै चोरी करी वह वैष्णव निकस्यो पिछौरी लेकै भज्यौ द्वै रुपइया मेरे सारेको विवाहहै आजु पहुँचाना देखै जो निहारि जानीके सरावगी बनिया है ॥ ३ ॥

गौड़देशवासीउभयाविप्रताकीकथासुनो एकवैश्यवृद्धजातिवृद्ध छोटोसंगहै । औरऔरठौरफिरिआयेफिरिआयेवनतनभयोदुखीकी नीटहलअभंगहै । रीझिउबडोद्विजनिजसुतातोकोंदईअहोरहोनही चाहौंमेरेलईविनयरंगहै । साखीदैगुपालअबबातप्रतिपालकरो ठरोकुलग्रामभामपूंछौसोप्रसंगहै ॥ २३५ ॥ बोल्योछोटोविप्र क्षिप्रदीजियेकहीजोबाततियासुतकहैंअहोसुतायाकेयोगहै । द्विजक हैंनाहींकैसेकरौमैंतोदनकहीकहीकहाभूलिगयोबिथाको प्रयोगहै ।भई

सभाभारीपूंछेसाखीनरनारीश्रीगुपालबनवारीऔरकौनतुच्छलोगहै। लावोंजूलिवाइजोपैसाखीभरैआइतोपैन्याहिवेटोदीजैलोजैकरौसुख भोगहै ॥ २३६ ॥

फिरि आये वन ॥ पद ॥ ब्रजभूमि मोहनी मैं जानी। मोहन कुंज मोहन वृन्दावन मोहन यमुनापानी ॥ मोहननारि सकल गोकुलकी बोलत अमृतवानी। जैश्रीभटके प्रभुमोहन नागर मोहन राधारानी ॥ १ ॥ ब्रमू ॥ वृन्दावनरजो वन्दे यत्रासन्कोटिवैष्णवाः ॥ २ ॥ कवित्त ॥ कालिंदी के तीर द्रुमडार झुकिनीरआई त्रिविध समीर वहै वहै मतिमनकी। कुंजकुंजकुंजनमें बोलत मधुप माते आवत सरसगन्धमाधुरी सुमनकी। राधेकृष्ण नाम धुनि छाइरही जहां तहां कही न परत शोभा पुलिन अवनिकी ॥ देखि देखि रहे फूलि सुधिबुधि भूलिझूलि ठौर ठौर राखे वृन्दावन वृन्दावनकी॥ ३ ॥ वन्दौंश्रीवृन्दावन धाम। ब्रह्मादिक दुर्लभ तिनहींको देत तुच्छ जीवन विश्राम। उद्धवसे हरि प्रीतम चाहत गुल्मजन्म लाग्यो अभिराम। बलिबलिजाइ कृपानिधि मोको लाड़लड़ावत आठोंयाम। यही रीति रानी श्रीराधा नहीं विचार रूप गुणधाम। पाइनिलाल भालबेंदी दई भोडरपिय लगिरीझतश्याम ॥ १ ॥ ॥ श्लोक ॥ वाराणस्यां विशालाक्षि विमला पुरुषोत्तमे ॥ रुक्मिणी द्वारकायां तु राधा वृंदावने वने ॥ २ ॥ छप्पय ॥ सघनकुंज अलिगुंज पवन तहँ त्रिविध सुहाई। रतन जटित अवनी अनूप यमुना बहि आई ॥ छऋतुकोक संगीत रागरागिनि सखिरतिपति। सब सुखराज समाज सहज सेवत अतिनितप्रति ॥ शृंगारहास्यरसप्रेम हैं काल कर्म गुन कछु न डर। दंपति विहार गोविंद सरस जैजै वृंदाविपिनवर ॥ ३ ॥ कवित्त ॥ ब्रह्माके कमंडलुते गिरिजा प्रचंडनते शिवजटा मंडनते धारायों बहतिहै। तीनों लोक पावनको आपदा नशावनको जाके गुणगावनको वाणी यों चहतिहै। कहै कविराइ सुर असुरहु पूजैं जाहि सुरधुनी कहे दुख पापनरहतहै। यमुनाजीकी महिमा याते न कही परै गंगापगपानी ताकी

पटरानी कहत है ॥ ४ ॥ सवैया ॥ रसिबो बसिबो वृन्दावन को हँसिबो मिलि संतनमें रहिये । पढ़िबो गुनिबो नित राम सदा सुख सों लहि जो जितनो चहिये । योगी सुयती हियध्यान धरैं जगजीवनि भाग बड़ो च-हिये । भ्रमणा मिटिजाइ सबै जियकी यमुना यमुना यमुना कहिये ॥ ॥ २ ॥ यमुना सुभगतीर कुंजसुख पुंजभीर मोर पिक कीर धुनि भांति भांति हेरीहै । फूलीद्रुम डारैं गुंजमधुप विहारैं प्यारी प्रीतम निहारैं आँखैं चहुंदिशि हेरी है ॥ पुलिन प्रकाश रास विविध विलास जहां बढत हुलासबात बीते होति मेरी है । कैसो यहधाम अभिराम वृन्दा-वन नाम ऐसी छवि हेरीपरी रोमरोम बेरी है ॥ ६ ॥ दोहा ॥ उपमा वृन्दा विपिनकी, कहिधौं दीजै काहि ॥ कोटिकोटि वैकुंठहू, तिहि सम कहे न जाहि ॥ ७ ॥

आयोवृन्दावनबनवासीश्रीगुपालजूसों बोल्योचलौसाखीदेवलइहै लिखाइकै। बीतेकैऊयामश्यामसुंदरजूप्रीतिमानचलैतौपैबोल्योक्यों जुभाइकै । लागेजबसंगयुगसेरभोगधरेउरंगआधेआधपावेचलेउनूपु रबजाइकै । धुनितेरेकानपरैपाछेजानिडीठिकरै करैरहोंवाहीठौरक हीमैंसुनायकै । गयेढिगग्रामकही नेकुतौचिंताउरहैचितयेतेठाढ़ेदि योमृदुमुसुकाइकै । लावौजाबुलाइकहीआइदेखौआयेआयसुनतही चौंकिसबग्रामआयोधाइकै । बोलिकैसुनाईसाखिपूजीहिये अभिला ष लाषलाषभांतिरंगभरेउरभाइकै । आयोनसरूपफेरिविनयकरि राख्योघेरिभूपसुखढेरदियेअबलौंबजाइकै ॥ २३७ ॥

सखढेरदियो ॥ कवित्त ॥ लागी जब आश तब उतऱ्यो अकाश हूंते सिंधुजलयंत्र रसचीन्हो पानकीन्होहै । देख्यो हितसार वाको उदर विदारि कढ्यो चढ्यो मोलभारी वाससंपुटनिलीनोहै । चाहत किशोर भऱ्यो दशदिशिओर लग्यो ब्रजचितचोर जियवारि फेरिदीनोहै । उरके सुलाक मोती नासिका बुलाकभयो बड़ोई चलाक मोहिं लाकमन कीनोहै ॥ १ ॥ वदन सुराही में छवीलो कविछातौमद अधर पियाला

क्षणक्षणमें गहतुहै । अलसाइके पोटत कपोल पर्य्यंकपर कबहूं गजक जानि भषन चहतुहै । प्रेमनगसाथी ये तौ सदाई अशंकभरि छकोई रहत कोऊ कछु न कहतुहै । झुकि परै बातके कहेते अनखात न्यारो बेसरिको मोती मतवारोई रहतुहै ॥ २ ॥ दृष्टांत सिद्धको चौवेने तमाचोदियो ॥ ३ ॥

रामदासकीटीका ॥ द्वारकाकेढिगहीडांकोरएकगांवरहैरहैराम दासभक्तभक्तिजाकोप्यारिये । जागरणएकादशीकरैरणछोरजूके भयो तनुवृद्धआज्ञादईनहींधारिये । बोलेभरमाइतेरोआइबोसह्योन जाइ चलोघरधाइ तेरेलावौगाड़ीभारिये । खिरकीजुमंदिरकेपाछेत हांठाढ़ीकरौभरोअकवारमोकोवेगिहीपधारिये ॥ २३८ ॥ करीवा हीभाँतिआयोजागरणगाड़ीचढ़ि जानीसबवृद्धभयोथकीपांवगतिहै । द्वादशीकोआधीरातलैकैचलेउमोदगात भूषणउतारिधरेजाके सांची रतिहै । मंदिरउघारिदेपरिखेहैउजारितहांदौरेपाछेजानिदेखिकहीको नमतिहै। वायीपधराइहांकिज्ञानिसुखपाइरहौगहौचलौजाति आनि मारेउघावभ्रतिहै ॥ २३९ ॥ देखेचहुँदिशिगाड़ीकहूंपैनपायेहारिप छितावौकरिकहैभक्तिकेलगाईहै । बोलिउठउएकयहओरयहगयोह तोदेखेजाइबावरीकोलोहूलपटाईहै । दासकोजुडारीचोटओटिलई अंगमेंहीनहींमेतौजाहुविजयमूरतिबताई है । मेरीसरसोनौलेहुकही जनतोलिदेहु मेरेकहाबोलेउबारीतियाकेजताई है ॥ २४० ॥ लगे जबतोलिबेकोबारीपाछेडारिदईनईगतिभईपलाउठेनहींबारीको । तबतौखिसानेभयेसबैउठिघरगयेकैसेसुखपावैंफिरौमतिहीमुरारीको । घरहिविराजैंआपकेहउभक्तिकोप्रतापजाइकरैजोपैफुरैरूपलालप्यारी को । बलबंधनाम्नप्रभुबांधेबलिभयोतब आयुधकोक्षतसुनिआयेचो टमारीको ॥ २४१ ॥

द्वारकासे दोसौ कोश काहू मंडलमें डांकोर गांव है खिरकीकी गेलब-ताई जैसे रुक्मिणी श्रीकृष्णने हरीही भगवान् अपने गुण अपने भक्त-नको सिखावैं सांचीरति तापै दृष्टांत एकडोकरी ठाकुरकी सेवा महंतको

दोतिही सो उनकही दर्शन करि लेहिंगे अंगमेंही ओटिलई तुम अपराधी भक्तमारेउ मरेंगे महाप्रलय करौ हत्यानहीं मेरी सर सोनों अब अपनो नहीं बंलबंधन नाम इहां थावंप्रति छवौना ह्वै रहे यात्राकारको नमतिहै महवूबा देश हर विचिकोईआनि तमासा जो वेदीनक ॥

मूल ॥ बच्छहरणपीछेविदितसुनोंसंतअचरजभयो । जसूस्वामिकेवृषभचोरिब्रजवासीलाये । तैसेइदियेश्यामवरषदिनखेतजुताये। नाभाज्योंनन्ददासमुईइकबच्छजिवाई । अम्बअल्हकौनयेप्रसिद्धजगगाथागाई । बारमुखीकेमुकुटकोश्रीरंगनाथकोशिरनयो । बच्छहरणपीछेविदितसुनोंसंतअचरजभयो ॥ ५१ ॥ जसूस्वामीकीटीका॥ जसूनामस्वामीगंगायमुनाकेमध्यरहैंसाधुसेवाताकोखेतीउपजावहीं। चोरीगयेबैलताकीइनकोनसुधिकछूतैसेश्यामहलजुतेबैलमनभावहीं। आयेब्रजवासीपैठवृषभनिहारिकहीइहैंकौनलायोघरजाइदेखिआवहीं ऐसेबारदोइचारिफिरेउनठीकहोत पूँछीपुनिल्यायेआयेइन्हें पैनपावहीं ॥ २४२ ॥ बड़ोईप्रभावदेख्योतैसेप्रभुबैलादिये भयोहियेभावआइपाइनमेंपरेहैं । निपटअधीनदीनभाषिअभिलाषजानिदयाकेनिधानस्वामीशिष्यलैकेकरे हैं। चोरीत्यागिदईअतिसुधिबुधिभई नईरीतिगहिलईसाधुपंथअनुसरे हैं । अन्नपहुँचावैदूधदहीदैलड़ावैआवैसंतगुणगावैवेअनंतसुखभरे हैं ॥ २४३ ॥

साधुसेवैरागी हैं हरीको सांचो सनेहतो तबहीं जानिये जब हरिके प्यारेन में सनेह होइ ॥ १ ॥ संतसेवाहरि प्रसन्न मजनूको तो सलाम करी लैलैकी गली में देखो करै द्विज दोष साधुसेवा के प्रतापसों बडो वैभव भयो ताहि देखिकै ॥ २ ॥ श्लोक ॥ काककुक्कुटकायस्थाः स्वजातिपरिपोषकाः ॥ स्वजातिपरिहंतारः श्वानासिंहगजाद्विजाः ॥ ३ ॥ तापैदृष्टांत राजा मरुतका अरु उतथ्यको ॥

नन्ददासकीटीका ॥ निकटबरेलीगांवतामेंसोहबेलीरहैनन्ददास विप्रभक्तसाधुसेवारागीहै । करैद्विजदोषतासोमुईएकबछियाले डारि

दईखेतमांझगारीजकलागीहै । हत्याकोप्रसंगकरैसंतजनहूंसोंलैरैहि न्दूसोंनमारैंयहबड़ोईअभागीहै । खेतपरजायवाहिलईहैजिवाइदेखि परेदोषीपांइभक्तिभावमतिपागीहै ॥ २४४ ॥ अल्हकीटीका ॥ चले जातअल्हमगलगेबागदीठिपरचो करिअनुरागहरिसेवाविस्तारिये । पकिरहेआंबमाँगैमालीपासभोगलियेकहोलोजैकहीझुकिआईसबडा रिये। चल्योदौरिराजाजहांजाइकेसुनाईबातगातभईप्रीतिअलुटतपां वधारिये । आवतहीलौटिगयोमैंतोजूसनाथभयो दयोलैप्रसादभक्ति भावईसँभारिये ॥ २४५ ॥ बारमुखीकोटीका ॥ वेश्याकोप्रसंगसु नोअतिरसरंगभरचो भरचोघरधनअहोऐयेकौनकामको । चलेमग याचनकोठौरस्वच्छआईमन छाईभूमिआसनसोंलोभनहींदामको । निकसीझमकिद्वारहंससेनिहारिसबकौनभागजागेभेदनहींमेरेनामको मोहरनिपात्रभरिलैमहंतआगेधरचो ढरचोजलनैनकहीभोगकरो श्यामको ॥ २४६ ॥ पूँछीतुमकौनकाकेभौनमेंजनमलियोकियोसु निमौनमहाचिंताजियधरीहै । खोलिकैनिशंककहोशंकाजिनिआनो मन कहीबारमुखीऐयेपाइआइपरीहै । भरचोहैभंडारधनकरोअंगी कारअजू करिये बिचारजोपैतोपेयहैएकहै । ऐसोहै उपाइहाथरंगना थजूकेअहोकीजियेमुकुटजामजातिमतिहरी है ॥ २४७ ॥

कौनकामको ॥ धर्मशास्त्रे ॥ दशश्वानसमश्चक्री दशचक्रिसमोध्व-जः ॥ दशध्वजसमा वेश्या दशवेश्यासमो नृपः ॥ १ ॥ काकझुण्ड पैनबैठे हंस सतद्रव्य ऐसे कोन भाग ॥ नारदपंचरात्रे ॥ यास्यावमस्थानां हुं गवामभयाय यत्तत् ॥ सर्वं भवतिगांगेय को न सेवेतबुद्धिमान् ॥ २ ॥ छप्पय ॥ ज्ञानवंत हठकरैं निबल परिवार बढावैं । विधवाकरैं शृंगार धनी सेवाको धावैं ॥ निर्धन समझैं धर्म नारि भरता नहिं मानैं ॥ पंडित किरिया हीन राज दुर्लभ करिजानैं ॥ कुलवंत पुरुष कुलविधि तजैं बंधु न मानत बंधु हित । संन्यास धारि धन संग्रहैं सुये जगमें मूरख विदित ॥ ॥ ३ ॥ भेदनहीं नामको ॥ श्लोक ॥ नह्यंमयानि तीर्थानि न देवा

मृच्छिलामयाः ॥ जोपैवहमरीहै ॥ दोहा ॥ सब सुखपावै जासुते, सो हरिजूको दास । दुख पावै कोउ जासु ते, सो न दासरे दास ॥ रंगनाथ को मुकुट ॥ तेजीयसां न दोषाय वह्नेस्सर्वभुजो यथा ॥ ४ ॥

विप्रहूनछुवैजाकोरंगनाथकैसेलेतदेतहमहाथतोकोरहैइहांकोजिये । कियोईबनाईसबघरकोलगाईधनबनिठनिचलीथारमध्यधरिदीजिये । सन्तआज्ञापाइकेनिशंकगईमन्दिरमेंफिरीयोंसशंकधृगतियाधर्मभीजिये । बोलेंआइयाकोलाइआइपहराइजाइ दियोपहराइनयोशीशमतिभाजिये ॥ २४८ ॥ मूल ॥ औरयुगनतेकमलनयनकलियुगबहुतकृपाकरी । बीचदियेरघुनाथभक्तसंगठगियालागे । निर्जनवनमेंजाइदुष्टक्रमकियेअभागे ॥ बीचदियेसोकहांरामकहिनारिपुकारी । आयेशारँगपाणिशोकसागरतेतारी । दुष्टकियेनिर्जीवसबदासप्राणसंज्ञाधरी । औरयुगनतेकमलनयनकलियुगबहुतकृपाकरी ॥ ॥६६॥टीका॥विप्रहरिभक्तकरिगौनोचल्योतियासंग जाकेदूनोरंगजाकीबातलैजनाइये । मगठगमिलेद्विजपूछेअहोकहांजातजहांतुमजातयामेंमननपत्याइये । पंथकोछुटायोचाहैवनमोंलिवाइजाइकहैअतिसूधोपैड़ोउरमेंनआइये । बोलेबीचरामतऊहियेनेकुधकधकी कहीउहीभामइयामंनामकहींपाइये ॥ २४९ ॥

विप्रहू न छुवै राजाने ऋषिन्योंते सो छोड़ि गये वनमें कुत्ता को खायो यों सबको खवायो लिंग गाजर, सोया बार, अंडकोश प्याज, नख लहसन, हाड मूरी, मूड तरबूज, सो ऐसो मेरो धान्य निषिद्धहै ॥ १ ॥ नेकुधकधकी कुंड़लिया ॥ बैरी बंधुवा बानियां, ज्वारी चोर लबार । व्यभिचारी रोगी ऋणी, नगर नारिको यार । नगर नारिको यार, भूलि परतीति न कीजै । सो सौसौ खाइ चित्तमें एक न लीजै । कह गिरिधर कबिराइ न्याइमें भायो ऐसे । मुखसों हितकी कहै पेटमें बैरी जैसे ॥ २ ॥ कमल नयन बहुत सूझै तीनयुग आयुर्दाबुद्धि बल धन रोग नहीं कर्म करसोइबनैं कलियुगमें कछू न बनै नाम बतायो कृपाकरि ॥ ३ ॥

चलेलागिसंगअबरंगकोकुरंगकरचो तियापररीझेभक्तिसांचीइन जानीहै । गयेवनमध्यठगलोभलगिमारचोविप्राक्षिप्रलैचलेवधूअति विलखानीहै । देखैफिरिफिरिपाछेकहैकहादेखोमारचो तबताउचा रचोदेखोवाही विचप्रानीहै । आयेरामप्यारेसबदुष्टमारिडारेसाधुप्रा णदैउबारेहितरीतियोंबखानीहै ॥ २५० ॥ मूल ॥ एकभूपभागवत कीकथासुनतहरिकोइरति । तिलकदामधरिकोइताहिगुरुगोविंदजा ने । षटदरशनीअभावसर्वथाघटकरिमाने । भांड़भक्तकोभेषहासहि तभंडकुललाये । नरपतिकेदृढ़नेमताहिपैपाइँधुवाये । भाँडभेषगा ढ़ोकह्योदरशपरशउपजीभगति । एकभूपभागवतकीकथासुनतहरि होइरति ॥ ५६ ॥

चलेलागि संग ॥ कवित्त ॥ विप्रसोई पढचो चारोंवेदहूको भेद जाने स्मृति षट शास्त्रमति न्याइ सबरढचो है । सोई पढचो भारत पुराण पढचो पिंगलसो सबै कोश पढचो सोतौ काव्यकोषकढचो है । पढचो आगम सो अगम विचार वित्त सोई पढचो ज्योतिषसो ज्योतिषपढचोरस मढचो है।सोई पढचो व्याकरण जानिलिये शब्द वर्ण सोई सब पढचो जोई रामनाम रढचो है ॥ १ ॥ दोहा॥जो है जाके आसरे, ताहीको शिरभार। करुई हरुई तोमरी, खेइलगावै पार ॥ २ ॥ सवैया ॥ कामसें रूप प्रताप दिनेशसे सोमसे शील गणेश समाने । हरिचंदसे सांचे बडेविधिसे मघवासे महीप विषै सुख साने। शुकसे मुनि शारद से वकता चिरजीवन लोमशसे अधिका- ने । ऐसे भये तौ कहा तुलसी जोपै राजिवलोचन रामनजाने ॥ ३ ॥ तिलक दामधरि चारि आश्रम हरिके अंगते संत शरीर । वैष्णवोममदे हस्तु तुलसीकाष्ठधारकः ॥ पूजनीयोमहीपाल वैष्णवो भक्तिवर्जितः ॥ षट्दर्श नीषट्शास्त्रवक्ता दासनहीं संतदास कहावै धनहरिको जैसे गुमास्ता दश रुपया महीना पावै ऐसे ॥ ४ ॥

टीका ॥ राजाभक्तराजडोमभांडकोनकाजहोइभोइगईयाकेधन हरिकोनदीजिये । आयेभेषधारीलैपुजाइनाचेदेकैनालनृपतिनिहा

रिकहीयोंनिहालकीजिये । भोजनकराइभरिमोहरनिथारलायेआगे धरिविनयकरीअजूयहलीजिये । भईभक्तिराशिबोलेआवैबासभावै नाहिंबांहगहेरहेकैसेचलेमतिभीजिये ॥ २५१ ॥ मूल ॥ अंतरनिष्ठ नरपालइकपरमधरमनाहिंनधुजी । हरिसुमिरनहरिध्यानआनिका हूनजनावै । अलगनइहिविधिरहैअंगनामरमनखावै । निद्रावशसो भूपवदनतेनामउचारचो । रानीपतिपररीझिबहुतबसुतापरवारचो । ऋषिराजशोचिकह्योनारिसोंआजभक्तिमेरीकुजी । अंतरनिष्ठनरपा लइकपरमधरमनाहिंनधुजी ॥ ५७ ॥

राजाभक्तराज ॥ आर्या ॥ दृढतरनिबद्धमुष्टेः कोशनिषण्णस्य सहज- मलिनस्य॥कृपणस्य कृपाणस्य च केवलमाकारतो भेदः ॥ १ ॥ भई भक्तराशी ॥ कवित्त ॥ जलके सनेही मीन बिछुरत तजैप्राण मणि विन अहि जैसे जीवत न लहिये । स्वाति बूंदके सनेही प्रगट जगतमांझ एकसीपि दूजैपुनि नातकहूं कहिये । रविके सनेही बसैं कमल सरोवरमें शशिके सनेही या चकोर जैसे रहिये । तैसेही सुखद एकप्रभुसों सनेह जोरि और कछुदे- खिकाहू और नहिं बहिये ॥ १ ॥ राजाने तब बांह गहो ॥ सवैया ॥ तजे पितु मात तिया सुत भ्रात किये जगमात पितातबऔरै । नंदकुमार भजे नहीं मूढ भजे सोइरूप ठहरात न ठौरै । लेत न सीख सिखावत औरै सुदौरत भोग दिशाकर कोरै । भाँडभयो विषयी न भयो सुकछ्यो कछू और नच्यो कछू औरै ॥ २ ॥

टीकाअंतरनिष्ठराजाकी ॥ तियाहरिभक्तकहैपतिपैनभक्तपायो रहैमुरझायोमनशोचबढ्योभारीहै । मरमनजान्योनिशिसोवतपि छान्योभाव विरहप्रभावनामनिकस्योविहारीहै । सुनतहीरानीप्रे मसागरसमानीभोरसंपतिलुटाईमानोनृपतिजियारीहै । देखिउत्सा हभूपपूछोसुनिवाहिकह्योरह्योतनठौरनावजीवयोंविचारी है ॥२५२॥ देखितनुत्यागिपतिभईऔरगतियाकी ऐसीरातिवानमैंनभेदकछूपा योहै । भयोदुखभारीसुधिबुधिसबटारी तब नेकनविचारीभावरा

शिहियेछायोहै । निशिदिनध्यानविरहप्रबलतजेप्राणभक्तरसखान रूपकापैजातगायोहै । जाकेयहहोइसोइजानेरसभोइयामें डारैमति खोइसबप्रकटदिखायोहै ॥ २५३ ॥

नाम निकस्यो बिहारीहै ॥ कवित्त ॥ कुटिल अकूरकूर वैरी काहूजनमकोहै चेटकसोडारिहै शिरलैकै ब्रज धूरिगो । व्याकुल बिहालबाल बंशीधरलाल बिन मीनज्यों तरफितनु प्रेमरस झूरिगो । चरण उचाइ चितवत ऊंचेधाम चढि चिंताके चकित भई चैनसब चूरिगो । बारबारकहत बिसूरजलेनैनपूरि धूरि न उडाति आली अबरथदूरिगो ॥ १ ॥ भ्रमैं भौंर ठौर ठौर केतकी कुमुद और तनक जो लाज करै पंकजके संगकी । चंचल चलाक चित चोकरीकी भूलमति घायलज्यों घूम्योकरै लगनि कुरंगकी । और नहींस्वाद है विवाद काहू बातनिको मनमें न मनसाहै औरके प्रसगको । जग मे सराहिये सनेहकी नवलरीति बिछुरनि मीनकी औ मिलनि पतंगकी ॥ २ ॥

मूल ॥ गुरुगदितबचनशिष्यसत्यअतिदृढ़प्रतीतिगाढ़ोगह्यो । अनुचरआज्ञामांगिकह्याकारजकोजैहौं । आबारजइबाततोहिंआयतेकैहौं । स्वामीरह्योसमाइदासदरशनकोआयो । गुरुकीगिराविश्वासफेरिसबघरमेंलायो । शिष्यपनसांचोकरनकोविभुसबसुनतसोईकह्यो । गुरुगदितवचनशिष्यसत्यअतिदृढ़ प्रतीतिगाढ़ोगह्यो ॥ ॥ ९८ ॥ टीकागुरुनिष्ठकी ॥ बड़ोगुरुनिष्ठकछूघटीसाधुइष्टमाने स्वामीसंतपूजोमानेकैसेसमुझाइये । नितहीविचारैपुनिटारैयेउचारै नाहिं चल्योजबरामतिकोकहिफिरिआइये । शपथदिवाइनजराइबेकोदियोतनलायोयोंफिराइवहैबातजूजताइये । सांचोभावजानि प्राणआइसोबखानकियोकरैभक्तसेवाकरीवर्षलौंदिखाइये ॥ २५४ ॥

दृढ़ प्रतीति करि मानों गुरुके वचन को पर यामें गुरुको शिष्यको भलो होइ ऐसी दृढ़ प्रतीति न करै तापै घोराको दृष्टांत । बडोगुरुनिष्ठ नारद वाक्यम् ॥ यस्य साक्षाद्भगवति ज्ञानदीपप्रदे गुरौ । मर्त्यबुद्धिः

श्रुतं तस्य सर्वं कुंजरशौचवत् ॥ १ ॥ आचार्यमाविजानीयात् । करी भक्तसेवा नाभाजू कहीहै ॥ भक्त भक्ति भगवंत गुरु, गही न भक्ता-मनहीं ॥ आदिपुराणे ॥ अस्माकं गुरवौ भक्ता वो भक्तानां गुरु वंयमू । अस्माकं बांधवा भक्ता भक्तानां बांधवा वयमू । वैष्णवके अप-राधों को गुरु अरु हरि न बचावै ॥ २ ॥ दोउनके अपराधों को साधु बचावै जैसे दुर्वासाको महादेव गुरु ब्रह्मा दादा गुरु हरि परम गुरु न बचाय सके अंबरीषने बचायो साधुही सब अपराध सों बचावैं और की साम र्थ्य नहीं सो छोडावै याते साधु त्रैलोक्य में बड़े हैं ॥ २ ॥

मूल ॥ संदेहग्रंथखंडननिपुणवाणीविमलरैदासकी । सदाचारश्रुतिशास्त्रवचनअविरुद्धउचारचो । नीरक्षीरविवरनपरमहंसनउरधारयो । भगवतकृपाप्रसादपरमगतिइहितनुपाई । राजसिंहासनबैठिज्ञातिपरतीतिदिखाई । वर्णाश्रमअभिमानतजि पदरजवंदहिजासकी । संदेहग्रंथखंडननिपुणवाणीविमलरैदासकी ॥ ५६ ॥ टीकारैदासजूकी॥रामानंदजूकोशिष्यब्रह्मचारीरहे एकगहैब्रह्मचुटकीकोतासोंकहैबानिये । करौअंगीकारसीधोकहोदशबीसबारवरषैप्रबलधारातामेंवापैआनिये । भोगकोलगावैप्रभूध्याननाहिंआवैअरेकैसेकारिलावैजाइपूछीनीचमानिये । दियोशापभारीबातसुनीनहमारीघटिकुलमेंउतारीदेहसोंईयाकोजानिये ॥ २५५ ॥

वाणी विमलरैदासकी केवल भक्तही गाई ॥ पद ॥ धन्यहरिभक्ति त्रयलोक यश पावनी । करौ सतसंग इहि विमल यश गावनी । वेद पुराण पुराण ते भागवत भागवत ते भक्ति प्रकट कीनी । भक्तिते प्रेमते लक्षणा विना सतसंग नहिं जाति चीनी । गंगा पापहरैं शशिताप अरु कल्पतरु दीनता दूरि खोवैं । पाप अरु ताप सब तुच्छ मति दूरि करि अमी की दृष्टि जब संत जोवैं । विष्णुभक्त जिते चित्त पर्धरतिते मन वच करम करि विश्वासा । संत धरणी धरी कीर्ति जग विस्तरी प्रणत जन चरण रैदास दासा ॥ १ ॥ नीरक्षीर ॥ गीतायाम् ॥ निर्मान-

मोहा जितसंगदोषा अध्यात्मनित्या विनिवृत्तकामाः ॥ द्वंद्वैर्विमुक्ताः सुख-दुःखसंज्ञैर्गच्छंत्यमूढाः पदमव्ययं तत् ॥ २ ॥ राजसिंहासन पै कहूं चमा-रहू बैठे हैं तब कही गुरुकी संतन की कृपाते बैठि जातहैं कामनहीं स्वरूप मुख्य है ॥ ३ ॥

भातदूधखावैंयाकोछुयोहूनभावसुधिआवैसबपलीलीसोसेवाको प्रतापहै । भईनभवाणीरामानंदमनजानीबडोदंडदियोमानिवेगि आयोचल्योआपहै । दुखीपितुमातुदेखिधाइलपटायेपांइ कीजिये उपाइकियेशिष्यगयोपापहै । स्तनपानकियोजियोलियोउन्हैंईशजा ननिपटअजामफेरिभूलेपायोतापहै ॥ २९६॥ बड़ेईरैदासहरिदासनि सोंप्रीतिबड़ीपितानसुहाइदईठौरापिछवारही । हुतौधनमालकनादि योहूनिहालतियापतिसुखजालअहोकियेजबन्यारही । गाढ़ेपगदासी काहूयतनप्रकाशीलावै खालकरैजूतीसाधुसंतकोसँभारही । डारि एकछानिकियोसेवाकोस्थानरहैंचौंड़ौंअपजानिबांटिपावैयहैबारही ॥ पितानसुहाई ॥ कवित्त ॥ पैसेविन बापकहै पूततौ कपूत भयो पैसे विन भाईकहै जीको दुखदाई है । पैसे विन यारकहै मेरो यह यार नाहीं पैसे विन ससुरकहै कौनको जमाई है । पैसे विन बंदेकी प्रतीति नहीं पंचनमें पैसे विन आइघर रोइ रोटीखाई है । कहैं अलमस्तसजे बजेसहौ आठौ याम आजुके जमाने में तो पैसेकी बड़ाई है ॥ १ ॥ धर्म कर्म प्रीति रीति सजन सुहृदताई सकल भलाइनिको पुंजसो विलाइगो । अंतर मलीन ह्वैके कलह प्रवेश भयो नरनकलेश निशि दिन सरसाइगो । नहीं रागरंग नहीं चरचा चतुरता की नहीं सुखसेज घनआनँद नशाइगो । देखिकै निराश जिय लहत न हुलासमन देखतही देखतही ऐसोसमो आइगो ॥ २ ॥ बडेईरैदास ॥ दोहा ॥ नंदनँदनकी भक्तिबिन, बड़ो कहावै सोइ ॥ जैसे दीपक बुझनको, बड़ोकहै सबकोइ ॥ ३ ॥

सहैअतिकष्टअंगहियेसुखशीलरंगआयेहरिप्यारेलियोभक्तिभेष धारिकै । कियोबहुमानखानपानसोंप्रसन्नह्वैकेदीनोकह्योपारसहैराखि

योसँभारिकै । मेरेधनरामकछूपाथरनसरैकामदाममेंचाहौचाहौडारौ तनुवारिकै । राईएकसोनौकियोदियोकरिकृपाराखोराख्योवह छानि माँझलेहुगोनिकारिकै ॥ २५९ ॥ आयेफिरिश्यामसासतेरहव्यती तभयेप्रीतिकरिबोलेकहौपारसोकिरीतिको । वाहीठौरलीजैमेरोम ननपतीजैअब चाहौसोईकीजैमैंतौपावतहौंभीतिको । लैकैउठिग येनयेकौतुकसो सुनोपावैसेवतमुहरपांचनितहीप्रतीतिको । सेवाहू करतडरलाग्योनिशिकहेउहरि छाँड़ौभरआपनीऔराखोमेरीजीति को ॥ २६० ॥

याते हरि भक्तिही बडीहै किये शिष्य ॥ श्लोक ॥ अंत्यजाअपि तद्राष्ट्रे शंखचक्रांकधारिणः ॥ सुधिआवै राजा इंद्रद्युम्नअगस्तस्नापगज मयेकियोबहुमान ॥ पद ॥ आजुके दिवसकी जाहुँ बलिहार । मेरेगृह आया राजारामजीका प्यार । करों दंडवत चरण पखारों । तन मन धन संतनि परवारों । आंगन भवन भयो अतिपावन । हरिजन बैठे हरियश गावन । कहैं कथा अरु अर्थ विचारें । आप तरैं औरनिको तारैं । कहै रैदास मिले हरिदासा । जनम जनम की पूजी आसा ॥ १ ॥ पाथर न सरै काम पारसतौ सोई जो पार उतारै सोतौ एक रामनाम है ॥ २ ॥ डरलाग्यो ॥ श्लोक ॥ स्तेयं हिंसानृतं दंभः कामः क्रोधः स्मयो मदः । मदोवै रमविश्वासः संस्पर्द्धा व्यसनानिच । एतेपंचदशानर्थाह्यर्थमूलामता नृणाम् । तस्मादनर्थमर्थाख्यं श्रेयोर्थी दूरतस्त्यजेत् ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ कैमाया कैहरिगुण गाई । दोनों सेती दीनों जाई ॥६॥ श्लोक ॥ विषयाविष्टचित्तानां विष्णवावेशः सुदूरतः । वारुणीदिग्गतं वस्तु व्रजन्नैंद्रींकिमाप्नुयात् ॥ ७ ॥

मानिलईबातनईठौरलैबनाइचाइसंतनिबसाइहरिमंदिरचिनायोहै विविधवितानतानगनौजोप्रमानहोईभोईभक्तिगईपुरीजगयशछायोहै दरशनआवैलोगनानाविधिरागभोगरोगभयोविप्रनकेतनसबछायोहै। बड़ेईखिलारीवेरहेहीछानिडारिकरी घरपैअटारीफेरिद्विजनसिखायो है ॥ २६१ ॥ प्रीतिरसराशिसोरैदासहरिसेवतहै घरमेंदुराइलोकरंज

नादिटारीहै । प्रेरिदियेह्रदयजाइद्विजनपुकारकरीभरीसभानृपआगे कहेउमुखगारीहै । जनकोबुलाइसमुझाइन्याइप्रभुसौंपिकीनो जगय शसाधुलीलामनुहारी है । जितेप्रतिकूलमैंतौमानेअनुकूलयातेसंत नप्रभावमनिकोटरीकीतारी है॥ २६२ ॥

लोक रंजनादि टारिये॥ ४ ॥ सवैया ॥ हमसों मनमोहनसों हितहै चुगली करि कोऊ कहा करि है। अबतो बजिकै बदनामी भई गुरु लोगनिके जु कहा डरि है। कबि धीर कहै अटकी छबिसों ब्रजमें भटकी बिसऱ्यो घरहै। तुमको यह बातसों कामकहा अपने कोउ जान कुँवा परिहै॥ १ ॥ मुखगारीहै ॥ पुष्करमाहात्म्य॥ अपूज्या यत्र पूज्यंते पूज्यपूजाव्यतिक्रमः ॥ तत्र तत्र प्रवर्त्तन्ते दुर्भिक्षं मरणं भयम्॥ २ ॥ न्याई प्रभुसोंपि ॥ कवित्त॥ सदा कृपानिधान हौ कहा कहौं सुजानहो अमान हान मानहौ समान काहि दीजिये। रसाल प्रीतिके भरे खरे प्रतीतिके निकेत रीति नीतिके समुद्र पेखि देखि जीजिये। टीकी लगी तिहारियेइ सुआइयो निहारिये लोक रंजनादि टारिये समीप यों बिहारिये। उमंग रंग भीजिये पयोदमोद दाइये बिनोदको बढाइये विलंब छाँडि आइये। किधौं बुलाइ लीजिये॥ ३ ॥ तारीहै ॥दोहा॥ ज्यों ज्यों आवै विघ्नडर, त्यों त्यों प्रेम हुलास। जैसे दीपक तम चहै,सतगुण होत प्रकास। मन कोठरीकी तारी है, हिरण्यकशिपु दुःख दिये तब प्रह्लाद गुण प्रगटे ऐसे॥ ४ ॥

बसतचितौरमांझ रानीएकझालीनामनामबिनकामखालीशिष्य आनिभईहै। संगहुतेविप्रसुनिक्षिप्रतनआगिलागीभागीमतिनृपआगे भीर सब गई है। बैसेहीसिंहासनपैआइकैविराजेप्रभुपढैवेदवाणीपैन आयेयहनई है । पतितपावननामकीजियेप्रगटआज गायोपदगोद आइबैठेभक्तिलई है॥ २६३ ॥

पद गायो॥ ३॥पद ॥ आयो आयो हौ देवाधि तुम शरण आयो । सकल सुखकी मूल जाकी नाहिंसम तूल सो चरण मूल पायो । लियो विविध जौन वास यमकी अगम त्रास तुम्हरे भजन विन भ्रमत फिऱ्यो ॥

माया मोह विषय रस लंपट यह दुस्तर दूर तऱ्यो । तुम्हरे नाम विश्वास छाँडिये आन आश संसारी धर्म मेरो मन न धीजै । रैदास दास की सेवा मानहुँ देवा पतितपावन नाम आज प्रगट कीजै ॥ १ ॥ सवैया ॥ मृतको ठौर ठौवन कुल जाको हरि मूरति लो इनमें अरकी । सेवन लग्यो जग्यो अग ऊपर निंदक नर भूसन कूकरकी । हरि प्रसन्न शिर चढ़ौ सिंहासन जैति धुनि काशि नगरकी । लाल कृपाल प्रेमरस बंधन निर्भय भक्ति राधिका वरकी ॥ २ ॥ जैमिनिपुराणे ॥ मोरध्वजस्थाने॥ अंत्यजा अपितद्राष्ट्रे शंखचक्रांकधारिणः ॥ संप्राप्य वैष्णवीं दीक्षां दीक्षिता इव संबभौ ॥ ३ ॥ सप्तमे ॥ विप्राद्विषड्गुणयुतादरविंदनाभपादारविंदविमुखाच्छ्वपचवरिष्ठम् । मन्ये तदर्पितमनोवचनेहितार्थ प्राणं पुनंति सकुलं न तु भूरिमानाः ॥ ४ ॥

गईघरझालीपुनिबोलिकैपठायेअहो जैसेप्रतिपालीअवतैसेप्रतिपालिये । आपहूपधारेउनबहुधनपटवारेविप्रसुनिपांवधारेसीधोदै निकारिये । करिकैरसोइद्विजभोजनकरनवैठेद्वैद्वैमधिएकपोरैदास कोनिहारिये ॥ देखिभईआँखैंदीनभाखैंशिष्यभष्येलावें स्वर्णकोजनेऊकाढ़्योत्वचाकीनोन्यारिये ॥ २६४ ॥ मूल ॥ कबीरकानि राखी नहींवर्णाश्रमषटदरशनी ॥ भक्तिविमुखजोधर्मसोअधर्मकरिगायो । योगयज्ञव्रतदानभजनविनतुच्छदिखायो ॥ हिंदूतुरकप्रमानरमैंनीसबदीसाषी । पक्षपातनहिंवचनसबहिंकेहितकीभाषी ॥ आरूढ़दशा ह्वैजगतपरमुखदेखीनाहिंनभनी । कबीरकानिराखीनहींवर्णाश्रमषट दरशनी ॥ ६० ॥

पतितपावन नामकीजिये प्रकट आजुगायो पद आपु बैठे भक्ति मन भाई है निहारिये ॥ भूतानांदेवचरितम् ॥ देखेते ज्ञान आयो ॥ यस्य नास्तिस्वयं प्रज्ञा ॥ १ ॥ जानिगये ॥ एकते अनेक भये परम भागवतही हैं भृंगी भयते भृंग होत ॥ शुकोहंशुकोहम् ॥ वृक्षनिमें दिखायो ऐसे इनको जीत्यो तब सोनेको जनेऊ दिखायो भक्ति विमुख जो धर्म

सो अधर्म करि गायो ॥ २ ॥ भागवते ॥ गुरु वैष्णवो गोविप्रं हारि अर्थ सबको पूजे पै ग्रह व्यतीपात देखै सोइ अधर्म स्वर्ग नरक संसार कारण धरम वहै जगछूटै ॥ सोहरिकी शरण जाय तब ऐसे ॥ ३ ॥ तुच्छ दिखायो ॥ दोहा ॥ रामनाम तौ अंक है, अरु सब साधन शून्य ॥ अक्षरके सन्मुख रहै, शून्य शून्य दश गून्य ॥ पक्षपात नहीं ॥४॥ छप्पय ॥ पांडे भली कथा कहिजानै ॥ औरनि परमारथ उपदेशै आपु स्वारथ लपटानै ॥ ज्यों दीपक घरु करै उजारो निज तन तम सन ठानै । महिषी क्षीर स्रवै औरनिको आपु भुसहि रुचि मानै ॥ श्रोता गोता क्यों न खाइ आचारज फिरै भुलाने । यह कलि छल सबकी मति नाठी समझत लाभ न हाने ॥ हितकी कहत लगत अनहितकी रज राजसमें साने । कहत कबीर बिना रघुवीरहि यह पीरहि को जाने ॥ ५ ॥ भजनबिन ॥ सकर्ता सर्वधर्माणां भक्तोयस्तव केशव ॥ सकर्ता सर्वपापानां यो न भक्तस्तवाच्युत ॥ ६ ॥ यदि मधुमथन त्वदंघ्रिसेवां हृदि विदधाति जहाति वा विवेकी ॥ तदखिलमपि दुष्कृतं त्रिलोके कृतमकृतं तु कृतं कृतं च सर्वम् ॥ १ ॥

टीका ॥ अतिहीगँभीरमतिसरसकबीरहियोलियोभक्तिभावजातिपाँतिसबटारियै । भईनभवाणीदेहतिलकखानीकरौकरौगुरुरामानंदगरेमालधारियै । देखैनहींमुखमेरोजानिकैमलेच्छमोको जातन्हानगंगाकहीमगतनडारियै । रजनीकेशेशमयआवेशसोंचलतआपपरैपगरामकहैमंत्रसोंविचारियै ॥ २६५ ॥ कीनीवहीबातमालातिलकबनाइगातमानिउतपातमातशोरकियोभारियै । पहुँचीपुकाररामानंदजूकेपासआइकही कोऊपूँछैतुमनामलैउचारियै । लावोजूपकरिवाकोकबहमकियोशिष्यलायेकरिपरदामें पूछीकहिडारियै । रामनाममंत्रयहीलिख्योसबतंत्रनिमेंखोलिपटमिलेसांचोमतउरधारियै २६६

सबतंत्रनिमें ॥ श्लोक ॥ श्रीरामेति परं जाप्यं तारकं ब्रह्मसंज्ञकम् ॥ ब्रह्महत्यादिपापघ्नमिति वेदविदो विदुः ॥ १ ॥ कवित्त ॥ रहैगो नराज

रजधानीपै न पानी पुनि कहै वाक वानी जिमि आसमान जाइगो । सप्त पाताल अरु सात द्वीप भाइ सत एक बेर चांद सूर्य ज्योतिहू बिलाइगो । जोइ कछू सृष्टि रची करताकी वृष्टिही सो एक बेर सृष्टिहूको करता समाइगो । कहैं कविकाशीराम और कछू थिर नाहिं रहिवे को एक राम-नाम रहि जाइगो ॥ २ ॥ छप्पय ॥ यत विन योगी अफल अफल भोगी विन माया । जलबिन सरवर अफल अफल तरुवर बिनछाया ॥ शशि बिन रजनी अफल अफल दीपक बिन मंदिर । नर बिन नारी अफल अफल गुण बिन सब सुन्दर ॥ नारायणकी भक्तिबिन राजा परजा सब अफल । तत्त्ववेत्तातिहुँलोक में रामरटैं ते नर सुफल ॥ ३ ॥

बुनैतानोबानोहियराममड़रानोकहौ कैसेकैबखानोवहीरीतिक छुन्यारिये । उतनोहीकरैतामेंतनुनिरवाहहोइभोइगइऔरैबातभक्ति लागीप्यारिये । ठाढ़ेमंडीमांझपटबेचनलैजनकोऊआयोमोकोदेहु देहमेरीहैउघारिये । लग्योदेनआधोफारिआधेसों नकामहोयदियो सबलैबोजोपैयहीउरधारिये ॥ २६७ ॥ तियासुतमातमगदेखेभूंखेआ वैं कब दबिरहेहाटनमेंलावैकहाधामको । सांचोभक्तिभावजानिनिपट सुजानवेतो कृपाकेनिधानगृहशोचपरेउश्यामको । बालदलैधाये दिनतीनियोंबिताथेजब आयेधरिडारिदईलहेउहैपरामको । माताक रैशोरकोऊहाकिममरोरिबांधे डारोबिनजानेसुतनहींलेतदामको ॥ ॥ २६८ ॥ गयेजनदोइ चारिढूँढ़िकेलिवाइलायेआयेघरसुनी बात जानीप्रभूपीरको । रहेसुखपाइकृपाकरीरघुराइदईक्षणमेंलुटाइसबबो लिभक्तभीरको । दयोछोंड़ितानोबानोसुखसरसानोहियेकियेरोषधा येसुनिविप्रतजिधीरको । क्योंरेतेजुलाहेधनपायोनाबुलायेहमैं शूद्र निकोदियोजावोकहैयोंकबीरको ॥ २६९ ॥

बुनै तानो वानो दोऊकरैं सोदोऊ कैसे बने मनतौ एकही है मनको अ-भ्यास भजनको इंद्रियनको अभ्यास क्रियाको जैसे जडभरत शरीर त्यागती बार ॥ १ ॥ देवानां गुणलिंगानाम् ॥ अथवा हरि आपही

मडराइ ॥ २ ॥ सुख सरसानो एक फकीर तापै फकीर आवै कही गुजर कैसे है तब कही हमें साहिब देताहै जब खाते हैं संत संतोष सों परे रहेते दूसरो कही ऐसे हमारी गलीके कुत्ता हू करते हैं आप कैसे देताहै तब बांटि खाते हैं तब तौ आनन्द माने है ॥

क्योंजुउठिजाउँकछुचोरीधनलाउँनितहरिगुणगाउँकोउराहमेंन मारीहै । उनकोंलैमानाकियोयाहीमेंअमान भयो जोपैजाइमाँगा हमैंतौहीतौजियारीहै । घरमेंतोनाहींमंडीजांउतुमरहौबैठे नीठिके छुड़ायोपैड़ोछिपैव्याधिटारीहै । आयेप्रभुआपद्रव्यलायेसमाधान कियोलियोसुखहोयभक्तिकीरतिउजारीहै ॥ २७० ॥ ब्राह्मणकोरू पधरिआयेछिपिबैठेजहांकाहेकोमरतभूखौजावोजु कबीरके । कोऊ जाइद्वारताहिदेतहैअढ़ाईसेरखेरजिनिलावोचलेजावोयोंबहीरके । आ येघरमांझदेखिनिपटमगनभये नयेनयेकौतुकसोंकैसेरहैंधीरके । वा रमुखीलईसंगमानोवाहीरंगरंगेजानोयहबातकरीउरआतिभीरके ॥ ॥ २७१ ॥ संतदेखिदुरेसुखभयोईअसंतनिकेतबतौविचारमनमांझ औरआयोहै । बैठीनृपसभातहाँगयेपैनमानकियो कियोएकचीजउ ठिजलढरकायोहै । राजाजियशोचपरयोकह्योकहाकह्योतबजगन्ना थपंडापाँवजरतबचायोहै । सुनिअचरजभारिनृपनेपठायेनरलायेसु- धिकहीअजूसांचहीसुनायोहै ॥ २७२ ॥

नये नये ॥ दोहा ॥ व्यास बडाई जगतकी, कूकरकी पहिचानि । प्रीति किये मुख चाटिहै, वैरकिये तनुहानि ॥ १ ॥ हाथ कछू न लगै भजन गांठिको जाइ ऐसे विषयिनको संगहै जैसे सेवरिके सुवाको कछू हाथ न लगै देखतहीमें सुन्दर सेवत विचारी बडाई खोई आपही आवेंगे ॥ २ ॥ वारमुखी लई संग या कुसंगसों कबीर परम साधुताकी महिमा घटीविषे कहनलगे ॥ दोहा ॥ संगति खोटी नीचकी, देखो करिकै व्यास । महिमा घटी समुद्रकी, बस्यौ जु रावन पास ॥ ३ ॥ जल ढर कायो ऋषभदेव यथेष्ट कृपा देखि जगत बुरोहोय ॥

कहीराजारानीसोंजुबातवहसांचभईआंचलागीहियेअबकहौकहा कीजिये । चलेहीबनतिचलेशीशतृणबोझभारीगरेसोंकुल्हारीबांधि तियासंगभीजिये । निकसेबजारह्वैकेडारिदईलोकलाजाकियो मैं अ काजछिनछिनतनुछीजिये । दूरिजेकवीरदेखिह्वैगयोअधीरमहाआ योउठिआगेकह्योडारिमतिरीझिये ॥ २७३ ॥ देखिकैप्रभावफेरिउ पज्योअभावद्विजआयोबादशाहजूसिकंदरसोनामहै । विमुखसमूहसं गमाताहू मिलाइलईजाइकैपुकारे जूदुखायोसबगाँवहै । लावोरेपक रिवाकोदेखौंरेमकरकैसौअकरमिटाऊंगाढ़ेजकरतनावहै । आनिठा ढ़ेकियेकाजीकहतसलामकरौजानैनसलामजामेंरामगाढ़ेपावहै ॥ ॥ २७४ ॥ बांधिकैजँजीरगंगातीरमांझबोरिदियोजियोतीरठाढ़ौक हैयंत्रमंत्रआवहीं । लकरीनमांझडारिअगिनिप्रजारिदईनईमानोंभई देहकंचनलजावहीं । विफलउपाइभयेतऊनहींआइनयेतबमतवारो हाथीआनिकेझुकावहीं । आवतनढिगऔचिंघारिहारिभाजिजाइआ यआपसिंहरूपबैठेशोभागावहीं ॥ २७५ ॥

भाजिजाइ भगवान सिंहरूपहाथीके पास सन्मुख आइ ठाढे भये हाथी चिंघारिके भाज्यौ बादशाहने कही हाथी क्यों नहीं पेले कही महाराज सन्मुखसिंह है तो मोहिं क्यों नहींदेखै सन्मुख आवै तब देखो जब आयो तब देखतही बडो डराकियो यह वही नृसिंह है जो प्रह्लादकी रक्षाको प्रगट्यो है याते संतनिके सन्मुख तब हरि दीखै ॥ १ ॥ भगा-वही ॥ दोहा ॥ वधिक बाज अरु दुष्ट नर, जो इन चीत्यौ होइ । तुलसी या संसारमें, साधु न जीवै कोइ ॥ २ ॥ राजा स्त्रीसों पूछैं कृष्ण सान्दीपनके पढे दक्षिणा।मांगो सो। कही स्त्रीसों पूछैं तब प्रभासमें बूडिगयो पुत्र सो ल्या-इ देव ऐसे पंडित पूछे विफल उपाव ॥ जले विष्णुःस्थले विष्णुर्विष्णुः पर्वत मस्तके ॥ ज्वालामालाकुले विष्णुः सर्वं विष्णुमयं जगत् ॥ ३ ॥

देख्यौबादशाहिभावकूदिपरेगहेपाव देखिकरामातिमातभयेसब लोक हैं । प्रभुपैबचाइलीजैहमैंनगजबकीजैलीजैसोईभावैगांवदेश

नाभोग हैं । चाहैंएकरामजाकोजपैआठौयामऔरदामसोंनकामजा मेंभरेकोटिरोग हैं । आयेघरजीतिसाधुमिलेकरिप्रीतिजिन्हैं हरिकी प्रतीतिवेईगायबेकेयोगहैं ॥ २७६ ॥ होइकैखिसानेद्विजनिजचारिवि प्रनके मूड़निमुड़ाइभेषसुंदरबनायेहैं । दूरिदूरिगांवनमेंनामनिकोपू छिपूछि नामजोकबीरजूकोझूठैन्योतिआयेहैं ॥ आयेसबसाधुसुनिये तौदुरिगयेकहूंचहूंदिशिसंतनिकोफिरैंहरिधाये हैं । इनहीकोरूपधरि न्यारेन्यारेठौरबैठेएऊमिलिगयेनीकेपोखिकैरिझायेहैं ॥ २७७ ॥

गहेपाव ॥ पद ॥ कलिमें सांचो भक्त कबीर । जबते हरिचरणन रुचि उपजी तबते बुन्यो न चीर । दीनों लेहि न यांचै काहू ऐसो मनको धीर । योगी यती तपी संन्यासी इनकी मिटी न पीर । पांचतत्त्वते जनम न पायो काल न ग्रस्यो शरीर । व्यास भक्तको खेत जुला यो हरि करुणामय नीर ॥ १ ॥ मेरोमन अनतहि सचुपावै । जैसे उडत ज़हाजको पक्षी फिरि जहाज पै आवै॥ जो नर कमल नैनको तजिकै आन देवको ध्यावै । विद्यमान गंगातट प्यासो दुर्मति कूपखनावै । जिनमधुक-र अंबुजरसचाखौ ताहि करीलनभावै । सूरदास प्रभु कामधेनु तजि छेरी कौन दुहावै ॥ २ ॥ दोहा॥ कहाकरै रसखानिको, कोऊ दुष्ट लवार ॥ जोपतिराखन हारहै, माखन चाखनहार ॥ ३ ॥ हरिको निश्चय मानिकै. बनिजकरै जोकोइ ॥ तुलसी मन विश्वास सों, दाम चौगुना होइ ॥ ४ ॥ मछरी मीनखाई कुत्ता बिलाइते बचे ॥

आईअप्सराछरिबेकेलियेबैसकिये हियेदेखिगाढ़ोफिरिगईनहींला गीहै । चतुर्भुजरूपप्रभुआनिकैप्रगटकियोलियोफलनैननिकोबड़ोब ड़भागीहै । शीशधरैंहाथतनसाथमेरेधामआवो गावोगुणरहोजोलौंते रीमतिपागीहै । मगमेंहैजाइभक्तिभावकोदिखाइबहु फूलनिमँगाइपौ ढ़िमिल्योहरिरागी है ॥ २७८ ॥

आई अप्सरा ताको देखिकै मोहित नहीं भये जैसे नारदजी ॥ १ ॥ पद ॥ तुम घरजावो मेरी बहिना । यहां तिहारो लेना न देना राम बिन

गोविंद विना विष लागैं ये बैना ।। जगमगात पट भूषण सारी उर मोतिनके हार । इन्द्रलोकते मोहनआई मोहिं करन भरतार ।। इनबातनको छांडि देहुरी गोविंदके गुणगावो । तुलसीमाला क्यों नहिं पहिरो बेगिपरम पदपा- वो ।। इन्द्रलोक में टोटपऱ्योहै हमसों और न कोई । तुमतो हमें डिगावन आई जाहु दईकी खोई ।। बहुते तपसी बांधि विगोये कच्चे सूतके धागे । जो तुम यतनकरो बहुतेरा जलमें आगिन लागे ।। हौंतो केवल हरिके शरणै तुमतो झूंठीमाया । गुरुपरताप साधुकी संगति मैंजु परमपदपाया ।। नाम कबीरा जाति जुलाहा गृह वनरहौं उदासी । जोतुम मान मह- त करि आई तो इकमाइ दूजे मासी ।। १ ।। कवित्त ॥ वहमति कहां गई अब मति औरौ भव ऐसी मतिकी जो मति आपनी विगारोगे । सुधि कहूं सोइ गई बुद्धिकहूं बूडिगई अब क्यों न भई सो तौ नईबाट पा- रोगे ।। निपटनिरंजन निहारि कै विचारि देखो एकही विचारि कहा दोसरी विचारोगे । तुमसों न उज्यारो प्रभु मोसों न पतितभारो मोहिंमति तारो वैकुंठको विगारोगे ।। २ ॥

मूल ॥ पीपाप्रतापजगवासनानाहरकोउपदेशदियो । प्रथमभवा नीभक्तमुक्तिमांगनकोधायो । सत्यकह्योतिहिशक्ति सुदृढहरिशरण बतायो ॥ श्रीरामानंदपदपाइ भयेअतिभक्तिकीसींवा । गुणअसंख निरमोलसंतधरिराखतग्रीवा ॥ परसप्रनालीसरसभईसकलविश्व मंगलकियो । पीपाप्रतापजगवासना नाहरकोउपदेशदियो ॥ ६१ ॥ टीकापीपाकी ॥ गांगरोलगढ़बठपीपानामराजाभयोलयोपनदेवीसे वारंगचढ्योभारिये । आयेपुरसाधुसीधोदियोजोईसोईलियोकियोम नमांझप्रभुबुद्धिफेरिडारिये । सोयोनिशिरोयोदेखिसुपनोविहाल अ तिप्रेतविकरालदेहिधरिकैपछारिये । अबनसुहाइकछूबहुपाईँपरिगई नईरीतिभईयाहिभक्तिलागीप्यारिये ॥ २७९ ॥

आयेपुरसाधु ॥ पीपाकी दयारहै भक्तिअंग में ।। कवित्त ॥ देवी

हेठि शीतला बराही जा जगावै राति अऊत पितर पंचपीरको मनावै हैं ।
खैंतखाल गूंगारव भैरव भूपालादिक नाना देवता मनावै नगरकोट जावै
हैं । व्याहकाज छोंछिक परोजन सराध भात काढिके करज यों उदा-
रता दिखावै हैं । केवल जगतराम सुमिरै न सीतारामकोपै जब धर्म-
राज नरकको पठावैहैं ॥ १ ॥ पीपाजी भवानी को सेवैं पै दया भक्ति
अंगरहै याते साधुआये दियो सीधा जोई सोई लियो ॥ श्लोक ॥ यदृच्छा
लाभसंतुष्टो द्वंद्वातीतो विमत्सरः ॥ २ ॥ कियो मनमांझ साधुनिने
भोग धरिकै हरिसे कही जेइँके चुपकारि मति ह्वै रहियो राजाके भक्ति उप-
जाइयो ॥ ३ ॥ भागवते एकादशे ॥ भूतानांदेवचरितं दुःखाय च
सुखाय च । सुखायैवहि साधूनांत्वादृशामच्युतात्मनाम् ॥ ४ ॥

**पूछौहरिपाइबेकोमगजबदेवीकही सहीरामानंदगुरुकरिप्रभुपाइ
ये । लोगजानैबौरोभयोगयोयहकाशीपुरीफुरीमतिअतिआयेजहांह
रिगाइये । द्वारपैनजानदेतआज्ञाईशलेतकहीराजमीनहेतसुनिसबही
लुटाइये । कहींकुँवागिरैचलेगिरनप्रसन्नहिये जियेसुखपायेलायेदर
शादिखाइये ॥ २८० ॥ कियेशिष्यकृपाकरीधरीहरिभक्तिहियेकही
अबजावोगेहसेवासाधुकीजिये । बितयेवरषजबसरसटहलजानिसंत
सुखमानिआवैघरमध्यलीजिये । आयेआज्ञापाइधामकीनीअभिराम
रीतिप्रीति कोनपारावारचीठीलिखिदीजिये । हूजियेकृपालवहीबात
प्रतिपालकरौचलेयुगबीशजनसंगमातिरीझिये ॥ २८१ ॥**

पूछो हरि पाइबोको मग जैसे राजा मुचुकुंदने देवतनपै मुक्ति मांगी
देवता बोले हमपै मुक्ति कहां होइ तौ हमहूं मुक्ति न होई तापै दृष्टांत
शीतलाको तब सोइबो मांग्यो मुक्तिही तुल्यहै देवीने रामानंद बताये
धरी हरि भक्ति हिये उपदेशन करिधरि दियो जैसे आधेको अपनो बड़ो
अभ्यास जैसे अज्ञानी विषयीको तौ विषयको स्वतै सिद्धि ज्ञान॥सवैया॥
जबते तुम आवन आशदई तबते तरफौं कब आइहौजू । मन आतु-
रता मनहीं में लखौं मनभावन जान सुहाइ हौजू । विधिके छिनलौं दिन

बाटपरौ यह जान वियोग बिताइहौ जू । सरसौ घन आनँद वारस सो सु-महारसको बरसाइहौजू ॥ १ ॥

कवीररैदासआदिदाससबसंगलियेआयेपुरपास   पीपापालकीलै आयोहै । करीसाष्टांगन्यारीन्यारीविनयसाधुनिकोधनकोलुटाइसोस माजपधरायोहै । ऐसीकरीसेवाबहुमेवानानारोगभोगवाणी केनयोग भागकापैजातगायोहै । जानीभक्तिरीतिघररहौकैअतीतिहोहुकरिकै प्रतीतिगुरुपगलगिधायोहै ॥ २८२ ॥ लागीसंगरानीदशदोयकही मानीनहींकष्टकोबतावैडरपावैमनलावही । कामरीनफारिमधिमेष लापहिरिलेवोदेवोडारिआभरणजोपैनहींभावही । काहूपैनहोहिदि योरोइभोइभक्तिआइछोटीनामसीतागरैडारीनलज्यावहीं । यहूदूरि डारौकरौतनकोउघारोकियोदयोरामानंदहियोपीपानसुहावहीं २८३ जोपैयापैकृपाकरिदीजैकाहूसंगकरिमेरेनहींरंगयामेंकहीबारबारहै । सोंहकोदिवायदई लईतबकरधारिचलेढरिविप्रएकछोड़ेनविचारहै । खायोविषज्यायोपुनिफेरिकैपठायोसबआयोसोसमाजद्वारावतीसुख सारहै । रहेकोऊदिनआज्ञामांगीइनरहिबेकीकूदेसिंधुमाँझचाहउप जीअपारहै ॥ २८४ ॥

करी साष्टांगधनको लुटाय ॥ कवित्त ॥ जिन जिनकरनाई तिन करआई तिनकरननाई तिन करनआई है । कागर लिखाइ जिन कागरै लिखाई पाई धरामें धराई जिन धरा धूरि खाई है । दैदै लवराई जिन लई है पराई अब ताहू पास नेकहूं न रहति रहाई है । जिनाजिन खाई तिन उदर समाती खाई जिन न खवाई तिन खाई बहुताई है॥ १ ॥श्लोक॥बोधयं ति न याचंति भिक्षां कारागृहे गृहे । दीयतां दीयतां नित्यमदातुः फलमीदृ-शम् ॥ २ ॥ अहंता ममता विनछूटेहरि प्रापति निश्चयन याते कुवाँगिरों प्रतीति गुरु पगलगि सूरदासग्रामकी खबरिराखे परग्रामकी नहीं ऐसे जीव विषे जाने हारिको नहीं सो इनकही गुरुआश्रयरहिये तो भलो हायसौंहको दिवाइ दई जैसे तेरी प्रतीति भुक्त वैराग्य बलखबुखारेको बादशाह फकीर

एक संगम्बी कही ऐसे आज्ञा ।। कवित्त ॥ सबसुख दैकै शरणागत को एकै बार भक्तिके दियेपै और ठाठ ठठवत हौ। पावन पतित यह बिरद तिहारो ताके दोष दुःख पुंज पलहीमें मिटवतहौ। सुरज कहत ताहि आपनो के राखौद्वार मेरी बारहीको क्यों अबार हटवत हौ ।। देवकार काके वेद दानतार काके मोहिं नाथ द्वारकाके द्वारकाके पठवत हौ ।। १ ।।

आयआगेलेनआपुदियेहैंपठायजन देखीद्वारावतीकृष्णमिलेबहु भाइकै । महलमहलमांझचहलपहललखीरहेदिनसातसुखसकैकौन गाइकै । आज्ञादईजाइबेकोजाइबोनचाहैहियेपियेबहुरूपदेखौमोहिं कोजुजाइकै। भक्तबूड़िगयेयहबड़ोईकलंकभयो मेटौतमअंकशंक गहीअकुलायकै ॥ २८५ ॥ चलेपहुँचाइबेकोप्रीतिकेआधीनमहाबि नजलमीनजैसेएसेफिरिआयेहैं । देखिनईबातगातसूखेपटभीजेहिये लियेपहिंचानिआनिपगलपटायेहैं । दईलैकैछापपापजगतकेदूरिक रोढरोकाहूओरकहिसीतासमझायेहैं । छटेईमिलानवनमेंपठानभेंट भई लईछीनितियाकियाचैनप्रभुधायेहैं ॥ २८६ ॥ अभूलगिजावो घरकैसेकैसेआवेडरबोलीहरिजानियेनभावपैनआयोहै । लेतहौंपरि मैंतौजानोंतेरीशिक्षाऐयेसुनिदृढ़बातकानअतिसुखपायोहै ॥ चलेमग दासरैसतामेंएकसिंधुरहै आयोवासलेतकियोशिष्यसमझायोहै । आयोऔरगांवशेषशाहीप्रभुनाव रहैकरेवासहरेटरेचींधरसुहायोहै ॥ आयेआगे लैन ॥ श्लोक ॥ क्षीरेणात्मगतोनकाय निखिला दत्ताः पुरा स्वेगुणाः क्षीरे तापमवेक्ष्य तेनः पयसास्वाकृशानौ हुतः ।। गंतुं पावकमुन्मनास्तदभवत्रातुंचमित्रापदं युक्तं तेन जलेनशाम्यति सतां मैत्री- पुनस्त्वीदृशी ।। १ ।। दोहा ॥ सीतापतिरघुनाथजी, तुमलंगि मेरी दौर। जैसे काग जहाजको, सूझत और न ठौर ॥ ४ ॥

दोऊतियापतिदेखैंआयेभागवतऐयेधरकीकुगतिरातिसांचीलैदिखा ईहै । लहँगाउतारिबेंचिदियोताकोसीधोलियोकरोअजूपाकवधूक्रीट मेंदुराईहै। करिकैरसोईसोईभोगलगिवैठेकहेउआवौमिलिदोऊलहूपो

छेसीतभाईहै । वाहूकोबुलावौलावौआनिकैजिमायोतब सीतागई वाही ठौरनगनलखाईहै ॥२८८॥ पूंछेंकहौबातयेउघारेक्यों हैं गातक ही ऐसेहीविहातसाधुसेवामनभाईहै । आवैंजबसंतसुखहोतहैअनंतत नढक्योंकेउघारेउकहाचरचाचलाईहै । जानिगईरीतिप्रीतिदेखीएक इनहींमेंहमहूंकहावैंएयेछटाहूनपाईहै । दियोपटआधोफारिगहिकैनि कारिलईभईसुखशैलपाछेपीपासोसुनाईहै ॥ २८९ ॥

दोऊतियापति महाराज पीपा अरु सीता श्रीद्वारका ह्वै आयेहैं वेई छाप लाये हैं श्रीकृष्ण जूने दई है ॥ १ ॥ सो इन्हैं लगावैंगे सो मोहींपै आ-वेगो लंबेसे गोरेसे पीपाजी हैं वर्ष तीसमें अरु सीताजी वर्ष पंद्रहमें सर्वांग सुन्दरी गौरांगी मानों सीताही हैं उनको दर्शन साक्षात् श्रीकृष्णही हैं याते नितकी बाटदेखै ॥ २ ॥ दोहा ॥ आज द्वैजतिथि है सखी, शशि ऊग्यौ आकाश । मेरे दृग अरु पीवके, हैं दोउराकेपास ॥ ३ ॥ रति सांची जैसे नटकीसी कलालै ऐसे पहले ॥ ४ ॥

करैंवेश्याकर्मअवधर्महैहमारोयहीकहीजाइबैठीजहँनाजनकीढेरी है । घिरिआयेलोगजिन्हेंनयननकोरोगलखिदूरिभयोशोकनेकुनीके हूनहेरीहै । कहैतुमकौनबारमुखीनहींभोनसंगभरुवासगहैमौनसुनि परीबेरीहै । करीअन्नराशिआगेमोहरेरुपैयापागे पठैंदईचींधरकेतही नबेरीहै ॥ २९० ॥ आज्ञामांगिढोड़आयेकभूंभूखेकभूंधायेऔचक हीदामपायेगयोस्नानको । मुहरनिभांड़ोभूमिगड़ेउदेखिछोंडिआयो कहींनिशितियाबोलीजावोशरआनको । चोरचाहैचोरीकरैढरैसुनिवा हीओरदेखैंजोउघारिसांपडारेहतेप्राणको । ऐसेआइपरीगनीसातसत चीशभई तोरेपांचबांटकरेएकएकेप्रमाणको ॥ २९१ ॥ जोईआवैद्वा रताहिदेतहै अहारऔर बोलिकेअनंतसंतभोजनकरायोहै । बीतेदिन तीनिधनधाइप्याइछीनकियोलियोसुनिनामनृपदेखिबेकोआयोहै । देखिकैप्रसन्नभयोनयोदेवोदीक्षामोहिं दीक्षाहैआतीतिकरैआपसोसु

हाथोहै। चाहौसोईकरौहैकृपालमोकोढरौअजू धरौआनिसंपतिऔरा नीज्याइलायोहै ॥ २९२ ॥

करैं वेश्या कर्म क्योंकि हमहूं देखा देखी आगेको बढै वह तन कौन कामकोहै और तन सबकाम आवै बैल भैंस सुरहगऊ हाथी भेड़ पीपाजी बोले हमैं कोऊ लेइ तौ हमहूं बिकैं सीता बोलीं हमारे पीछे लगिलेहु तुम कैसे बिकौगे वारमुखी होहिंगी सो सत्संगते रंग चढ्यो गहगह्यो तीनि-बार पुटनिमें गहगह्यो चढा है एक पुट पीपाजीसों दूसरो चींधरजीसों तीसरो चींधररानीजीने गहगह्यो कह्यो ऐसे आनिपरी पीपाजीने कही कहा करौगी कही अब बाधा न करैंगी ॥ १ ॥ हतेप्राण ॥ श्लोक ॥ लिखिता चित्रगुप्तेन ललाटेक्षरमालिका ॥ न सापि चालितुं शक्या पंडितै-स्त्रिदशैरपि। लक्ष्मण दर्शन विभीषण आवै पड़ा फूल ढेरी लोह गुञ्जा मांगे॥

करिकैपरीक्षादईदीक्षासंगरानीदईभईहैहमारीकरौपरदानसंतसों। दियोधनघोराकछूराख्योदैनिहोराभूपमानतनछोराबड़ोमान्योजीव जंतुसों। सुनिजरिवारिगयेभाइसेनसूरजकेऊरजप्रतापकहाकहैसी ताकंतसों। आयोबनजारोमोललियोचाहेखेलनकोदियोबहकाहकहै पीपाजूअनंतसों ॥ २९३ ॥ बोलेउबनिजारोदामखोलिखेलादी जियेजूलीजियेजूआइग्रामचरणपठायेहैं। गयेउठिपाछेबोलिसंतनम होछोकियो आयोवाहीसमयकहीलेहुमनभायेहैं। दरशनकरिहिये भक्तिभावभरेउआनिआनिकैवसनसबसाधुपहरायेहैं। औरदिनन्हा नगयेघोड़ाचढ़िछोंड़िदियोलियोबांध्योदुष्टननेआयोमानोलायेहैं ॥ ॥ २९४ ॥ गयेहैबुलायेआपपाछेघरसंतआये अन्नकछुनाहिंकहूं जाइकरिलाइये। विषयीवणिकएकदेखिकैबुलाइलईदईसबसौंजक हीसहीनिशिआइये। भोजनकरतमांझपीपाजूपधारेपूछीवारेतनुप्राण जबकाहिकैजनाइये। करिकैशृंगारसीताचलीझूकिमेहआयोकांधेपैच ढ़ाइवपुबनियांरिझाइये ॥ २९५ ॥

दईदीक्षा ॥ श्लोक ॥ राज्ञश्चामात्यजा दोषा पत्नीपापं स्वभर्त्तरि ॥

यथा शिष्यार्जितं पापं गुरुः प्राप्नोति निश्चितम् ॥ १ ॥ दईसबसौंज ॥ कवित्त ॥ कागनि को मोती चुगावतहै रैनिदिन हंसनि को चुनी बर कांकरी समेत है । चेरीको चूडा अरु सुन्दर दुशाला लाल शीलहू की बात कभूंहियेहूं न लेतहै । गुणीते गुमानता गुण की पहिंचानि नाहिं आवै जो अचान तासों निपट कछु हेतहै । कोऊ जोसी मांगै सीधा सूधही जवाब देत कंचनी को कंचन उधार लैलै देतहै ॥ २ ॥

हाटपैउतारिदईद्वारआप बैठिरहेचहेसूकेपगमाताकैसेकरिआईहै स्वामीजूलिवाइलायेकहांहै निहारोजाइआईपाइपरचोठरचोराखोसुखदाईहै । मानोंजिनिशंककाजकीजियेनिशंकधनदियोबिनअंकजापैलरैमरैभाई है । मरचोलाजभारचाहैधरचोभूमिफारिहग बहेनीरधारदेखिदईदीक्षापाई है ॥ २९६ ॥ चलतचलतबातनृपतिश्रवणपरीभरीसभाविप्रकहैबड़ीविपरीतिहै । भूपमनआईयहनिपटघटाईहोतिभक्तिसरसाईनहींजानैघटीप्रीतिहै ॥ चलैपीपाबोधदैनद्वारहीतेसुधिदईलईसुनिकहीआवोकरौसेवारीतिहै । बड़ोमूढ़राजासोजगाठैबैठचोमोचीघर सुनीदौरिआयोरहेठाढ़ेकौननीतिहै ॥ २९७ ॥ हुतीघरमांझबाँझरानीएकरूपवतीमांगीवहीलावोवेगिचल्योशोचभारीहै । डगमगपांवधरैपीपासिंहरूपकरैठाढ़ो देखिडरैइतआवैआपखारीहै । जाइतौबिलाइमयोतियाढिगसुतनयोनयोभूमपरकलाजानीनातिहारीहै । प्रगटचोस्वरूपनिजखिचिकै प्रसंगकह्योकहांवहरंगशिष्यभयोलाजटारी है ॥ २९८ ॥

माता कैसे ॥ सवैया ॥ प्रीतम प्यारो मिल्यो सपनेमें परी जबने सुकनींद निहोरे । कंतको आइबो त्योंहीं जगाइ कह्यो सखि बैन पियूष निचोरे । योंमतिराम गयो हियमें तब बालके बालम सों दृगजोरे । ज्यों पटमें अतिही चटकीलो चढ़ैरंग तीसरी बारके बोरे ॥ १ ॥ याको शुद्ध हृदय अबहीं कैसे ह्वै गयो सीताजीके दर्शन ते सीधेकी बेर क्यों न भयो तीनपुटमें रंग है द्वै विधि दर्शन एक विधि भोजन विप्रकहैं यहां राजाके

ब्राह्मणनको पीपाजीको बोध क्यों न भयो बाससीपके लासी पत वासो पात्र भेदहै ॥ २ ॥

कियोउपदेशनृपहृदयमेंप्रवेशकियोलियोवहीप्रणआपआयेनिज धामहै । बोल्योएकनामसाधुएकनिशिदेहुतिया लेहुकहीभागोसंग भागीसीतावामहै । प्रातभयेचलेनाहिं रैनिहीकीआज्ञाप्रभुचल्योहा रिआगेघरघरदेखीग्रामहै । आयोवाहीठौरचलौमातापहुँचाइआऊं आयगहेपांवभावभयोगयोकामहै ॥ २९९ ॥ विषयीकुटिलचारिसा धुभेषलियोधारिकीनीमनुहारिकहीतियानिजदीजिये । करिकैशृंगा रसीताकोठेमांझबैठीजाइ चाहैंमगआतुरहैअजूजाहुलीजिये । गयेज बद्वारउठीनाहरीसुफारिबेकोफारेनहींबानोजानिआइअतिखीजिये । अपनोविचारोहियोकियोभोगभावनाको मानिसांचभयोशिष्यप्रभु मतिधीजिये॥ ३०० ॥ गूजरीकोधनदियो पीयोदहीसंतननेब्राह्मण कोभक्तकियोदेवीदीनिकारिकै । तेलीकोजिवायोभैंसिचोरनपैफेरि लायोगाड़ीभरिगेहूंतनपांचठौरजारिकै । कागदलैकोरोबनियाकोशो कहरयोभरयोघरत्यागिडारीहत्याहूजोउतारिकै॥राजाकोऔसेरभई संतकोजोविभवदईलईचोठीमानिगयेश्रीरंगउदारकै ॥ ३०१ ॥

गयो कामहै ॥ दोहा ॥ मन पक्षी जबलग उड़ै, विषय वासना माहिं ॥ प्रेम बाजकी झपटमें, जबलगि आयो नाहिं ॥ १ ॥ विषयी कुटिल ॥ चरण रँगे लोचन रँगे, चले मराली चाल॥नीर क्षीर विवरण समय, बक उ-घर्‌यो त्यहि काल ॥ २ ॥ गूजरीको धनदियो साधु बोले ठाकुरजीको मन दही पै चल्यो है ठाकुर क्यों कहैं अपनोही क्यों न कहैं ॥ ३ ॥ ब्राह्मणको भक्तिकियो ॥ श्लोक ॥ वांछितकल्पतरुभ्यश्च कृपासिंधुभ्य एवच ॥ पतितानां पावनेभ्यो वैष्णवेभ्यो नमोनमः ॥ ४ ॥

श्रीरंगकेचेतधरेउतियहियभावभरेउब्राह्मणकोशोकहरेउराजापै पुजाइकै । चँदवाबुझाइलियोतेलीकोलैबैलदियोदियोपुनिघरमांझ भयोसुखआइकै । बड़ोईअकालपरेउजीवदुखदूरिकरेउ परेउभूमि

गर्भधनपायोदैलुटाइकै । अतिविस्तारलियेकियोहैविचारयहसुनेए कबारफिरिभूलेनहींगाइकै ॥ ३०२ ॥ मूल ॥ धन्यधनाकेभजनको बिनहिबीजअंकुरभयो। घरआयेहरिदासतिनहिंगोधूमखवाये । तातमातदुरथोथखेतलंगूरबवाये ॥ आसपासकृषीकारखेतकीकरतब ड़ाई। भक्तभजेकीरीतिप्रगटपरतीतिजुपाई । अचरजमानतजगतमेंकहुनिपज्योकहुवैबयो । धन्यधनाकेभजनकोबिनहिबीजअंकुरभयो ॥ ६२ ॥ टीका ॥ खेतकीतोबातकहीप्रगटकवित्तमांझ औरएकसुनौभईप्रथमजुरीतिहै । आयोसाधुविप्रधामसेवाअभिरामकरैरोटीढिगआइकहीमोहदीजैप्रीतिहै । पाथरलैदियोअतिसावधानाकियो यहछातीलाइजियोसेवैजैसीनेहनीतिहै । रोटीधरिआगेआँखिमूंदिलियोपरदाकेछिपोनहींटूकदेखि भईबड़ीभीतिहै ॥ ३० ॥

चितधन्यो तियाहिये भावभन्यो ऐसी स्त्री जाति कैसे भावभन्यो सत्संगते एकादशे ॥ सत्संगेनहि दैतेया यातुधानाः खगामृगाः । गंधर्वाप्सरसो नागाः सिद्धाश्चारणगुह्यकाः ॥ २ ॥ विद्याधरमनुष्येषु वैश्याःशूद्राः स्त्रियोत्यजाः ॥ ३ ॥ घरआये हरिदास ॥ कुंडलिया ॥ घरआये नाग न पूजई बांबी पूजन जाइ । बांबीपूजनजाइ भटकि भ्रम सबरैं आवै । हरिजन हर हर हँसे तिनहिं तजि अंतहि धावै । नकटी भूषण कोटि करै शोभा नहिं पावै । घरमें फजिहत होइ बाहर परिवार जनावै ॥ अगर भूख भाजै नहीं सुपने सो मनखाइ। घरआये नाग न पूजई बांबी पूजन जाइ ॥ ४ ॥ प्रीति है ॥ श्रवणाद्दर्शनाद्ध्यानाद्भक्तिभावोनुकीर्त्तनात् ॥ ५ ॥

बारबारपांवपरैऔरभूखप्यासतजीधरैहियेसांचौभावपाईप्रभुप्यारिये। छाकनितआवैनोकेभोगको लगावैजोई छोड़ासोईपावैप्रीतिरीतिकछुन्यारिये । जाकोकोऊखाइताकीटहलबनाइकरैलावतचराइगाइहरिउरधारिये। आयोफिरिविप्रनेहखोजहूनपायोकिहूं सरसायोबातलैदिखायोश्यामजारिये ॥ ३०४ ॥ द्विजलखिगाइनमेंचाचांनसमातनाहिंभाइनकीचोटह्गलागीनीरझरीहै । जायकेभवनसोतारे

वनप्रसन्न करैबड़ेभागमानिप्रीतिदेखीजैसीकरीहै । धनाकोदयालहो इकैआज्ञाप्रभुदईठरौकरौगुरु रामानंदभक्तमतिहरीहै । भयेशिष्य जाइआयछातीसोंलगाइलियेकियेगृहकाजसबैसुनीजैसीधरीहै३०५॥

द्विजलखि गाइनमें ॥ कवित्त ॥ गोरज विराजै भाल लहलही वनमाल आगे गैया पाछे ग्वाल गावैं मृदुबानिरी । जैसी धुनि बांसुरीकी मधुर मधुर तैसी बंक चितवनि मंद मंद मुसुकानिरी । कदम विटपके निकट तटनीके तट अटाचढ़ि वाहि पीतपट फह-रानिरी । रस बरखावै तनुतपनि बुझावै नैन बैननि रिझावै बहुआवै-रसखानिरी ॥ १ ॥ भूपके तेल लगायो यह तौ बड़ो आश्चर्य है वैष्ण-वकीतौ टहलकरै पै अभक्त राजा ताके तेल लगायो तहां टीकाकारने कहो है वही भगवंत संत प्रीतिको विचारकरै धरै दूरि ईशताई पांडव-निसों करीहै ॥ २ ॥

मूल ॥ विदितबातजगजानियेहरिभयेसहायकसेनके । प्रभूदास केकाजरूपनापितकोकीनो । क्षिप्रछुरहरीगहीपानदर्पणतहँलीनो । तादृशिह्वैतिहिकालभूपकेतेललगायो । उलटिरावभयोशिष्यप्रगट परचाजबपायो । श्यामरहतसम्मुखसदाज्योंबच्छाहितधेनुके । विदितबातजगजानियेहरिभयेसहायकसेनके ॥ ६३ ॥ टीका ॥ बांधोगढवासहरिसाधुसेवाआशलगीमतिअंतिरतिप्रभुपरचौदिखायोहै। करिनितनेमचलेउभूपकेलगाऊंतेलभयोमगमेलसंताफिरिघरआयोहै। टहलबनाइकरीनृपकीनशंकधरीधराउरश्यामजाइभूपतिरिझायोहै । पाछेसेनगयोपंथपूछेहियेरंगछयोभयउअचरजराजावचनसुनायोहै ॥ ॥ ३०६ ॥ फेरिकैसे आयेसुनिअतिहीलजायेकही सदनपधारेसंत भईयोंअबारहै । आवननपायोवाहीसेवाअरुझायोराजादौरिशिरना योदेखीमहिमाअपारहै । भीजिगयोहियोदासभावदृढ़लियोपियोभक्त रसशिष्यह्वैके जान्योसोईसारहै । अबलौंहूंप्रीतिसुतनातीभईरीति चलैहोइजोप्रतीतिप्रभुपावैनिरधारहै ॥ ३०७ ॥

नापित ॥ दशमे ॥ अनुग्रहाय भक्तानां मानुषं देहमास्थितः ॥ भजते तादृशीं क्रीडां यां श्रुत्वा तत्परोभवेत् ॥ २ ॥ ऐसे तुमने नाऊरूप धरचो तौ हम नाऊके शिष्य ॥ सारसमुच्चये ॥ न शूद्रा भगवद्भक्तास्तेपि भागवतोत्तमाः ॥ सर्ववर्णेषु ते शूद्रा ये न भक्ता जनार्दने ॥ १ ॥ पद रचना ॥ मधुपुरी क्यों न चलो हरिश्याम । इन चरणनकी बलि जाऊं रजधानी कैसे छांड़ि गोकुलघरसों ग्राम । नंद यशोदाकी रट मेटौ वेगि-चलो उठिधाम ॥ निशि वासर कहुँ कल न परतिहै सुमिरत तेरो नाम ॥ तब तुम बेनु बजाइ बुलाई कालिंदीके तीर । अब वै बातैं क्यों बिसरैंगी हरि हलधर दोउ वीर । गोपवधू ब्रज मंडल मंडन सबमिलि जोरैं हाथ । सुखानंद स्वामी सुखसागर तुम वेगि चलो उठिसाथ ॥ २ ॥

मूल ॥ भक्तिदानभयहरणभुजसुखानंदपारसपरस । सुखसागरकीछापरायगौरीरुचिन्यारी । पदरचनागुरुमंत्रमनोआगमउनहारी । निशिदिनप्रेमप्रवाहद्रवतभूधरत्योंनिर्झर । हरिगुणकथाअगाधभालराजतलीलाभर । संतकंजपोषणविमलअतिपियूषसरसीसरस । भक्तदानभयहरणभुजसुखानंदपारसपरस ॥ ६४ ॥ मूल ॥ महिमामहाप्रसादकीसुरसुरानंदसांचीकरी । एकसमयअध्वाचलतबरावाकछलपाये । देखादेखीशिष्यतिनहुँपीछेतेखाये । तिनपरस्वामीखिजेबवनकरिबिनविश्वासी । तिनतैसेप्रत्यक्षभूमपरकीनीरासी । सुरसुरीसुधरपुनिउदकलैपुहपरेणुतुलसीहरी । महिमामहाप्रसादकीसुरसुरानंदसांचीकरी ॥ ६५ ॥ मूल ॥ महासतीसतऊपमात्योंसत्तसुरसुरीकोरहेउ । अतिउदारदंपत्यत्यागिगृहवनकोगवनउ । अचरजभयोतहांएकसंतसुनिजिनहोबिभने । बैठेहुतेएकांतआइअसुरनदुखदीयो । सुमिरेशारंगपाणिरूपनरहरिकोकीयो । सुरसुरानंदकीघरनिकोसतराखेउनरसिंहज्यों । महासतीसतऊपमात्योंसत्तसुरसुरीकोरहेउ ॥ ६६ ॥

तब प्रतिमा रणछोरजीकी ॥ बहुतदिन बसे नगर द्वारका नदी गोम-

तीतीर । ब्रजवासी दरशनकोतरसें परशत श्यामशरीर । प्रेम तीनप्रकार-को तापै कबूतरको दृष्टांत ॥ दोहा ॥ हितकरितुम पठयोलगी, वा व्यज-नाकी बाइ ॥ गई तपति तनुकी तऊ, उठी पसीनान्हाइ ॥ १ ॥ महिमा प्रसाद ॥ २ ॥ पाद्मे ॥ प्रसादं जगदीशस्य अन्नपानादिकं च यत् ॥ ब्रह्म-वन्निर्विकारं हि यथा विष्णुस्तथैव तत् ॥ विचारं येन कुर्वंति ते नश्यंति नराधमाः ॥ षिजे ॥ गुरोराज्ञा सदाकुर्यान्नतदाचरणं क्वचित् ॥ महादेवजीने विष पियो और कोऊ कैसे पीवैगो गुरुको गुरु न होइ जाइ तापै रोटीको दृष्टांत ॥ दोहा ॥ गौनेव्याह उछाहको, संतअन्न नहिंखाय ॥ जहां तहांके पायबे, भजन तेज घटिजाय ॥ ३ ॥

मूल ॥ निपटनरहरियानंदकोकरदातादुरगाभई । झरघरलकरी नाहिंशक्तिकोसदनउदारै । शक्तिभक्तसोंबोलिदिनहिंप्रतिवरहीलैडारै । लगीपरोसनिहोसभवानीभैसोंमारै । बदलेकीबेगारिमूड़वाकेशिरडारै । भरतप्रसंगज्योंकालिकालईदेखितनमेंतई । निपटनरहरिया नंदकेकरदातादुगाभई ॥ ६७ ॥ कबीरकृपातेपरमतत्त्वपद्मनाभ परचोलह्यो । नाममहानिधिमंत्रनामहीसेवापूजा । जपतपतीरथनाम नामबिनऔरनदूजा । नामप्रीतिनामवैरनामकहिनामीबोलै । नाम अजामिलसाखिनामबंधनतेखोलै । नामअधिकरघुनाथतेरामनिकट हनुमतकह्यो ॥ कबीरकृपातेपरमतत्त्वपद्मनाभपरचोलह्यो ॥ ६८ ॥ टीका ॥ काशीवासीसाहभयोकोठीसोंनिबाहकैसेपरिगये कृमिचल्यो बूड़िबेकोभीरहै । निकसेपदमआइपूछीढिगजाइकहीगहीदेहखोलोगु णन्हाइगंगानीरहै । रामनामकरैबेरतीनिमेंनवीनहोतभयोईनवीनकि योभक्तमतिधीरहै । गयेगुरुपासतुममहिमानजानीअहोनांमाभास कामकरै कहीयोंकबीरहै ॥ ३०८ ॥

कबीर ॥ दोहा ॥ समझि पढै कै पढि समझि, अहो कहो द्विजराय ॥ सुनि यह बात कबीरकी, पण्डितरह्योहिराय ॥ १ ॥ तपजपतीरथनाम॥ नामलियो जिनसबकियो, योगयज्ञआचार ॥ जप तप तीरथपरशुराम, सबै

नामकीलार ॥ २ ॥ नामवैर ॥ कवित्त ॥ कोऊ एक यमन जरठ संग जात कहूं सूकरकेशावकने मार्‍यो ताहिधायकै । जोरसों पुकार्‍यो मोहिं मार्‍यो है हराम जाति ऐसेकहिवेगि प्राणगये अकुलायकै । गोपदसमान भवसागर सों पारगयो नामके प्रताप ऐसो कह्यो पद गायकै । प्रेमसों कहैगो कोऊ नाम कृपाराम कौन अचरज रामधाम देत हैं जुचायकै ॥ ३ ॥

मूल ॥ तत्त्वाजीवादक्षिणदेशवंशीधरराजतविदित ॥ भक्तिसुधा जलसमुद्रभयेबेलाबलिगाढ़ी । पूरबजान्योरीतिप्रीतिउतरोत्तरबाढी । रघुकुलसदृशसुभावसृष्टिगुणसदाधमरत । शूरधीरउदारदयापरदक्ष अनन्यव्रत ॥ पदमखंडपदमापधितप्रफुल्लितकरसविताउदित ॥ तत्त्वाजीवादक्षिणदेशवंशीधरराजतविदित ॥ ६९ ॥ टीका ॥ तत्त्वाजीवाकी ॥ तत्वाजीवाभाईउभैविप्रसाधुसेवापन मनधँसेबाततातै शिष्यनहींभयेहैं । गाडेउएकठठद्वारहोइअहोहरीडारसंतचरणामृत कोलैकैडारिनयेहैं ।जबहींहरितदेखैंताकोगुरुकरिलेखेंआयेश्रीकबीर पूजीआशपावलयेहैं । नीठिनीठिनामदियोदियोपरचाइधामकामको इहोइजोपैआवोकहिगयेहैं ॥ ३०९ ॥ कानाकानीभईद्विजजानोजा तिगईपांतिन्यारीकरिदईकोउबेटीनहींलेतहै । चलेउएककाशी जहांवसतकबीरधीरजाइकहीपीरजबपूछेउकौनहेतहै । दोऊतुमभाई करोआपुमेंसगाईहोइभक्तिसरसाईनघटाईचितचेतहै । आइबहेकरीप रीजातिखरभरीकहै कहाउरधरीकछूमतिहूअचेतहै ॥ ३१० ॥

भक्तिसुधा अमृतमें है गुणमादिकता मिष्टभक्तिरूपी अमृतहू मादिक अतिमिष्टपै वह नश्वर अरु यह स्वमुख कर्त्ता यह सन्मुख कर्त्ता बेलाबेल घाटहै ॥ मनधरी ॥ दोहा ॥ तोलो बरोबरि गेगची, मोल बरोबरि नाहिं ॥ भेषबरोबरि परशुराम, भेद बरोबरि नाहिं ॥ २ ॥ नामदियो ॥ याते परीक्षा लई सब तीरथ करत कबीरजी आये ॥ ३ ॥ चितचेतहै ॥ चित्तमें विचारी सम्बन्ध तो सबसों है वेतो अभक्त तुम भक्तसो सम्बन्ध कामको नहीं परपरायो देख्यो स्वयंभू मुनि कर्दम ऋषि ॥ ४ ॥ वंशीधर

प्रह्लादकही पिताउद्धार इकीसकुली ब्रह्मा मरीचि कश्यप हिरण्यकश्यप नाना फूफा मामा मौसी पूरबजान्यो ॥ आरम्भगुर्वी क्षयिणी क्रमेण लध्वी पुरावृद्धिमती च पश्चात् । दिनस्य पूर्वार्द्धपरार्धभिन्ना छायेव मैत्रीखल सज्जनानाम् ॥ दोऊ तुम भाई करौ ब्रह्माके अंगते स्वयंभू मनु शत-रूपा तिनते देवहूती आकूती प्रसूती सृष्टि थोड़ी तब ब्रह्माके बेटा कर्दम आदिदई ॥

करैंयहीबातहमैं औरनासुहातआयेसबैहाहाखातयहछांड़िहठदीजिये । पूंछिबेकोफेरिगयेकरौव्याहजोपैनयेदण्डकरिनानाभांतिभक्तिदृढ़कीजिये । तबदईसुतालईयातनप्रसन्नह्वैकेपांतिहरिभक्तनसों सदामतिभीजिये । विमुखसमूहदेखिसम्मुखबड़ाईकरै धरैहियमांझकहैपनपररीझिये ॥ ३११ ॥ मूल ॥ विनयव्यासमनोप्रकटह्वैजगकोहितमाधवकियो । पहलेवेदविभागकथितपुराणअष्टादशभारतआदिभागवतमथितउद्धारेउ । हरियशअबशोधेसबग्रंथअर्थभाषाविस्तारेउ । लीलाजेजयजयतिगाइभवपारउतारेउ । श्रीजगन्नाथइष्टवैरागसींवकरुणारसभीज्यो । हियोविनयव्यासमनोप्रकटह्वै जगकोहितमाधवकियो ॥ ७० ॥

भाषा विस्तार्‍यो ॥ पद ॥ हरि हरि नाम उचारिये हरियश सुनिये कान । हारिको मस्तक नाइये हारि हैं सकल गुणके निधान । हाथन हरिके कर्मकरि पावन परिकर्मा दीजै । नैन निरखि श्रीजगन्नाथ आत्मा समर्पण कीजै । कोटि ग्रंथको अर्थ यह श्रीभागवत विचार । वासुदेव की भक्तिबिन नहीं नरको निस्तार ॥ १ ॥ श्लोक ॥ स्त्रीशूद्रद्विज बंधूनां त्रयी न श्रुतिगोचरा । कर्मश्रेयसि मूढानां श्रेयएवं भवेदिह ॥ २ ॥ इति भारतमाख्यानं कृपया मुनिनाकृतम् ॥ ३ ॥ स्मृतौ ॥ आदौत्रयोद्विजाः प्रोक्तास्तेषां वै मंत्रतः क्रियाः ॥ ४ ॥ ऐसे व्यासने जगत्को हित कियो तैसेही माधवदासजीने ॥ मृषा गिरस्ताह्यसतीरसत्कथाः ॥ तापै भट्टजी अरु कूबाको दृष्टान्त ॥ ५ ॥

टीकामाधवदासजीकी ॥ माधवदासद्विजनिजतियातनुत्यागकि योलियोइनजानजगऐसोईब्योहारहै । सुतकीबढ़नयोगलियेनितचाह तहौंभईयहऔरलैदिखाईकरतारहै । तातेतजिदियोगेहवेईअबपालैंदे हकरैंअभिमानसोईजानियेगँवारहै । आयेनीलगिरिधामरहेगिरिसिंधु तीरअतिमतिधीरभूखप्यासनविचारहै ॥ ३१२ ॥ भयेदिनतीनिये तौभूखकेअधीननहिं रहेहरिलीनप्रभुशोचपरेउभारिये । दियो सेनभोगआपलक्ष्मीजूलैपधारी हाटककीथारीझनझनपांवधारि ये । बैठेहेकुटीमेंपीठिदियेहियेरूपरँगेबिजुरीसीकौंधिगईनीकेननिहा रिये । देखि सोप्रसादबड़ोमनअहलादभयोलयोभागमानिपात्रधरेउई विचारिये ॥ ३१३ ॥

माधवदास कनौजिया ब्राह्मण रहै यह विचारैहैं लरिकास्याने होहिं तौ माता स्त्री की टहलको छोंड़िकै वैराग लेहिं तौलौं स्त्री पाइगई उलटी टहल लरिकनिकी आइपरी जैसे कोई सवारी चाहैहो उलटौ शिरपै घोडा को वाचा धर्यो ॥ १ ॥ दिखाई पालन सबको हरिही क-रैहै अब जो लरिकनको बटिबो विचारौं फिरि सगाई ब्याह फेरि छूछक इतनेमें शरीरकी छूछि है गई गृह कारज तौ बद्रीनाथके पहाड हैं कब छूटैंगे सह दिखाइकै निकार्यो जैसे बलखके बादशाहको ॥ २ ॥ हियेरूपरंग साधु द्वै जातिके एक भगवतकामी एक स्थानी एक गमनी; गमनी द्वै जातिके एक पर उपकारी एक अन्तकामी स्थिरी द्वै जातिके एक भगवतकामी अर्थकामी शोभादेशचारी ग्रामचारी ग्रामचारीके तीनभेद एक हटानव्रती एकस्थानव्रती एक ग्रानक माधवदास हरिकामी है सो साधुनके भेदहैं ॥ ३ ॥

खोलैजोकिंवारथारदेखियेनशोचपरेउ करेउलैयतनढूंढ़िवाही ठौरपायोहै । लायेबांधिमारीबैनधारीजगन्नाथदेवभेवजबजान्योपी ठिचिह्नदरशायो है । कहीतबआपमेंहीदियोजबलियोयाने माने अपराधपांवगहिकेक्षमायोहै । भईयोंप्रसिद्धबातकीरतिनमातकहूं सुनिकैलजातसाधुशीलयहगायो है ॥ ३१४ ॥ देखतस्वरूपसुधि

तनकीविसारिजातिराहिजातिमंदिरमेंजानेनहींकोईहै । लग्योशीत गातसुनोबातप्रभुकांपिउठे दईसकलातआनिप्रीतिहियेभोईहै । ला गेजबवेगवेगीजाइपरेसिंधुतीरचाहैजबनीरलियेठाढ़ेदेहधोईहै । करि कैविचारयोंनिहारिकहीजानेमैंतो देतहौअपारदुखईशतालैखोई है ॥ ३१५ ॥ कहाकरोंअहोमोपैरहोनहींजातनेकुमेटोव्यथागात मोकोव्यथाबहुभारीहै । रहैभोगशेषऔरतनमेंप्रवेशकरैतातेनहीं करोदूरिईशतालैटारीहै । वहूबातसांचयाकीगांसएकऔरसुनोसाधु कोनहँसेकोऊ यहमैंविचारीहै । देखतहीदेखतमेंखीड़ासीबिलाइगई नईनईकथाकहिभक्तिविस्तारीहै ॥ ३१६ ॥

भईयों प्रसिद्धि बात ॥ सो ज्यों ज्यों सुने जगन्नाथने माधवदासके लिये आप वैतपाये त्यों त्यों ये लजात अरुकहैं हमारा कुनाश भयोहै जिनको पुष्पादिसों पूजिये तिन्होंने वैतपाये साधुनके लक्षण हैं जैसे सुदामा कही मेरो दरिद्रगयो मेरेदरिद्रको ॥ ख्यातकियोहै सबकहे हैं सुदामा गरीब भक्तहै ॥ १ ॥ देहधोइये ॥ श्लोक ॥ यद्यद्वांछति मद्भक्तस्तत्तत्कुर्यामतद्रितः ॥ रह्योनहीं जात सब जग जगन्नानकी सेवा करैहै । जगन्नाथजी माधवदासकी सेवाकरैहैं ॥

कीरतिअभंगदेखिभिक्षाकोआरंभकियो दियोकाहूबाईपोताखी जतचलाइकै । देवोगुणलियोनीकेजलसोंप्रछालिकरिकरीदिव्यबाती दईहियेमेंबराइकै । मंदिरउजारोभयोहियेकोअँध्यारोगयोगयो फेरिदेखिबेको परीपाइँआइकै । ऐसेहैंदयालदुखदेतमेंनिहालकरैंकरैं लैजेसेवाताकोसकैकौनगाइकै ॥ ३१७ ॥ पंडितप्रबलदिग्विजयक रिआयोआपवचनसुनायोजूविचारमोसोंकीजिये । दईलिखिहारका शीजाइकैनिहारपत्र भयोअतिद्वारालिखीजीतिवाकीखीजिये । फे रिमिलिमाधवजूकोवैसेईहरायोएक खरकोबुलायोकहीचढ़ौजीउधी जिये । बोलेउजूतीबांधौकानगयोसुनिन्हानआनजगन्नाथजीतेलैच ढ़ायोवाकोरीझिये ॥ ३१८ ॥

भिक्षाको आरंभ ॥ दोहा ॥ धरतीतौ खूंदनसहै, काठसहै बनराइ ॥ कुवचनतौ साधू सहै, और पै सहो न जाइ ॥ १ ॥ हार ॥ कवित्त ॥ दूनो भलो सुपथ पै न कुपथ ऊनो भलो सूनो भलो गेह पै न बल साथ करिये । अनलकी लपट औ झपट भली नाहरकी कपटी के कपटसों दूरिपरिहरिये । यहै जगजीवन परम पुरुषारथहै पर घर, जाइ फेरि रससो निकरिये । हारिमानि लीजिये न कीजे वाद नीचनसों सर्वस्वदीजै पै न परवश परिये ॥ २ ॥ दोहा ॥ हारेतो हरिजन भले, जीतनदो संसार ॥ हारेहरिपै जाहिंगे, जीते यमके द्वार ॥ ३ ॥ जगन्नाथजीते तब जगन्नाथ कही गदहापै चढौ तेरे मुख न्याय है । जैसे वानेकही काजीके मुख न्यायहै ॥ ४ ॥

ब्रजहीकीलीलासबगावैंनीलाचलमांझमनभईचाहजाइनयननिहारिये । चलैवृन्दावनमगलगिएकगांवजहांवाईभक्तिभोजनकोलाईचावभारिये । बैठेयेप्रसादलेतलेतहगभरिअड़ोकहौकहाबातदुखहियेकोउधारिये । सांवरोकुँवरयहकौनकोभुराइलायेमाइकैसेजीवैसुनिमतिलैविसारिये ॥ ३१९ ॥ चलेऔरगांवजहांमहाजनभक्तरहैगहैमनमांझआगेविनतीहूकरीहै । गयेवाकेघरवहगयोकाहूऔरघरभावभीरतियाआयपाँयनमेंपरीहै । ऊपरमहंतकहीअबएकसंतआयोयहांतौसमाइनाहिंआईअरबरीहै । कीजियेरसोइँजोइसिद्धसोइलावोदूधनीकेकैपियावोनाममाधवआशभरीहै ॥ ३२० ॥ गयेउठिपाछेभक्तआयोसोसुनायोनामसुनिअभिरामदौरेसंगहीमहंतहै । लियेजाइपाइँलपटायेसुखपायमिलेझिलेघरमांझतियाधन्यतोसोंकंतहै । संतपतिबोलेमैंअनंतअपराधकियेजियेअबकहीसेवोसोतमानिजंतहै । आवतमिलापहोइयहीराखौबातगोइआयेवृन्दावनजहांसदाईवसंतहै ॥ ३२१ ॥

सवैया ॥ झीने झगामें दगाही भरी औ लगाही लगा सँगडोलतहैं । देखै पगान जगा जगमें सुभगा कुलकानिके गोलत हैं । नैनलगा सो लगाही गया सुभगा उर बान विलोलत हैं । लरिकानमें डोलत हैं जगन्नाथ हुरुरु कुरुरू करि बोलत हैं ॥ १ ॥ धूरिमें धूरिभरे सबगात

सुजात पुकारत डोलत हैं। अलकावलि राजति हैं बिथुरी सुथरी बरगोल कलोलत हैं। अंबुजलोचन चारुचितौनि सुभाल विशाल विलोलत हैं। लरिकानिमेंडोलत हैं जगन्नाथ हुरुरू कुरुरू करिबोलतहैं ॥ २ ॥ माधवदास पंडित सों बोले आपबड़े उतावले इतनेमें आऊं तोलों आपही चढिबैठे जबलाजमें दबिगयो तब माधवदासजी जगन्नाथजीसे बोले यह दिग्विजय करि आयोहो सो सब ख्वारकरी मेरहु बुरोभयो यह आछो न कियो मेरे बदले चढायो मैंतौ अपने बदले चढायोहै तब अपने हाथसों अपराध क्षमा करायो ये साधुताके लक्षणहैं ॥ ३ ॥ न्याये ॥ विद्या विवादाय धनं मदाय शक्तिः परेषां परिपीडनाय ॥ खलस्य साधोर्विपरीतमेतज्ज्ञानाय दानाय च रक्षणाय ॥ ४ ॥ पठकाः पाठकाश्चैव ये चान्ये शास्त्रचिंतकाः ॥ सर्वे व्यसनिनो मूढा यः क्रियावान् स पण्डितः ॥ ५ ॥ दोहा ॥ भक्ति विना श्रीभागवत, कहैं सुनैं जे अंध ॥ त्यों दर्वी व्यंजननिमें, स्वाद न जानेमंद ॥६॥ छप्पय ॥ पंडित पढि भागवत भक्ति भक्तनिजू सिखवत ॥ महिषी ज्योंपयस्रवत आपसो स्वाद न पावत। मृगजु नाभि नहिं लखै लेत तृण शिलमधि घ्रानै। कट आगर करपरवहे ये मरम न जानै। तैसे दर्वीन्याय चतुरभुज भक्ति विना मंडक धुनि। दर्पण दियो जुनैनबिन त्यों अंधअंधेरो डोरिपुनि ॥ ७ ॥ सप्तमे ॥ यथाखरश्चंदनभारवाही भारस्य वेत्ता न तु चंदनस्य ॥ तथाल्पविज्ञाः श्रुतिशास्त्रयोगान्मद्भक्तिहीनाः खरवद्वहंति ॥८॥ तापै गंगला तेलीको दृष्टांत और पंडितको दृष्टांत ॥ ९ ॥ संतपतिः ॥ दोहा ॥ नैन निकट काजर बसै, पैदर्पण दरशाइ ॥ ज्यों साधुनके संगबिन, हरि मुख छबि न लखाइ ॥ ५ ॥ कवित्त ॥ वेदहूकी निंदाकरै साधुहूकी निंदाकरै गुरुकी आज्ञा विष्णु शिवभेदमानिये। नामहीके आसरे आइ बहुपाप औ अश्रद्ध वानहीसों उपदेशलै बखानिये। एक अर्थ वाद अरु व्याख्या कुतर्क करै महिमा सुनत हिये अश्रद्धा न आनिये। नामकी समान सब धर्म समान कहै नामन अफल अपराध दश जानिये ॥

देखिदेखिवृन्दावनमेंमगनभये गयेश्रीविहारीजूकेचनातहीपायेहैं।

कहिरह्योद्वारपालनेकमैंप्रसादलालयमुनारसालतटभोगकोलगायेहैं। नानाविधिपाकधरैस्वामीआपध्यानकरैबोलैहरिभावैनाहिंवेईले खवायेहैं।·पूछेउसोजनयोंढूंढ़िलायोआगेगायो सबतुमतौउदासहासरसस मझायेहैं॥ ३२२॥ गयेब्रजदेखिबेकोभांडीरमैंपैमरहेनिशिकोदुराइ पाइक्रमलैदिखायेहैं। लीलासुनिबेकोहरियानेगांवरहैंजाइगोबरहूपा थिपुनिनीलाचलधायेहैं। घरहूकोआयेसुतसुखीसुनिमातावार्णीमार गमेंसुपनदेकैवणिकमिलायेहैं। याहीविधिनानाभाँतिचरितअपारजा नोजितेकछुजानेतितेगाइकैसुनायेहैं॥ ३२३॥ मूल॥ श्रीरघुनाथ गुसाईगरुड़ज्योंसिंहपौरिठाढ़ेरहैं। शीतलगतसकलातविदितपुरुषो त्तमदीनी। शोचगयेहरिसंगकृत्यसेवककीकीनी। जगन्नाथपदप्रीति निरंतरकरतखवासी। भगवतधर्मप्रधानप्रसन्ननीलाचलवासी। उत्क लदेशउड़ीसानगरबैनतेयसबकोउकहै॥ श्रीरघुनाथगुसाई गरुड़ ज्योंसिंहपौरिठाढ़ेरहैं॥

बिसारिये॥ दोहा॥ जो मोसों मोसों करौ, तौ रनहै कहुँ ठौर॥ तुमहौ जैसी कीजियो, अहो रसिक शिरमौर॥ तुमतौ उदास हास रस -समझायो तुम जगतसों विरक्तभये सोतौ आछो पै हरिसों विरक्त भये सो आछोनहीं माधवदास कही मैं तुम्हारे ठाकुरकी सचिक्कणता देखि सो प्रसं- ग॥ २॥ निशिको दुराइ खाइ क्रमसों दिखाई है जब डरे तब कही मथुरा विश्राम घाट झारो संत चरणोदक शीत सेचन करो सोई कियो मूलमेंनाभाजीनेधरे हैं खेमगुसाई खेमकर लीला सुनिबेको हरियानेगोलीगां वरहैं गोबरपाथो सो प्रसंग॥

टीका॥ अतिअनुरागघरसंपतिसोंरहेउपागिताहकरित्यागनीला चलकियोवासहै। धनकोपठावैपितापैपनहींभावैकछूदेखिबोसुहावै महाप्रभुजूकोपासहै। मंदिरकेद्वाररूपसुंदरनिहारोकरै लग्योशीत गातसकलातदईदासहै। शोचसंगजाइबेकीरीतिकोप्रमानवहै बसेसब जानौमाधवदाससुखरासहै॥ ३२४॥ महाप्रभुकृष्णचैतन्यजूकीआ

ज्ञापाइआयेवृन्दावनराधाकुंडवासकियोहै । रहनिकहनिरूपचहनि कहनिसकैथकैसुनितनभावरूपकरिलियोहै । मानसीमैंपायोंदूधभा तसरसातहिये लियेरसनारीदेखिवैदकहिदियोहै । कहांलौंप्रतापक हौंआपहीसमझिलेहुदेहुवहीरीझिजासोंआगेपायजियोहै ॥ ३२५ ॥

भावरूप ॥ दोहा ॥ चढिकर मैन तुरंग पर, चलिवो पावक माहिं ॥ प्रेमपंथ ऐसो कठिन, सब कोउ निवहत नाहिं ॥ १ ॥ यह स्वरूप मोमरूपी भावना हरिकी अग्निरूपसों कैसे निवहै या शरीरको सखी भावरूप अष्टधातुको कियो अग्निरूप रस तामें प्रवेश कियो ॥ दोहा ॥ भजन रसिक रघुनाथजी, राधा कुंडनिवास ॥ लोन तक्र ब्रजको लियो, आसुनहीं कछुआस ॥ २ ॥ राधाकुंडवास ॥ यथा राधा तथा विष्णुः यथाकुण्डप्रियं तथा ॥ सर्वगोपसु सेवैका विष्णोरत्यंतवल्लभा ॥ ३ ॥ छप्पय ॥ रतन जडित नगखचित घाट सिढियनकी शोभा । गुंजत भौंर मराल भरे आनँदकी गोभा ॥ माधव काज तमाल वृक्ष सवही झुक झूमैं । छविकी उठति तरंग निरखि नंदलाल जुघूमैं ॥ श्री महारानी राधिका अष्ट सखिनके झुंड । डगर बहारें साँवरो, सु जय जय राधाकुंड ॥

मूल ॥ श्रीनित्यानंदकृष्णचैतन्यकीभक्तिदशोंदिशिविस्तरी । गौड़देशपाखंडमेटिकियोभजनपरायन । करुणासिंधुकृतज्ञभयेअगतिनगतिदायन । दशधारसआक्रांतिमहतजनचरणउपासे । नामलेत निःपापदुरिततिहिनरकेनासे । अवतारविदितपूरबमहिउभयमहतदेहीधरी । श्रीनित्यानंदकृष्णचैतन्यकीभक्तिदशोंदिशिविस्तरी ॥ ॥ ७२ ॥ नित्यानंदकीटीका ॥ आयबलदेवसदावारुणीसोंमत्तरहे चाहेमनमान्योप्रेममत्तताईचाखिये । सोईनित्यानंदप्रभुमहंतकीदेही धरीभरीसबआनितऊपुनिअभिलाषिये । भयोबोझभारीकिहूंजातन सँभारीबातठौरठौर पारषदमांझधरिराखिये । कहतकहतअरुसुनत सुनतवाकेभयेमतवारेबहुग्रंथताकीसाखिये ॥ ३२६ ॥

देही धरी ॥ पद ॥ अब तौ हरी नामलौ लागी साधौ हरी नामलौ

लागी । सब जगको यह माखन चोरा नाम धन्यो वैरागी । कहँ छोड़ी वह मोहन मुरली कहँ छोड़ी सब गोपी । मूंड मुड़ाइ डोरि कटि बांधी माथे मोहन टोपी । मात यशोमति माखन कारण बांधे जाको पांव । श्यामकिशोर भये नवगोरा चैतन्य जाको नांव । पीताम्बरको भाव दिखावै कटिकोपीनकसे । दास भक्तकी दासी मीरा रसना कृष्णवसे ॥ १ ॥ दशमे ॥ आसन्वर्णास्त्रयो ह्यस्य गृह्णतोऽनुयुगं तनूः । शुक्लो रक्तस्तथा पीत इदानीं कृष्णतांगतः ॥ २ ॥ एकादशे ॥ कृष्णवर्णंत्विषा कृष्ण सांगोपांगास्त्रपार्षदाः ॥ यज्ञैःसंकीर्त्तनप्राया यजंतिहि सुमेधसः ॥ ३ ॥ चाखिये॥दोहा ॥भूतलगे मदिरापिये, सबकाहू सुधि होइ॥ प्रेम सुधारस जिन पियो, तिहि न रहै सुधिकोइ ॥ ४ ॥ जैसे गंगा यमुना सरस्वती महिमा गौर नाम गौरतनु अन्तर कृष्ण स्वरूप ॥ ५ ॥

टीकाश्रीकृष्णचैतन्यमहाप्रभुकी ॥ गोपिनकेअनुरागआगेआप हारेश्यामजान्यो यहलालरंगकैसेआवैतनमें । योंतोसबगौरतनीनख शिखबनीठनी खुलेउयोसुरंगरंगअंगरंगेबनमें । श्यामताईमांझसों ललाइहूसमाइजाइतातेमेरेजानफिरिआईयहमनमें । यशुमतिसुतसो ईशचीसुतगौरभयेनयेनयेनेहचोजनाचेनिजगनमें ॥ ३२७ ॥

हारेश्याम ॥ पंचाध्यायी ॥ भगवानपि तारात्रीः शरदोत्फुल्लमल्लिकाः ॥ वीक्ष्य रंतुं मनश्चक्रे योगमायामुपाश्रितः ॥ १ ॥ कवित्त ॥ पाग जिमिरागही भन्यो है या बांसुरीमें ताको ताने शिखा सुनि गोपी कांत चतिहै । कानमध्य तूलदिये दिये जैसी बाती बरै नाहिं नै उपाइ कोऊ वाद जहीं पचतिहै । वनके पखेरू उठि पांखन बयारि करैं गोकुल की कुलवधू कैसे कै बचतिहै । जरिगई अतिताती ताते तकिनेही कान्हें फूंकिफूंकि गहैं तऊ आगरी नचतिहै ॥ २ ॥ एक ओर बीजना ढुरावति चतुर नारि एक ओर झारी लिये करजलपानकी । पाछेते खवासिनी खवावैं पान खोलि खोलि राधे मुख लाली मानों तम करतानकी ॥ ताही छिन बांसुरी बजाई नँदनन्दन जू आई सुधि वाही ब्रज कुंज की

लतान की। बांयेंगिरि नीरवारी दाहिने समीर वारी पाछे पानदान वारी आगे वृषभान की ॥ ३ ॥ वेमगदापग अंधनिको इन चालिबो आछिनिहूं को नियाऱ्यो। सूरति थाह दिखावत वे इन प्रेम अथाह के वारिधि डाऱ्यो। वेबशवास बसावत हैं इन बास छड़ाइ उज्यारनिल्याऱ्यो। देखो अहो हरि की बंसुरी इन कैसे सुवंशको नाम बिगाऱ्यो ॥ ४ ॥ दियाके उज्यार तिय दूधसीरो करतिहीं संगवाके आसपास भावजन भीरकी। लौनेहू ते सुलख सलोनी साटि सोनेकीसी गौनकीसी आई किधौं आई सुनासीर की ॥ काशी राम रूपभरी रतिहूते अति खरी कहूंवाके कान परी बंशी बलवीरकी ॥ सानो लागी तीरकी यापरी है अहीरकी सँभार न शरीरकी न ओरकी न क्षीरकी ॥ ५ ॥ भूलीसी फिरति फिराति कुंज कुंजनिमें केतौ समझाइ रही बैठीरहो गेहमें। तबतो न मानी कान्ह सुनिबेको जातितान मानी नहीं कान्ह तरुणाई केरेतेहमें। अब तौ प्रह्लाद डसी विरह के भुअंगमने अंग रोमरोम विष रमिगयो शरीर में। सांसरी भरन लागी आंसुरी ठरन लागी पांसुरी निकासि आई बांसुरीके नेहमें॥२॥इन जेते सुरलीने तेते बेधउर कीने जेते राग तेते दाग रोम रोम छीजिये। अन्तरकी सूनीघर करैसूने औरनिके शेषसुनि श्रवण बसेरो बन कीजिये ॥ ताननकी तीखीउर बानन चलाये देत चीरी चीरी अंगनि तुणीन तनकीजिये। बांसुरीबसेगी तौ हम न बसेंगी श्याम बांसुरी बसाइ कान्ह हमें विदा कीजिये॥१॥ बाजी उठिधाई बाजी देखिबेको दौरी आई बाजी सुनि आई पौरि बंशी गिरिधरकी। बाजी हँसि बोलैं बाजी संगलगी डोलैं बाजी भई बौरि बाजिन बिसारी सुधि घरकी।बाजी न धरत धीर बाजि न संभारे चीर बाजिन की छाती पर पीर दावानलकी। बाजी कहैं बाजी पुनि बाजीकहैं कहां बाजी बाजीकहै बाजीबंशी चंचलचतुरकी॥३॥ श्लोक॥ तासां तत्सौभगमिदं वीक्षमाणश्चकेशवः। प्रशमायप्रसादाय तत्रैवांतरधीयत ॥ ४ ॥ कवित्त ॥ जाही कुंज पुंजतर गुंजत भवँर भीर ताही तरुवर तर शीश धुनियत हैं। जाही रसनासे कही रसकी रसीली बात ता-

ही रसनासों आप गुण गुनियतहैं । आलम विहारी लाल हियेते अचेत भये येहो दई हेत खेत कैसे लुनियतहैं॥जेइ कान्ह आंखिनके तारेहुते निशि दिन तेई कान्ह काननि कहानी सुनियतहैं॥६॥मंजु रची रसऊरुचिके सुगुमा नकी मेंड़ खसाइ गयोरी।थाह बताइहमैं सजनी मँझधारमें छांडिनशागयोरी। खेल संयोगकी नेकोदिखाइ वियोग फनीये कटाइ गयोरी । प्रेमके फंद फँसाइगयो ब्रजमेंघरकान्ह बसाइ गयोरी ॥ २ ॥ कदमकरील तीर पूछ ति अधीर गोपी आनन रुखौहौंगरौं खरौई भरौहौंसों । चौरहौ हमारो प्रेम चौत रानि ताऱ्यो गदरानिकसि भाज्यो ह्वैके करिल जौहौं सों । ऐसेरूप ऐसेभेषमेंहू दिखैयो अति देखतहिं रसखानि नैनचुभोंहौंसों । मुकुटझुकौहौं हियहारहैं हरौहौं कटि फेटापियरौहों अंगरंगसबरौ हौंसों ॥ ३ ॥ श्लोक ॥ चूतप्रियालपनसासनकोविदारजम्ब्वर्कबिल्वबकुलांम्रकदंबनी पाः । येन्ये परार्थभविका यमुनोपकूले शंसं तु कृष्ण पदवीं रहितात्मनां तः ॥ ४ ॥ पंचाध्यायी ॥ यमुनाके विटप पूछि भई निपट उदासी । क्यों कहिहै सखि महाकठिन येतीरथवासी ॥ श्लोक ॥ पुनः पुलिनमागत्य कालिंद्याः कृष्णभावनाः । समवेता जगुःकृष्णं तदागमनकांक्षया ॥ ॥ ५ ॥ तब गोपी अधीनह्वै वृक्षनसों बलिनसों पूछतभई महा विह्वल शरीरह्वैगये सोकहैं हैं तुमकहूं श्रीकृष्णदेखे हैं ॥ श्लोक ॥ भजतोपिनवै केचिद्भजंत्यभजतः कुतः । आत्मरामा ह्याप्तकामा अकृतज्ञा गुरुद्रुहः ॥ ६ ॥ नपारयेहं निरवद्यसंयुजां स्वसाधुकृत्यं विबुधायुषापि वः । यमांभजन दुर्जरगेहशृंखलां संवृश्च्य तद्वत प्रतियातु साधुना ॥ ७ ॥ दोहा ॥ कसत कसौटी हेमको, लोकरीति यहनेम । प्रेम नगरकी पैठमें भयो कसौटी हेम ॥ ८ ॥ वातैं श्रीकृष्णजी गोपिकनिके आगेहारे इनके प्रेमको देखिकै महा प्रफुल्लित ह्वैके हाथजोरिके आइमिले ॥ ९ ॥

आवैकभूप्रेमहेमपिंडवततनहोइकभूसंधिसंधिछूटिअंगबाटिजातहै औरएकन्यारीरीति आसूपिचकारीमानों उभैलालप्यारीभाव

सागरसमातहै । ईशताबखानिकहाकरौसोप्रमाणयाको जगन्नाथक्षे त्रनेत्रनिरखिसाक्षातहै । चतुर्भुजषटभुजस्वरूपलैदिखायदियोदियो जोअनूपहितबातपातपातहै॥३२८॥कृष्णचैतन्यनामजगतप्रकटभ योअतिअभिरामलैमहंतदेहीधरीहै । जितोगौड़देशभक्तिलेशहूनजा नेकोऊ सोऊप्रेमसागरमेंबोरेउकहिहरीहै । भयेशिरमौरएकएकज गतारिबेकोधारिबेकोकौनसाखिपोथिनमेंधरीहै। कोटिकोटिअजामी लवारिडारेदुष्टतापैऐसेहूमगनकियेभक्तिभूमिभरीहै ॥ ३२९ ॥

आवै कभूप्रेम ॥ पद ॥ रासमंडल बने नृत्य नीकी बनी । गौर गोविंदके नयन अरविंदसों छटत आनंद मकरंद चहुँदिशि घनी । ताल बस मृदु चरण धरत धरणी हुलसि विलस हस्तक भेद चलन लोयन अनी । फुलका आयाद घन कंपभरि थरहरनि परसत प्रस्वेद सुरभेद भारी बनी । अहित सित आरकत धरत जड़ता जबहिं बाहिठाढ़े रहत गहत वानक फनी । निपट अवसन्न जब तबहिं क्षिति झुकि परत अंग नहिं हलत गत श्वासकी निगमनी । ता समय जमतमें जीवजेतिक बसत प्रेम आनंदके होत सबरेधनी । चकृत सब पारषद शब्द मुखमें मिलत लगी टकटकी यह सुख मनोहर भनी ॥

मूल ॥ शूरकवित्तसुनिकौनकविजोनहिंशिरचालनकरै । उक्ति चोजअनुप्रासवरनअस्थितअतिभारी । वचनप्रातिनिर्वाहअर्थअद्भु तनुकधारी । प्रातिबिंबितादिव्यदृष्टिहृदयदेहरिलीलाभासी । जन्म कर्मगुणरूपसबैरसनापरकासी । विमलबुद्धिगुणऔरकीजोयहगुणश्र वणनिधरै । शूरकवित्तसुनिकौनकविजोनहिंशिरचालनकरै ॥७३ ॥

शिरचालनकरै ॥ श्लोक ॥ किंकवेस्तस्य काव्येन किं काण्डेन धनु- र्भृतः । परस्य हृदये लग्ना यन्न घूर्णयते शिरः ॥ २ ॥ दोहा ॥ किधौं शूरको शर लग्यो, किधौं सूरकी पीर । किधौं सूरको पदसुन्यो, यों शिर धुनत अधीर ॥ २ ॥ कवित्त ॥ जासों मनहोत तासों तन मन दीजि- यत जासों मनभंग तासों कछू न विशेषिये । बोलै तासों बोलि अन-

बोलै तासों अनबोलि प्रेमरस चाहै तासों प्रेमरस पेखिये । प्रीतिरीति चाहै तासों प्रीति रीति जानियत नातरु अनेक रूप सबही अलेखिये । नर कहा नारी कहा खूबी महाबूबी कहा आपको न चाहै ताहि आपहू न देखिये ॥ ३ ॥ कहावत ऐसे त्यागी दानि । चारि पदारथ दिये सुदामा गुरुके सुत दिये आनि । विभीषणै निज लंकादीनी प्रेमप्रीति पहिंचानि । रावणके दश मस्तक छेदे दृढ़गहि शारँगपानि । प्रहलादकी जिन रक्षा-कीनी सुरपति कियो निधानि । सूरदासपर बहुत निठुरता नैननहूं की हानि ॥ ४ ॥ वचन प्रीति ॥ ऊधो यह निश्चय हम जानी । खोयो गयो नेह न गुनपै प्रीति कोठरी भई पुरानी । यह लै अधर सुधारस सींची कियो पोष बहु लाड़ लड़ानी । बहुरौ कियो खेल शिशुको यह गृह रचना ज्यों चलति बिजानी । ऐसी हितकी रीति दिखाई पन्नग कांचुरि ज्यों लपटानी । फिरिहू सुरति करत नहिं ऐसे त्यागत भँवर लता कुम्हिलानी ॥ बहुरंगी जित जाति तिते सुख एक रंगी दुख देह दहानी । सूरदास पशु-बनी चोरकी खायो चाहैं दाना पानी ॥ ५ ॥

मूल ॥ ब्रजवधूरीतिकलियुगविषेपरमानंदभयोप्रेमकेत । पौगंड बालकिशोरगोपलीलासबगाई । अचरजकहाइहिबातहुतौयहलौजु सखाई । नयननिनीरप्रवाहरहतरोमांचरैनिदिन । गदगदगिराउ दारश्यामशोभाभीजेउतन । शारंगछापताकीभईश्रवणसुनतआवेस देत । ब्रजवधूरीतिकलियुगँविषेपरमानंदभयोप्रेमकेत ॥ ७४ ॥ श्रीकेशवभटनरमुकुटमणिजिनकीप्रभुताविस्तरी । काश्मीरकीछा पपायतापनजगमंडन । दृढ़हरिभक्तिकुठारआनधर्मविटपविहंडन । मथुरामध्यमलेच्छवदकरिवरवटजीते । काजीअजितअनेकदेखिप रचेभयभीते । विदितबातसंसारसबसंतसाखिनाहिंनदुरी । श्रीके शवभटनर मुकुटमणिजिनकीप्रभुताविस्तरी ॥ ७५ ॥ टीका श्रीकेशवभट्टकी ॥ आपकाश्मीरसुनीवसतविश्रामतीरतुरकसमूह द्वारयंत्रइकधारिये । सहजसुभायकोऊनिकसतआइताको पकरत

धाइताकेसुनतनिहारिये । संगलैहजारशिष्यभेरेभक्तिरंगमहा अरे वाहीठौरबोलेनीचपटटारिये । क्रोधभरिझारेआयसुवापैपुकारेवेतो देखिसवैहारेमारेजलबोरिडारिये ॥ ३३० ॥

पौगंड बाल किशोर ॥ रसामृते ॥ कौमारं पंचमादान्तं पौगंडं दशमावधिः ॥ आषोडशं च कैशोरं यौवनं स्यात्ततः परम्॥ १॥हरिकुवारः॥ दोहा ॥ व्यास विषयजल बटिरह्यो, नीचसंग जलधार ॥ हरिकुठारसों प्रीतिकरि, कटत न लागे बार ॥ २ ॥ वाराहे ॥ अहो मधुपुरी धन्या वैकुंठाच गरीयसी । विना कृष्णप्रसादेन क्षणमेकं न तिष्ठति ॥ ३ ॥ जाके सुनत निहारिये ॥ श्लोक ॥ मणिमंत्रमहौषधीनामाचिंत्यशक्तिः ॥ ४ ॥ जलबोरिडारिये ॥ कवित्त ॥ गये सबदौरि जहां काजीकी जुपारियति कियो तिनसोई अजू कीजिये पुकारहै । औ जुकोऊऐसो एक आयोहै जुमथुरामें संगहैं हजार शिष्य तेजका न पारहै । लैके झरकारे धरकारे मति भांतिकह्यो क्योंरे अधर्मी हिंदु धमकियो ख्वारहै । होहु तुम रांडकियो पुरुषारथ भांड जोई हरिसों विमुख ताको नहीं पारावारहै ॥२॥ काजी अति डरेउ हिये परेउ खरभरेउ यह कौमआई अरेउ अबकसे का उपाइ मैं । रचे भूत बेताल मूठि दीठि मायाजाल सुदर्शन किये ख्याल सहज सुभाइ मैं । असुरके तनुमें सो अगिनि लगाइ दई दई कहो दई कहा कहा किया हाइमैं । येतोहैं बडे प्रतापी मैं तो रहौं महापापी अहो मतिथापी आवैं परो भेद पाइ मैं ॥ २ ॥ आयपाइँपरेउनीर नयननि ते ढरेउ वैन कहैं मरेउ मरेउ प्रभु मेरी रक्षा कीजिये । तब स्वामी कह्यो तोहिं लैहौं मैं बचाय पुनि एकहै उपाइ सीख सुनि मेरी लीजिये । फेरि जो अधर्म ऐसो करौगे न कर्म आव मेटौ सबगर्भ सदा शीतल है जीजिये ॥ और जितेवादी हरि विमुख प्रसादी तिन्हैं लीये सतमारगमें नौधारस पीजिये ॥ ३ ॥ जिते हिंदू तुरुकनि सैकरानि मारिहारे भरेदुःखभारे वेतो स्वामि जूपै आये हैं ॥ प्रभु कह्यो आवो अब दुःख जनिपावो कैसो राइ गुणगावो यमुना जल अन्हाये हैं । महीन एक बस्तर लाये तिनकोलै

पहराये हिंदूको चिह्नपाये जग यश गाये हैं । तुरक तिया दाह्म धरीआइ सब पाई परी करी प्रभु दया नरनारी दरशाये हैं ॥ ४ ॥

मूल ॥ श्रीभटसुभटप्रगटयोअघटरसरसिकनमनमोदघन । मधुरभावसंमिलितललितलीलासुवलितछवि । निरखतहरषतहृदैप्रेमबरषतसुकलितकवि । भवनिस्तारनहेतदेतदृढभक्तिसवननित । जासुयशशशिउदैहरतअतितमभ्रमश्रमचित । आनंदकंदश्रीनंदसुतश्रीवृषभानुसुताभजन । श्रीभटसुभटप्रगटयोअघटसरसिकनमनमोदघन ॥ ७६ ॥ श्रीहरिव्यासतेजहरिभजनबलदेवीकोदीक्षादई । खेचरनरकीशिष्यनिपटअचरजयहआवै । विदितबातसंसार संतमुखकीरतिगावै । वैरागिनिकेवृन्दरहत सँगश्यामसनेही । ज्योंयोगेश्वरमध्यमनोशोभितवैदेही ॥ श्रीभटचरणरजपरसिकैसकलसृष्टिजाकीनई ॥ श्रीहरिव्यासतेजहरिभजनबलदेवीकोदीक्षादई ॥७७ ॥

मधुर कहिये माधुर्य शृंगाररस ॥ पद ॥ राधिका आजु आनंदमेंडोलैं॥ सांवरेचंद गोविंदके रस भरी दूसरी कोकिला मधुरसुरबोलैं ।पहर पट नीलता कनक हीरावली हाथलै आरसी रूप तोलैं । जै श्रीभट आजु नागरि नीकी बनी कृष्णके शीलकी ग्रंथ खोलैं ॥ २ ॥ संतो सेव्य हमारे श्री प्रियप्यारे वृन्दाविपिन विलासी । नंद नँदन वृषभानु नंदनी चरण अनन्य उपासी । नमतप्रणय वश सदा एक रस विविध निकुंज निवासी । जै श्रीभट युगल बंशीवट सेवत मूरति सब सुखरासी ॥ २ ॥ तौ नंद वृषभानु कहैं इनके उपासिक श्री राधाकृष्णके संतहैं ॥ ३ ॥ दोहा ॥ साधुसराहैं सो सती, यती योषिता जानि ॥ रज्जबसांचे शूरको, वैरीकरै बखानि ॥

टीकाश्रीहरिव्यासदेवकी ॥ चढ़थावरगावबागदेखिअनुरागभयोलयोनितनेमकरिचाहैपाककीजिये । देवीकोस्थानकाहूवकरालैमारोआनिदेखतगिलानिइहांपानी नहींपीजिये । भूखेनिशिभईभक्तिते र्जमिटिगईनई देहधरिलईआइलखिमतिभीजिये । करौजूरसोईकौन

करैकछूऔरभोईसोईमोकोदीजैदानशिष्यकरिलीजिये ॥ ३३१ ॥
कहीदेवीशिष्यसुनिनगरकोसटकीयोंपटकीलैखाटजाकी बड़ोशिरदा
रहै । बढ़ीमुखबोलैंहौंतोभईहरिदासदासीजोनदासहोहुतौपैअभीडा
शैमारै । आयेसबभृत्यभयेमानोंतननयेलयेगयेदुखपायतापकिये
भयपारहै । कोऊदिनरहेनानाभोगसुखलहेएक श्रद्धाकेश्वपचआयो
पायोभक्तिसारहै ॥ ३३२ ॥

पायो भक्तिसार है ॥ श्लोक ॥ अश्वत्थं काकविष्ठाया जातइत्युच्यते बुधैः । देवानामपिनृणांवै पूज्य एव न संशयः ॥ पद ॥ जाति भेद जो करै भक्त सो तौ बड़ो पापी । ताते भलो वधिक परनिंदक गुरु-तालप मदरापी । बायसकी विष्ठासों उपजै पीपर नाम कहावै । परिकर्मा दंडवत करै द्विज सब जग पूजन आवै । तुलसी जो घूरेपै उपजै दोष न कोई धरई । ता तुलसीके पात फूल दल हरि पूजनको रहई । कूकरमरै गोमती संगम अश्व चक्र ह्वैरहही । तिन चक्रनको सब जग वन्दै दोष न कोऊ कहही । ज्यों जल बरषै पुरवीथिनमें गंगामें बहि आवै । सो तिहि परशि महा अपराधी कल्मष सबै नशावै । सेन धना रैदास कबीरा और किते परमाना । इनको दरशन दीनो है हरि प्रगट सबै जग जाना ॥ योग यज्ञ जप तप व्रत संयम इनमें तौ हरि नाहीं । गंगाराम हित नवल युगलवर बसत भक्त उरमाहीं ॥ २ ॥

मूल ॥ अज्ञानध्वांतअन्तहिकरनाद्वितियदिवाकरअवतरचो । उपदेशनृपसिंहरहतनितआज्ञाकारी । पक्ववृक्षज्योंनायसंतपोषकउप कारी । बानीभोलारामसुहृदसबहिनपरछाया । भक्तचरणरजयांचि विशदराघवगुणगाया । करमचंदकश्यपसदनबहुरिआइमनोंवपुध रचो । अज्ञानध्वांत अंतहिकरनद्वितीयदिवाकरअवतरचो ॥ ७८ ॥
श्रीविठ्ठलनाथब्रजराजज्योंलाललड़ाइकेसुखलियो । रागभोगनितवि विधहरतपरिचर्य्याततपर । शय्याभूषणवसनरुचिररचनाअपनेकर वहगोकुलवहनंदसदनदीखतकोजोहै । प्रगटविभवजहँघोषदेखिसुर

पतिमनमोहै । वल्लभसुतवल्लभजनकेकलियुगमेंद्वापरकियो ।
श्रीविट्ठलनाथव्रजराजज्यों लाललड़ाइकेसुखलियो ॥ ७९ ॥ टीका॥
कायथत्रिपुरदासभक्तिसुखरासभयो कऱ्यो ऐसेपनशीतदगलापठा
इये । निपटअमोलपटहियेहितजटिआवेतातेअतिभावैनाथअंगपहि
राइये । आयोकोऊकालनरपतितेविहालकियोभयोईशव्यालनेकुघ
रमेंनखाइये । वहीऋतुआईसुधिआईआंखिपानभिरि आई एकखा-
तिदीठिआईवेलिलाइये ॥ ३३३ ॥

चरण रज यांचि देव प्रसन्न कियो वरमांगौं वह चतुर अघवंश धन नहीं पुत्रको सोनाके कटोरामें दूध प्यावते देखो ऐसे आत्म हरि ज्ञान ॥ ॥ १ ॥ व्रजराज ज्यों ॥ पद ॥ जे वसुदेव किये पूरण तप तेइ फल फलत श्री वल्लभ देव । जे गोपाल हुते गोकुलमें तेई अब आनि वसे करि गेह । ते वे गोपवधू हुती व्रजमें अवतेई वेद ऋचा भई येह । छीतस्वामी गिरिधरन श्री विट्ठल वेई वेई वेष पैई कछु न सँदेह ॥ २ ॥ भेदियाकी प्रेरणा दई आये इनवे ॥ ३ ॥

बेंचिकेबजारयोंरुपैयाएकपायो ताको लायोमोटोथानमात्ररँगला
लगाइये । भीज्योंअनुरागपुनिनयनजलधारभीज्योभीज्योदीनताई
धरिराखो औरैआइये । कोऊप्रभुजनआइसहजदिखाइदई भईमनदि
योलैभँडारीपकराइये । काहूदासदासीके नकामकोपैजाउलैकाविन
तीहमारीजूगुसाईनसुनाइये ॥ ३३४ ॥ दियोलैभंडारीकररासेधरिप
टवायेनिपटसनेहीमाथवोलेअकुलाइके । भयेहेजड़ायेकोऊवेगिहीउ
पायकरैविविधउठाये अंगवसनसुहाइके । आज्ञापुनिदईयोंअँगी
ठीवारिदईफेरिवहीभई सुनिरहेअतिहीलजाइके । सेवकवुलाइक
हीकौनकीकवाइआईसवैसोसुनाईएकवहलीवचाइके ॥ ३३५ ॥
सुनीनत्रिपुरदासबोल्योधननाशभयो मोटोएकथानआयोराख्योहै
बिछाइके । लावोवेगियाहीक्षणमनकीप्रवीनजानिलायोदुखमानिक्यों
तिलईसोसिमाइके । अंगपहराईसुखदाईकापैगाईजातिकहीजबबात

जाड़ोगयोभरिभाइके । नेहसरसाईलैदिखाईउरआईसबै ऐसीरसि काईहृदयराखीहैबसाइके ॥ २२६ ॥

नेह सरसाई ॥ दोहा ॥ हारिरहीम ऐसी करी, ज्यों कमान शर पूर ॥ खैंचि आपनी ओर को, डारि दियो अति दूर ॥ १ ॥ यह कहिकै मंदिरके द्वार पै गोविंद कुण्डकी छत्री पै जाय बैठे गोसाँईका टहलुवा प्रसाद लायो सो न लियो तब नाथजी आपही लाये ॥ दोहा ॥ खैंचि चढ़निटीली ढरनि, कहो कौन यह प्रीति ॥ आज काल्हि मोहनगही, बंश दिया की रीति ॥ कवित्त॥ जबलौं न कोऊ पीर लागतिहै अपने उर तबलौं पराई पीर कैसे पहिं चानिहौं । आजुलों न जानतहौं लग्योहै नेह काहूसों जबनेह लागिहै तौ हितउनमानिहौं । कहत चतुर कवि मेरे कहिबे की तौ एकौ न रहे गी तब समझि जिय आनिहौं । जैसे नीके मोहिं तुम लागतहो प्यारेलाल तैसो नीको तुम्हैं कोऊ लागिहै तौ जानिहौं ॥ १ ॥ तब रहीम पीठि फेरि लई नाथजी थार धरिके अंतर्द्धान होत भये तब यह पद गायो ॥ पद ॥ छबि आवन मोहनलालकी । लाल काछनी काछे कर मुरली पीत पिछौरी सालकी । बंक तिलक केसरिको किये द्युति मानों विधुबा लकी । सरसत नाहिं सखी मोमनते चितवनि नयन विशालकी । नीकी हँसनि अधर सधरनिकी छबि छीनी सुमन गुलालकी ॥ जलसों डारि दियो पुरइनपर डोलनि मुक्ता मालकी ॥ आपमोलबिन मोल न डोलनि बोलनि मदन गोपालकी । यह स्वरूप निरखै सोइ जानै इस रहीम के हालकी ॥ २ ॥ कमलदल नैननिकी उनमानि । बिसरत नाहिं सखी मो- मन ते मंद मंद मुसकानि । यह दशननिद्युति चपलाहूते महा चपल चम- कानि । वसुधाकी वशकरी मधुरता सुधापगी बतरानि । चढ़ी रहे चितउर विशालकी मुक्तमाल थहरानि । नृत्य समय पीतांबर हूकी फहर फहर फहरानि । अनुदिन श्रीवृंदावन ब्रजते आवन आवन जानि । छबि रहीम चितते न टरतिहै सकल श्यामकी बानि ॥ ३ ॥ दोहा ॥ मोहन छबि नैननिबसी, परछबि दृगनि सुहाइ । भरी सराइ रहीम ज्यों, पथिक

आइ फिरिजाइ ॥ ४ ॥ अंतर दाव लगीरहै, धुवां न प्रगटै सोइ । कै जिय जानै आपनो, कै जाशिर बीती होय ॥ ५ ॥ तिहि रहीम तनमन दियो, कियोहिये में भौन । तासों दुख सुख कहनकी, बात रही अब कौन ॥ ॥ ६ ॥ स्त्रीकी चूरीको दृष्टांत ॥ ७ ॥

मूल ॥ श्रीविट्ठलेशसुतसुहृदश्रीगोवर्द्धनधरध्याइये । श्रीगिरिधरजूसरसशीलगोविंदजुसाथहि । बालकृष्णयशवीरधीरश्रीगोकुलनाथहि । श्रीरघुनाथजुमहाराजश्रीयदुनाथहिभजि । श्रीघनश्यामजुपगेप्रभुअनुरागीसुधिसजि । येसातप्रकटविभुभजनजगतोरततसयशगाइये । श्रीविट्ठलेशसुतसुहृदश्रीगोवर्द्धनधरध्याइये ॥ ॥ ८० ॥ गिरिधरनरीझिकृष्णदासकोनाममांझसाझोदियो । श्रीवल्लभगुरुदत्तभजनसागरगुणआगर । कवित्तनोषनिर्दूषनाथसेवामें नागर । वाणीवंदितविदुषसुयशगोपालअलंकृत । ब्रजरजअतिआराध्यवहैधारीसर्वसुचित । सांनिध्यसदाहरिदासवर्यगौरश्यामदृढ़व्रतलियो । गिरिधरनरीझिकृष्णदासकोनाममांझसाझोदियो ॥ ८१ ॥

यदुनाथ ॥ सवैया ॥ शीश दिनेश तपै जिहि बार सुबारहि बार बिहारीको ऐबो । बास में वैरिनि आरज लाज सुएकहुबार बनै न चितैबो । शोच यहै सजनी रजनी दिन कौन से अवसर अवसर पैबो । जानतहौं यदुनाथ यहै कबहूं कमहौरानिहीं मरिजैबो ॥ २ ॥ पद ॥ बातनहीं हौं पतितपावन मोते काम परे जानोगे बिन रणशूर कहावन ॥ सतयुग त्रेता द्वापरहूके पतितनकी गति आपी । हमैं उन्हैं बहुतै अंतरहै हम कलियुगके पापी ॥ कोऊ टांकद्वै टांक पौसेरा बडी बडाई सेर । हौं पूरन पति ताई ऐसो त्यों आननि में मेर ॥ हौं दिनमणि खद्योत आनखल अविद्याको जु उजागर । गोपद पावनके न सरबरैं हौं दुर्मति जल सागर । पतित पावनहै विरद तिहारो सोइ करौ परवान । पाहन नाव पार करौ नाभाको केहर पकरौ कान ॥ २ ॥

टीका ॥ प्रेमरसराशिकृष्णदासजूप्रकाशकियो लियोनाथमानि

सोप्रमाणजगगाइये । दिल्लीकेबजारमेंजलेबीसोनिहारिनयनभोगले लगाईलगीविद्यमानखाइये । रामसुनिभक्तनकोभयो अनुरागवश शशिमुखलालजूकोजाइकेसुनाइये । देखिरिझवारशीझिनिकटबुलाइ लयेलईसंगचलेजगलाजकोबहाइये ॥ ३३७ ॥ नीकेअन्हवाइपटआ भरणपहिराइसुगन्धहूलगाइहरिमंदिरमेंलायेहैं । देखिभईमतवारीकी नीलै अलापचारीकह्योलालदेखिबोलीदेखेमोहभायेहैं । नृत्यगानता नभावमुरिमुसकानिदृगरूपलपटानीनाथनिपटरिझायेहैं । ह्वैकेतदा कारतनुछूटेउअंगीकारकरधरीउरप्रीतिमनसबकेभिजायेहैं ॥३३८॥ आयेसूरसागरसोकहीबड़ेनागरहो कोऊपदगावोमेरीछायानमिलाइ ये। गायेपांचसातसुनिजातमुसुकातकही भलेजूप्रभातआनिकरिकै सुनाइये । परेउशोचभारीगिरिधारीउरधारीबातसुंदरबनाइसेजधरे योंलखाइये। आइकेसुनायोसुखपायोपक्षपातले बतायोहूमनायोरंग छायोअभूंगाइये ॥ ३३९ ॥

दिल्लीके सेवकनको प्रसाद दियो काहूनेतौ लियो कही अधिकारी भ्रष्ट-भयो है काहू लयो पै पायो नहीं विचार्‍यो बडेनकी क्रिया में मन दीजै को भावसों भोग लगाइये तापै दृष्टांत नारदजीको नृत्यगान ॥ पद ॥ मोमन गिरिधर छविपर अटक्यो । ललित त्रिभंगी अंगनपर चलिगयो तहांही ठटक्यो । सजलश्याम घन वरण नीलह्वै फिरि चित अनत न भट क्यो । कृष्णदासके प्राण निछावरि यह तनु जग शिर पटक्यो ॥ २ ॥ दोहा ॥ सखियां कखियां हाथदे, तनु राख्यो ठहराइ । मनहारि मदिरा छविछक्यो, दईनारि लटकाइ ॥ २ ॥ अभूंलगि गाइये ॥ पद ॥ आवत वनकान्ह गोप बालक संग नेचुकी खुररेणु छुरित अलकावली । भौंहमन्मथ चाप वक्र लोचन बाण शीश शोभित मत्तमोर चन्द्रावली । उदित उडुराज सुंदर शिरोमणि वदन निरखि फूली नवलयुवति कुमुदा-वली । अरुण सकुचत अधर बिंबफल उपहसत कछुक प्रगटे होत कुमुद दशनावली । श्रवण कुंडल तिलक भाल बेसरि नाक कंठ कौस्तुभमणि

शुभग त्रिवलीवली । रत्न हाटक खचित उरसि पद कनक पांति बीच राजत शुभ्र झलक मुक्तावली । वलय कंकण बाजुबंद आजानु भुज मुद्रिका करतल विराजत नखावली । कुणित कर मुरलिका अखिल मोहित विश्व गोपिका जन मन ग्रन्थित प्रेमावली । कटि क्षुद्रघंटिका कनक हीरामई नाम अंबुज वलित श्रृंगार रोमावली । धाइ कबहुँक चलत भक्त हित जानि पिय गंड मंडल रचित श्रम जल कणावली । पीतकौशेय प्रधान सुंदर अंग बजत नूपुर गीत भरत सदावली । हृदय कृष्णदास बलि गिरिधरन लालकी चरणनख चंद्रिका हरत तिमिरावली ॥ २ ॥ यहपद गावत सुनत प्रभु, हर्षतहियसुखपाइ । छवि निरखत हरि आपनी, मनहीं मन मुसक्याइ ॥

कूवामेंईखिसिलदेहछुटिगईनईभईभयो अशंकाकछूऔरैउरआई है । रसिकनिमणिदुखजानिसोसुजाननाथदियोदरशाइतनुग्वालसु खदाइये । गोवर्द्धनतीरकहीआगेबलबीरगये श्रीगुसाईंधीरसोंप्रणा मयोंजनाइये । धनहुबतायोखोदिपायोविश्वासआयो हियेसुखछा योशंकएकलेबहाइये ॥ ३४० ॥ मूल ॥ श्रीवर्द्धमानमंगलगँभीरउ भैथंभहरिभक्तिके । श्रीभागवतबखानिअमृतमयनदीबहाई । अ मलकरीसबअवनितापहारकसुखदाई । भक्तनसोंअनुरागदीनसों परमदयाकर । भजनयशोदानंदसंतसंघटकेआगर । भीषमभट अंगजउदारअतिकलियुगदातासुगतिके । श्रीवर्द्धमानमंगलगँभीर उभैथंभहरिभक्तिके ॥ ८२ ॥ रामरामप्रतापतेखेमगुसाईंखेमकर । रघुनंदनकोदासप्रकटभूमंडलजान्यो । सर्वसुसीतारामऔरकुछुउर नहिंआन्यो । धनुषबाणसोंप्रीतिस्वामिकेआयुधप्यारे । निकटनि रंतररहतहोतकबहूंनहिंन्यारे । शूरवीरहनुमंतके सदृशपरमउपास कप्रेमभर । रामरामप्रतापतेखेमगुसाईंखेमकर ॥ ८३ ॥

माथुर वाराह पुराण में लिख्यो है सब ब्राह्मणके मुकुट माथुर सो मथुरियनि के मुकुट मणि विठ्ठलदास ॥ श्लोक ॥ ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः शूद्रो वा

यदिवेतरः॥विष्णुभक्तिसमायुक्तो ज्ञेयः सर्वोत्तमोत्तमः ॥ २ ॥ मानदद ॥ तृणादपि सुनीचेन तरोरिव सहिष्णुना ॥ अमानिनां मानदेन कीर्त्तनीयः सदाहरिः ॥ २ ॥ गुणहिगुणअंतरधार्‍यो संतनिको सुभाव शूपकोसोहै सारही लेहिं असार फटकि डारें असंतको सुभाव चालिनी कोसो ॥ ॥ ३ । ४ । ५ । ६ ॥

विट्ठलदासमाथुरमुकुट भयोअमानीमानप्रद । तिलकदास सोंप्रीतिगुणहिगुणअंतरधारेउ । भक्तनकोउत्कर्षजन्मभरिरसनउचारेउ । सरलहृदयसंतोषजहांतहँपरउपकारी । उत्सवमेंसुतदानकियोक्रमदुष्कृतभारी । हरिगोविंदजयजयगोविंदगिराहुसदआनंदकृत । विट्ठलदासमाथुरमुकुटभयोअमानीमानप्रद ॥ ८४ ॥ टीका ॥ भाईउभैमाथुरसोंरानाकेपुरोहितहे लरिमरेआपसमेंजियोएकयामहै । ताकोसुतबिलसुखदाससुखराशिहियेबैसथोरीभयोवड़ोसेवैश्यामश्यामहै । बोल्योनृपसभामध्यआवतनविप्रसुतक्षिप्रलैकैआवोकहीकहोपूजेकामहै । फिरिकैबुलायोकरौजायरणयाहीठौर काहूसमझायोगावैनाचैप्रेमधामहै ॥ ३४१ ॥ गयेसँगसाधुनलैविनयरंगरँगेसबरानाउठिआदरदेनीकेपधरायेहैं । कियेजाविछौनातीनिछातिनके ऊपरलेनाविगाईआयेप्रेमगिरेनीचेआयेहैं । राजामुखभयोश्वेतदुष्टनको ?रीदेत संतभरिअंकलेतघरमधिलायेहैं । भूपबहूभेंटकरीदेहवाही भांतिपरी पाछे सुधिभईदिनातीसरेजगायेहैं ॥ ३४२ ॥ उठजबमाषनेजनायसबबातकही सहीनहींजातिनिशिनिकसेविचारिकै । आयेयोंछटीकरामें गरुड़गोविंदसेवाकरतमगनहियेरहतनिहारिकै । राजाकेजोलोगसुतोढूंढ़िकररहेबैठि तियामातुआइकरेरुदनपुकारिकै । कियेलेउपाइरहीकितो हाहाखाइयेतो रहेमड़रायतबबसीमनहारिकै ॥ ३४३ ॥

विनय रंगरंगे ॥ कवित्त ॥ कविता रसिकतादि गुण सब उर बसे नम्रता सजनता न रीझि आप पास में । बातें गढ़ि छोलि कहैं

पोलिको न पारावार रीझें नचि चारु बनबासीके विलासमें। इनके जे गुण तिन्हैं उपमा न पाई कहूं चहूं दिशि हेरि हेरि कियो लै प्रकाशमें। काहू न सुहाय तजिजाय सो भवन बैठे जैसे चांदनी सरस आई पूस मास में ॥ २॥ छाये कछू ॥ श्लोक ॥ रण्डे मन्यस्व मन्यस्व दुर्भगे दुःखकारिणि ॥ परान्नं दुर्लभं लोके देहोयंच पुनः पुनः ॥ २ ॥ दोहा ॥ तुरसी कुरसी सों कलों, चढई हरिके अंग ॥ पीवतही वैकुण्ठ को, लिये जातिहै भंग ॥ ३ ॥

देख्योजबकष्टतनुप्रभुजीस्वपनदियो जावोमधुपुरीऐसेतीनबार भाषिये। आयेजहांजातिपांतिआयेकछूऔरैरंगदेख्योएकखातीसाधुसंगअभिलाषिये। तियारहेगर्ववतीसतीमतिशोचरती खोदतभूमि पाईप्रतिमाधनराखिये। खातीकोबुलाइकहीलहीयहलेहुतुम उनपाइपरिकह्योरूपसुखचाखिये ॥ ३४४ ॥ करेसेवापूजाअरुकामनहीं दूजाजलिगईभक्तिभयेशिष्यबहुभाइकै। बड़ोईसमाजहोतमानोंसिंधुसोतआये विविधबधायेगुणीजनउठेगाइकै। वफैआईएकनटीरूपगुणधनजटीवहगावै तानकटोचटपटीसीलगाइकै। दियेपटभूषणलैभूषणमिटतिकहुँचहुँदिशिहरिपुत्रदियोअकुलाइकै ॥ ३४५ ॥ रंगीराइमामताकीशिष्यएकरानासुताभयो दुखभारीनेकुजलहूनपीजिये। कहिकैपठाईबासोंचाहोसोईलीजै धन मेरोप्रभुरूपमेरेनयननकोदीजिये। द्रव्यतौनचाहौरीझिचाहौ तनमनदियोफेरिकैसमाजकियोबिनतीकोकीजिये। जितेगुणीजनतिन्हैंदियेअनगनदान पाछेनृत्यकरेउआपदेतसोनलीजिये ॥ ३४६ ॥

भूषण मिटत ॥ कवित्त ॥ हाथिनको अंकुश बनाये पुनि घोरनको लोहेकी लगाम मुखदशन चबातकी। योगिनिको पुरी राज्य रोगिनको पथपुरी जाते ज्वर जातहै विषम उरपात की। सांपन को मंत्रभूत प्रेतन को यंत्र रचि पानी पढि दिये तेन व्यथारहै गातकी। अवनी में आय विधि रचे हैं उपाय ऐपै तासों न बसाय जे पचावैं रीझ बा-

तकी ॥ दोहा ॥ रूप चोच की बात पुनि और कटीली तान। रसिक प्रवीणनके हिये, छेदनको ये बान ॥ २ ॥

ल्याईएकडोलामेंबैठारिरँगीराइजूको सुंदरशृंगारकहीवारतेरी आइये। कियोनृत्यभारीजोविभूतिसोतोवारीलियेभरीअंकवारीभेट कियेद्वारगाइये। मोहननिछावरिमेंभयोमोहिंलेहुमातिलियोउन शिष्यतनुतज्योकहांपाइये। कह्योजूचरित्रबड़ेरसिकविचित्रनिको जोपै लालमित्रकियोचाहौहियलाइये ॥ ३४७ ॥ मूल ॥ हरिरामहठीलेभजनबल रानाकोउत्तरदियो। उग्रतेजउदारसुघरसुथराईसींवा। प्रेमपुंजरसराशिसदागदगदसुरग्रीवा। भक्तनकोअपराधकरैताकोफल गायो। हिरण्यकशिपुप्रहलादप्रगटदृष्टांतदिखायो। सस्फुटवक्ताजगतमेंराजसभानिधरकहियो। हरिरामहठीलेभजनबलरानाकोउत्तर दियो ॥ ८५ ॥ टीका ॥ रानासोंसनेहसदाचौपरिकोखेलोकरै ऐसो सोसंन्यासीभूमिसंतकीछिनाई है। जाइकेपुकारचोसाधुझिरकिबिडारचोपरचोविमुखकेवशबातसांचीलैझुठाई है। आयेहरिरानाजूपैसबहीजनाईरीति प्रीतिकरिबोलेचलौआगेआवोभाई है ॥ गयेबैठेआवोजनमनमेंनलायोतब नृपसमझायोझारचोफेरिभूदिवाई है ॥ ३४८॥

राना सों सनेह ॥ दोहा ॥ विषय विषमजे भरि रहैं, राजा मद रँग भोइ। तिनके द्वारे रहतजे, विषयी जानो सोइ ॥ १ ॥ भाई है हमारो दनिपाल करीके नातेमाने हमारो तौ नातो कंठीकोहै ॥ कस्माकं बदरी चक्रे युष्माकं बदरीतरुः ॥ ६ ॥ अथवा भाई है साधुनकी सेवा जहां निमित्त रजोगुण नृपतिके रहे हैं नहीं तौ महा अपराधलगै है तौ तिहारो काम न होइ तौ काहेको रहैंगे ॥ दोहा ॥ धनुष बाण धारे रहैं, अग्रदासकेकाज। भीरपरै हरिभक्त पै, सावधान तब राज ॥ ३ ॥

मूल ॥ कमलाकरभटजगतमेंतत्त्ववादरोपीध्वजा। पंडितकलाप्रवीणअधिकआदरदेआरज। संप्रदायशिरछत्रद्वितीयमनोंमध्वाचारज। जेतिकहरिअवतारसबैपूरणकरिजाने। परिपाटीध्वजविजैस

दृशभागवतबखाने । श्रुतिस्मृतिसंवतपुराणतप्तमुद्राधारीभुजा। कमलाकरभटजगतमेंतत्त्ववादरोपीध्वजा ॥ ८६ ॥ ब्रजभूमिउपासकभट्टसोरचिपचिहरिएकैकियो । गोप्यस्थलमथुरामंडलजिसेवाराहबखाने । तेकियेनारायणप्रकटेप्रसिद्धपृथ्वीमेंजाने ॥ भक्तिसुधाकोसिंधुसदासतसंगसमाजन । परमरसज्ञअनन्यकृष्णलीलाकोभाजन । ज्ञानस्मारतकपक्षकोनाहिनकोउखंडनवियो । ब्रजभूमिउपासकभट्टसोरचिपचिहरिएकैकियो ॥ ८७ ॥ टीका ॥ भट्टश्रीनारायणजूभयेब्रजपरायणजायताईग्रामतहांव्रतकरिध्यायेहैं । बोलिकैसुनावैइहांअमकोस्वरूपहैजू लीलाकूंडधामश्यामप्रगटादिखायेहैं। ठौरठौररासकेविलासलैप्रकाशकियेजियेयोंरसिकजनकोटिसुखपाये हैं ॥ मथुरातेकहीचलौवैनीपूछैवैनीकहोऊंचेगाँवआइखोदसोतलैदिखाये हैं ॥ ३४९ ॥

ब्रजभूमि ॥ कवित्त ॥ ब्रजमान व्यापक अखंड प्रेम ब्रज जैसे सच्चित आनंद माया त्रिगुणते न्यारो है। जाके वन उपवन ग्राम नदी परवत हरिरूप रचे हरिखेले खिलण्यारो है। रत्नमय भूमि अरु अमृतमय जल ताको मारुत सुगंधनिसों भ-यो हरियारो है। ब्रह्मा शिव नारद मुनींद्रकहैं वेद चारों खेद मिटिजाइ जाके सुमिरो उचारो है ॥ १ ॥ दोहा ॥ ब्रजवृन्दावन अघटरस,राधा कृष्ण स्वरूप। नाम लेत पातक कटै, ज्यों हरिनाम अनूप ॥ ॥ २ ॥ ज्ञान कृष्णरत सो ज्ञान अद्वैत वेदांत सों सुखी रहत है ॥ ३ ॥

मूल ॥ श्रीब्रजवल्लभवल्लभसुदुर्लभसुखनयननदिये । नृत्यगानगुणिनिपुणरासमेंरसबरषावत । अवलीलाललितादिबलितिदंपतिहिरिझावत। अतिउदारनिस्तारसुयशब्रजमण्डलराजत । महामहोत्सवकरतबहुतसबहीसुखसाजत । श्रीनारायणभट्टप्रभुपरमप्रीतिरसवशकिये ॥ श्रीब्रजवल्लभवल्लभसुदुर्लभसुखनयननदिये ॥ ८८ ॥ मूल ॥ संसारस्वादसुखबातज्योंदुहुँश्रीरूपसनातनत्यागदियो। गौड़देशबंगालहुतेसबहीअधिकारी । हयगयभवनभँडारविभवभूभुजअ

सुहारी । यहसुखअनित्यविचारवासबृन्दावनकीनो । यथालाभ संतोषकुंजकरवामनदीनो। ब्रजभूमिरहस्यराधाकृष्णभक्ततोषउद्धार कियो।संसारस्वादसुखबातज्योंदुहुँश्रीरूपसनातनत्यागदियो ॥८९॥

संसारस्वाद ॥ भागवते ॥ जहौ युवैव मलवदुत्तमश्लोकलालसः ॥ भर्तृहरीशतके ॥ यां चिंतयामि सततं मयि सा विरक्ता साप्यन्यमिच्छति जनं सजनोन्यसक्तः । अस्मत्कृते च परितुष्यति काचिदन्या धिकृतां च तंच मदनं च इमांच मांच ॥ २ ॥ कवित्त ॥ जिते मणि माणि कहैं जोरे मणि माणिकहैं धरामें धरा पै धरा धूरही मिलाइबी। देह देह देह फेर पाइहै न ऐसी देह कौन जानै कौन देह कौन योनि जाइबी । भूख एक राखै मतिराखै भूख भूषणकी भूषणकै भूषण ते भूषण न पाइ-बी । गगनके जगम गन गगन न देह घाते नगन चलैंगे साथ नगन चला-इबी । भुवन अनुहारि बादशाही की उनहारि तापै दृष्टांत गुलामको अनित्य विचार ॥ श्लोक ॥ धनंहि पुरुषोलोके पुरुषं धनमेवच । अव श्यमेकं त्यजति तस्मात्किं धनतस्त्वया ॥ ४ ॥ बिना परमेश्वर निर्वाह काहूको नहीं ॥ ५ ॥

टीका ॥ कहतवैरागगयेपागिनाभास्वामीजू वे गईयोनिवरतुकपां चलागीआंचहै । रहीएकमांझधर्योकोटिककवित्तअर्थयाहीठौरलै दिखायोकविताकोसांचहै । राधाकृष्णरसकीआचारजताकहीयामें सोईजीवनाथभटछपैवाणीनाथहै । बड़ेअनुरागीयेतोकहिबोबड़ाईक हा अहोजिनकृपात्हष्टप्रेमपोथीबांचहै ॥ ३५० ॥ वृंदावनब्रजभूमि जानतनकोऊप्रायदईदरशाईजैसीशुकमुखगाई है । रीतिहूउपासना कोभागवतअनुसार लियो रससारसोरासिकसुखदाई है । आज्ञाप्रभु पाइपुनिगोपेश्वरलगेआइ कियेग्रंथभाइभक्तिभांतिसबपाई है। एक एकबातमेंसमातमनबुद्धिजब पुलकितगातदृगझररीसीलगाई है ॥ ॥ ३५१ ॥ रहैनंदगांवरूपआयेश्रीसनातनजू महासुखरूपभोगखी रकीलगाइये । नेकुमनआइसुखदाईप्रियालाड़िलीतू मानोंकोऊबाल

कीसुसोंजसबलाइये। करिकैरसोईसोईलैप्रसादपायोभायोअमलसोंआ योचढ़िपूछीसोजनाइये । फेरिजिनऐसोकरौयहीदृढ़हियेधरो ढरो निजचालिकहिआंखेंभरिआइये ॥ ३८२ ॥

सांचेहै ॥ दोहा ॥ थोड़े अक्षर रससहित, कहैं सुनै रससार । नाहि मनोहर जानियो, रसिक चतुरनिरधार ॥ कवित्त ॥ भक्त रसरूप राधा कृष्णरसरूप पद रचनाकेरूप यातेरूपनाम भाषिये । त्यागरूप भागरूप सेवा सुखसाजरूप रूपही की भावना औ रूप मुखचाखिये । कृपारूप भावरूप रसिक प्रभावरूप गावत जातरूप लखिमन अभिलाषिये । महाप्रभु कृष्ण चैतन्यजूके हृदयरूप श्रीगुसाँई रूप सदा नयननिमें राखिये ॥ २॥ शुकमुखसों रज यमुनागाई रत्नादिक नगाये ॥ ३ ॥

रूपगुणगानहोतकानसुनिसभासब अतिअकुलानप्राणमुरछासी आईहै । बड़ेआपधीररहेठाढ़ेनशरीरसुधिबुधिमेंनआवैऐसीबातलैदिखाई है ॥ श्रीगोसाईकर्णपूरिपाछेआइदेखेआछे नेकुढिगभयेश्वासलाग्योतबपाई है । मानोंआगआंचलागीऐसोतनुचिह्नभयो नयोयहप्रेमरीतिकापैजातिगाईहै ॥ ३८३ ॥ श्रीगोविंदचंदआइनिशिकोसुपन दियो दियोकहिभेदसबजासोंपहिचानिये । रहोंमेंखरिकमांझखोखेनिशिभोरसांझसींचे दूधधारगाईजाइदेखिजानिये । प्रगटलैकियोरूपअतिहोअनूपछवि कविकैसेकहैंथकिरहेलखिमानिये । कहालोंबखानोभरेशागरनगागरमें नागररसिकहियेनिशिदिनआनिये ३८४॥

ऐसी बात ॥ दोहा ॥ हृदय सरोवर छलछलहि, दंत गयंद झकोर । महासमुद्रहि परै जब, पावत ओर नछोर ॥ २ ॥ कवित्त ॥ पावक प्रचंडहूके पुंजते अधिकतातो वज्रसों विचारौ कहाताकी समतूलहै । कोटिक कटककी मुकुटताके आगेकहा महादुःख दारुणके डरहूको मूलहै । जाके डरमीचहूनआवै पानलेत और सोई रैनि दिनमोही सरको न शूलहै । मरचोहूनजाय कितो जियोहाइहाइ यह नेह किधौंवैरी देवताही मति भूलहै ॥ २ ॥ कौने कह्यो वधिरे अवधिके करैया लागि येरेबि

नकहैं ऐसो काम करियतुहै। जासों भजै घूटियेन डरेहू अहूंटिये जु टूटिये पतंगलौं पुकारे परियतु है । नंद न अचम्भौ और गोकुलकचंद कीसौं हरिहरि हाइहाइ बरैं मरियतुहै । कहाकहि कासों तोसों बावरे विरंचि ऐसो पावकको नाम कहूं प्रेम धरियतुहै ॥

रहैंश्रीसनातनजूनंदगांवपावनपै आवनदिवसतीनिदूधलैकेप्यारिये । साँवरोकिशोरआपपूछैंकिहिओररहीकहैंचारिभाईपितारोतिहूउचारिये । गयेग्रामबूझिघरहरिपैनपायेकहूं चहूंदिशिहेरिहेरिनयनभरिडारिये । अबकैजोआवैफेरिजाननहिंपावैशीशलालपागभावै निशिदिनउरधारिये ॥ ३५५ ॥ कहीव्यालीरूपवेनीनिराखिस्वरूपनयन जानीश्रीसनातनजूकाव्यअनुसारिये । राधासरतीरद्रुमडारगहिमूलेफूले देखतसफलफानिगतिमतिवारिये । आयेयोंअनुजपासफिरिआसपासदेखि भयोअतित्रासगहेपाँवउरधारिये । चरितअपारउभैभाईहितसारपगे जगेजगमाहिंमतिमनमेंउचारिये ३५६

शीशलालपाग ॥ सवैया ॥ वरषा उघरैं ऋतु सावनकी निकस्यो वह छैल महाछल डारे । फूल अनार के रंग रँगी पगियाखिरकीन बनाय सँवारे ॥ तादिन ते रँग और कहे हो सखी सुन श्यामा सुने झिझकारै । झुके दृग बाल लखे तब लाल सुभाल पै लालही पाग निहारै॥ १ ॥ व्याली रूप देखत सफल फानि ॥ कवित्त ॥ पीतपट नाकतही दीठि डसिलेते फिरि फैलिके विरह विष रोम रोम छावतो । होतो जब ऐसो हाल केते ब्रज वासिनको ऐसो कोक गाडरू कहांते ढूंढ़िलावतो । ईश्वर दुहाई जोपै होतो ऐसी नागिनतो कालीको नथैया कान्ह.काहेको कहावतो ॥ मुरि मुसकानि मंत्र जानति नराधे जीतो वेनीकीडसनि ब्रजवसंन नपावतो ॥ १ ॥ वेणीव्यालांगनाफणी ॥ २ ॥

मूल ॥ श्रीहरिवंशगोसाईंभजनकीरीतिसुकृतकोइजानि है ॥ श्रीराधाचरणप्रधानहृदयअतिसुदृढ़उपासी । कुंजकेलिदंपतितहांकोकरतखवासो ॥ सर्वसुमहाप्रसादसिद्धताकेअधिकारी । विधिनिषे

धनहिंदास अनन्यउतकटव्रतधारी । व्याससुवनपथअनुसरैसोइभले पहिंचानिहै।श्रीहरिवंशगुसाईभजनकीरीतिसुकृतकोइजानिहै॥९१॥

हरिवंशगुसाई ॥ पद ॥ वंदौं राधिका पदपदम । परम कोमल शुभग शीतल कृपायुत सुख कदम ॥ चरणचिंतत अमल उरमिज जगत सबही छदम । भालपर अक्षर अनायास सोहै होतपरसत रदम ॥ कृष्ण अलंकृत स्वहस्तपूजन निगम नूपुर रदम । रसिक जनजीवन समूली अग्रसर वसुसदम ॥ रीति सुकृत ॥ कवित्त ॥ जाके हित हेत धनधाम तजिदेतपुनि वनवासलेत मुनि क्लेशन करतहैं । तारीलै लगावैं देहसुधि विसरावैं तऊ उरमें न आवै तब दुखमें जरत हैं । बहुत उपाय करैं मरिबेते नाहीं डरैं गिरिहूते गिरैं नदीमाहिंन परत हैं । ऐसे नंदनंदन महावर सुजाके देत ताको व्यासनंदन जू ध्यानही धरतहैं । सुधानिधौ ॥ यस्याः कदापिवसनांचलखेलनोत्थधन्यातिधन्यपवनेनकृतार्थ मानी । योगीन्द्रदुर्गमगतिर्मधुसूदनोपि तस्यैनमोस्तुवृषभानुभुवोदिशेपि ॥ ॥ २ ॥ ब्रह्मवैवर्ते ॥ राशब्दंकुर्वते राधा ददामिभक्तिमुत्तमाम् ॥ धाशब्दं कुर्वतेपश्चाद्द्यामिश्रेणैवलोभितः ॥ ३ ॥ राधाचरण प्रधान ॥ दोहा ॥ कुँवरि चरण अंकित धरणि, देखत जिहिजिहि ठौर । प्रियाचरण रजजा-निकै, लुटत रसिक शिरमौर ॥ ३ ॥ जिहिउर सर राधा कमल, बसौ-लसौ बहुभाय ॥ मोहन भौंरा रैनिदिन, रहै तहाँ मड़राय ॥ ६ ॥ चौपाई॥ जाके हियसरहितजलनाहीं । राधापदकलताननमाहीं ॥ चरणकमल उदय होइ जौलौं । मोहन भँवर न आवै तौलौं ॥ २ ॥ कवित्त ॥ ब्रह्ममें ढूँढ़ो पुराणमें ढूंढो वेदऋचापढ़िचौगुने चाइन । जान्यो नहीं कबहूं वह कैसोहै कैसे स्वरूप है कैसे सुभाइन । हेरत हेरत हारपरयो रसखानि बतायो न लोग लुगाइन । देखो कहां दुरयो कुंज कुटीर में बैठो पलोटत राधाके पाँइन ॥ २ ॥ कहा जानौं कौने बीच देखो उन प्राणप्यारी तादिन ते मिलिबे के यतन करतहैं । पानी पान भोजन भुलानो भवन सोजन सनिदक बनाइ कन धीरज धरत हैं । देगई महावर तिह

तरवानिमांझ ताके करपल्लवकीपौरै पकरतहैं। नयननसों लाइ उरलाइ कहे हाइहाइ बारबार नाइनके पाइन परत हैं॥ ३ ॥ पद॥ भज मन राधिका के चरण। सुभग शीतल परम कोमल कमल केसे वरण। क्वणित नूपुर शब्द उचरत विरहसागर तरण। ताहि परमानंद बलिबलि श्याम जाकी शरण॥ ४ ॥ राधेजूके चरणपलोटत मोहन। नीलकमलके दलन लपेटे अरुण कमल दलसोहन। कबहुँक लैलै नयनन लावत अलिधावत ज्यों गोहन। जैश्रीभट्टछबीली राधे होत जगेते छोहन॥ ५ ॥ राधासुधानिधौ॥ योब्रह्मरुद्रशुकनारदभीष्ममुख्यैरालक्षितोनसहसापुरुषस्यतस्य॥ सद्योवशीकरणचूर्णमनंतशक्तिंतंराधिकाचरणरेणुमनुस्मरामि॥ ६॥ आगमे॥ ब्रह्मानंदरसादनंतगुणतो रम्योरसोवैष्णवस्तस्मात्कोटिगुणोज्ज्वलश्चमधुरः श्रीगोकुलेन्द्रोरसः॥ तच्चानंतचमत्कृतिप्रतिमुहुः सद्वल्लवीनांपुरः श्रीराधापदपद्ममेवपरमं सर्वस्यभूतंमम॥ ७ ॥ दशमे॥ नेमंविरंच्योन भवोनश्रीरप्यंवसंश्रया॥ प्रसादंलेभिरेगोपीयत्तत्प्राप विमुक्तिदात्॥ ८ ॥ ब्रह्माण्डे॥ शृणुगुह्यतमंतात नारायणमुखाच्छ्रुतम्॥ सर्वैश्चपूजितादेवी राधावृंदावने वने॥ २॥ माधुर्य्येमधुराराधामहत्त्वे राधिकागुरुः। सौंदर्येसुंदरी राधाराधेवाराध्यतेमया॥ प्रधानकोअर्थ॥ कवित्त॥ भूपतिके संपतिसों भरेहैं विविध कोश दीनी तहां छाप कहो रंकपावै कैसे हैं। विना रीझ रावरी निहारि सकै राजूकौन पांगुलौ सुमेरु चढिसकै नहींजैसे है। राजाहूकी दईएपै मिलैगी प्रधान हाथ नीतिमेंप्रमाण बात कहियेजु ऐसेहैं। राधिका चरण रतिपावै हितकृपाही सों नाभाजी प्रधानता दिखाई यह ऐसे हैं॥ ३ ॥ दृढ़उपासि सुधानिधौ॥ धर्माद्यर्थचतुष्टयंविजयजा किंत द्वृथा वार्त्तयासैकांतेश्वरिभक्तियोगपदवीत्वारोपितामूर्द्धनि॥ यावृंदावनसीम्नि कांचनघनाश्चर्यं किशोरीमणिस्तत्कैंकर्यरसामृतादिहपरंचित्तेनमेरोचते॥ ४॥ करतखवासी॥ तांबूलंक्वचिदर्पयामिचरणौ संवाहयामिक्वचिन्मालाद्यैः परमंडयेक्वचिदहोसंवीजयामि क्वचित्॥ कर्पूरादिसुवासितं क्वचिदहं सुस्वादुचांभोमृतं यास्याम्येवगृहेकदाखलुभजे श्रीराधिकामाधवौ॥ ५॥

कवित्त॥जहां नव नागरी रसिक नागरदोऊ प्रेमसोंविवश ह्वै करतहांसी ॥ हुलस हुलसात लपटात तनु सुधिजात परस्परबात रस के बिलासी। इतै अनखातउत बानि पगपरनिकी चरणकी छबिहिये हरि प्रकासी । जहां दृगसैन की बात समझन हेत हितभरी खरी हरि वंशदासी ॥ ६ ॥ परस्परबात ॥ दोहा ॥ बतरस लालच लालकी, मुरली लई लुकाइ । सौंहकरै भौंहन हँसै, देनकहै नटजाइ ॥ ७ ॥ सर्वसुमहाप्रसाद ॥ सवैया ॥ काहूलियो जप काहू लियो तप काहू महाब्रतसाधिकियोहै । काहूलियोगुण काहूलियो धन काहू महाउनमाददहियो है। रंचक चारु चकोरनि दंपति संपति प्रेमपियूष पियोहै । राधिकावल्लभलालके थारको श्रीहरिवंशप्रसाद लियोहै ॥ ८ ॥ कवित्त ॥ आदरचोप्रसाद औ निरादरी जगत रीति इष्टही की मिष्ट बात सबहिमन भाईहै । सुहृथ जिमाये गौर श्याम रस रीति प्रीति अर्थो भयो गुणातीत नेमको जताई है । पर्म धर्म वरण्यो चरणोदक प्रसाद मुख सर्बसु सो मान्यो भक्ति बेलिही बढाई है । शुद्ध रस मारग चलायो लोक शंकेनाहिं युगल उच्चिष्ट की अधिकतायों पाई है ॥ २ ॥ आदिपुराणे ॥ एकादशीसहस्राणि द्वादशीनांशतानिच ॥ कर्णिकायांप्रसादस्य कलांनार्हन्तिषोडशीम् ॥ ३ ॥ गरुडपुराणे ॥ आकंठभक्षितं नित्यं पुनातिसकलांहसः ॥ सर्वरोगोपशमनं पुत्रपौत्रादिवर्द्धनम्॥ ॥ ४ ॥ विधिनिषेध ॥ स्मर्तव्यःसततंविष्णुर्विस्मर्त्तव्योनजातुचित् ॥ सर्वेविधिनिषेधाः स्युरेतयोरेवाकिंकराः ॥ ५ ॥ अनुसरै कवित्त ॥ हित हरि वंश बिन हितकी न रीति जानै कैसे वृषभानुनंदनी सों प्रीति करिये । कौन सोंहै धर्म जासों कर्मनिको भर्मजाय सुत वित्त राज पाय कैसे ध्यान धरिये । रसिकनरसनिकी राह औ कुराहकौन कौन की उपासना सों आशु सिंधु तरिये । जो पै नंद नंदनको चहै जगवंदनको तोपै व्यास नंदनको नाम उच्चरिये ॥ दोहा ॥ रेमन श्रीहरिवंश भज, जो चाहत विश्राम ॥ जिहि रस सब ब्रज सुन्दरी, छाँडि दिये सुखधाम ॥ ७ ॥ जय जय श्री हरि वंश सहसहंसनि लीलारति। जय जय श्री हरिवंश भक्ति

में जाकी दृढ़ मति ॥ जय जय श्री हरिवंश रटन श्री राधा राधा । जय जय श्री हरिवंश सुमिरि नाशै भव बाधा ॥ व्यास आश हरिवंशकी सु जय जय श्री हरिवंश ॥ कवित्त ॥ तूही हरिवंशी हरिकर सों प्रशंसी है राधा गुण गान हेत अधर पै बसना । नई नई तानन से कानन में पैठि पैठि दंपति के आनन में तेरी ये विलसना । प्यारे के हियेमें लागि प्यारिही के अनुराग उत और प्रेम इत रूपह्वै बरसना।हिय माँझ हित भई चित्त माँझ चोपनई नयननि में नेह नई रस रस रसना ॥ १ ॥

टीका ॥ श्रीहरिवंशीगुसाईं ॥ हितजूकीरीतिकोईलाखनमें एकजानेसधाईप्रधानमानैंपाछेकृष्णध्याइये । निकटविकटभावहोतनसुभावऐसोगुणहीकीकृपादृष्टिनेकु क्योंहूंपाइये । विधि औ निषेधछेद्डारेप्राणप्यारेहियेजियेनिजदास निशिदिनवहैगाइये । सुखदचरित्ररसरसिकविचित्रनकेजानतप्रसिद्धकहाकहिकेसुनाइये ॥ ॥ ३५७ ॥ आयेघरत्यागरागबढ़्योपियाप्रीतमसों विप्रबड़भागहरिआज्ञादईजानिये । तेरीउभैसुताव्याहिदेबोलेबोनाममेरोउनकोजोवंशसोप्रशंसजगमानिये । ताहीद्वारसेवाविस्तारनिजभक्तनिकीआगतकोगतिसोप्रसिद्धपहिंचानिये । मानिप्रियबातगृहगयोसुखलह्योतबकह्योकैसेजातयहमनमनआनिये ॥ ३५८ ॥ राधिकावल्लभलालआज्ञासोरसालदईसेवासोप्रकाशऔबिलासकुंजधामको । सोइविस्तार सुखसारहगरूपपियोहियोरसिकनिजिनलियोपक्षबामको । निशिदिनगानरसमाधुरीकोपानउरअन्तरसिहातएककामश्यामाश्यामको । गुणसोंअनूपकहिकैसेकैस्वरूपकहैंलहैमनमोहजैसेऔरनहींनामको ॥

मानि प्रियबात ॥ दोहा ॥ टोना टामन सहस विधि, करि देखो सब कोय ॥ पीवकहै सो कीजिये, आपुनहीं वश होय ॥ २ ॥ पद ॥ प्रीतम प्रीति सों वश होइ । मंत्र यंत्र अरु टोना टामन काम न आवत कोइ । जो अपने प्रीतम प्यारे सों रहिये प्राण समोइ । तौ काहेको और ठौर वह जात प्रीति पति खोइ । हितके गुणमें प्रीतमको मन मानिकलीजे खोइ ।

सुर विहँसति राखै अपने मन तन मँजूष में गोइ । भार गरब को सजनी अब तौ तू जिहि ठौरहि जोइ । उठि चलि मिलो किशोरी पतिसों केलि कल्पतरु बोइ ॥

मूल ॥ आशधीरउरदोतकररसिकछापहरिदासकी । युगलनाम सोंनेमजपतानितकुंजविहारी । अवलोकतरहैंकेलिसखीसुखकेअधिकारी । गानकलागंधर्वश्यामश्यामाकोतोषे । उत्तमभोगलगाइमोरमर्कटतिमिपोषे । नृपतिद्वारठाढ़ेरहेदर्शनआशाजासकी । आशधीरउरदोतकररसिकछापहरिदासकी ॥ ९२ ॥

रसिक छाप हरिदासजी रसिकहरिदास ॥ दोहा ॥ श्रीस्वामी हरिदासको, यश त्रिलोक विस्तार । आप पियो प्यायो रसिक, नवल निकुंज विहार ॥ कवित्त ॥ रतन सुदेशमई अवनि निकुंज धाम अति अभिराम पिय प्यारी केलिरास है । रमत रमत दोऊ सुमति सुरति सेज अमित कटाक्षन के हाव भाव हासहै ॥ भावक प्रवीण सुपुनीत गुणगानरटैं याते लोक लोकनमें सुयश सुबास है ।सखी रुद्र आसपास धर मत पानकरैरसिक शिरोमणि श्री स्वामी हरिदास है ॥ २ ॥ पद ॥ रसिक अनन्यनको पंथ बांको । जा पंथको पंथ लेत महामुनि मूंदति नयन गहे नितनाको । जापंथ को पछतातहै वेद लहै नहिं भेद रहै जकजाको । सो पंथ श्रीहरिदास लहेउ रसरीतिकी प्रीतिचलायानिशाको । निशान बजावत गावत गोबिंद रसिक अनन्यको पंथ बांको ॥ ३ ॥ युगल नामसों नेम ॥ दोहा॥ तुलसी जनक कुमारि बिन, जे सेवत रघुबीर । जैसे चंदा रैनि बिन, श्रवै न अमृत सीर ॥ कवित्त ॥ वहै है शरद चंद दिनमें उदोत देख्यो ज्योतिको न लेश लागै थारी के अकार है । रैनि रस देन माँझ चैन के समूह होत सो तज्यो प्रकाश रास ताको यों विचारहै । शवद सुधाकर औ पात्र निशि बासर है तासरन कोऊ जामें सार निरधार है । रसिक प्रवीणहू चकोर रजनीशहीसों युगल स्वरूप गुण नामही अधारहै ॥ ५ ॥ संमोहनीतंत्रे ॥ गौरतेजो विनायस्तु श्यामतेजः समार्चयेत् । जपेद्वाध्यायते

वापि सभवेत्पातकी शिवे ॥ २ ॥ सखीसुख ॥ कवित्त ॥ विपिन विहार फूलफूलेहैं अपार लाल लाड़िली निहार मन आई यों शृँगारिये । बीनि बीनि फूल मृदुअंगकी सुसम लैलै भूषण रचत सीरिनी के कै सँवारिये । सन्मुख ही मोहन हियेमें लख्यो प्रतिबिंब सोहन सनेह मोह भरी अंकुवारिये । यहै जानि श्यामा पीठि दई अति वामा येहो जीति चतुराई यों भुराइ पर वारिये ॥ ३ ॥ पद ॥ होडपरी मोरहिं अरु श्यामहिं । आवो चलो मध्य सबकी गति लीजै रंगधौ कामहिं । हमारे तिहारे मध्यस्थ राधे और जाहि बदौ पूंछ देख्यो तृण दै कहाहै यामहिं । श्रीहरि दासके स्वामी श्यामा को चौपरि कोसो खेल एकगुण द्विगुण त्रिगुण चतुर गुण दीजै री जाके नामहिं॥४॥पियको नचावन सिखावती प्यारी । वृन्दावन में रास रच्यो है शरद रैनि उजियारी । रूप भरी गुणहाथ छरी लिये डरपत कुंजविहारी । व्यास स्वामिनी निरखि नट श्यामहिं रीझदेत करतारी ॥ ५ ॥ महाराज कौन आछो नृत्य करैहै तृण दैकै पूंछे द्वै बेर गोरी कह्यो तीजे लालजी को अंक में भरि लयो कही तो समान को नृत्य करैहै जैसी चौपरि की नरद एकबेर कच्ची होय फेरि पक्के सोई चौपरि को खेलकहिये जब लाड़िली लाल मिले तब प्रियाजी ने रीझि के रसिक छापदई ॥ ६ ॥ कवित्त ॥ चहूं ओर बैठे मोर दाविचारो औरनते जोत्यो मनमथ राख्यो मनहिं दुहाई में । कस्तूरी अरगजा को तिलक विराजै भाल भाग भरे यौवन की जगमग जाई में । अलक चमर घनश्याम बाजे नूपुरादि हँसनि अवलोकनि सो बटति बधाई में । थिरचर ऐसी राज देखो देखो सखी आज दुहुँनि रजाइ पाई एकही रजाई में ॥ २ ॥ सवैया ॥ जैसे अनखानि सतरानि लपटानि पुनि अति इतरानि मुसकानि रंग बरषे । जैसे किरजान अति दीनता निदान पान आपनै प्रमाण डहि मिसिपानकरषे । झटक रिसान भुवतान त्यों त्यों प्राणनाथ प्राणन सिहान मान मनमेंही हरषे । ऐसी कुंजकेलि रस बेलि सुखझेलि रही बिना हरिदासदासी ताहि कोन निरषे ॥ पद ॥ प्यारी तेरी

पुतरी काजरहूते कारी । मानों द्वै भवँर उड़े हैं बराबर । चंपाकी डार बैठे कुंद अलि लागी है जैब अराअर । जब आइ घेरत कटक कामको तब जियहोत दरादर । हरिदासके स्वामी श्यामा कुंजविहारी दोऊमिल लरत झराझर । अनन्य नृपति श्री स्वामी हरिदास । श्रीकुंजविहारीसे ये बिन छिन नकरी काहूकी आस । सेवा सावधान करिजाने सुवरगावत दिनरसरास । देहविदेहभये जीवतिहीं बिसरे विश्वविलास । श्रीवृन्दावन रज तन मन भज तजि लोकवेदकी आस । प्रीति रीति कीनी सबहिनसों किये नखासखवास । यह अपनो व्रत और निबाहो जबलग कंठ उसास । सुरपति भूपति कंचिन कामन तिनके भावे घास । अब के रसिक व्यास हम ऐसे जगत करत उपहास ॥ ३ ॥ ऐसो ऋतु सदा सर्वदा जो रहै बोलन नित मोरनि । नीकेबादर नीके धनक चहूंदिशि नीको वृन्दावन आछी नीकी मेघनकी घोरनि । आछी नीकी भूमि हरीहरी आछी नीकीरग निकामकी रोरनि । श्रीहरिदास के स्वामी श्यामाको मिलगावत बन्यो राग मलार किशोर किशोरनि ॥ ४ ॥

टीका ॥ स्वामीहरिदासरसराशिकोबखानिसकैरसिकताछापजो ईजायमध्यपाइये । लायोकोऊचोवावाकोअतिमनभोवावामें डारयो लैपुलिनयहैखोवाहियेआइये । जानिकैसुजानकहीलैदिखावोलाल प्यारे नेसुकउघारेपटसुगंधउड़ाइये । पारसपषानकरिजलडरवाइ दियोकियोतबशिष्यऐसेनानाविधिपाइये ॥ ३६० ॥ मूल ॥ उत्कर्षतिलकअरुदामकोभक्तइष्टअतिव्यासको । काहूकेआराध्यमच्छ कच्छशूकरनरहरि। बावनपरशाधरनसेतुबंधनशैलनकरि। एकतके यहरीतिनेमनवधासोंल्याये । सुकलसमोखनसुवनअच्युतगोत्रीजुल ड़ाये ॥ नौगुनतौरनूपुरगुह्योमहतसभामधिरासको । उत्कर्षतिल कअरुदासकोभक्तइष्टअतिव्यासको ॥ ९३ ॥

लायो कोऊ चोवा ॥ दोहा ॥ कै सुगंध सोंधौ सरस, कै उत्तम कलगान ॥ इनही के कर मीचहै, मेरी मेरे जान ॥ २ ॥ दुखाइ दियो कु-

कुंडलिया ॥ रानी राज शृंगार पट धोबी को धुवरोट । धोबीको धुवरोट कियो दुर्लभ मानुष तन । सुलभ विषय सब जोर ब्रह्मआधीन जगत जन ॥ कौड़ी कामिनि कुटुम्ब तिनहिं हित हीरा हारयो । ज्यों बनिजारो बैल थक्यो तब मगमें डारयो । नेगन लाग्यो रामके अगर बड़ो यह खोट । रानी राज शृंगार पट धोबीको धुवरोट ॥ १ ॥ गाडर आनी ऊनको बांधी चरै कपास । बांधीचरै कपास विमुखहरि लों न हरामी । प्रभुप्रतापकी देह कुछित सुखसोई कामी ॥ जठर यातना अधिक भजन बदि बाहर आयो । पवन लगत संसार कृतघ्नी नाथ भुलायो । चाकरी चौर हाजिरकुँवर अगर इते पर आस । गाडर आनी ऊनको बांधी चरै कपास ॥ २ ॥ ३ ॥ उत्कर्ष तिलक अरु ॥ पद ॥ मेरे भक्त हे देवा देऊ । भक्तानि जानौभक्तनि भानौ निजजनमो जिवतेऊ । मातापिता भक्त ममभाई यानि भक्त दमाद सजनवश नेऊ । सुत संपति परमेश्वर मेरे हरिजन जाति जनेऊ । भवसागरकोबेरोभक्तहै हरिकेवट कुरखेऊ । बूडतबहुत उबारे भक्तनलियेउबारि जरेऊ । तिनकी महिमा व्यास कपिल कहि हारे सब परवेऊ । व्यास दासकी प्राणजीवन धन हरि परिवार बड़ेऊ । रासकेलि कवित्त ॥ शरद उज्यारी फुलवारी में बिहारी प्यारी श्रीगोविंद तैसी वाणी मंडली सखीनकी । प्रेमको प्रकाश रास रसको विलास तामें राग रागिनी है सुरसात ग्राम तीनकी । उरपतिरप के संगीतनि के भेद भाव नीकी धुनि नूपुर किंकणी चुरीन की । लीन भई मुरली मृदंग की नवीन गति बीन की बजनि औ बजावनि प्रवीन की ॥ २ ॥ उचकि ॥ २ ॥ उचकी पग धरत धरणिपैर झिझकि झिझकि कर करन उचतहैं । ललक ललक गति लेत सु वह पुनि झपक झपक दृग पलन सुचतहैं । ठुमुक ठुमुक पग बजत घुंघरू धुनि मधुर मधुर सुरतानन खचतहैं । मुलक मुलक मन हरत सकल जन आज राज ब्रजराज रास में नचत हैं ॥ ३ ॥ ऐसे रास में जनेऊ तोरिकै श्री प्रिया जूको नूपुर गुह्यो तब यह पद गायो ॥ पद ॥ रसिक अनन्य हमारी जाति । कुलदेवी राधावरसानो

खेरो ब्रज बासिनकी पांति । गोत गोपाल जनेऊमाला शिखा शिखंडी हरि मंदिर भाल । हरिगुणगानवेद धुनि सुनियत मंजुपखावज कुशकरताल । शाखा यमुना हरिलीला षटकर्म प्रसाद प्राणघनरास । सेवा विधि निषेध सतसंमत बसत सदा वृन्दावनवास । स्मृति भागवत कृष्ण ध्यान गायत्री जाप । वंशीऋषि निजमान कल्पतरु व्यास अशीशनदेत शराप ॥

टीका ॥ आयेगृहत्यागिवृन्दावनअनुरागकरिगयोहियोपागिहो इन्यारोतासोंखीजिये । राजालेनआयोऐपैजाइबोनभयोश्रीकिशोर अरुझायोमनसेवामतिभोजिये । चीराजरकसीशीशचिकनोखिसिल जाइ लेहुजूबँधायनहींआपबाँधिलीजिये । गयेउठिकुंजसुधिआईसुख पुंजआयेदेख्योबँध्योमंजुकहिकैसेमोपैरीझिये ॥ ३६१ ॥ संतसुखदे नवैठेसंगहीप्रसादलेतपरसततियासबभाँतिनप्रवीनहैं । दूधबरताइ लैमलाईछिटकाईनिज खिजउठेजानिपतिपोषतनवीनहैं । सेवासोंछु ड़ायदईअतिअनसनीभईगईभूखबीतेदिनतीनितनक्षीनहैं । सबसमु झावैंतबदंडकोमनावैंअंगआभरणबेचिसाधजैंबैयोंअधीनहैं ॥३६२॥ सुताकोविवाहभयोबड़उत्साहकियो नानापकवानसबनीकेबनिआ येहैं । भक्तनिकीसुधिकरीखरीअरबरीमतिभावनाकरतभोगसुखदल गायेहैं । आइगयेसाधुसोबुलाइकहीपावोजाइपोटनिबँधायचाइकुंजन पठायेहैं । बंशीपहराईद्विजभक्तिलैदृढ़ाईसंतसंपुटमेंचिरीयादेहितसों बसाये हैं ॥ ३६३ ॥

आयेवृन्दावन ॥ सवैया ॥ भूमिहरी द्रुमझूमिरहे लखि ठौर रहे दृग- ठौर सुहाते । न्यारेसे लोग रँगीले तहांके मिले हँसि प्रेम हिये सरसाते । नाम न आवै औ आवै गरोभरि नामलियो नहिं जात है याते । साँवरी एक नदी पै बसै सो कहौ किमि कोउ या गांवकी वाते ॥ २ ॥ खीजिये॥ ॥ पद ॥ सुधारोहारि मेरो परलोक । वृन्दावनमें कीनोदीनो हरि अप- नो निजओक । माताको सों हित कियो हरि जानि आपने तोक । चरण धूरि मेरे शिरमेली और सबनिदै रोक । जेनर राकस कूकर गदहा ऊंट

वृषभ गज वोक। वृन्दावन तजि बाहर भटकत तो शिर पनहीं ठोक ॥ ॥ २ ॥ जाइबो न भावै ॥ वृन्दावनके रूप हमारे मात पिता सुतबंध। गुरु गोविंद साधुगति मतिफल अरु फूलनको गंध । इन्हैं पीठि दै अनत दीठिकरि सो अंधन में अंध। व्यास इन्हैं छोडै रु छड़ावै ताको परियोकंध ॥ ३ ॥ दोहा ॥ वृन्दावनको छांड़िकै, और तीर्थको जात । छांड़ि विमल चिंतामणी, कौड़ीको ललचात ॥ ४ ॥ राधा वल्लभ कारणे, सही जगत उपहास। वृन्दावनके श्वपचकी, जूठनिखाई व्यास ॥ १ ॥ वृन्दावन छांड़िये नहीं ॥ ६ ॥ खिजउठे ॥ पद ॥ तिया जो न होइ हरिदासी। सोदासी गणिका सम जानो दुष्टरॉड़ मसवासी । निशिदिन अपनो अंजन भंजन करत विषयकी रासी। परमारथ कबहूं नहिं जाने आनिपरे यमफांसी। कहाभयो स्वरूप गुण सुंदर नाहिंन श्याम उपासी । ताके संग न पतिगति जैहै याते भली उदासी। साकतनारि जुघर में राखै निश्चय नरक निवासी। व्यासदास यह संगति तजिये मिटै जगतकी हांसी ॥ २ ॥ अंग आभरण बेंचि बीस हजार रुपैया के बेचिकै वैष्णव जिमाये तब तिया रसोंई में लई में श्वेत वस्त्र पहिराइ कैसे वामें आवै ॥ २ ॥ पद ॥ विनती सुनिये वैष्णव दासी। जा शरीरमें बसत निरंतर नरक वात पित खांसी। ताहिं भुलाइ हरिहि यों गहिये हँसै संग सुखबासी । बढ़ै सुहाग ताहि मन दीजै औ बराक विशवासी। ताहि छांड़ि हित करै और सों गेरपरै यम फांसी। दीपक हाथ परैं कूवांमें जगत करै सबहांसी । सर्वोपरि राधापतिसों रति करत अनन्य बिलासी। तिनकी पद रज शरण व्यासको गति वृन्दावन बासी ॥ २ ॥ पोटन पद ॥ हरिभक्तनते समधी प्यारे। आये भक्त दूरि बैठारो फोरत कान हमारे । दूर देशते समधी आये ते घर में बैठारे। उत्तम पलिका सों रसपेदी भोजन बहुत सँवारे। भक्तनको दे चून चनाको इनको सिलवट न्यारे । व्यास दास ऐसे विमुखनको यमसदा टेरतहारे। तापर दृष्टांत उंगली सों राहबताई ॥ २ ॥ पोटबँधाइ के मिठाई साधुनको दई तब खिझे यह करतहौ ॥ २ ॥

शरदउजियारीरासरचेउपियप्यारी तामेंरंगबढ़ोभारीकैसेकाहिकै सुनाइये। प्रियाअतिगतिलईबिजुरीसीकौंधिगईचकचौंधीभईछबिमं डलमेंछाइये। नूपुरसोटूटिछूटिपरचोअरबरचोमनतोरिकैजनेउक रचोवाहीभाँतिभाइये। सकलसमाजमेंयोंकेहेउआजकामआयो ढो योहैजनमताकीबातजियआइये॥ ३६४॥ गायोभक्तइष्टअतिसुनि कैमहंतएकलेनकोपरीक्षानायोसंतसंगभीरहैं। भूखकोजतावैवाणी व्यासकोसुनावैसुनिकहौभोगआवै इहांमानेहरिधीरहैं। तबनप्रमाण करीशंकधरीलैप्रमादग्रासदोइचारिउठेमानोंभईपीरहैं। पातरिसमे टिलईसतकरिमोकोदईपावोतुमऔरपावलियेदृगनीरहैं॥ ३६५॥

तोरिकै जनेऊ॥ पद॥ इतनो है सब कुटुंब हमारो। सेन धना-नाभा अरु पीपा अरु कबीर रैदास चमारो॥ रूप सनातन को सेवक गंगल भट्ट सुटारो। सूरदास परमानंद मेहा मीराभक्त विचारो। ब्राह्मण राजपू ज्य कुलउत्तम करत जातिको गारो। आदिअंत भक्तनको सर्वस राधा वल्लभ प्यारो। इहिपंथचलत श्यामश्यामाके व्यासहि बौरो भावेतारो॥ ३॥

भयेसुततीनबाटनिपटनवीनकिये एकओरसेवाएकओरधनध रचोहै। तीसरीजुठौरश्यामबंदनीअरुछापधरीकरीऐसीरीतिदेखिब ड़ोशोचपरचो है। एकनेरुपैयालयेएकनेकिशोरजूको श्रीकिशोर दासभालतिलकलैकरचोहै। छोयेदियेस्वामीहरिदासदिशिरांशि कियो वहीराशिललितादिगायोमनहरचोहै॥ ३६६॥

शीतकरी पद॥ जूठन जे न भगत की खात। तिनके वदन सदन नरकनके जेहरि जनन घिनात। काम विवशकामिनके पीवत अधरन लार चुचात। भोजन पर माखी मूततहैं जिहि जेंवत नाहिं सकात। बाजदारकी पांति व्याहमें जेंवत विप्रवरात। भेंटत सुतहिं रेटमुखलागत सुखपावत जड़तात। अपरसह्वै भक्तनिछुइ छुतिहा तेल सचेल अन्हात। भक्तनपीछे सब डोलत हैं हरिगंगाअकुलात। साधुचरण रज मांझ व्याससे कोटिक पतित समात॥ २॥ आदिपुराणे॥ मद्भक्तायत्रगच्छंतितत्रगच्छामिपार्थिवा॥

भक्तानामनुगच्छंतिमुक्तयःश्रुतिभिःसहः ॥ २ ॥ भागीरथके पीछे डोली ही हैं आपजगमें तीर्थही हैं ॥ ३ ॥ वहीरीति ॥ पद ॥ लाल लटकता यौवन मंता खेलतरास अनंता । यमुना तीर भीर युवतिनकी बांहजोरि मंडली बनाई मध्यराधिका कंता ॥ एकनि के कर कंजकपोल पर रंभनि देत हसंता । किशोर दासके स्वामी कुंजविहारी विहारिनके संग विहरत केलि करंता ॥ ४ ॥

मूल ॥ श्रीरूपसनातनभक्तिजलश्रीजीवगुसाईसरगँभिर । बेला भजनसुखककषायनकबहूंलागी ॥ वृन्दावनदृढ़बासयुगलचरणनिअ नुरागी । पोथीलेखनपानअघटअक्षरचितदीनो । सदग्रंथनकोसारस बैहस्तामलकीनो ॥ संदेहग्रंथछेदनसमर्थरसराशिउपासकपरमधीर । श्रीरूपसनातनभक्तिजलश्रीजीवगुसाईसरगँभीर ॥ ९४ ॥ टीका ॥ कियेनानाग्रन्थहदैग्रन्थिदृढ़छेदडारैं धनधनयमुनामेंआवैंचहूंओरते। कहीदाससाधुसेवाकीजेकहैंपात्रजान करौंनीकेकरीबोल्योकटिकोप जोरते । तबसमझायोसंतगौरवबढ़ायोयह सबकोसिखायोबोलेमीठे निशिभोरते । चरितअपारभावभक्तिकोनपारावार कियोंहूंवैरागसा रकहैकौनछोरते ॥ ३६७ ॥

भक्त जलपद । जयजय मेरे प्राण सनातन रूप । अगतनकी गति दोऊ भैया योग यज्ञके जूप । श्रीवृंदावन की सहज माधुरी प्रेम सुधाके कूप । करुणासिंधु अनाथ बंधुजय भक्तसभाके भूप । भक्त भागवत मत आचारज चतुर कुल चतुरभूप।भुवन चतुरदश विदित विमलयश रसनाके रसतूप।चर णकमल कोमलरज छापा मेटत कलरजधूप । व्यास उपासक सदा उपासी श्रीराधा चरणअनूप ॥ बोले कवित्त ॥ सीखेव्याकरणकोष काव्य औ पुराणसीखे वेदपढ़िबो जो सीखे धर्मनको मूरिहै । न्याय वेदान्त आदि सीखे षटशास्त्र वर पंडिताई चतुराई जाने भरि पूरिहै । सीखे घट पट सांप जेवरी बखानिबेको माया भ्रमजाकी अति जीवनि की मूरिहै । भक्तनकी सभा-बीच प्रेमरस सींचि सींचि बोलिबो न सीख्यो सबसीखिबे में धूरिहै॥ २॥

प्रसंगमजरंपासमात्मनःकवयो विदुः । सएवसाधुसुकृतंमोक्षद्वारमपावृतं ॥ १ ॥ मूल ॥ श्रीवृन्दावनकीमाधुरीइनमिलआस्वादन कियो । सर्वसुराधारवनभट्टगोपालउजागर । हृषीकेशभगवानाविपुलविट्ठलरससागर ॥ थानेश्वरीजगन्नाथलोकनाथमहामुनिमधुश्रीरंग । कृष्णदासपंडितउभैअधिकारीहरिअंग ॥ घमंडीयुगलकिशोरभूगर्भजीवदृढ़ व्रत लियो । श्रीवृंदावनकी माधुरी इनमिलिआस्वादनकियो ॥ ९८ ॥

इनमिल विषयरस स्वादीको मिलबोकहा राजा को दूसरो न रुचै अरु दत्तात्रेयहूने क्वाँरी कन्याकी चूरी दूसरी हू दूरिकरी पै केसेमिलै दत्तात्रेयजी ने ब्रह्मज्ञानीन को संग निषेधकियो उपासकनको नहीं ब्रह्मज्ञानी विधवा तुल्य हैं उपासक सुहागवती तिनको संगचूरी चाहिये जैसे चूरी को शब्द पतिको प्यारो लगै ऐसे संग रूप चूरीको शब्द कृष्णपतिको प्यारो लगै याते ब्रह्मज्ञानीके कृष्णपति नहीं तिनहीं को संग चूरी त्याग है याते इन्हें मिलिकै रूप माधुरी को स्वादलिये ॥ पद ॥ जो कोउ वन्दावन रसचाखैं । खारी लगत खांड़ अरु खारक आन देशकी दाखैं । प्राणसमानतजैनहिं सेवा लोभदिखावतलाखैं । भूखेरहिकै पावेंभाजी निरखि रहें तरुशाखैं । परे रहें कुंजनिके कोने कृष्ण राधिका भाखैं । जनगोविंद बलवीर कृपाते पटरानी जूराखैं ॥ २ ॥ क्योंकि राधेको वृन्दावन वेदन में गायोहै ॥ ॥ सवैया ॥ पौरिके पौरिया द्वारके द्वारिया पाहरू वा घर के घनश्याम हैं । दासी के दास सखीनके सेवक पार परोसिन के धनधाम हैं । श्रीधर कान्हभरे हित भामर भानभरी सतभामासी वाम हैं । एक वही विश्राम थली वृषभानुलली की गली के गुलाम हैं ॥ २ ॥

टीकागोपालभट्टकी ॥ श्रीगोपालभट्टजूकेहियेवेरसालबसेलसेयोंप्रगटराधावरस्वरूपहैं । नानाभोगरागकरैं अतिअनुरागपगे जगेजगमांहिं हितकौतुक अनूपहैं । वृंदावनमाधुरी अगाधकोसवादलियो जियोजिनपायो शीतभयेरसरूप हैं । गुणहीकोलेतजीव औ

गुणकोत्यागदेतकरुणानिकेतधर्मसेतुभक्तभूपहैं ॥ ३६८ ॥ टीका अलिभगवानकी ॥ अलिभगवानरामसेवासावधानमनवृन्दावनआइ कछूऔरैरीतिभई है । देखेरासमंडलमेंविहरतरसरासबाढ़ीछबिव्या सहगसुधिबुधिगई है । नामधरिरासऔविहारीसेवाप्यारीलगी खगी हियमांझगुरुसुनीबातनई है । विपिनपधारेआपजाइपगधारेशीश ईशमेरेतुमसुखपायोकाहिदई है ॥ ३६९ ॥

बाटीछबि पद ॥ रहौ कोउ काहू मनहिं दिये । मेरे प्राणनाथ श्री श्यामा सपतकरौ तृणलिये । जे अवतार कदंब भजत हैं धरि दृढ़ व्रतजुहिये। तेऊ उमँगि तजत मर्यादा वन विहार रसपिये । खोये रतन फिरत जे घर घर कौन काज अपजिये । जय श्री हित हरिवंश अनंत सचनाहीं बिनधारत ताहिलिये २ आनि देशकी गैलहरिति श्री कृष्ण दौरि मेवाती लूटलै हैं जो रावरी । सोई अलि भगवानको लूटिलियो जो जोरावर रामहो तौ बचायले तो श्री शुकदेवजी ने ब्रह्मनिष्ठको लूटिलियो ॥ दोहा॥ अनब्याही हौसैंकरैं, ब्याही लेत उसास । गौनेकी मौने रहीं, देख रागमृदुहास ॥

टीकाविट्ठलविपुलकी ॥ स्वामीहरिदासजूकेदासनामविट्ठलहैं गुरुकेवियोगदाहउपज्योअपारहै । रासकेसमाजमेंविराजसबभक्तरा जबोलिकैपठाये आयेआज्ञाबड़ोभारहै । युगलस्वरूपअवलोकना नाभेदनृत्य गानतानकानसुनिरहीनसँभारहै । मिलिगयेवाहीठौरपा योभावतनऔरकैहैंरससागरसोताकोयोंविचारहै ॥ ३७० ॥ टीक लोकनाथकी ॥ महाप्रभुश्रीकृष्णचैतन्यजूके पारषदलोकनाथनाम अभिरामसबरीतिहै। राधाकृष्णलीलासोंरँगीनमेंनवीनमन जलमी नजैसेतैसेनिशिदिनप्रीतिहै । भागवतगानरसखानसोतौप्राणतुल्य अतिसुखमानिकहैगावेजोईनीतिहै। रसिकप्रवीणमगचलतचरणला गि कृपाकैजताइदईजैसीनेहरीतिहै ॥ ३७१ ॥ टीका मधुगुसाईं की ॥ श्रीमधुगुसाईंआयेवृन्दावनचाहबढ़ीदेखेइननयननसोंकैसोधौं

स्वरूपहै । ढूंढ़तफिरतवनवनकुंजलताद्रुमिटीभूखप्यासनहींजाने छांहधूपहै । यमुनाचढ़तकाटिकरतकरादेजहां वंशीवटतटदीठिपरेवे अनूपहै । अंकभरिलियोदौरिअजहूंलौंशिरमौर चहैभागभालसाथ गोपीनाथरूपहै ॥ ३७२ ॥

पायो भागवतन ॥ पद ॥ प्यारी नेकु निरखौ नवरँग लालै । तुवपद पंकज तल रजवंदत तिलक बनावत भालै । तेरे वरण वमन आभूषण उरध-रि चंपकमालै । वीठल विपुल विनोद करो बल भुजभरि बाहु विशालै ॥ जलमीन जैसे ॥ दोहा ॥ मीनमारि जल धोइये, खाये अधिक पियास । बलिहारी वा चित्तकी, मुये मित्तकी आस॥ २ ॥ परसा हरिसों प्रीति करि मछरी केसा न्याइ॥जीवत मरत न छांडही, जल बिन रह्यो न जाइ ॥३॥

गुसाईंश्रीसनातनजूमदनमोहनरूप माथेपधरायकहीसेवानीके कीजिये । जानोकृष्णदासब्रह्मचारीअधिकारीभयेभटश्रीनारायणजू शिष्याकियेरीझिये । करिकैशृङ्गारचारुआपहीनिहारिरहे गहे नहीं चेतभावमांझमतिभीजिये । कहांलौंबखानकरौंरागभोगरीतिभांति अबलोंविराजमान देखिदेखिजीजिये ॥ ३७३ ॥ श्रीगोविंदचंदरूप राशिसुखराशिदासकृष्णदासपंडितयेदूसरेयोंजानिले । सेवाअनुरा गअंगअंगमतिपागिरही पागिरहीमतिजोपैतोपैयांहमानिले । प्रीति हरिदासनसोंविविधप्रसाददेतहियेल्याइलेतदेखपद्धतिप्रमानले । सह जकीरीतिमेंप्रतीतिसोंविनीतकरैटेरवाहीओरमनअनुभवआनिले ॥

मतिपागिरही ॥ कवित्त ॥ गोविंद रँगीले रंगरंगनि शृंगार कियो लिये करछरी हिये सबके बिलोये हैं। इतरात जातधरे पग धरणीपर यौवन उमंग आप अंगअंग भोये हैं । चितवनि में न सनी सैननसों बातैं करै हरे मनलाड़ भरे नेहसों समोये हैं । ऐसो कवि कौन सकै नयनन स्वरूप कहि लाल लाल कोयनमें केते वर खोयेहैं ॥ २ ॥ प्रसाददेत ॥ कुंडलिया ॥ राइनिभाइनि जासुको खँड़ावरादेहाथ। खँड़ावरादे हाथदेत प्रभुकोतुलसी दल। कैदोनाभरि फूल कै करुवा भरि भरि कै जल । भोजनगटकत आप रजोगुण दै

पुनि हरषै। यावारूथल माँझ दयानिधिको लै वरषै। भवभौरे सेवा खड्ग लै काट्यो निजमाथ। राइनि भाइनि जासुको खड़ा बरा दै हाथ ४। ५ अलोनी रोटी गले में अटकै कही कहा गीता विस्तार करोगे॥

गुसाईंभूगर्भवृन्दावनदृढ़वासकियो लियोसुखबैठिकुंजगोविंदअनूपहैं। वड़ेईविरक्तअनुरक्तरूपमाधुरीमेंताहीकोसवादलेतामिलेभक्तभूपहैं। मानसीविचारहीअहारसोंनिहाररहैमहै मनवृत्तिवेईयुगलस्वरूपहैं। बुद्धिकेप्रमाणउनमानिमेंबखानकियो भरयोबहुरंगजाहिजानेरसरूपहैं॥ ३७५॥ मूल॥ श्रीरसिकमुरारिउदारअतिमत्तगजहिउपदेशदियो। तनमनधनपरिवारसहितसेवतसंतनकहि। दिव्यभोगआरतीअधिकहरिहूतेहियमहि। श्रीवृन्दावनचंदश्यामश्यामारँगभीने। मगनसुप्रेमपियूषपयधपरचेबहुदीने। श्रीहरिप्रियश्यामानंदवरभजनभूमिउद्धारकिया। श्रीरसिकमुरारिउदारअतिमत्तगजहिउपदेशदियो॥ ९५॥ टीका॥ श्रीरसिकमुरारिसाधुसेवाविस्तारकियोपावैकोनपाररीतिभाँतिकछुन्यारिये। संतचरणामृतकेमाठगृहभरेरहेताहिकोप्रणामपूजाकरिउरधारिये। आवैंहरिदासतिन्हैंदेतसुखराशिजीभएकनप्रकाशसकैथकैसोविचारिये। करैंगुरुउत्सवलैदिनमानसबैकोई द्वादशदिवसजनघटालगीप्यारिये॥ ३७६॥ संतचरणामृतकोलावोजायनीकीभाँतिजीकीभाँतिजानिबेको दासलपटायोहै। आनिकैबखानकियोलियोसबसाधुनको पानकरिबोलेसोसवादनहींआयोहै। जितेसभाजनकहीचाखोदेवौमनकोऊमहिमानजानेकनजानीछेड़िआयोहै। पूछीकह्योकोटीएकरह्योआनौलायोपियोदियोसुखपासनयननीरढरकायोहै॥ ३७७॥

आनौ॥ चैतन्यचरितामृते॥ दृष्टैः स्वभावनिरतैर्वपुषस्तु दोषैर्न प्राकृतत्वमिहभक्तजनस्य पश्येत्। गंगावसानखलबुद्बुदफेणपंकैर्ब्रह्मद्रवत्वमुपगच्छति नारधर्म्मे॥ १॥ सौप्याईन एक तिसाई जैसे प्रीति करि शालिग्रामसों पूजे॥

नृपतिसभाजमेंविराजभक्तराजकहैं गहेंवेविवेककोऊकहनप्रभावहै। तहांएकठौरसाधूभोजनकरतरौरदेवोदूजीसोंटासंगकैसेआवेभावहै। पातरिउठाइश्रीगुसाईंपरडारिदईदईगारिसुनीआपबोलेदेखौदावहै। सीतासोंविमुखमैंतौआनिमुखमध्यादियोकियो दासदूरिसेतसेवामें नचावहै ॥ ३७८ ॥ बागमेंसमाजसंतआपचलेदेखिबेकोदेख तदुरायोजनहूंकोशोचपरयोहै। बड़ोअपराधमानिसाधूसनमानचा हैंघूमितनबैठिकहींदेख्योकहूंधरयोहै। जाइकैसुनाईदासकाहूकेतमा खूपास सुनिकैहुलासबढ़ेउआगे आनिकरयोहै। झूठहीउसासभरिसां चेप्रेमपाइलियेकियेमनभायेऐसेशंकादुखहरयोहै॥ ३७९ ॥ उपज तअन्नगांवआवैसाधुसेवाठांवनयोनृपदुष्टआयकावाकावकियोहै। ग्रा मसोंजबतकरौंकरेउलैविचार आपश्यामानन्दजूसुरारिपत्रलिखिदि योहै। जाहीभाँतिहोइताहीभाँतिउठिआवौयहाँआयेहाथबांधिकरि आचेहूंनलियोहै। पाछेसाष्टांगकरीकरीलैनिवेदनसोभोजनमेंकहीच लेआयेभीज्योहियोहै ॥ ३८० ॥

शीत विमुख ॥ दोहा ॥ जानि अजानी ह्वै रहै, तातलेइ जो जानि। अगिला होवै अगन सम, आपुन होवै पानि ॥ २ ॥ कियो दास दूरि र-सोंई पावो ले महाराज लाज कैसे रहै सोंटा को मांगै है सोंटाहू खाइहै बावरे मनुष्य खाइसेर सोंटा खाइ चारि सेर कैसे महाराज जब सोंटा सों भाँग घोटिकै पीवैं तब चारि पनवारे उड़ाइ जाइ सोंटाहि तौ खाइहै दासको दूरि करि दियो ॥ ३ ॥ शोच पऱ्यो संतके लक्षण हैं कुछ न किया करै तौलाज करै नाहीं काहेको करै ॥ ३ । ४ । ५ । ६ ।

आज्ञापाइअचयोलैदैपठायेवाहीठौर दुष्टशिरमौरजहांतहांआप आयेहैं। मिलेमुत्सद्दीशिष्यआइकैसुनाईबातजावोउठिप्रातयहनीच जैसेगायेहैं। हमहींपठावैंकामकरिसमझावैंसबमनमेंनआवैंजानीने हडरपायेहैं। चिंताजनिकरौहियेधरौनिहचिंतताई भूपसुधिआई

दिनातीनकहाँछायेहैं ॥ ३८१ ॥ सुनिआयेगुरुवरकलआवोमेरे घरदेखौकरामातिबातपहलेसुनाईहै । कह्योआनिअभूजावोचलौउन मानदेखें चलेसुखमानिआयोहाथीधूमछाईहै । छोड़िकैककहारभागे येनहींनिहारिसके आपरससारवाणीबोलीजैसीगाईहै। बोलौहरिकृष्ण कृष्णछांड़ौगजतमतनसनिगयोहियेभावदेहसोनवाईहै ॥ ३८२ ॥ बहैदृगनीरदेखिहोइगयोअधीरआपकृपाकरिखीरकियोदियो भक्तभा वहै । कानमेंसुनायोनामनामदेगोपालदास मालापहिरायग रेप्रगटचोप्रभावहै । दुष्टशिरमौरभूपलखिवहिठौरआयोपाइलपटाइभ योहियेअतिचावहै । निपटअधीनग्रामकेतिकनवीनादियेलियेकरजो रिमेरोफल्यांभागदावहै ॥ ३८३ ॥

आज्ञा पाइ अचयो लै गुरुमें भाव भक्तिकी नीम है जैसे हवेली को नीम होइ तौ सतखण्डो उठाइ लई नहीं तौ गिरिपरै ऐसेही गुरुमें भक्ति होइ तौ दशधा भक्ति दशखण्डी सिद्धहोइ उनमान देखे हकीम प्रबल रोग सुनतही न भाजै रोगको उनमान देखिये बोले हरे कृष्ण भागवते ॥ प्रविष्टः कर्णरन्ध्रेण स्वानां भावसरोरुहे । धुनोति शमलं कृष्णः सलिलस्य यथा सरित् ॥ प्रभाव है ॥ शृण्वतां स्वकथां कृष्णः पुण्यश्रवणकीर्त्तनः ॥ हृद्यंतस्थो ह्यभद्राणि विधुनोति सुहृत्सताम् ॥ ३ ॥

भयोगजराजभक्तराजसाधुसेवासाज संतनसमाजदेखकरतप्र णामहै ।आनिडारैगौनबनिजारिनिकीवारिनिसोंआयेईपुकारनवेजहां गुरुधामहै । आवतमहोछेमध्यपावतप्रसादशीतबोलेआपहाथीसोंयों निन्दबहुकामहै । छोड़िदईरीतितबभक्तनिसोंप्रीतिबढ़ी संगहीसमूह फिरैफैलि गयोनामहै ॥ ३८४ ॥ संतसातपांचसातसंगजितजातति तलोकउठिधावैंलावैंसीधैबहुभीरहै । चहूंओरपरीहईसुवासुनिचाहभ ई हाथपैनआवतसोआनेकोऊधीरहै । साधुएक गयोगहिलयोभे षदासतनु मनमेंप्रसादनेमपीवैनहींनीरहै । बीतेदिनतीनिचारिज

ललैपिवावैधारिगंगाजूनिहारि मध्यतज्योजोशरीरहै ॥३८५॥मूल॥ भवप्रवाहनिस्ताररहित अवलंबनयेजनभये । सोझासींवांअधार धीर हरिनामत्रिलोचन । आशाधरदेवराजनीरसधनादुखमोचन । काशी श्वरअवधूतकृष्णकिंकरकटहरियो । सोभूउदारामनामडुंगरव्रतधरि यो । पदमपदारथरामदासविमलानंदअमृतसृये । भवप्रवाहनिस्ता रहितअवलम्बनयेजनभये ॥ ९६ ॥

निंद बहुकामहै वैष्णवो बंधुसत्कृत्य ॥ २ ॥ महाराज बंधुन के लिये चोरी करै ठगाई करै आप बोले धन न होइ तौ करै ताते यह काम छोड़िदे भेट मुक्ती आइ रहैगी बहु भीरहै पांचसौ सातसै वैष्णव-नकी भीररहै संग जहां चले गोपाल दास हाथी सींधे चलै आवै और याते भीर बहुत रहै वैष्णवनकी गूदरी तौ लाद लेहै और हारौ नीरो सा-धुहु चढि लेहि ऐसो महंत कहा पाइये और महंत तौ वैष्णवन कंधे लादे यह वैष्णवनको सब बोझलै चलैं ॥ २ ॥

टीका ॥ सदनाकसाईताकीनीकीकसआईजैसेबारहहरबानीसोने कीकसौटीकसआईहै । जीवकोनबधकरैऐपैकुलाचारढरैबेचैंमांसला इप्रोतिहरिसोंलगाईहै । गंडकीकोसुतविनजानेतासोंतोल्यौंकरैभरै हगसाधुआनिपूजेपैनभाईहै कहीनिशिस्वपनमेंवाहीठौरमोकोदेवो सुनौ गुणगानरीझेहियेकीसचाईहै ॥ ३८६ ॥ लैकेआयोसाधुमैंतौ बड़ोअपराधकियोकियोअभिषेकसेवाकरौपैनभाईहै।येतौप्रभुरीझेतो पैजोइचाहौसोईकरौगरीभरिआयोसुनिमतिबिसराई है । वेईहरिउर धारि डारिदियोकुलाचारि चलेजगन्नाथदेवचाहउपजाई है । मिल्यो एकसंगसंगजातवेसुज्ञातसबतबआपदूरिदूरिरहेजानिपाई है॥३८७॥

सुनौ गुणगान ॥ पद ॥ मैंतौ अतिही दुखित मुरार । पांच ग्राहगी लत हैं मोको गज ज्यों करौ उधार ॥ नाम गरीब निवाजउजासों करन विषय हठतार । सदनाको प्रभु तारौ ऐसे बहतहै कारी धार॥ २ ॥ कवित्त वह पद भाषा के हैं एक कारि गावतहो हम तुम्हैं गावत हैं सदा वेद वाणी

सों । माँस भरे हाथनि सों आई तुम्हैं छूवत हौं हमैं कैऊ मास बीते तुम्हरी कहानी सों ।। लक्ष्मी नारायण जू बड़े रिझवार तुम्हारी रीझनिक सतहै तुम्हारी रजधानीसों । हम निरमल गंगा जलसों न्हवावैं नित तुम रीझे सदना के वदना के पानीसों ।। २ ।। डारिदियो ।। पद ॥ तजौ मन हरि विमुखनको संग । तिनके संग कुमति उपजत है परत भजनमें भंग ।। कागै कहा कपूर चुनावै मर्कट भूषण अंग । खरको कहा अरगजा लेपै श्वान अन्हाये गंग ।। काह भयो पयपान कराये विषनहिं तजत भुवंग । सूरदास कारी कामरि पर चढ़त न दूजोरंग ।। ३ ।। ४ ।। ५ ।।

आयेमगग्रामभिक्षालेनइकठामगयोनयोरूपदेखकोऊ तियारीझ परीहै ।बैठोयाहीठौरकरौभोजननिहोरकह्योरह्योनिशिसोइआईमेरी मतिहरीहै । लेवोमोकोसंगगरोकाटोतौनहोइरंगबूझीऔरकाटीपति ग्रीवपैनडरीहै । कहीअबपागौमोसोंनातेकौनतोसोंमोसों शोरकरिउ ठीइनमारौंभीरकरीहै ॥ ३८८ ॥ हाकिमपकरिपूछेंकहैंहाँसिमारोहम डारचोशोचभारीकहीहाथकाटिडारिये । कट्योकरचलेहरिरंगमांझ झिलेमानी जानीकछूचूकमेरीयहैउरधारिये । जगन्नाथदेवआगेपाल कीपठाईलेन सदनासुभक्तकहांचढ़ैनविचारिये॥ चढ़आयेप्रभुपाससु पनोंसोंमिल्योत्रासबोलेदेकसौटीहूपैभक्तविस्तारिये ॥ ३८९ ॥ गुसा ईश्रीकाशीश्वरआगेअवधूतवरकरप्रीतिनीलाचलरहेलागेनीकोहै । महाप्रभुश्रीकृष्ण चैतन्यजूकीआज्ञापाइआयेवृन्दावनदेखिभयोभा योहींकोहै । सेवा अधिकारपायोरसिकगोविंदचंदचाहतमुखारविंद जीवनजोजीकोहै । नितहीलड़ावैभावसागरछुड़ावै कौन पारावारपा वैसुनैं लागैजगफीकोहै ॥ ३९० ॥

चूक मेरी ।। कुण्डलिया ॥ ढाक चढ़त बारी गिरै करै रावसों रोष । करै रावसों रोस दोष हरिको कह दीजै ।। आपुन कुमति कमाय परेखो काको कीजै । तृषावंत ह्वै जीव सरोवर पै चलि आवै ।। यह नाहिं देखी

सुनी आइ सर तृषा बुझावै। अगर कहै अपराध यह प्रभु हैं सदा अदोष॥ ढाक चढ़त वारी गिरै करै रावसों रोष ॥ २ ॥ पालकी पठाई ॥ श्री जगन्नाथ देव जी करई ओषधि है पिछले जन्मको अपराध खोयो- चाहैं तब बुलाया ॥ दोहा ॥ दुर्जन को है तनु भलो, सज्जनको भलो त्रास ॥ जो सूरज अधिकी तपै, तौ वरषनकी आस ॥ २ ॥ न्यायके कर्त्ता न्याय करतही हैं ॥

मूल ॥ करुणाछायाभक्तिफलयेकलियुगपादपरचे । जतीराम रावल्यश्यामखोजीसंतसीहा । दलहापद्ममनोरथएकाद्यौगूजपजीहा जाड़ाचाचागुरूसवाईचांदनपा। पुरुषोत्तमसोंसांचचतुरकीतामनको जिहिमेटचोआपा। मतिसुंदरधीधागेश्रमसंसारचालनाहिंननचे । करुणाछायाभक्तिफलयेकलियुगपादपरचे ॥ ९७ ॥ टीकाखोजी जूकेगुरुहरिभावनाप्रवीणमहादेहअंतसमय बांधिघटासोंप्रमानिये । पावैंप्रभुजबतबबाजिउठेजानौयहैपायेनबाज्यौबड़ीचिन्तामनआनिये तनुत्यागबेरनहींहुतेफेरिपाछेआयेवाहीठौरपौढ़िदेख्यौआवपक्योंमा निये। तारेताकेटूककियेछोटोएकजन्तमध्यगयो सोबिलाइबाजउठे जगजानिये॥ ३९१ ॥ शिष्यकीतौयोगताईनीके मनआईआजुगुरू कीप्रबलऐपैनेकुघटिक्योंभई । सुनोयहीबातमनबातबतकहीसही लैदिखाईऔरकथाअतिअतिरसमई। वेतोप्रभुपाइचुकेप्रथमप्रसिद्धपा छेआछौ फलदेखिहरियोगउपजीनई। इच्छासोसफलश्यामभक्त वश करीवहीपूरपक्षसबव्यथाउरकीगई सई॥ ३९२ ॥

मतिसुन्दर धीधागे मृदंग कैसी मतिहीसों सुन्दर ठहराई है पैहै झूठी ताकी चालमें सब संसार नचै है ॥ १ ॥ कवित्त ॥ आवो सदा काल पै न पायो कहूं सांचो सुख रूप सों विमुख दुख कूप वास बसाहै । धर्म को संघाती है न महाही अफाती पुनि एपै यह सन्निपात कैसी युत द- शाहै। माया कोऊ पटि गहै काया सों लपटि रहै भूल्यो भ्रम भीर में व

हीर को सो शशाहै। ऐसो मन चंचल पताका कोसों अंचल सुज्ञानके जगेते निर्वाण पद धसाहै ॥ २ ॥ ऐसे श्रम करिकै नहीं नचै संसार की चालमें रम्यो है ॥ ३ । ५ । ६ ॥

टीका राकावांकाकी ॥ राकापतिबांकातियाबसैपुरपंडुरमेंउरमें नचाहनेकुरीतिकुछुन्यारिये । लकरीनबीनिकरिजीविकानवीनेकरै धरैहरिरूपहियेतासोंयोंजियारिये । विनतीकरतनामदेवकृष्णदेवजू सों कीजैदुखदूरिकहीमेरीमतिहारिये। चलौलैदिखाऊंतबतेरेमनभा ऊंरहेवन छिपदोऊथैलीमगमांझडारिये ॥ ३९३ ॥ आयेदोऊतिया पतिपाछेबधूआगेस्वामीऔचकहीमगमांझसंपतिनिहारिये । जानी योंयुवतिजातकभूमनचलिजात यातेवेगिसंभ्रमसोंधूरिवापैडारिये । पूछीअजू कहाकियोभूमिमेंनिहुरितुम कहीवहीबातबोलीधनहूविचा रिये । कहैमोकोराकाएपै बांकाआजुदेखीतुही सुनिप्रभुबोलेबातसां चीहै हमारिये ॥ ३९४ ॥

जीविका नवीन करै ॥ उतनी ही लावै उतनी ही नृत्य करै अथवा साधुनको दैकै बचे सो आप पावै यह नवीनता तो काहूपै न बने विनती कर्ता नामदेव ॥ दोहा ॥ कहूं कहूं गोपालकी, गई सिटल्लौ नाहिं। काबुलमें मेवा करी, ब्रजमें टेटी खाहिं ॥ २ ॥ कहूं कहूं गोपालकी, गई सिटल्लौ नाहिं। विमुख लोग घोड़ा चढ़े, काठबेंच जनखाहिं ॥ ॥ २ ॥ कहा भयो जल में जल वंर्षत वर्षत नाहिं खेत जहँ सूखा ॥ अघाये आगे बहुत परोसत परसत नाहिं मरत जहँ भूखा॥ ३ ॥ सवैया॥ श्री हरिदासके गर्भ भरे कमनेत अनन्य निहारिनि के । महा मधुरे रस पान करैं अवसान खतासिल हारिनि के । दियो नहिं लेह न मांगत काहू पै जोरत नेहतिहारिनिके। किये रहे अंड विहारिय सों हम ठेपर बाह विहारिनिके ॥ ४ । ५

नामदेवहारेहरिदेवकहीऔरैबातजोपैदाहगातचलौलकरीसकेलि ये । आयेदोऊबीनिबेकोदेखीइकठौरीढेरीद्वैहूमिलीपावतेउहाथनहीं

छेरिये । तबतौप्रगटश्यामलायोयोंलेवाइघरदेखिमूढ़फोराकह्योऐसे प्रभूफेरिये । विनतीकरतकरजोरिअंगपटधारो भारोबोझपरोलियो चीरमात्रहेरिये ॥ ३९५ ॥ मूल ॥ परअर्थपरायणभक्तयेकामधेनु कलियुगके। लक्ष्मणलफरालडूसतजोधपुरत्यागी। सूरजकुंभनदास विमानीखेमवैरागी । भावनविरहीभरतनफरहरिकेशटटेरा । हरी दासअयोध्याचक्रपाणिदियोसरयूतटडेरा । तिलोकपुषरदीबीजुरी उद्धवचनचरवंशजे । परअर्थपरायणभक्तयेकामधेनुकलियुगके ॥ ॥ ९८ ॥ टीका ॥ लडूनामभक्तजाइनिकसेविमुखदेशलेशहूनसंत भावजानेपापपागेहैं । देवीकोप्रसन्नकरैमानसकोमारिधरैलैगयेपकरि जहांमारिबेकोलागेहैं । प्रतिमाकोफारिविकरालरूपधरिआईलेकेत रवारमूड़काटेभीजेवागे हैं । आगेनृत्यकरैंदृगभरैंसाधपावधरैंऐसे रखवारेजानिजनअनुरागेहैं ॥ ३९६ ॥

नहीं छेरिये ॥ कही कोऊ कंगला धरिगयो आगे ले लेहिंगे लकरी क्यों न मिले प्रातहि धनको मुहड़ो देख्यौ हो ले जेतो नजानिये कहा है तो ॥ आचाह सों कंगाल कह्यो ॥ दोहा ॥ घर घर डोलत दीन है, जन जन याचत जाइ । दिये लोभ च समा चखन, लघु पुनि बड़ो लखाइ॥ १ ॥ जैसे लोभी को लघु बड़ो दीखै तैसे त्यागी तो बड़े हैं ते लघु दीखैहैं । भयंत धन मुक्ति स्वर्ग तुच्छ दीखै अत्यन्त ॥ दोहा ॥ राम अमलमें तेरहैं, पीवें प्रेम निशंक ॥ आठ गांठि कोपीन में, कहैं इंद्र सों रंक ॥ २ ॥ बे पर-वाही वैष्णव ऐसे ॥ ३ ॥

टीकासंतकी ॥ सदासाधुसेवाअनुरागरंगपागिरह्योगह्योनेमभि क्षाव्रतगांवगांवजाइके । आयेघरसंतपूछेतियासोंयोंसंतकहासंतचूल्हे मांझकहीऐसेअलसाइके । वानीसुनिजानीचलेमगसुखदानीमिलेक हौकितहुतेसोबखानीउरआइके । बोलीवहसांचवोहीआंचहीकोध्या नमेरेआनिगृहाफिरिकियेमगनजिवाइके ॥ ३९७ ॥ टीकातिलोक

की ॥ पूरबमेंओकसोतिलोकहौसुनारजाति पायोभक्तसारसाधुसेवा
उरधारिये। भूपकेविवाहसुताजोराएकजेहरिकोगढ़िबेकोदियोकह्यो
नीकेकैसँवारिये। आवतअनंतसंतऔसरनपावैकिहूंरहेदिनदोयभूप
रोषयोसँभारिये। लावोरेपकरलाये छाड़ियेमकरकही नेकुरह्यो का
म आवै नातौमारिडारिये ॥ ३९८ ॥ आयोवहीदिनकरछुयोहून
इननृपकरैप्राणबिनवनमांझछिप्योजाइकै। आयेनहिंचारिपांचजानी
प्रभुआंचगढ़िलियोसोदिखायोसांचचलेभक्तभाइकै। भूपकोसला
मकियोजेहरिकोजोरदियो लियोकरदेखिनयनछोड़ैनअघाइकै।भईरी
झभारीसबचूकमेटिडारीधनपायोलैमुरारीऐसेबैठेघरआइकै॥३९९॥

बानीसुनिजानी चाले ॥ सवैया ॥ होतही प्रात जो घात करै तिय
पार परोसिन सो कलगाढ़ी। हाथ नचावति मूड़ खुजावति पौरि खड़ी
अति कोटिन बाढ़ी ॥ ऐसी बनी नखते शिखलौं मनों क्रोधके कुंडमें
बोरिकै काढी। ईंट लिये पियको मुख जोवति भूतमी भामिन भौनमें
ठाढी ॥ २ ॥ ऐसी कलहा को वचन सुनिकै साधू उठि चले क्योंकि
जिनके वचन सुनिकै भूतहू भाजिजाहिं ॥ २ ॥ राजाके पुरोहित कुरला
डारा अपनी स्त्री पतोहू संपत्ति और शरीर सुख विद्या अरु बरनारि
मांगे मिलैं न चारि बिन पूरवके पुण्य बिन अनंत संत ॥ पंचमे ॥ तुलया
म लवेनापि न स्वर्गं ना पुनर्भवम् ॥ भगवत्संगिसंगस्य मर्त्यानां किमुता
शिषः ॥ ३ ॥ सत्संगको मार्ग आछो है ॥ ४ ॥

भोरहीमहोत्सवकियोजोईमांगैसोईदियो नानापकवानरसखान
स्वादलागे हैं। संतकोस्वरूपधरिलैप्रसादगोदभरिगयेजहांपावौंजो
तिलोकगृहपागेहैं। कौनसोत्रिलोकअजूदूसरोत्रिलोकीमेंन बैनसुनि
चैनभयोआयोनिशिरागे हैं। चहलपहलधनभरयोघरदेखिढरयो
प्रभुपदकंजजानीमेरेभागजागेहैं॥ ४०० ॥ मूल ॥ अभिलाषअधि
कपूरणकरनयेचिंतामणिचतुरदास। सोमभीमसोमनाथविकोविर्हा

खालमध्याना। महदामुकुंदगयेसत्रिविक्रमरघुजगजाना। वालमीकिवृद्धव्यासजगनझांझवीठलआचारज। हरभूलालाहरीदासबाहुबलराघवआरज। लाखाछीतरउद्धवकपूरघाटमघूराकियोप्रकास। अभिलाषअधिकपूरणकरनयेचिंतामणिचतुरदास॥ ३९९॥ भगतपालदिग्गजभगतयेथानापतिशूरधीर। देवनन्दबरहरियानंदमुकुन्दमहीपतिसंतरामतमोली। खेमश्रीरंगनंदविष्णुवीदावाजूसुतनोरी। छीतमद्वारकादासमाधवमांडनरूपादमोदर। भलनरहरिभगवानबालकहरकेशवसोहेंघर। दासप्रियागलोहंगगुपालनागूसुतगृहभक्तभीर। भक्तपालदिग्गजभगतयेथानापतिशूरधीर॥ २००॥

चहल पहल॥ दोहा॥ परमारथ अनुसरतही, बीचहि स्वारथ होय। खेतीकीजै नाजकी, सहज घास तहँ होय॥ २॥ घाटम॥ पद॥ जोनर रसना नाम उचारै। केतिक बात आप तारिबेकी कोटि पतित निस्तारै। काम क्रोध मद लोभ तजै जो जीवदशा प्रतिपालै॥ तीरथ जेतिकते वसुधापर तिनहूंके अघटारै। मेना जाति यद्यपि कुल नीचो सत गुरु शब्द विचारै। घाटमदास राम जो परचै तीन लोक उद्धारै। थानापति क्योंन भये॥ दोहा॥ क्षुधारूपिणी कूकरी, हरिने दई लगाइ। परसा टूकाडारिकै गोविंदके गुणगाइ। ३। ४। ५॥

मूल॥ बद्रीनाथउड़ीसेद्वारकासेवहरिभजनपर। केशवपुनिहरिनाथभीवखेतागोविन्दब्रह्मचारी। बालकृष्णभलभरतअच्युतअपपाव्रतधारी। पंडागोपीनाथमुकुन्दागजपतिमहायसु। गुणनिधियशगोपालदेइभक्तनकोसर्वसु। श्रीअंगसदासानिधिरहैकृत्यपुण्य पुंजभलभागभर। बद्रीनाथउड़ीसाद्वारकासेवहरिभजनपर॥ २०१॥

टीकाप्रतापरुद्रराजाकी॥ श्रीप्रतापरुद्रगजपतिकोवखानकियोलियोभक्तिभावमहाप्रभुपैनदेखहीं। कियेहूउपायकोटिऔटिलैसंन्यासलियो हियोअकुलायअहो कहूंमोकोपेखहीं। जगन्नाथरथआगेनृ

त्यकरैंमत्तभयेनीलाचलनृपपाइपरयोभागलेखहीं । छातीसोंलगायोप्रेमसागरडुबायो भयो अतिमनभायोदुखदेतयेनिमेषहीं ॥४०१॥
मूल ॥ हरिसुयशप्रचुरकरिजगतमेंयेकविजनअतिशयउदार । विद्यापतिब्रह्मदासबहोरणचतुरविहारी। गोविंदगंगारामलालबरसानियामंगलकारी। पियदयालपरशुरामभक्तिभाईखाटीको । नंदसुवनकीछापकवित्तकेशवकोनीको । आशकरणपूरणनृपतिभीषमजनदयालगुणनहिंपार । हरिसुयशप्रचुरकरिजगतमेंयेकविजनअतिशय उदार॥ ४०२ ॥

प्रेमसागर॥ महाप्रभु जू प्रेम भक्ति देत भये ॥ श्लोक ॥ ज्ञानतः सुलभा भक्तिर्भुक्तिर्यज्ञादिपूर्णतः । समासहस्रैर्हरिभक्तिदुर्लभा ॥ २ ॥ अर्जुनके रथकी रक्षाके निमित्त अनेक झूठ साँच बोले ऐसे भक्तन सों बँधेहैं पै हरिके बँधेही में शोभा है ॥ श्लोक ॥ तव कथामृतं तप्तजीवनं कविभिरीडितं कल्मषापहम् । श्रवणमंगलं श्रीमदाततं भुविगृणंति ये भूरिदाजनाः ॥ २ ॥ भूरिदा कहि बड़े दाता जन्म कर्म के दूरि करनेहारे सो इन कविन हरिके गुण रूपही वर्णन करे हैं तिन गुणार्विंदन को बांचिकै जगत् तारि जायगो विश्वास मानि ॥ ३ ॥

टीकागोविंदस्वामीकी ॥ गोवर्द्धननाथसाथखेलेसदाझेलेरंगअंगसख्यभावहियेगोविंदसुनामहै । स्वामीकरिख्यालताकीबातसुनिलीजेनीकेसुनेसरसातनयनरीतिअभिरामहै । खेलतहौलालसंगगयोउठिदांवलैकेमारीखेचगिलीदेखिमंदिरमेंश्यामहै । मानिअपराधसाधूधकादैनिकारिदियोमतिसोअगाधकैसेजानेवहबामहै ॥ ४०२ ॥ बैठेकुंडतरिजाइ निकसैगोआइवन दियोहैलगाइताकोफलभुगताइये । लालहियेशोचपरयोकैसेजातभरयोवहअटेउमगमांझभोगधरयोपैनखाइये । कहीश्रीगुसाईजीसोंमोपैकोनभावैकछूचाहौजोखवायोतौपैवाकोजामनाइये । वाकोहुतोदांवमोपैसोतौभावजानौ

नाहिं कहैमोसोंबातैशोकमारैवेगिलाइये ॥ ४०३ ॥ वनवनखेलेबिन बनतनमोकोनेकुभनतजगारीअनगनतलगावैगो । सुधिबुधिमेरीगई भईबड़ीचिंतामोहिंलाइयेजूढूंढ़िजबचैनढिगआवैगो । भोगजेलगाये मैंतौतनकनपायेरिस वाकीजबजाइजबमोहिंकछूभावैगो । चलेउठि धाइनीठिनीठिकेमनाइलायेमंदिरमेंखाइमिलिकहीगरेलावैगो ४०४॥

सख्यभाव ॥ नवप्रकारकी भक्तिहै तामेंसख्य बड़ी कठिन है तामें ईश्वरताकी गंध न रहै दृष्टांत बादशाह के खिलवत बखाने अरु दो मित्रनको ॥ २ ॥ विश्वासंसमतानित्यं सख्यत्वं भावउच्यते ॥ २ ॥ पन्हैं- यां पराई नाथजीको खेलत पाषाण की मूर्ति चैतन्य है कैसे खेलन लगी ॥ ३ ॥ यादृशी भावनायस्य ॥ ४ ॥ गोविन्द स्वामीके अबलों मन भावना रहै याते संगखेले एकगोपहौं सो नंदजीके मंदिर में जाइकै पगड़ी उतारि लायो लालकी सगाई मारि जाइ है ॥ ५ ॥

गयेहैंबहरभूमितहांकृष्णझूमिआये करीबड़ीधूमआकबौंड़निसों मारिकै । इनहूंनिहारिउठिमारिदईवाहीसोंजुकौतुकअपारसख्यभाव रससारिकै । मातामगचाहैबड़ीबेरभईआईतहांकहीबारबारऔटपाई उरधारिकै । आयोयोंविचारअनुसारसदाचारकियो लियोप्रेमढिगक भूंकरतसँभारिकै ॥ ४०५ ॥ आवतहौंभोगमहासुंदरसोमंदिरकोरहे उमगबैठिकहीआगेमोहिंदीजिये । भयोकोपभारीथारडारिकैपुकार करीभरीनअनीतिजातिसेवायहलीजिये । बोलिकैसुनाईअहोकहाम नआईतबखोलिकैबताईअजूबातकानकीजिये । पहिलेजुखाइवनमां झउठिजाइपाछेपाऊंकहांधाइसुनिमातिरसभीजिये ॥ ४०६ ॥ मूल ॥ जेवसेंसबमथुरामंडलतेदयादृष्टिमोपरकरौ । रघुनाथगोपीनाथराम भद्रदासस्वामी । गुंजामालीचित्तउत्तमवीठलमरहटमिःकामी । यदु नंदनरघुनाथरामानंदगोबिंदमुरलीसोती । हरिदासमिश्रभगवान्मु कुंदकेशवडंडोती । चतुर्भुजचरित्रविष्णुदासबेनीपदमोशिरधरौ । जेवसेबसमथुरामंडलतेदयादृष्टिमोपरकरौ ॥ २०३ ॥

आइतहां देखै तौ धूममचाइ रह्योहै माताकहै ओटपाई धूम कौन सों मचाइ रह्योहै इहां तौ कोई है नहीं माताको कृष्ण क्यों न दीखे गोविन्द स्वामीको कैसे दीखे गोविन्द स्वामी श्रीकृष्णके संगते अप्राकृतभयो याते दीखे जैसे कच्चोआंब पालसों पके खटाई जातिरहै मिठाई ह्वै जाइ जैसे ध्रुव भगवानके संगते अप्राकृतभये ऐसेही गोविंदस्वामी अप्राकृतभये मतिरसभी जिये विठ्ठलनाथजीकी मति रसमें भीजिगई सो सख्यभावमें भीजिगयेहैं २

टीकागुंजामालीकी ॥ कहीनाभास्वामीआपगायोमैंप्रतापसंत बसेब्रजबसेसोतामहिमाअपारहै । भयेगुंजामालीगुंजहारधारुनामप र्यो कर्योबासलाहोरमेंआगेसुनौसारहै । सुतवधूविधवासोंबोलिकै सुनायोलेहु धनपतिगेहश्रीगुपालभरतारहै । देवोप्रभुसेवामांगेंनारि वारिवारयहै डारैसबवारियापैगनैजगछारहै ॥ ४०७ ॥ दईसेवावाहि औरघरधनातियादियो लियोब्रजबासवाकीप्रीतिसुनिलीजिये । ठाकु रबिराजैजहांखेलैसुतऔरनके डारेईटखोवार्योप्रभुपरखीजिये॥दिये वेबिडारिधर्यो भोगपैनखातहरि पूछीकहीवेईआवैंतबहींतोजोजिये कह्योरिसभरिघूरिनोकेभोरडारौभरि खावौ हमहाहाकरिपायोलाइरी झिये ॥ ४०८ ॥ मूल ॥ कलियुगयुवतीजनभगतराजमहिमासबजा नेजगत ॥ सीताझालीसुमतिशोभाप्रभुताउमाभटियानी। गंगागौरा कुवरीउबीटागुपालीगणेशदेरानी ॥ कलाखाकृतगढ़ौमानमतीशु चिसतभामा ॥ यमुनाकोलीरामामृगादेभक्तनविश्रामा ॥ युगजीवा कीकमलादेवकीहीराहरिचेरीपोषेभगत । कलियुगयुवतीजनभगत राजमहिमासबजानेजगत ॥ २०४ ॥

भक्तराज ॥ स्कांदे ॥ स्त्रियोवायादिवा शूद्रो ब्राह्मणःक्षत्रियोऽपिवा ॥ पूजयित्वा शिलाचक्रं लभते शाश्वतं पदम् ॥ १ ॥ दोहा ॥ राम रंग लाग्यो नहीं, विप्र जनेऊ बांह ॥ रज्जब लोनातागलगि, चक्र चूनरी चाह ॥ २॥ महिमा यह सब भक्त राज है जाति पांति की गनती नहीं एक पंगतिमें

राखी रानी ब्राह्मणी कोली भठियारी रैदासिनी भक्तिही श्रेष्ठ है जहां भक्ति तहां भगवान शबरी के गये अभिमानी ऋषिन के न गये प्रीति की रीति साँची जानी ॥

टीकागणेशदेरानीकी ॥ मधुकरशाहभूपभयोदेशओडछेकोरानीसोगणेशदेसुकामवाकोकियोहै । आवैंबहुसंतसेवाकरतअनंतभांतिरह्योएकसाधुखानपानसुखलियोहै । निपटअकेलीदेखिबोल्योधनथैलीकहां होइतौबताऊंसबतुमजानौहियोहै । मारीजांघछूरीलखिलोहुवेगिभागिगयो भयोशोचजानैजिनिराजाबंदवियोहै ॥ ४०९ ॥ बांधिनीकीभांतिपौढ़िरहीकहीकाहूसोंन आयोढिगराजामतिआवोतियाधर्म्महै । बीतेदिनतीनजानीवेदननवीनकछूकहियेप्रवीणमोसोंखोलिसबभर्महै । टारीबारदोइचारिनृपकेविचारपर्‍यो कह्योसावधानजिनिआनोजियमर्महै । फिर्‍योआसपासभूमिपरितनरासकरी भक्तिकोप्रभाव छांड़ितियापतिशर्महै ॥ ४१० ॥

आवैं बहुसंत वह तरंग के पै सबही को सेवै कह्यो सावधान ॥ कवित्त ॥ संतहैं अनंत गुण अंतको न पावै याको जाने रसवंत कोई रीझै पहिचानि कै । अवगुण न दीठिपरै देखतही नैन भरै ढरै पग ओर उर प्रेम भरि आनिकै ॥ जोपै कछूघटि क्रिया देखि पति इनमांझ करिलै विचार हरिही की इच्छा मानिकै । बालक शृँगारके निहारि नेहवती माता देतिहै दिठौनाकारो दीठि दुर जानिकै ॥ दोहा ॥ कामी साधू कृष्ण कहि लोभी बावन जानि ॥ क्रोधीको नरसिंहही, नहीं भक्ति की हानि ॥ २ ॥ जाको जैसो सुभाव जायनहिं जीवसों । नींब न मीठी होइ सींचि गुड़ घीवसों ॥ ३ ॥ कोइला होइ न ऊजला, नौमन साबुन लाइ ॥ मूरख को समझावनो, ज्ञान गांठिको जाइ ॥ ४ ॥ काहू ने कही सुंदर क्यों न भये तापै दृष्टांत राजा आशकरन को और साहब जादे फकीरको प्रसंग ॥ १ ॥

मूल ॥ हरिकेसम्मतजेजगततेदासनकेदास ॥ नरबाहनबाहन

बरीसजापूजैमलवीदावत। जयंतधारारुपाअनभईउदरावत॥ गंभीरैअर्जुनजनार्दनगोविंदजीता। दामोदरसापिलेगदाईश्वरहेमविदीता॥ मयानंदमहिमाअनंतगुढ़ीलेतुलसीदास। हरिकेसम्मतजेभगततेदासनकेदास॥ २०५॥ टीकानरबाहनजीकी। हैभैगांवनावनरबाहन साधुसेवीलूटिलईनावजाकीवंदीखानेदियोहै। लौंड़ीआवैदेनकछुखाइबेकोआईदया अतिअकुलाइलैउपाइयहकियोहै। बोलिराधावल्लभऔलेबोहरिवंशनामपूछेशिष्यनामकहौपूछीनामलियोहै। दईमँगवायवस्तुराखियोदुराइबातआपुदासभयोकहीरीझिपददियोहै ४११ मूल॥ श्रीमुखपूजासंतकीआपुनतेअधिकीकही॥ यहवचनपरिमानदासगाँवढीजाढियांनैभाऊ। बूंदीबनियाराममड़ौतैंमोहनवारीदाऊ॥ मांड़ौढीजगदीशलक्ष्मणचटथावरभारी। सुनपथमेंभगवानसबैसलखानसुपालउधारी॥ जोबनेरिगोपालकेभक्तइष्टतानिर्महो। श्रीमुखपूजासंतकीआपुनतेअधिकीकही॥ २०६॥ टीकाजोवनेरगोपालकी॥ जोवनेरवाससोंगुपालभक्तइष्टताको कियोनिर्वाहबातमोकोलागीप्यारियै। भयोहौविरक्तकोऊकुलमेंप्रसंगसुनौआयोयोंपरीक्षालेनद्वारपैविचारियै। आइपरचोपाइँधारोनिजमंदिरमेंसुंदरनदेखौमुखपनकैसेटारियै। चलौजिनिटारौतियारहैगीकिनारोकरिचलेसबछिपीनेकुदेखियाकेमारियै॥ ४१२॥

लूटिकैसेवै तो पापलगैगो जगत्के पाप पुण्य मिथ्याजाने स्वप्नवत् ताकोफल दुखःसुख कहा जैसे व्यभिचारिणी स्त्रीके स्वप्नको फलझूठो सेवा में सांचो॥ यादृशी भावना यस्य॥ १॥ दई ऊंचे को देखि यामें मारियै॥ ४१५॥ मगवाई १ कामदार बोले तीनि लाख तीस हजारको माल क्यों फेरि दियो नरबाहन बोले॥ जो हरिवंशको नामसुनावै तन मन धन तापै बलिहारी। जो हरिवंश उपासक सेवै सदा सेऊं ताके चरण विचारी॥ श्री हरिवंश गिरा यश गावै सर्वस देहौं तेहि वारी। जो हरिबंश को धर्म सि-

खावै सो मेरे प्रभुते प्रभु भारी ॥ पददियो ॥ पद ॥ मंजुल कल कुंज दे-
श राधा हरि विशद वेश राका नभ कुमुद चंद शरद यामिनी ॥ श्यामल
द्युति कनक अंग विहरत मिलि एक संग नीरद मनो नील मधि लसत दा
मिनी । अरुण प्रीति नव दुकूल अनुपम अनुराग मूल सौरभ युत शीत अ-
निल मंदगामिनी । किशलय दल रचत सेन बोलत पिय चारुबैन
मानस हित प्रति पद प्रतिकूल कामिनी ॥ मोहन मन मथत मार परसत
कुचना विहार नेपथ युत नेति नेति वदति भामिनी । नर बाहन प्रभु
सकेलि बहु विधि भर भरति झेलि सो रति रस रूप नदी जगत पावनी
॥ २ ॥ चलि हे राधिके सुजान तेरे हित सुख निधान रास रच्यो श्याम
तट कलिंद नंदनी । निर्तत युवती समूह रागरंग अति कुतूह बाजत तमूल
मुरलिका आनंदनी । वंशीवट निकट जहां परम रवनि भूमि तहां सकल
सुखद मलय बहै वायु मंदनी । जाती ईषत् विकास कानन अतिशय
सुवास राकानिशि शरद मास विमल चांदनी । निरबाहनप्रभुनिहारि लोचन
भरिघोषनारि नख शिख सौंदर्य काम दुख निकंदनी । बिलसौ भुज ग्रीव
मेलि भामिनि सुख सिंधु झेलि नव निकुंज श्याम केलि जगत वंदनी
॥ ३ ॥ आपन ते अधिक पूजा अष्ट प्रकार की ब्राह्मण भोजन अग्नि हो
म जल मंत्र गोत्रन वैष्णव उदर और इत्यादि ॥ ४ ॥ आदिस्तुपरिचर्या
यां सर्वांगैरपिवंदनम् । मद्भक्तपूजाभ्यधिकासर्वभूतेषुमन्मतिः ॥ ५ ॥

एकपैतमाचोदियोदूसरेनेरोषकियो देवोयाकपोलपैयोंवाणीकही
प्यारिये । सुनिआंसूभरिआये जाइलपटाये पांय कैसेकहीजाइयहरी
तिकछुन्यारिये । भक्तइष्टसुनोमेरेबड़ोअचरजभयोलईमैंपरीक्षामोको
भईशिक्षाभारिये । बोलेउअकुलाइअजूऐपै कहांभायऐपैसाधुसुखपा
यकहेंयहीमेरोज्यारिये ॥ ४१२ ॥ मूल ॥ परमहंसवंशनमेंभयोवि
भागीवानरो । सुरधरिखंडनिवासभूपसन्नआज्ञाकारी । रामनामवि
श्वासभक्तपदरजव्रतधारी । जगन्नाथकेद्वारदंडवतप्रभुपरधायो ।
दईदासकोदादिहुंडीकरिफेरिपठायो । सुरधुनीओघसंसर्गतेतामवद

लिकुछितनरो । परमहंसवंशनमेंभयोविभागीबानरो ॥ २०७ ॥
टीकालाखाभक्तकी ॥ लाखानामभक्तताकोबानरोबखानकियोकहैंज
गडोमजासोंमेरोशिरमौरहै । करैसाधुसेवाबहुपाकडारिमेवासंतजें
वतअनंतसुखपावैंकोरकोरहै ॥ ऐसेमेंअकालपर्योआमेंघरमालजा
लकैसेप्रतिपालकरैंताकीऔरठौरहै । प्रभुजीस्वपनदियोकियोमैं
यतनएकगाड़ीभरिगेहूंभैंसआवैकरौगौरहै ॥ ४१४ ॥

विभागी बानरो ॥ भगवान्‌की भक्ति रूपी संपत्ति चारों बाटि पावैं ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र काहूसों घटती नहीं जैसे काहू के चारि पुत्र पंडित मूर्ख निर्धन पंगुला सबही बांटि पावैं कुछित ॥ नारदपंचरात्रे ॥ यस्माद्यस्मादपि स्थानाद्गंगायामंभ आपतत् ॥ सर्वं भवति गांगेयं कोन सेवेत बुद्धिमान् ॥ १ ॥ दोहा ॥ तुलसी नारो जगत को, मिलै संगमें गंग । महा नीचपन आदिको, शुद्ध करै सतसंग ॥ २ ॥ नीर नगरको परशु राम ता समरत अज्ञान । साधु समागम सुरसरी, मिल इक होत समान ॥ ३ ॥

गेहूंकोठीडारिमुहुँमूंदिनीचेदखोखोलिनिकसेअतोलिपीसिरोटीलै
बनाइये । दूधजितोहोइसोजमाइकैबिलोइलीजेदीजेयोंचुपरिसंगछांछ
देजिमाइये । खुलिगईआँखेंभाषेंतियासोंजुआज्ञादई भईमनभाईअजू
हरिगुणगाइये । भोरभयेगाड़ीभैंसिआईवही रीतिकरीकरीसाधुसे
वाकीप्रीतिहूबखानिये ॥ ४१५ ॥ प्रीतिहूबखानकीजेसाधुसेवाचित्त
दीजेलीजेउरधारिसारभक्तिनिरधारहै । रहैढिगगांवतहांसभाएक
ठांवभईडाटिगयेभाईसोउगाहीकोविचारहै । बोलिउठ्योकोऊयों
हारकोतौभारचुक्यो लीजियेसँभारिलाखासंतभवपारहै । लाजदाबि
तिनादियेगेहूंलैपचासमन दईनिजभैंससंगसबसरदारहै ॥ ४१६ ॥
मारवाड़देशतेचल्योईसाष्टांगकियेहियेजगन्नाथदेवयाहीपनजाइये ।
नेहभरिभारीदेहवारिफारिडारीकैसेकरैंतनुधारीनेकुश्रममुरझाइये ।
पहुँच्योनिकटजाइपालकीपठाइदईकहेंलाखाभक्तकौनवेगदेवताइये ।
काहूकहिदियोजाइकरगहिलियोअजू चलौप्रभुपासइहिक्षणहींबुलाइ

ये ॥४१७॥ कैसेचलौपालकीमेंप्रणतप्रतिपालकीजेदीजेमोकोदान याहिभाँतिजानिहारिये । बोलेप्रभुकहीआपुसुमिरनीवनाइलायेअब पहराइमोहिंसुनिउरधारिये । चढ़ेचढ़िबढ़कियोचाहेंयहजानीमैंतौ पढ़िपढ़िपोथीप्रेममोपविस्तारिये । जाइकैनिहारेतनमनप्राणवारेजग न्नाथजूकेप्यारेनेकढिगतेनढारिये ॥ ४१८ ॥

बोलीदेवता पितृ अतिथि इनको ऋणियारहै न देइ तौ ताते लाखा को दीजै ॥ २ ॥ एकोपि कृष्णस्य कृतः प्रणामोदशाश्वमेधावभृथे ततुल्यः। दशाश्वमेधी पुनरेति जन्म कृष्णप्रणामी न पुनर्भवाय ॥ दोहा—बड़ेगहे करहोत बड, ज्यों वावन कर दंड। मौजी प्रभुको संगबड़, गयो अखिलब्रह्मंड ॥

बेटीएकक्कारीव्याहिदेतनविचारी मनधनहरिसाधुनकोकैसेकैल गाइये। कीजैवाकोकार्यकहीजगन्नाथदेवजूनेलीजेमोपैद्रव्यउरनेकहू नआइये। विदापैनभयेचलेहगभनलयेगयेआगेनृपभक्तमगचौकोअ टकाइये। दियोहैस्वपरिप्रभुजनिहठकरोअजू हुंडीलिखिदईलईवि नयकैजताइये ॥ ४१९ ॥ हुंडीसौहजारकीलैगृहद्वारआयेजब तामें तेलगायेसोकबेटीव्याहकियोहै । औरुसबसंतनबुलाइकेखवाइदिये लियेपगदाससुखराशिप्रणलियोहै । ऐसेहीबहुतदामवाहीकेनिमित्त लैले साधुभुगतायेअतिहरषतहियोहै । चरितअपारकछूमतिअनु सारकहेउ लहेउजिनस्वादसोतोपाइनिधिजियोहै ॥ ४२० ॥

पद ॥ हरिके जनकी अतिठकुराई । महाराज ऋषिराज देव मुनि सकुचि रहत शिरनाई। दृढ़ विश्वास दियो सिंहासन तापर बैठे भूप। हरि-यश छत्र विमल शिरसाजत राजत परम अनूप। निशिप्रहदेश राज करता को लोकन अति उत्साह। काम क्रोध मद मोह लोभ ये भये चोरते शाह। अर्थ काम कहुँ दूरिमये दुरि धर्म मोक्ष शिरनायो । बुधि विवेक दोउ पवँरि पवँरिया समय न कबहूं पायो। अष्टसिद्धि नवनिद्धि चातुरी करजोरे आधीनी। छरीदार वैराग विनोदी झरक बाहिरीकीनी। हरिपद

पंकज प्रीति प्रियावर ताही सों अनुराता। मंत्री ज्ञान न अवसर पावै बात कहत सकुचाता॥ माया मोह न व्यापेकबहूं जो यह भेदहि जाने। सूर-दास पदटरत न टारे गुरुप्रसाद पहिंचाने॥ १॥ धनहम तो गुमास्ताऐसे॥

मूल॥ जगतविदितनरसीभगताजिनगुज्जरधरपावनकरी। महास्मारतकलोगभक्तिलवलेशनजाने। मालामुद्रादेखितासुकीनिंदाठाने। ऐसेकुलउतपन्नभयोभागवतशिरोमनि। ऊसरतेसराकियोषंडदोषहिखोयोजिनि। बहुतठौरपरचेदियेरसरीतिभक्तिहिरदैधरी। जगतविदितनरसीभगताजिनगुज्जरधरपावनकरी॥ २०८॥ टीकानरसीमहिताकी॥ जूनागढ़बासपितामाततननाशभयो रहैएकभाईऔभौजाईरिसिभरीहै। डोलतफिरतआइबोलतपिवावोनीरभाभीपैनजानीपीरबोलीजरीबरीहै। आवतकमायेजलप्यायेबिवसरकैसेपियोयोजवाबदियोदेहथरहरीहै। निकसेविचारकहूंदीजेतनडारमानों शिवपैपुकारकरीरहेचितधरीहै॥ ४२१॥ बीतेदिनसातशिवधामतेनजातचारपैरेकाहूतुच्छद्वारसोऊसुधिलेतहै। इतनीविचारिभूखप्यासदईढारिलियोप्रगटस्वरूपधारिभयोहितहेतहै। बोलेवरमांगिअजूमांगिमैंनजानतुहौं तुम्हैंजोईप्यारोसोइदेवोचितचेतहै। परचोशोचभारीमेरीप्राणप्यारीन्यारीतासों कहतडरतवेदकहेनेतिनेत है॥४२२॥

पावनकरी पहले अपावनता कैसी है जाहि पावनकियो जैसे खाई गढ-अरावो बड़ोहोइ तौ ताको सरकरै सो शूरमा कहावै अरु शोभापावै ऐसे अपावन बड़ी होइ तब पावन की शोभा सो नरसी तौ अभक्तदेश जीतिकै भक्तिको राज्य कियो॥ १॥ महा स्मारत लोग स्मारतकतौ यह कर्म करिकै नाम लीजे कै सरिजाइ॥ अष्टमे॥ मंत्रतस्तंत्रतश्छिद्रं देशकालौहिवस्तुतः। सर्वं करोति निश्छिद्रं नामसंकीर्तनं तव॥ ३॥ ऐसो क्यों बांकी गढी सुरंगसो टूटैहै॥

दियोमैंवृकासुरकोवरडरभयोजहां वैसेवरकोटिकोटियापैवारिडारेहैं। बालकनहोइयहपालकहैलोकनकोविमनकोचारकहादीजेप्र।

णप्यारेहैं । जोपैनहींदेतमेरोबोलिबोअचेतहोतदियोनिजहेततनआलिनकेधारेहैं । लायेवृन्दावनरासमंडलजटितमणि प्रियाअनगतबीचलालजूनिहारेहैं ॥ ४२३ ॥ हीरनिखचितरासमंडलनचतदोऊरचतअपारनृत्यगानतानन्यारिये । रूपउजियारीचंदचांदिनीनसमतारी देतकरतारीलालगतिलेतप्यारिये । ग्रीवकीदुरनिकरअँगुरीमुरनिमुखमधुरसुरनिसुनि श्रवणतापारिये । बजतमृदंगमुरचंगसंगअंगअंग उठततरंगरंगछबिजोकीज्यारिये ॥ ४२४ ॥ दईलैमशालहाथनिरखिनिहालभईलालदीठिपरीकोऊनईयहआई है । शिवसहचरीरंगभरीअटकरीबातमृदुमुसुकातनयनकोरमेंजताई है । चाहयाहिटारचोयहचाहैप्राणवारचो तबश्यामढिगआइकहिनीके समुझाई है । जावोयहध्यानकरौ करौसुधिआऊँजहाँआयेनिजठौरचटपटीसोंलगाई है॥

बजत मृदंग ॥ कवित्त ॥ पियप्यारी दोऊमिल रासको मचाइ रहे देखै जो निहारि बाहिरही न सँभार है । तता थेईथेई करत नृत्यतगति लैतरंग सौभरत पेख सकुचत मार मारहैं । बाजत मृदंग मुरचंग उठत उमंग गावत हैं ताल संग लाग्यो प्रेमलारहै । शरद समाज वन वृन्दावन प्रगटभयो कहै कवि कौन जाको पावै नहीं पारहै ॥ १ ॥ भागवते ॥ वलयानां नूपुराणांकिंकिणीनां च योषिताम् । सप्रियाणामभूच्छब्दस्तुमुलो रासमण्डले ॥ २ ॥ वकारतेमानिये ॥ ३ ॥

कीनीठौरन्यारीविप्रसुताभईन्यारी एकसुताउभयवारीजगभक्तिविस्तारीहै । आवैबहुसंतसुखदेतहैअनंतगुणगावतरिझावतऐसेसेवाविधिधारीहै । जितीद्विजजातिदुखभायोअतिगातमानीबड़ोउतपातदोषकरैनविचारीहै । येतोरूपसागरमें नागरमगनमहा सकैकहाकारि चहूँओरगिरिधारीहै ॥ ४२६ ॥ तीरथकरतसाधुआयेपुरपूछेकोऊ हुंडीलिखिदेहिहमैंद्वारकासिधारिबे । जेवरहैदूषिकहीजातहीभगावै भूखनरसीविदितसाहआगेदामडारिबे । चरणपकरिगिरिजावोइ लिखावोअहोकहौबारबारसुनिविनतीनटारिबे । दियोलैवतायघरजाय

वहीरीतिकरी भरीअङ्कवारिमेरेभागकहावारिये ॥ ४२७ ॥ सातसै रुपैयागनिढेरीकरोदईआगेलागेपगदेवोलिखिकहोबारबारहै । जानी वहँकायेप्रभुदामदेपठायेलिखि कियेमनभायेसाहसांवलउदारहै । वाहीहाथदीजेपैलेकीजियेनिशङ्ककाज गयेयदुराजधानीपूछोसोबजारहै । ढूंढ़िफिरिहारेभूखप्यासमीड़िडारेपुर तजिभयेन्यारेदुखसागर अपारहै ॥ ४२८ ॥

कीनी ठौर न्यारी ॥ सवैया ॥ देव औ दानव दोऊ छले बलि हू को छल्योबलिबावन यातैं । आनि छल्यो सिगरी ब्रजरी पुनि ऐसी छली नहिं और है यातैं । होहु छली छलसों कह्यो वेद हो जानि परी न किशोरकी घातैं । मोहि घरीकु जिवायो चहै तौ करौ कि निवाही विश्वासीकी बातैं ॥ १ ॥ आवैं बहु सन्त ॥ दोहा ॥ नागरसो हरिरूप पर, सागर पगन रसाल । मत आगर जागर सदा, सेवत संत मराल ॥ २ ॥ दोष ॥ मृदुसा मृदुअति कठिनहै, कठिन मंदमतुसार । अलि अंबुजमें दुरिरह्यो काटै काट अपार ॥ ३ ॥

शाहकोस्वरूपकरिआयेकाँधेथैलीधारि कौनपासहुंडीदामलीजियेगिनाइकै । बोलिउठेढूंढ़हारेभलेजूनिहारआजुकहीलाजहमैंदेतमैंहूंपायेआइकै । मेरोहैइकोसौवासजानैकोऊहरिदास लेवोसुखराशिकरोचीठीदीजेजाइकै । धरेहैंरुपैयाढेरलेखोकरोबेरबेर फेरिआइपातीदईलईगरेलाइकै ॥ ४२९ ॥ देखिआयेशाहदौरिमिलेउत्साहअंगवेडरंगबोरेसतसंगकोप्रभावहै । हुंडीलिखिदईदामलियेसोखवाइदियेकियेप्रभुपूरेकामसंतनसोंभावहै । सुतासुसरारिभयोछूछकविचारसासदेतबहुगारिजाकोनिपटअभावहै । पितासोंपठाइकहीछातीलैजराईइन जोपैकछूदियोजाइआवोइहिदावहै ॥ ४३० ॥ चलेगाड़ीटूटीसीलैबूढ़ेउभैबैलजोरिपहुँचेनगरछोरद्विजकहीजाइकै । सुनतहिआईदेखिमुहँपियराईफिरीदामनहींएकतुमकियोकहाआइकै । चिंताजनिकरौजाइसासूढिगढरोलिखिकागजमेंधरो अतिउत्तमअघाइकै । कही

समुझाइसुनिनिपटरिसाइउठी कियोपरिहासलिख्योगाँवखुनसाइकै ।
आये ॥ कवित्त ॥ बलिजूने नित्त चित्त रहतहीमेरे हिये हरि जू की भक्तिमेरे आई है कि नादिनै । मोरध्वज करत विचार यह बार बार कब हुँक प्रभु अपनाइ हैं कि नाहिं नै । पारषद दोऊ सोऊ चहतहैं मनको नि- वेश और देशहमैंहोइगो किनाहिंनै ॥ गुणगणखानि भगवानजोई लीलाकरैं साधुसुख इच्छाहेतु और हेतुनाहिंनै ॥ १ ॥ जानेहरिदास बोले हम हरि दासनहीं तुमदास हो मिले कैसे नरसीजी के संगते जो कछू नरसी को लिख्यो चिट्ठीमें आयो सो सब देनो ॥ २ ॥

कागजलैआईदेखिदोसरेफिराईपुनि भूलेपैनपाईजातपाथरलिखा येहैं । रहिबेकोदईठौरफूटीदईपोरिजहां बैठेशिरमौरआपबहुसुखपा येहैं । जलदैपठायोभलीभाँतिकैऔटायोभई बरषासिरायोसोसमोइ केअन्हायेहैं । कोठरीसँभारिअगिपरिदासोदियोडारि लैबजायेताल वेसअगणितआयेहैं ॥ ४३२ ॥ गाँवपहराखोछबिछायोयशगायोअ होहाटकरजतउभैपाथरह्वैआयेहैं । रहिगईएकभूलेलिखनअनेकजहां लेहौताहीपासजापैसबमिलपायेहैं । विनतीकरतिबेटीदीजियेजूरहै लाज दियोमँगवाइहरिफेरिकैबुलायेहैं । अंगनसमातिसुतातातको निरखिरंग संगचलीआईपतिआदिबिसरायेहैं ॥ ४३३ ॥

जलदै पठायो जल लावनवारे बोले मूंडतौ ढको तब कही बावरे हौं मूड उघारिके लज्जा छोडिकै हरिको भजन करिये ये अपनी ओर खैंचैं वे अपनी ओर खैंचैं जैसे निपट और बादशाह को प्रसंग ॥ १ ॥ लै बजाये ताल ॥ कवित्त ॥ लैकरि ताल बानी बोले सो रसाल सुनियो नंदलाल मैं कहावत ब्रजराजको । तुम गणिका सीरीतारी प्रहलाद भीरटारी कवि जासुधारी कान्ह द्रौपदी की लाज को । चरणद्रोही वधिक तान्यो गजनें पुकाऱ्यो अति केवल रामआये श्रीसुदामा गृहकाजको । नरसीकी बार हरि क्यों अवार लागे आव आये ततकालरूप धरिकै बजाजको ॥ २ ॥ रहै लाज नाहीं तौ नाककटैगी तब नरसीजी बोलेकै नाककटैगी तौ

कृष्णकी रहैगी तापै दृष्टांत अजोह लालखारी को सुतादोइ नरसीकै. कुँवर सेना रतनसेना ये तौ बैठोनिकेनामहैं आगेविस्तार कह्यो है ॥ ३ ॥

सुताहुतीदोइभोइभक्तिरहीघरहीमेंएकपतित्यागिएकपतिहूनाकियोहै । भूमिमेंफिरतउभैगाइनिसोंचाइनिसोंधनसोंनभेटकाहूनामकहिदियोहै । आइलागीगाइबेकोकहीसमुझाइअहोपाइबेकोनहींकछुपावैदुखहियोहै । चाहैहरिभक्तितोमुड़ाइकैलड़ाइलीजैकीजैबारदूरिरहीप्रेमरसपियोहै ॥ ४३४ ॥ मिलीउभैसुतारंगाझिलीसंसगाइनिबेचाइनिसोंनृत्यकरैभाइनिबताइकै । सालंगहैनाममामामंडलीकमंत्रीरहैकहैविपरीतिबड़ीराजासोंसुनाइकै । बड़ेबड़ेदंडीअरुपंडितसमाजाकियो करौवाकीभंडीदेशदीजियेछुड़ाइकै । आयेचारिचोबदारचलोजूविचारकीजैभयोदरबारहमैंदियोहैपठाइकै॥४३५॥ चारौतुमजावोदूरिभयोहमैंराजाडर सकेकहाकरिअजूचलैसंगसंगही । नाचतबजावतयेचलीढिगगावतसुभावतमगनजानीभीजिगईरंगही । आयेवाहीभाँतिसभाप्रबलबहुतभई तऊबोलेरीतियहयुवतीप्रसंगही । कहीभक्तिगन्धदूरिपढ़ेपोथीपरीधूरिश्रीशुकसराहीतियामाथुरनभंगही ॥ ४३६ ॥

पति त्यागि ॥ कुंडलिया ॥ नारीतजै न आपनो, सपनेहू भरतार । गुंग पंगु बहिरा बधिर, अंध अनाथ अपार ॥ अंध अनाथ अपार वृद्धबाचन अतिरोगी । बालक षंड कुरूप सदा कुवचन जडयोगी ॥ कलही कोढी भीरु चोर ज्वारी व्यभिचारी । अधम अभागी कुटिल कुमति पति तजैननारी ॥ २ ॥ छप्पय ॥ पितावचन प्रह्लाद मेटि अपनो मतठान्यो । बलिराजा गुरु वचन नेकुहिरदे नहिं आन्यो ॥ दई स्वामिको पीठि विभीषण कुलमरवायो । गोपिन पतिव्रत त्यागि कियो अपनो मनभायो ॥ निगम निरूपहि मन्द कर्म की लगी नहीं प्रतिवाइ । हरि धर्म के साधे जगन्नाथ अधर्म धर्म ह्वै जाइ ॥ २ ॥ पोथी ॥ दोहा ॥ पोथी तौ थोथी भई, पंडित भयो न कोइ । एकै अक्षर प्रेमको, पढ़ै सुपंडितहोइ ॥ १ ॥

शुक सराही ॥ भागवते ॥ धिग्जन्मनस्त्रिवृद्विद्यांधिग्व्रतं धिग्बहुज्ञताम् ॥ धिक्कुलं धिक्क्रियादाक्ष्यं विमुखायेत्वधोक्षजे ॥ पद ॥ हम सबहिं मन्द भाग भगवान सों विमुख भये धन्य वे नारि गोविंद पूजे । मूंदिरहे नैन हम सबै उलूक ज्यों भानु भगवान आये न सूझे ॥ ३ ॥ संग गोधन लगे खेल रसरंगमें भोरके निकसि भूखे आइये । देहु तौ भात कर जोर ग्वालन कह्यो अहो भूदेव तुमपै पठाये ॥ ४ ॥ केवल करुणा टरनि प्रात भोजन करनि निगमहू अगम महिमा बतावै । कहां प्रभुकीय चनि हमरे मदकी मचनि देवकीरचनि कछु कहि न जावै ॥ ५ ॥ शौच आचार गुरु कुलहि सेवा कछू कुटिल करकस हिये बुद्धिदीनी ॥ देखो इनतियनि को भाग या जगत में सच्चिदानंदके रंग भीनी ॥ ६ ॥ उमँगि पहिले चली पार संसारके साँवरो कुँवर हिय माँझ पोयो । धरि रहेकूर सुरलोक आशा अलप पाइ अमी आश अमृत निचोयो ॥ ७ ॥ तिया कौतुक मिली कछुक जानी चली कमलिनी हियो मनना मिलावैं । शेष त्रिपुरारि ब्रह्मादि सनकादि सुख चरणकी रेणु शिरपर चढ़ावैं॥८॥यदपि नारायण अवतार यदुकुल विषे सुन्यो बहु भाँति तौ मनन आये । देखो या दैव की माया अति मोहनी दई दृग धूरि हम सब भुलाये ॥ ९ ॥ धिक् जन्म जाति कुल क्रिया स्वाहा स्वधा योग यज्ञ जप तप सकल भृग हमारे ॥ ज्ञान विज्ञान धर्म कछू कर्म नहीं ईश पद विमुख आरंभ न सारे ॥ गृह आगार संसार दुख संभवै मिथुन मृग निर्भयो मन मिलावै । सूरकी शोर हरि विमुख जग में बड़े बूझि गयो दीप जब बड़ कहावै ॥ ऐसे संसारी जीव बड़े कहावें साधु उन्हें छोटो मानैं ॥

बोलिंउठोविप्रएकछकप्रसंगदेख्यो कह्योरसरंगभरयोढरयोनृपपाइमें । कहीजूबिराजोगाजोनितसुखसाजोजाइकियेहरिराइवशभीजेरहौभाइमें । धारोउरऔरशिरमौरप्रभुमंदिरमें सुंदरकेदारोरागगावैभरेचाइमें । श्यामकंठमालटूटआवतरसालहिये देखिदुखपायेपरेविमुखसुभाइमें ॥ ४३७ ॥ नृपतिसिखायोजाइवृथायशछायो काचे

सूतमेंपुहायोहारटूटेख्यातकरीहै । माताहरिभक्तभूपकहोजनिकरो कातनऊबाणि राजसकीमायामतिहरीहै । गयोढिगमंदिरकेसुंदरमँ गाइपाट तागोबटवाइकारिमालागुहिधरीहै । प्रभुपहिराइकहेउगाइअ बजानिपरै भरैसुरराग‌औरगायोपैनपरीहै ॥ ४३८ ॥ विमुखप्रसन्नभ येतबतौउदारनैदेनयेनयेचोजहरिसन्मुखभाषिये ॥ जानेग्वालबाछए कमालगहिरहेहिये जियेलग्योयहीरूपकहेउलाखलाखिये नारायण बड़ेमहाअहोमेरेभागलिख्यो करैकोनदूरिछबिपूरीअभिलाखिये । मरौकहाजाइआपपरसैकलंकतुम्हैं राखियेनिशंकहारभक्तिमारिना खिये ॥ ४३९ ॥

नयेनये चोज ॥ सवैया ॥ अति सूधो सनेह को भार गहै जहँ नेकु सयानप बांकनहीं । तहँ सांचे चले तजि आपनपौ झिझकै कपटी जुमि-सांक नहीं । घर आनँद प्यारे सुजान सुनौ इत एकते दूसरो आंक नहीं । तुम कौन धों पाटी पढ़ेहो लला मनलेत पै देत छटांक नहीं ॥ १ ॥ प्रण राखि लियो तुम भीषमको क्षण में गजराज के काजको धायो । देत विलंब नलायो सुदामहि पावकर ते प्रहलाद बचा-यो । दीनदयाल सुने मनीराम सुयाहिते मैं चित दै गुण गायो । मैं तौं गरीब गरीब रह्यो तुम कैसे गरीबनिवाज कहायो । बड़ी गरीबी गोविंदा जो पै होइ गरीब ॥ २ ॥ मेरे भाग लिख्यो । श्लोक ॥ लिखिता चित्र गुप्तेन ललाटाक्षरमालिका । नसोपि चालितुं शक्या पंडितैस्त्रिदशैरपि ॥ १ ॥ कवित्त ॥ दीननकेपाल ब्रजपाल हौ अवधपाल गाइनके पाल नेकु इतैहू निहारिये । वैकुंठकेपाल हरिचौदह भुवनपाल विरदके पाल निज विरद सँभारिये । भक्तपाल धर्मपाल सृष्टिपाल हे कृपाल हूजिये दयाल और भाँति न विचारिये । सुरन के पालकहौ सूरति विहाल अब येहो जू गोपाल लाल मोहिंना बिसारिये ॥ २ ॥ पद ॥ बिधिरभये लौदेवा बधिरभये लौ । अपनो विरद क्यों बिसरै लौ । कोपियो मडनी कम्हाने मारिसी । मूढ डीक धूलिदाबि थापसी भक्तिकरौ तौ नरसी । योमारि

थो तौ भक्त बछल तारौं विरद जाइसी । मलेछनी जाति कबीर उधारों नामानाछाप ॥ रागपौछाई ॥ जैदेव नैपद माषती आपी मालाने अव- मूक भाई । जाइ न फूल सूतनौ धागो दोइदमडी नें मोल पावी । नरसीने एकहार लै अपतांता रावापनावा परेस्योजावी ॥ ३ ॥ दोहा ॥ आशि- कशिर अपनाअरे, धरदैपैरौलाइ । वे निशाफमहबुबके, करे दूर अनखाइ॥ ॥ ४ ॥ झूलना ॥ जिस दै परे नपरी या कंडा सो घाव दरदक्या जाने । वे दरदान इश्क सुहेला इस्कंजना दे भाने ॥ शिर लाहू लट देसके सो कछु इश्क सयाने । कहै भगवान हित रामराइ प्रभु हारन दिल विच आने ॥ ४ ॥

रहैतहाँसाहकियेउभैलैविवाहजानै तियाएकभक्तकहैहरिकोदि खाइये । नरसोकहीहीभलैसोईप्रभुवाणीलईसांचकरिदईगयेरागछुट वाइये । बोलेपटखोलिदियेकियेदर्शनताने तानेपटसोंवैवहकहीदेवो भाइये । लियेदामकामकियोकागजगहायदियो दियोकछुखाइबेको पायोलैभिजाइये ॥ ४४० ॥ गहनेधरचोहौरागकेदारोसाहघरधरिरू पनरसीकोजाइकैछुड़ायोहै । कागदलैडारचो गोदमोदभरिगाइउठे आयेझनझनश्यामहारपहिरायोहै । भयोजैजैकारनृपपाइलैलपटाइ गयो गह्योहियेभावसोप्रभावदरशायोहै । विमुखखिसानेभयेगयेउठि नयेमाहिं बिनाहरिकृपाभक्तिपथजातपायोहै ॥ ४४१ ॥ करनसगाई आयोपायोबरभायोनाहिंघरघर फिरचोद्विजनरसीवतायोहै । आइ सुखपाइपूँछचोसुतसोदिखाइदियो कियोलैतिलकमनदेखतचुरायोहै अजूहमलायकनतुमसबलायकहौ शायकसोछुटोजाइनामलैसुनायो है । सुनतहीमाथोठोंकिकहैतालकूटवहबालबोरिआयोजावोफेरि दुखछायो है ॥ ४४२ ॥

गाइ उठे ॥ पद ॥ घोजीघोजी राज थारागलनी मालम्हाने घोजीराज। कृपाजुकीजे विमुख पतीजेमुख सों तौ वचन कहौ जी राज । केसर वर्णी कुँवँरि राधिका कस्तूरि वरणा छोजीराज । साँवरी सूरति माधुरी मूरति

यह छविं हियरै रहौ जी राज । अनाथन नाथ बधूनाबाला सुखना सागर छौंजी राज । पैठिपतालकालीनाग जुनाथ्यो म्हारी करुणाल्योजीराज । जुहीनाफूल सूतनोधागो सो काहे गाढ गहौजी राज । रिमिझिमि करतौ सांवलियो आयो नरसी महिता तुमल्योजीराज ॥ चौपाई ॥ अहौबकी दुष्टाने प्यायो । मारनताहि कुचन विषलायो ॥ दई धायकी गति पुनि ताहीं । तादयालु बिन सुमिरों काहीं ॥ २ ॥

काढ़िकेअँगूठाडारौ तबसोउचारौबातमनमेंविचारौकियोतिलक बनाइकै । जानेसुताभागऐसेरहेशोचपागिसबआवैजबव्याहिवेकोधन देअघाइकै । लगनहूंलिखिदियोदियोद्विजआनलियोडारिराख्योकहूं गावैतालयेबजाइकै । रहेदिनचारियेविचारिनहींनेकुमन आयेकृष्ण रुक्मिणीजूझूमिमिलेधाइकै ॥ ४४३ ॥ ठौरठौरपकवानहोततियगा नकरैंघुरतनिशानकानसुनियेनबातहै । चित्रमुखकियोलैविचित्रपट रानीआप घोरीरंगबोरीपैचढ़ायोसुतरातहै । करीसोज्यवनारतामें मानसअपारआये द्विजनविचारपोटबांधोपैनमातहै । मणिमयसा जवाजिगजरथऊंटकोरझमकेंकिशोरआजसजीयोंबरातहै ॥ ४४४ ॥ नरसीसोंकहैगहैहाथतुमसाथचलोअंतरिक्षमेहूंचलौयेतीबातमानिये । कहीअजूजानौंतुममैंतौहियेआनोंयहै लहैसुखमनमेरो फेंटतालआ निये । आपहीविचारसबभारसोंउठायलियोदियोडेरापुरीसमधीकी पहँचानिये । मानसपठायोदिनआयेपैनआयेअहो देखिछबिछाये नरपूंछेंजोबखानिये ॥ ४४५ ॥

आयेकृष्णः ॥ पंचाध्यायी ॥ अनुग्रहाय भक्तानां मानुषं देहमाश्रितः । भजते तादृशीं क्रीडांयांश्रुत्वा तत्परो भवेत् ॥ २ ॥ मिले धाइकै । कोऊ कहै नरसीने कृष्णको साक्षात् ठाकुर जाने होहिंगे कै राजा कै साहूकार जाने होहिंगे सो नहीं पुरके न जाने नरसीने हारेही जाने ॥ १ ॥ दशमे ॥ मल्लानामशनिर्नृणां नरवरः स्त्रीणां स्मरो मूर्तिमान् गोपानां स्वजनोऽसतांक्षि-

तिभुज्रां शास्त्रास्वपित्रोः शिशुः । मृत्युर्भोजपतेर्विराट् च विदुषां तत्त्वं परं योगिनां वृष्णीनां परदेवतेतिविदितो रंगंगतः साग्रजः ॥

नरसीबरातमतिजानोयहनरसीकी नरसीनपावैऐसोसमझअपारहै। आइकैसुनाईसुधिबुधिबिसराईअहोकरतहँसाईबातभाषोनिरधारहै । गयोजोसगाईकरिदरवरआयोद्विजनिजअंगमेंनमातकैसेरंगविस्तारहै कहीएकघासधनरासतोनपूजैकिहूं चहूंदिशिपूरिरहीदेख्योभक्तिसारहै ॥ ४४६ ॥ चलेअचरजमानिदेखिअभिमानगयोलयोपाछोब्राह्मणकोहमैंराखिलीजिये । जाइगहिपांइरह्योभाइपरिदयाकरोगयेद्दगभरेपांइपरेकृपाकीजिये । मिलेभरिअंकलैदिखायोसोमयंकमुख हूजिये निशंकइन्हैंभोरसुतादीजिये । व्याहकरिआयेभक्तिभावलपटायेसब गयेगुणजानैंजितैसुनिसुनिजीजिये ॥ ४४७ ॥ मूल ॥ दिवदासवंश जसोधरसदनभइभक्तिअनपायिनी ॥ सुतकलत्रसंमतसबैगोविंदपरायन । सेवतहरिहरिदासद्रवतमुखरामरसायन । सीतापतिकोसुयश प्रथमहीगमनबखान्यो । द्वैसुतदीजेमोहिंकबितसबहीजगजान्यो । गिरागदितलीलामधुरसंतनआनँददायिनी । दिवदासवंशजसोधर सदनभईभक्तिअनपायिनी ॥ २०९ ॥

नरसी बरात दृष्टिकूट ॥ वृक्षाग्रवासीन च पक्षिराजो दुग्धं स्रवंती न च कामधेनुः । त्रिनेत्रधारी न च शूलपाणिः नारी च नामा न च राजकन्या ॥ ॥ १ ॥ हमैं राखि लीजे हमतौ तेरेराखे रहैहैं नहीं तौ धनहू जाइगो अरु अयशहोहिगो ब्याहकरि आये कोऊकहै नरसीकी ऐसी सहाय करी यह तौ बड़ो अचरजहै कवित्त सबही जग है ॥ दोहा ॥ रामराम सब कोउ कहै, दशरथ कहै न कोइ । एकबार दशरथ कहै, कोटि यज्ञ फलहोइ । दशरथ तौ बड़ेई सामर्थ्यमानहैं जिनके नामसों आठौ-सिद्धि नवो निधि आगे रहैं ॥ ३ ॥

श्रीनंददासआनंदनिधिरसिकसुप्रभुहितरँगमगे । लीलापदरसरीतिग्रन्थरचनामेंनागर । सरसउक्तियुतयुक्तिभक्तिरसगानउजागर ।

प्रचुरयपधलौंसुयशरामपुरग्रामनिवासी । सकलसुकलसंवलितभक्त पदरेणुउपासी । चन्दहासअग्रजसुहृदपरमप्रेमपयमेंपगे । श्रीनंददासआनंदनिधिरसिकसुप्रभुहितरँगमगे ॥ २१० ॥

रसिक ॥ दोहा ॥ घरको परनो परिहर्‌यो, कहौ कौन उपदेश । तुलसी यासों जानिये, नहीं धर्म को लेश ॥ १ ॥ हम चाकर रघुनाथ के जन्म जन्मके दास । रूप माधुरी मनहर्‌यो, डारि प्रेमकी फांस ॥ २ ॥ कवित्त ॥ अधर बंधूक औ वदन अधिकाई छवि मानों विधि कीनी यह रूपको उदधिकै। कान्ह देखी आवत अचानक मुरछ गिरे घुंघुट उघारि राख्यो सखिन के मधिकै । गंगगई मारि सर मृग गिरिधर बेधे अधिक अधीन भई चितवनि तधिकै । बाण बेधे वधिक वधेको फेरि खोजलेत वधिक वधून खोज लिये बाण बधिकै ॥ ३ ॥ लीलापद ॥ पहिले तौ देखो आइ माननीकी शोभा लाल तापाछे लीजिये मनाइ प्यारेहो गोविंद । करपैदीये कपोल रहीहै नयनन मूंदि कमल बिछाय मानों सोयो है पूर्णचन्द । रिसभरीभौंहैं मानो भौंर बैठे अरबरात इंदुतरे आयो मकरंद भर्‌यो अरविंद । नंददास प्रभु ऐसी प्यारी को रुसैये बलि जाके मुख मिटत सबै दुखद्वंद ॥ ४ ॥ दोहा ॥ जिहिघट विरह आवा अपर यक भये सुभाइ ॥ ताही घटमें नंदहो, प्रेम अमी ठहराइ ॥ ५ ॥ कुंज कुंज प्रतिपुंज अलि, गुंजत इमि परभात ॥ रविडर तम सब भजिगयो, रोवत ताको तात ॥ ६ ॥ अवला निसरी तीरजब, नीरचुवत वर चीर ॥ जनु अंशवनि लागी झरी, तनु विछुरन की पीर ॥ ७ ॥

मूल ॥ संसारसकलव्यापकभईजकड़ीजनगोपालकी । भक्तितेजअतिभालसंतमंडलकोमंडन । बुधिप्रवेशभागवतग्रंथसंशयकोखंडन । नरहरिग्रामानिवासदेशवागडनिस्तारचो । नवधाभजनप्रबोधिअनन्यदासव्रतधारचो । भक्तिकृपावांछीसदापदरजराधालालकी । संसारसकलव्यापकभईजकड़ीजनगोपालकी ॥ २११ ॥ माधवदृढ़महिउपरैप्रचुरकरीलोढाभगति । प्रसिद्धप्रेमकीराशिरढ़ागढ़प

रचोदियो । ऊंचेतेभयोपातश्यामसांचोप्रणकियो । सुतनातीपुनिस
द्दशचलतऊहीपरिपाटी । भक्तनसोंअतिप्रेमनेमनहिंकिहुँअँगघाटी ।
नृत्यकरतनहिंतनुसँभारसमसरजनकनकीसकति । माधवदृढमहिम
हिउपरैप्रचुरकरीलोढाभगति ॥ २१२ ॥

जकड़ी साखी अरीसुनि आतमप्यारी लाल मनाइलै । पहिलेरी पहरै रैनिके तेन वसत साजे । यह प्रीतम मन भावतो तेरे निकट विराजे । मान न कीजे पीयसों अरी तेरो यौवन लाजे । दूजेरी पहरै रैनिके तैं मरम न जान्यो । यह यौवन बहु मोलको लैविष में सान्यो । तीजेरी पहरैरैनिके तू अजहुँ न चेती।अंगन दियो सुजानके मैं बकी जुकेती । फिरि पाछे पछिताइगी मिलि साहब सेती । चौथेरी पहरैरैनि के शशि ज्योतिहु मानी । मैं तौ तोहिं बहुतैकही तैं चितनहिं आनी । ये देखौ पहुपीरी भई टरैसर वरपानी । खेमरसिक भये भोरके सुंदरि पछितानी ॥ १ ॥ अतिप्रेम ॥ दोहा ॥ प्रेम भक्ति एकोपलक, कोटि वरषको योग ॥ प्रेम भक्ति सब योग है, योग प्रेम बिन रोग ॥ २ ॥

माधवदासजीकीटीका ॥ गढ़ागढ़पुरनाममाधवबाढ़िप्रेमभूमिलोटै जबनृत्यकरैभूलैसुधिअंगकी । भूपतिविमुखझूंठजानिकैपरीक्षालई आनतीनिछातिपरदेखीगतिरंगकी । नूपुरनिबांधिनाचिसांचसोदिखायदियो गिरेहूकराहिमध्यजियोमतिपंगकी।बड़ोत्रासभयोनृपदास विश्वासबढ़ोमढ़ेउरभावरीतिन्यारीहीप्रसंगकी ॥ ४४८ ॥ मूल ॥ अभिलाषभक्तअंगदकोपुरुषोत्तमपूरणकियो । नगअमोल्इकताहि सबैभूपतिमिलियाचै । श्यामदासबहुकरैदासनाहिंनमनकाचै । एक समयसंकटलेवपानीमेंडारयो । प्रभूतिहारीवस्तुवदनतेवचनउचारयो । पांचदोइसतकीसतैंहरिहीरालैउधरयो । अभिलाषभक्तअंगदकोपुरुषोत्तमपूरणकियो ॥ २१३ ॥ टीकाअंगदभक्तको ॥ राइसे नगढ़वासनृपसोसलाहदीनताकोयहकाकारहैअंगदविमुखहे । ताकी नारीप्यारीप्रभुसाधुसेवाधारीउर आयेगुरुघरकहैकृष्णकथासुखहे ।

बैठेभौनंदेखिकौनकैसेमौनरहौजातबोल्योतियाजातिकहाकरौनरूपहै । सुनिउठिगयेबधूअन्नजलत्यागिदियेलियेपांवजाइविषयवश भयोदुखहै ॥ ४४९ ॥

गढ़ागढ़ ॥ भागवते ॥ ज्ञानतः सुलभामुक्तिर्भुक्तिर्यज्ञादिपुण्यतः । सेयंसाधनसाहस्रैर्हरेर्भक्तिः सुदुर्लभा ॥ १ ॥ कृष्णकथा कहै सो गुरुसों पूँछे एकनित्य मुक्तितेन पूछै गिरवधि विषयो न पूछे मुमुक्षु पूछै जिज्ञासू ॥ २ ॥ छप्पय ॥ तात मात सुत भ्रात आपको बंधनमाने । छुटेकर्म नहिं लेश यहै उर अंतर जाने । जन्म मरण की शंकरहै निशिदिन मनमाहीं । चौरासीके दुःख नेकु नहिं वरणे जाहीं । इहिभाँति सदा शोचत रहै संतन सों पूँछत फिरै । है कोऊ सतगुरु ऐसो सो मेरो कारज करै ॥ ३ ॥

मुखनदिखावैयाहिदेख्योई सुहावैकही भावैसोईकरोनेकुवदनदिखाइये । मैंहूंजलत्यागिदियोअन्नजातकापैलियोजीयोजबनीकेतबआपकछूखाइये । बोलीमोसोंबोलोजिनिछाँड़ोतनयाहो छिनप्रणसांचो होतौतोपैसुनतसमाइये । कहौअबकीजैसोइमेरीमतिगईखोइ भोईउरदयाबातकहिसमझाइये ॥ ४५० ॥ वेईगुरुकरौजाइपाँयनिमेंपरिगयो चाइनिलिवायलायोभयोसिखदीनहै । धारीउरमालभालतिलकबनाइकियो लियोशीतप्रीतिकोऊउपजीनवीनहै । चढ़िफौजसंगचढ़्योवैरोपुरमरिबढ़्योकढ़्योढोपलिकैहीरासतएकपीनहै । डारैसब बेचिपागपेचमध्यराख्योमुख्य भाष्योसोअमोलकर्योजगन्नाथलीन है ॥ ४५१ ॥ कानाकानीभईनृपबातमेंसुनिलई कहीहीरावहदेयतौ पैऔरमाफकियेहैं । आपसमझावैबहुयुगतिबतावैयाकेमनमेंनआवै जाइसबैकहिदियेहैं । अंगदबहनिलागैवाकीभूवापागैतासों देवोविषमारोफेरितूहीपगछियेहैं । करतरसोंईघरगरलमिलायपाक भोगहूलगायोअजूजैबोबोलिलियेहैं ॥ ४५२ ॥

वेई ॥ दोहा ॥ डरबारस डर परमगुरु,डर करनी में सार ॥ खोजी डरै सुऊबरै, गाफिल पावै मार ॥ १ ॥ प्रीति ॥ भागवते ॥ यस्य देवेप

राभक्तिर्यथादेवे तथागुरौ । तस्यैते कथिताह्यर्थाः प्रकाशंते महात्मनः ॥ २॥ बहुयुगति बताके साम दाम दंड भेद सनेह धन भेद ॥ ३ ॥ भूवासों बोल्यो तेरोभाई अंगद बडो दुष्ट है तेरे निमित्त गांव बहुत दिये हैं सो तोको न दिये अब याहि मारि सबदेश को पट्टा तोही को करिदेहिगे ॥ ४ ॥

वाकीएकसुतासंगलैकेबैठेजेंवनको आईसोछिपाइकहीजेंवोकहूंग ईहै । जेंवतनबोधहारीतबसोविचारीप्रीतिभीतरोइमिलीगुरैरीतिकहि दईहै । प्रभुलैजिमायेरांड़भांड़कैनिवासद्वारदैकरिकिंवाररसपायो ओपनई है । बड़ोदुखहियेरह्योकह्योकैसेजातकाहू बातसुनीनृपहूने जैसीभाँतिभई है ॥ ४८३ ॥ चलेनीलाचलहीराजाइपहिराइआवैंआ इघेरिलीनेनृपनरनिखिसाइके । कहीडारिदेवोकैलराइसन्मुखलेहु वसनहमारोभूपआज्ञाआयेधाइके । बोलेनेकुरहौमैंअन्हाइपकरा- इदेत हेतमनऔरजलडार्‍योलैदिखाइके । वस्तुहैतिहारीप्रभुली- जियेउबारीयह वाणीलागीप्यारीउरधारीसुखपाइके ॥ ४८४ ॥ एतौघरआयेवेतौजलमधिकूदिधाये अतिअकुलायेनेकुखोजहूनपा- योहै । राजाचलिआयोसबनीरकढ़वायोकीचदेखिमुरझायोदुखसा गरबुड़ायोहै । जगन्नाथदेवआज्ञादईसुधिदेवोजाय आयकेसुनाई नरतनुबिसरायोहै । गयोजाइदेख्योउरपर जगमगरह्योलह्योसुखनै ननिको कापैजातगायोहै ॥ ४८५ ॥

बैठे जेंवनको अंगद जेंवनको बाहिनिकी कन्याको संग लै बैठतौ क- न्यासोइ तौ सनेह सो सनेहमें भक्तिकैसी यह साक्षात् लाड़िली लालकी सखी प्रगट भईहै यह स्वरूप सखाविना और कहां अरु हमारे भक्तनके घरमें जन्मै सो सामान्य जीव है सो नहीं परकर की जीति को भाव कियो भावही सों प्रीति है है हेत मन और अब मेरो बल नहीं पहुँचै तब वि- चारि कही हरि सर्वज्ञ हैं सो जल में डारिदियो सो भगवान् ने अलगही लियो ॥ १ १ सर्वतः पाणिपादेति ॥

राजाहियेतापभयोदयोअन्नत्यागिकरयो आवैजोपैभागमेंरब्राह्म णपठायेहैं । धरनोदैरहेकहेनृपकेवचनसबतबह्वैदयालुनिजपुरढिग आयेहैं। भूपसुनिआगेआइपाँइलपटायगयो लयोउरलाइदृगनीरलै भिजायेहैं । राजासर्वसुदियोजियोहरिभक्तिकियो हियोसरसायोगुण जानेजितेगायेहैं ॥ ४५६ ॥ मूल ॥ चतुर्भुजनृपकीभगतिकोकौन भूपसरवरकरै । भक्तआगमनसुनतसन्मुखजोजनइकजाई । सदन आनिसतकारसदृशगोविन्दबड़ाई ॥ पादप्रक्षालनसुहथराइरानी मनसाँचे। धूपदीपनैवेद्यबहुरितिनआगेनाचे । यहरीतिकरौलाधी शकीतनमनधनआगेधरै । चतुरभुजनृपकीभगतिकोकौनभूपसरवर करै ॥ ११४ ॥ टीका ॥ पुरढिगचारयोओरचौकीराखीयोजनपैयो जनहींआवैतिन्हैंलावतलिवाइकै । मालाधारीप्रभुसनमानिआवै कोऊद्वारजोपैकरैवहीरीतिसोसुनाईछप्पैगाइकै।सुनीएकभूपभक्तिनि पटअनूपकथा सबकोभंडाराखोलिदेतबोल्योधाइकै । पात्रऔअपा त्रमोविचारहीजोनहींतौपै कहाऐसीबातदईनेकुमेंउड़ाइकै ॥ ४५७ ॥

जग मग रह्यो ॥ कवित्त ॥ तरवा ललाई नख चंद्रिका सुछबि छाई हिय में समाई वह कैसे कहिजात है ॥ नूपुरादि चूरा पग धोतीपग रही लगि क्षुद्रघंटिका अनूप ज्योति जगमगात है। झँगा बूटेदार वनमाल मोती हीरा कांति कौन कवि उपमा कहत न सकात है । तिलक विशाल माथे चीरा छबि जाल जापै कलँगी-रसाल देखि अंगद सिहात है ॥ १ ॥ राजा के हिये ताप॥ दोहा॥ विषयिन के शिर पर रहै, साधु फूलके गुच्छ॥ केवल तनु वश भूमि में, परे रहे मन सुच्छ ॥ २ ॥

भागवतगावैभक्तभूपएकविप्रतहां बोलिकैसुनावैऐसीमनंजिनला इये । पावैआसेकौनहृदयभवनमेंप्रवेशकारिभारिअनुरागकहाउरम धिआइये। करीलैपरीक्षाभाटभिक्षुकपठाईदियोदियोमालातिलकद्वा रदारदासयोंसुनाइये । गयोगयोभूलिफूलकुलविस्तारकियो लियोप हिचानिअबजानकैसेपाइये॥ ४५८ ॥ बीतेंदिनतीनिवीसआईबससी

खसुधिकहीहरिदासकोउआयोयोंसुनाईहै । बोलेजूनिशाकजावो गावोगुणगोविंदके आयेघरमध्यभूपकरीजैसीभाईहै । भक्तिकेप्रसंगकोनरंगकहूंनेकुजान्यो जान्योउनमानसोपरीक्षामँगवाईहै । दियोलैभंडारखोलिलियोमनमान्योदईसंपुटमेंकौड़ीडारिजरीलपटाइये ॥ ४५९ ॥ आयोवहीराजापाससभामेंप्रकाशकियोलियो धन दियोपाछेसोईलै दिखायोहै । खोलिकैलपेटामध्यसंपुटनिहारिकौड़ीसमुझिविचारैहारैमनमेंनआयोहै । बड़ाभागवतविप्रपंडितप्रवीणमहा निशिरसलीनजानिआनिकैबतायोहै । कर्योउनमान भक्त मानकोप्रमानजरी मूंदिकैपठायो ताहिगुणसमुझायोहै॥४६०॥

उड़ाय के ॥ कवित्त ॥ सरल सों शठकहैं वक्तासों ढीठ कहैं विनय करै तासों कहैं धनको अधीन है । क्षमी सों निबल कहैं दमी सों अदत्ती कहैं मधुर वचन कहै तासों कहैं दीन है । दाता सों दंभी कहैं निस्नेही सों गुमानी कहैं तृष्णा घटावे तासों कहैं भाग हीनहै । साधु गुण देखे अहो तहांहीं लगावैं दोष ऐसो कछू दुर्जन को हृदोई मलीनहै ॥ १ ॥ भगत भूपहै ॥ श्लोक ॥ पुष्पाणां स्तबकस्येवद्वयोरिति मनीषिणाम् । सर्वलोकस्य मूर्ध्यास्तेविशीर्येतवनेपिवा ॥ २ ॥

राजारीझपांवगहेकहेजूवचननीकेऐपैनेकआपजाइतत्त्वयाकोलाइये । आयेदौरिपांइलपटायेभूपभावभरे परेप्रेमसागरमेंचरचाचलाइये । चलिबैनदेतसुखदेतचलेलोलमेंनखोलिकेभँडारदियोलिये नरिझाइये।उभैसुवासारोकहीएककरधारोमेरे दईअकुलाइलईमानोनिधिपाइये ॥ ४६१ ॥ आयोराजसभावहुवातनिअखारोजहांवेली उठी सारोकृष्णकहोझारिडारेहैं । पूछैनृपकहोअहोलहोसबयाहीसोंजुपंछीवासमाजरहेहरिप्राणप्यारेहैं । कोटिकोटिरसनाबखानोपैनपाऊं पार सारसुनिभक्तिआपशीशपाँवधारेहैं । राखौयहखगतनमनपगिर ह्योइयाम अतिअभिरामरीतिमिलेऔपधारेहैं ॥ ४६२ ॥

उभय सुवासारो ॥ अरिल्ल ॥ शिरपै ठाढो कालय वेडींदेहिहै ।

भयो धुंध में अंध कहा करि लेहि है। राम कृष्ण कह मूढ फेरि पछिताई है। दुनिया दौलत छांडि अकेला जाइ है॥ १॥ भाग्यो है मुट मरदम वासी कैद ते। वली नजीत्यो जाय हजारन जदै ते। महाराज मैं अर्ज करौं सुनु कानदे। अरिहा मारि बांधिकै छांडि याहि जिन जानदे ॥२॥ पद ॥ कोई सुनियो संत सुजान दियो हरिलारे । जो तू कहै मेरेद्रव्य बहुत है संग न चलै अधेलारे । जो तू कहै मेरे कुटुंब बहुत है यमलै चले अकेलारे। कहत कबीर सुनौ भाई साधो मनको करिले चेलार ।।३।। कृष्णकहु कृष्णकहु कृष्णकहु भाई । होइगी वही जो प्रभुने बनाई । राखो ॥ तापै बेलमा फकीर को दृष्टांत हमारोही घर जाहिगी ॥

मूल ॥ लोकलाजकुलशृंखलातजिमीरागिरिधरभजी । सदृश गोपिकोप्रेमप्रगटकलियुगहिदिखायो । नरअंकुशअतिनिडररसिक यशरसनागायो दुष्टनदोषविचारमृत्युकोउद्यमकीयो । बारनबां कोभयोगरलअमृतज्योंपीयो । भक्तनिशानबजायकेकाहूतेनाहिंनल जी। लोकलाजकुलशृंखलातजिमीरागिरिधरभजो ॥ २१८ ॥

लोक लाज ॥ कवित्त ॥ क्षीरमेंयो नीरज्योंसमानी बूँदसागरमें तन में सुमन बास भोइगी सुभोइगी।तेरी देखिवे की बानि नयननिमें परीआनि आनि कुल कानि अब खोइगी सुखोइगी । लोक परलोकहू की भूली सुधि ऊधो राम यहैबात मन मांझ मोइगी सुमोइगी । रूप उजियारे गुण भारे लाल प्यारे आंखैं ताही सों लगी हैं होनी होइगी सुहोइगी॥ १॥ गिरिधर भजी गिरिधरने मीराबाई भजी अथवा मीराबाईजीने गिरिधर को भज्यो याते सनेहीही नेह की मूर्तिहै ॥ २ ॥ कवित्त ॥ नेहराज रूप राज रसिक रसालराज नैन सुखराजलै उठाये गिरिराज है । छोटे से करवर अंगुरीपै धऱ्यो गिरि खुशी कोसो छत्र वह लिये गजराज है ॥ हाथनि ललाई तामें पहुँचनि छविछाई ऊंचो कियो हाथ सब छविको समाज है । नैननि की सैनानि सों कहैं अलबेली सखी चोरि चोरि खायो दधि काम आयो आज है ॥२॥ नेक जो निहारो पिया प्राणनिकी प्यारी अति पंकज से हा-

थनि लै धाऱ्यो गिरिभारोहै । प्रेमसों लपेटी कहै नेहभरी बात आली लेहुरी लकुट नेकु देहरी सहारो है ॥ ५ ॥ कहै हँसि आली मिलि काम आयो आजु बल खायो दधि माखन जो चोरिकै हमारो है । नेहभरी बात सुनि हियहुलसात मंद मंद मुसुकात मुख रूपको उज्यारो है ॥ १ ॥ कवित्त ॥ सबहीके ग्वाल बाल गोधन हैं सबहीके सबहीको आनि परी प्राणन की भीरहै । सबहीपै मेघ वरषतहैं सुगोलाधार सबही की छेदछाती करत समीर है । किधौं यह मेरोई अनोखो ढोटा मांगि आन्यो याबोझिल पहाड़ तर कोमल शरीर है । नेकुयाके हाथते गिरिलेहु क्यों न कोऊ तुम जातिके अहीर पै नकाहूहिय पीरहै ॥ २ ॥ सदृश गोपिका प्रेम ॥ कवित्त ॥ पीरी परिगई अरुणई गई आननते कानन गईही सोसयान मुख भाग्यो है । चलि चलि कहै वैन फिरि फिरि जात नैन भईविन चैन मैन अंगअंग राग्योहै । काशीराम औरको यतनुकोन गिनती में क्षण क्षण छीजे देह नेह रंगपाग्यो है । हरि अवधूत और हेत सों न नीकीहोति भूत नाहिं लाग्यो याहि नंदपूत लाग्यो है ।। ३ ।। पद ॥ अब जो या तनुको फेरि बनावैं । तऊ नंदनंद न विन ऊधो औरन मन में आवैं । जो यातनु की त्वचा उचेले लैकरि दुंदुभि सजई । मधुर उतंग शब्द सुरसुनियत लाल लालई बजई । छूटैं प्राण मिलै तनुमाटी द्रुमलागै तिहि ठाम । सुनि अब सूर फूल फल शाखा लेतउठे हरिनाम ॥ ४ ॥ भक्ति निशान बजाय के ॥ माझ ॥ जिनदांवनि हम महलीहूपे तिनदावनि तेमहिं जाने । पायंदाज न अंदर पहुँजे निंदाकरत खिसाने । कुंजमहल बासिंदा हमनिंदा अहिसाने माने । वल्लभ रसिक चुनिन्दाहूये बजि निन्दा सहदाने ॥ ५ ॥

टीकामीराबाईजीकी । मेरेतोजनमभूमिझूमिहितनेमलगेपगेगिरि धारीलालपिताहीकेधाममें । रानाकेसगाईभईकरीब्याहसामानईगई मतिबूड़िवारँगीलेघनश्याममें । भाँवरेपरतमनसाँवरेस्वरूपमाँझता मरेसोआवें चलिवेकोपतिग्राममें । पूछैंपितुमातुपटआभरणलीजिये जूलोचनभरतनीरकहाकामदाममें ॥ ४६३ ॥ देवोगिरिधारीलाल

जोनिहालकियोचाहोऔरधनमालसबराखियेउठाइकै । बेटीअति प्यारीप्रीतिरंगचढ़्योभारीरोइमिलीमहतारीकहीलीजियेलड़ाइकै । डोलापधराइदृगदृगसोंलगाइचलीसुखनसमाइचाइप्राणपतिपाइकै । पहुँचीभवनसासुदेवीपैगमनकियोतियाअरुबरमाठिजोरोकह्यो भाइकै ॥ ४६४ ॥ देवीकेपुजाइबेकोकियोलैउपाइसासुवरपैपुजाइपुनि बधू पूजिभाषिये । बोलीजूबिकायोमाथोलालगिरिधारीहाथऔरकोननवैएकवहीअभिलाषिये । बढ़तसुहागयाकेपूजेतातेपूजाकरो मतहठ करोशीशपाँइनिमेंराखिये । कहोबारबारतुमयहीनिरधारजानो वही सुकुमारजापैवारिफेरिनाखिये ॥ ४६५ ॥

बिकायो माथो ॥ सवैया ॥ पल काटहुँमैं इन नयनन के गिरिधारी बिना पल अंत निहारे । जीभकटै न भजे नँदनंदन बुद्धिकटै हरिनाम बिसारै । मीरा कहै जरिजाहु हियो पदपंकज बिनपल अंत न धारै । शीश-नवै ब्रजराज बिना वह शीशहि काटि कुँवां किन डारै ॥ १ ॥ दोहा ॥ रसनकटैं आनहिं रटै, फुटैं आन लखिनैन ॥ श्रवणफुटेते सुने बिन, श्रीराधा यश बैन ॥ २ ॥ कही बारबार ॥ पद ॥ यशुदा बारबार यों भाखै । है कोउ ऐसो हितू हमारो चलत गोपालै राखै ॥ ३ ॥

तबतौखिसानीभईअतिजरिबारिगई गईपतिपासयहबधूनहींकाम की। अबहींजवाबदियोकियोअपमानमेरोआगेक्योंप्रमाणकरैभरैश्वासचामकी । रानासुनिकोपकरयोधरयोहियेमारिबोई दईठौरन्यारी देखिरीझमतिबामकी । लालनलड़ावैगुणगाइकैमल्हावैसाधु संगही सुहावैजिन्हैंलागीचाहश्यामकी ॥ ४६६ ॥ आइकैननँदकहैगहैकि नचेतभाभीसाधुनसोंहेतमेंकलंकलगैभारिये । रानादेशपतीलाजैबापुकुलरतीजातिमानिलीजेबातवेगिसंगनिरवारिये। लागेप्राणसाथसंत पावतअनंतसुख जाकोदुखहोयताकोनीकेकरिटारिये । सुनिकैक टोराभरिगरलपठायदियोलियोकरिपानरंगचढ़ेउयोंनिहारिये ४६७

लागेप्राणसाथ ॥ कोऊ कहो कुलटा कुलीन अकुलीन कहौ कोऊ

कहौ अंकन कलंकनि कुनारी हौं । कैसे सुरलोक नरलोक परलोक सब कीनमैं अलोक लोक लोकनते न्यारी हौं । तन जाहु मनजाहु देव गुरुजन जाहु जीभ क्यों न जाहु टेक टरत न टारी हौं । वृन्दावनवारी गिरिधारी के मुकुटपर पीत पटवारेकी मैं मूरति पै वारीहौं ॥ १ ॥ तारे क्योंन तजौं रैनि नयनशीश क्यों न तजौं जीव क्यों न जाहु सोउ अबहीं यात नते । तनु क्यों न जरि जाहु जरि क्यों न क्षारहोउ क्षार क्यों न उडि-जाहु विरह पवन ते । सैन कहै वह चलनि चितवनि वनि मनबसीरी जब ते आये बनवारी बने बनते । जानो है सुजाहु अरुरहै सोतोरहो आली माधवजी की प्रीति जनिजाहु मेरे मनते ॥ २ ॥

गरलपठायोसोतौशीशपै चढ़ायोसंग त्यागविषभारीताकी झारनसम्हारीहै । रानानेलगायोचरबैठेसाधुढिगढरितबहींखबरिक रिमारोअहधारीहै । राजैगिरिधारीलालतिनहींसोंरंगजाल बोलत सहतख्यालकानपरोप्यारीहै । जाइकैसुनाइभईअतिचपलाईआयो लियेतरवारिदैकिवाँड़खोलिन्यारीहै ॥ ४६८ ॥

गरल ॥ पद ॥ रानाजी जहर दियो हम जानी । जिन हरि मेरो न्याव निबेरो छान्यो दूध अरु पानी । जबलगि कंचन कसियत नाहीं होत न बारहबानी । अपने कुलको परदाकेले हों अबला बडरानी । श्वपच भक्त परवारों विमुख सब हौं हरि हाथ बिकानी । मीराप्रभु गिरिधर भजिबे को संत चरण लपटानी ॥ १ ॥ दोहा ॥ बड़ी भक्ति मीरा गही, रानाके बड़ी भूल । चरणामृतकहि विषदियो, भयो सजीवनि मूल ॥ २ ॥ चपलाई ॥ चौपरि खेलौं पीव सों, बाजी लावों जीव । जो हारों तौ पीवकी, जो जीतों तौ पीव ॥ ३ ॥ वेगिदे बताइये तरवारि हाथमें नंगीहै कि वह विषयी नर कहां गयो ॥ ४ ॥ दोहा ॥ निकट वस्तु दीखै नहीं, धृगजीवन हैं जिंद । तुलसी ऐसे जगतको, भयो मोतियाबिंद ॥ ५ ॥ सबै चतुर अरु बड़ेहैं, अपने अपने ठौर । सब तजिकै हरिको भजै, सोइ चतुर शिरमौर ॥ ६ ॥

जाकेसंगरंगभीजिकरतप्रसंगनानाकहांवहनरगयोवेगिदेवताइये। आगेहीविराजेकछूतोसोंनहींलाजेअभू देखिसुखसाजेआंखिखोलिदर शाइये। भयोईखिसानोरानालिख्योचित्रभीतिमानोउलटिपयानो कियोनेकुमनआइये। देख्योहूप्रभावऐपैभावमेंनभिद्योजाइविनह रिकृपाकहौकैसेकरिपाइये॥ ४६९॥ विषयीकुटिलएकभेषधारि साधुलियो कह्योयोंप्रसंगमोसोंअंगसंगकीजिये। आज्ञामोकोदई आपलालगिरिधारीअहो शीशधरिलेईकछूभोजनहूकीजिये। संत नसमाजमेंबिछाइसेजबोलिलियो शंकअबकौनकीनिशंकरसपीजि ये। श्वेतमुखभयोविषयभावसबगयोनयो पांयनमेंजाइमोको भक्तिदानदीजिये॥४७०॥ रूपकीनिकाईभूपअकबरभाईहियेलियेसंग तानसेनदेखिबेकोआयोहै। निरखिनिहालभयोछबिगिरिधारीला लपदसुखजालएकतबहींचटायोहै। वृन्दावनआईजीवगुसाईजीसों मिलिझिली तियामुख देखिबेकोपनलेछुड़ायोहै। देखिकुंजकुंजलाल प्यारीसुखपुंजभरी धरीउरमांझआइदेश बनगायो है॥ ४७१॥

भाई अकबरने तानसेनसा पूंछी सांवरेपै सबरीझे हैं तबहीं मीराबाई-पै तब दर्शन को आयो॥ १॥ पद सुखजाल १ पद॥ प्यारी के कचबिथुरे मानों धाराधरकी श्यामघटा उनही तामधि पुहुप छूटिपरे जैसे बड़ी बड़ी बूंदे। तामधि मुक्त बगपांति तरौना अलक बीच बिजुलता-सी कौंधनि नेत्र खंजनरी पिक बोलनि बोलें रूंदे। लालसारी पहरे हरी कोर मघवा धनुसी घूंघट करि चली पीठ पाछे तेतरके लाल मुनियां सी कंचुकी तनीकी फूंदे। मेहँदी सों आरक्त नख बीरबहूटी ऐसी पा-वस बनिता मिली मीरागिरिधर खुले काम प्रीति काम हारगूंदे॥ २॥

राना!कीमलीनमतिदेखिबसीद्वारावति रतिगिरिधारीलालनित्य हीलड़ाइये। लागीचटपटीभूपभक्तिकोस्वरूपजानिअतिदुखमानि विप्रश्रेणीलैपठाइये। वेगिलैकेआवोमोकोप्रातदैजिवावोअहोगये द्वा

रधरनोदैविनतीसुनाइये। सुनिबिदाहोनगईराइरनछोरजूपै छांड़ोरा खोहीनलीनभईनहींपाइये ॥ ४७२ ॥ मूल ॥ आंवेरअछितकूर्मको द्वारकानाथदर्शनदियो । श्रीकृष्णदासउपदेशपरमतत्त्वपरचोपा यो। निर्गुणसगुणस्वरूपतिमिरअज्ञाननशायो । काछबाछनिःकलं कमनोगांगेययुधिष्ठिर । हरिपूजाप्रहलादधर्मध्वजधारीजगपर। पृ- थ्वीराजपरचौप्रगटतनशंखचक्रमंडितकियो । आंवेरअछितकूर्मको द्वारकानाथदर्शनदियो ॥ २१६ ॥ पृथ्वीराजराजाकीटीका ॥ पृथ्वी राजराजाचल्योद्वारकाश्रीस्वामीसंग अतिरसरंगभरयोआज्ञाप्रभुपा इये । सुनिकैदिवानदुखमानिनिशिकानलग्योकहीपग्योसाधसेवाभ क्तिपुरछाइये । देखियेनिहारिकैविचारकीजेइच्छाजोईलीजेनहींसा थजावोबातलैदुराइये । आयोभोरभूपहाथजोरिकरिठाढ़ोरहेउकहो रहोदेशसोनिदेशनसुहाइये ॥ ४७३ ॥

विदा होनगई ॥ पद ॥ हरि करो जनकी भीर। द्रौपदी की लाज राखी तुम बढ़ायो चीर। भक्त कारण रूप नरहरि धरयो आप शरीर । हिरण्यकश्यप मारि लीनो धरयो नाहिंन धीर। बूड़ते गजराज तारयो कियो बाहरनीर । दास मीरालाल गिरिधर जहांदुख तहँ पीर ॥ १ ॥ सजन सुधि ज्यों जानो त्यों लीजे। तुम बिन मेरो और नकोई कृपा राव-ी कीजे। घासन भूख रैनि नहिं निद्रा यह तन पल पल छीजे। मीरा प्रभु गिरिधर नागर अब मिलि बिछुरन नहिं कीजे ॥ २ ॥

द्वारावतिनाथदेखोगोमतीस्नानकरों धरोंभुजछापआयमनअभि लाखिये । चिन्ताजिनिकीजैतीनोबातइहांलीजैअजूदीजैजोईआज्ञा सोईशिरधरिराखिये। आयेपहुँचाइदूरिनैनजलपूरिबहे दहैउरभारी कहांसंगरसचाखिये । बीतेदिनदोइनिशिरहेहुतेसोइभोइ गईभक्ति गिराआइवाणीमध्यभाखिये ॥ ४७४ ॥ अहोपृथ्वीराजकहीस्वामी हीसोंबानीलहीआयोउठिदौरि बाहीठौरप्रभुदेखेहैं । धूम्योंकह्योक

नधरोगोमतीस्नानकरो सुनिकैअन्हायोपुनिवेनकहूंपेखेहैं । शंखच
क्रआदिछापतनुसबव्यापिगईभईयोंअबाररानीआइअवरेखेहैं । बोले
रह्योनीरमेंशरीरलैंसनाथकीजैलीजैनाथहियेनिजभागकरिलेखेहैं ॥
॥ ४७५ ॥ भयोजबभोरपुरबड़ोभक्तशोरपरचोकरचोआनिदरशन
भईभीरभारीहै । आयेबहुसंतऔमहंतबड़ेबड़ेधाये अतिसुखपायेदे
हरचनानिहारीहै । नानाभेदआवेंहितमहिमासुनावेंराजा सु
नतलजावेंजानोकृपाबनवारीहै । मंदिरकरायोप्रभुरूपपधरायोसब
जगयशगायोकथामोकोलागीप्यारीहै ॥ ४७६ ॥ विप्रअंगहीनसो
अनाथवैजनाथद्वारपरचोचषचाहैमासकेतिकबिहानेहैं । आज्ञाबारदो
इचारभईहैफेरिहौंहियाकोहाठसारदेखिशिवपिघलानेहैं । पृथ्वीराज
अंगकेअंगोछासोंअँगोछोजाइआइकेसुनाईद्विजगौरबड़रानेहैं । नयोमँ
गवायोतनुछाइदियोछायोनैनखुलेचैनभयोजनलखिसरसानेहैं४७७॥

मधुभाषिये भगवान् ने विचारी कृष्णदासजी तीनबातें देनी कहिगये हैं सो देचुको पाछे कृष्णदास द्वारका आवेंगे उनकी मनुहारि करनी होय-गी स्वामी कैसी वाणी कही क्योंकि राजाको कृष्णदास जी की वाणी में प्रीति बहुत रही है ॥

मूल ॥ भक्तनकोआदरअधिकराजवंशमेंइनकियोलघुमथुरामें
राभक्तअतिजैमलपोषे । टोडेभजननिधानरामचन्द्रहरिजनतोषे ।
अभैरामइकरसनेमनीमाकेभारो । करमशीलसुरतानभगवानवीरभू
पतिव्रतधारी । ईश्वरअछैराजराइमलकाहरमधुकरनृपसर्वसदियो ।
भक्तनकोआदरअधिकराजवंशमेंइनकियो ॥ २१७ ॥ टीका ॥ मेरे
तेवस्तुभूपभक्तिकोस्वरूपजानै जैमलअनूपताकीकथाकहिआयेहैं ।
करीसाधुसेवारीतिप्रीतिकीप्रतीतिभईनईएकसुनोहरिकैसेकैलड़ाये
हैं । नाचेमानमन्दिरसोंसुन्दरविचारीबातछातपरबँगलाकेचित्रले
बनायेहैं । विविधबिछौनासेजराजतउठौनापानदानधरिसोनाजरी
परदासिवायेहैं ॥ ४७८ ॥

नीचे मान मन्दिर ॥ कवित्त ॥ सीरे तहिखाने तामें खासे खस-खाने सींचे अतर गुलाबन सों ब्यालरपटति है । भूधरसुधारे हौद छुटत अरु भारे भरताव दान धूपद पटति है । गवन कहि कैसे करि कीजै बलि सौध की तरंगआनि अंग लपटति है । चन्दन किंवार घनसारके पगार चारु तऊ आनि ग्रीषम की झार झपटति है ॥ १ ॥ विछे हैं बिछौना घनसारके नवीने तामें कीने छिरकाव तर अतर गँभीरके । गुरुवे गुलाबके फुहार छूटैं ठौर ठौर उठत झकोर तामें त्रिविध समीर कें । सेज अरबिंद की चंदन की चोली चारु श्री गोबिंद सुमन शृंगार हैं शरीरके । झमक मनक सों बनिकबनि बैठीआजु राधिका रवन संग भवन उसीरके ॥ २ ॥

ताकीदारुसीठीकररचनाउतारिधरे भरेदूरिचोकीआयभावस्वच्छताइये । मानसीविचारेलालसेजपगधारेपानखातलैउगारडारे पौढेसुखदाइये ।तियाहूनभेदजानैसोनसेनीधरीवानेदेखिकैकिशोरसोंयों फिरिभोरआइये । पतिकोसुनाईभईअतिमनभाईवाकोखिजिडरपाई जानोभागअधिकाइये ॥ ४७९ ॥ टीकामधुकरशाहकी ॥ मधुकरशाहनामकियोलैसफलयाते भेषगुणसारग्राहतजतअसारहै । ओंडछेकोभूपभक्तभूपसुखरूपभयोलयोपनभारीजाकेऔरनविचारहै। कंठोधरिआवेकोऊधोइपगपीवैसदाभाईदुखघरूघरडारचोभालभारहै । पाइँपरछालिकहीआजुजूनिहालकियेहियेद्रयेदुष्टपावँगहेहगधारहै ॥ ॥४८०॥ मूल—खेमालरतनराठौरकेअटलभक्तिआईसदन । रैनापरगुणरामभजनभागवतउजागर।प्रेमीप्रेमकिशोरउदरराजारतनाकर । हरिदासनिकेदासदशाऊंचीध्वजधारी । निर्भयअनन्यउदाररसिकयशरसनाभारी। दशधासंपतिसंतबलसदारहतप्रफुलितबदन । खेमालरतनराठौरकेअटलभक्तिआईसदन ॥ २१८ ॥

वेष गुणसार ग्राही भवँरवत् सारग्राही मक्षिकावत् असार ग्राही दोषी

भाइनिंके खरको माला तिलकदैकै राजा के भेज्यो राजाने वाही चरणोदक लियो राजाके गुरु व्यासदेव जू वहीं रहे हैं यत्र पद बनाय ॥ पद ॥ भक्त विन किन अपराध सह्यो । कहा कहानि असाधनि कीनों हरि बल धर्म रह्यो । अधमराज मदमाते लैरथ सो जड़भरत नह्यो । पट झपटत द्रौपदी न मटकी हरि को शरणचह्यो ॥ मत्तसभा कौरवन विदुर ज्यों कहा कहा न कह्यो । शरणागत आरत गजपतिको आपन चक्र गह्यो । हाथ हारिनाथ पुकारत आरत कौन ओर निबह्यो । व्यास वचन सुनि मधुकर-शाह भक्ति पथ सदा गह्यो । करि मनसा कत को मुहुकारो । साकत मोहिं न देखे भावत कह बूढो कह बारो । साकत देखत डर लागतहै नाहर हूतेभारो । भक्तनसों कुवचन बोलतहैं नेकुडरैमब्यारो । आठै चौदशिकूंडो पूजत अभागेकोज्ञान अँध्यारो । व्यासदासयह संगति तजिये भजिये श्याम सबारो ॥ १ ॥ पद ॥ जो सुखहोत भक्तघरआये । सो सुखहोत नहीं बहुसंपति बांझहि बेटा जाये । जोसुखभक्तनिको चरणोदक गातहि गात लगाये । सोसुख सपनेहूनहिंपइयत कोटिक तीरथ न्हाये । जो सुख भक्तनि को सुख देखत उपजत दुख विसराये । सो सुख कबहुँ होत नहिं कामी कामिनि उर लपटाये । जो सुख होत भक्त वचनन सुनि नैननि नीर बहाये । सो सुख कबहुँ न पइयतु है घर पूतको पूत खिलाये । जो सुख होत मिलत साधुनके क्षणक्षण रंग बढ़ाये । सो सुखहोत नरंक व्यासको लंकसुखमें रहिपाये ॥ ३ ॥ असारको लेहिं नहीं सार को संग्रहै साधु गुण हंसके ॥ ४ ॥ जैसे मधुकर शाह कामीकृष्ण क्रोधी नृसिंह लोभी बामन मोही रामचंद्र ऐसे अवगुणमें गुणलेहिं हरिहीकी इच्छामानैं नारद जी भक्तराजहैं पै उनहींने शाप दियो सनकादिक भगवान् रूप हैं उनहूंने शाप दियो पैभलोही करयो ऐसे साधु जो करैं सो भलोही करैं यह सार लै लेहिं ॥ ५ ॥ कवित्त ॥ काठकी कठारी करि तपसी भरिवारि लेत काठको सँवारि धाम श्यामको बैठावहीं । काठकीकमान शरकाठके बनाइ लेत काठी काठ चढि शूररणजीति आवहीं । काठकी सुमिरनीके

साधु राम नामलेत काठको पषाणघिसि देवको चढावहीं । काठकी अव-ज्ञाको कहत बनिआवै नाहिं नाव चढ़ि काठकीधौं तबैपार पावहीं ॥ ६ ॥ काठकी वस्तु महा अमोल गनिये काठ तरण तारण है ॥

मूल ॥ कलियुगभक्तिकररीकमानरामरेणुकैऋजुकरी । अजर घरयआचरयोलोकहितमनोंनीलकंठ । निंदकजगअनिराइकहामहिमाजानेगोभूशठ । विदितगांधर्वीव्याहकियोदुइकुंतप्रवाने । भरनपुत्रभागवतसुमुखशुकदेवबखाने । औरभूपकोउछ्वैसकैदृष्टिजाहिनाहिंनधरी । कलियुगभक्तिकररीकमानरामरेणुकैऋजुकरी ॥ २१९ ॥ टीका ॥ पूनोंमेंप्रकाशभयोशरदसमाजरास विविधविलासनृत्यराग रंगभारीहै । बैठरसभीजिदोऊबोल्योरामराजारीझिभेटकहाकीजेवि-प्रकहीजोईप्यारीहै । प्यारकोविचारैननिहारैकहूंनेकुछटासुतारूप घटाआनरूपसेवाज्यारीहै । रहीसभाशोचआपजाइकैलिवाइलाये भेषसोंदिवायेफेरेसंपतिलैवारीहै ॥ ४८१ ॥

ऋजुकरीनरमकरी ॥ कवित्त ॥ पनच पुरानी बहिपानी यों धनुष आयो छुवत छेटूक भयो ताको कहा करिये । आलम अलप अपराध साधु जियजानि क्षमाकीजे क्षीणकीजे कित क्रोध मन धरिये । सूझत तौ द्विजवर पूजियेन जूंठवर कठिन कुठार आनि कंठपर धरिये । गुरुमति लोपिये न पूजे परकोपिये न तासों पांय रोपिये न ताकेपाइँ परिये ॥ १ ॥ प्रकाश भयो ॥ रूपकी रीझसों प्रेमपग्यो किधौं प्रेमकी रीतिहिरूप सों पागी । मनसा वश में न जगी कवि मंडन कै मनसा वशमैन के जागी । लाजहिलै कुलकानभगी औ किधों कुलकागि लै लाजहिभागी । नयनलगे वहि मूरतिसोंरी किधौं वहि मूरति नयनन लागी ॥ २ ॥ नृत्य अरु गान बतरान मुसुकान देखि विह्वल विकल ह्वैकै सकल बिकै चुके । बड़े बड़े धर्मदास तेऊलये नारिसों सँभारि हूनसके हारि सर्वसुदेचुके । नीर भरी अँखियनकी अँखियन ये भीरअति ऊरध अधीरगति मति

बिसरै चुके। ऐसो ऐस दैखिकै न और ऐस देखे अब मनके •श्रवण नयन यहैपन लैचुके ॥ ३ ॥

मूल ॥ हरिगुरुहरिदासनिसोंरामघरनिसांचीरही। आरजकोउपदेशसुतौउरनीकेधारचो। नवधादशधाप्रीतिआनधर्मसबैबिसारचो। अच्युतकुलअनुरागप्रगटपुरुषारथजान्यो। सारासारविवेकबाततीनों मनमान्यो। दासंतनिअनन्यउदारता संतनसुखराजाकही। हरि गुरुहरिदासनसोंरामघरनिसांचीरही ॥ २२० ॥ टीका ॥ आयेम धुपुरीराजारामअभिरामदोऊदामपैनराख्यो साधुविप्रभुगतायेहैं। ऐसेयेउदारराहखरचसँभारनाहिं चलिबोविचारभयोचूरादीठआयेहैं। मुद्राशतपांचमोलखोलितियाआगेधरे दीजेबेंचिगये नाभाकरपहिरा येहैं। पतिकोबुलाइकहीनीकेदेखिरीझेभीजे काटिकैकरजपुरआयेदै पठायेहैं ॥४८२॥मूल॥ अभिलाषउभैखेमालकातेकिशोरपूराकिया। पांयननूपुरबांधिनृत्यनगधरिहितनाच्यो। रामकलसमनरलीसीसीतातेनहिंबांच्यो। वाणीविमलउदारभक्तिमहिमाविस्तारी। प्रेमपुंज शुठिशीलविनयसंतनरुचिकारी। सृष्टिसराहैंरामशुचलघुवैसलषण आरजलिया। अभिलाषउभयखेमालकातेकिशोरपूराकिया॥२२१॥

हरिगुरु दासन सों सांचो होइ भक्ति तबहीं सांची जैसे भवानोतौ सांची भक्ति मेंतौ सबही कहे हैं आप बहुमोल वस्त्र पहिरै हरिको थोड़े मोल लालजूको अथवा भजन करिकै फलचाहै सो सांचौ नहीं और भजन करेते कछू विघ्न होइ तब हरिको देइ तौ सांचोही भजन करिकै भक्तही चाहै सांचो किशोर ॥ १ ॥ कुंडलिया ॥ मारिब फाती खीचरी यह घर आज न कालि । यह घर आज न कालि धौलधर धवां कैसो। तनु तुसार को तार ताहि नर थिर करवैसो। स्वपने सोना पाइ कृपणता कर धन जोरचो। पुनि जागेते कहौ प्रातकाको ऋण तोन्यो। जोपीसंती फांकियो अगर सु उत्तम चालि । मारि बफाती खीचरी यहघर आज न कालि ॥ २ । ३ । ४ । ५ । ६ ॥

खेमालरतनतनुत्यागसमयअश्रुपातबातसुतपूछेअजूनोकेखोदीजिये । कीजेपुण्यदानबहुसंपतिअमानभरीधरीहियेदोईसोई कहोसुनिलीजिये । विविधबड़ाईमेंसमाइमतिभईयेन नितहीविचार अबमनपरखोजिये । नीरभरिघटशीशधरिकैनलायोऔरु नूपुरनि बांधिनृत्यकियो नाहिंछीजिये ॥ ४८३ ॥ रहेचुपचापसबैजानीकामआपहीकोबोल्योयोंकिशोरनातीआज्ञामोकोदीजिये ।यहीनितकरो नहिंटरौजौलौंजीवैतन मनमेंहुलासउठिछातीलाइलीजिये । बहुसुखपायोपायेवैसेहीनिबाहेपनगायेगुणलालप्यारीअतिमतिभीजिये । भक्तिविस्तारकियोवैसलघुभीज्योहियो दियोसनमान संतसभासबरीझिये ॥ ४८४ ॥ मूल ॥ खेमालरतनराठौरकेसुफलबेलिमीठीफली । हरीदासहरिभक्तिभक्तमंदिरकोकलसो ॥ भजनभावपरिपक्वहृदयभागीरथजलसो। त्रिधाभांतिअतिअनन्यरामकीरीतिनिबाही हरिगुरुहरिबलभाँतितिनहींसेवाद्दढसाई। पूरणइंदुप्रमुदितउदधित्यों दासदेखिबाढैरली । खेमालरतनराठौरकीसुफलबेलिमीठीफली ॥

खीजिये ॥ दोहा ॥ जबलगि रँगहो बिन रँग्यो, हरि रंग माहिं मजीठ । अब मूरखमाथोधुनै जबरँगदीनीपीठ ॥ १ ॥ मनबरूद तनुजालगी तुलसी बरकन्दाज । प्रेमपलीती दगगई, निकसीआहिअवाज ॥ २ ॥ प्रेम बिनाहरिनामिलैं, कोटि यतन करि कोइ ॥ जैसे गुण बिन कूपजल आवै हाथ न सोइ ॥

मूल ॥ हरिवंशचरणबलचतुरभुजगौड़देशतीरथकियो । गायोभक्तिप्रतापसबहिदासत्वद्दढ़ायो । श्रीराधावल्लभभजनअनन्यतागरबबढ़ायो । मुरलीधरकोछापकवित्तअतिहीनिरदूषण । भक्तनकी अंघ्रिरेणुवहैधारीशिरभूषण । संतसंगमहाआनंदमेंप्रेमरहितभीज्यो हियो । हरिवंशचरणबलचतुरभुजगौड़देशतीरथकियो ॥ २२३ ॥

गायोभक्ति प्रताप दिखायो जैसे निपटने ॥ छप्पय ॥ श्वपच पहिरि यज्ञोपवीत करि कशन गहत जब । करम करै अघपरै डरे पुनि विश्व त्रास

तब । पुनिललाट पाटतिलकदेइ अरु तुलसी मालधरि । हरिकेगुण उच्चरै पायकुलकर्महि परिहरि । चतुर्भुज पुनीत अंत्यजभयो मुरलीधर शरणौ लियो। तिहिपाछे किनि लागिये जिनलोह पलटि कंचनकियो।।१।।

टीकास्वामीचतुर्भुजकी ॥ गौड़वानदेशभक्तिलेशहूनदेख्योकहूं मानसकोमारिइष्टदेवकोबढ़ायोहै । तहाँजायदेवताकोमंत्रलैसुनायो कान लियोउनमानिगांवसुपनसुनायोहै ।स्वामीचतुर्भुजजूकेवेगितु मदासहोहुनातोहोहिनाशसबगाँवभज्योआयोहै । ऐसेशिष्यकियेमा लाकंठीपाइजियेपांवलियेमनदियेऔअनंतसुखपायोहै ॥ ४८५ ॥ जहां जाय देवताको मंत्रलै सुनायो ॥ कवित्त ॥ छलकति छलताजि गोकुलकी गैलभजी कुब्जाचुरलेपगामनबतकायहै । आये हैं सुखारी हैं करत हैं भिखारीप्रीति पाछिली बिसारी येहो यह कछू न्याय है । अहो घनश्याम यह जीति ब्रज बाम मन लहै न विश्राम मरिरही कौन ज्याम है । मरण उपाइ यहे देखे सुखपाई जोई काहु कल पाइहै सोकैसे कले पाइहै ।। ३ ।।

भोगलैलगावैंनानासंतनिलडावैंकथाभागवतगावैं भावभक्तिवि स्तारिये। भज्योधनलैकेकोऊधनीपाछेपर्‌योसोऊ आनिकेदबायोबै ठिरह्योनानिहारिये । निकसीपुराणबातकरैंतयोगातदिक्षाशिक्षासुनि शिष्यभयोगयोयोंपुकारिये । कह्योयाजनममेंनालियोकछुदियोफा रो हाथलैउबारोप्रभुरीतिलागीप्यारिये ॥ ४८६ ॥ राजारूठमानि कह्योकरोविनप्राणप्राकोसाधुयेविराजमानलैकलंकादियोहै । चलेठो रमारिबेको धारिबेकोसकैकैसे नैनभरिआयेनीरबोल्योधनलियोहै । कह्योनृपसांचोहैकेझूंठोजिनिहूजैसंत महिमाअनंतकहीस्वामीऐसो कियोहै।भूपसुनिआयोउपदेशमनभायोनयोशिष्यभयोनयोतनुपायो भीजगयोहियोहै ॥४८७॥ पकिरह्योखेतसंतआयकरितोरिलेत जिते रखवारेमुखसेतशोरकियोहै । कह्योस्वामीनामसुन्योकहीबड़ोकामभ यो यहतोहमारोसेईआपसुनिलियोहै । लैकैमिष्टान्नआपसुमुखबखान

कियोलियोअपनाइआजभीज्योमेरोहियोहै । लैगयोलिवाइनानाभो जनकराइभक्ति चरचाचलाइचाइहितरसपियोहै ॥ ४८८ ॥ मूल ॥ चालककीचरचरीचहूँदिशिउदधिअंतलोंअनसरी । शक्रकोपिशुठच रितप्रसिद्धिपुनीपंचाध्याई । कृष्णरुक्मिणीकेलिरुचिरभोजनवि धिगाई । गिरिराजधरणिकीछापगिराजलधरज्योंगाजै । संताशिखंडी खंडहृदयआनँदकेकाजै । जाड़ाहरणजगिजाडिताकृष्णदासदेही धरी । चालककीचरचरीचहूंदिशिउदधिअंतलोंअनुसरी ॥ २२४ ॥

निकसी पुराण घात ॥ भागवते ॥ शृण्वतां स्वकथाः कृष्णः पुण्यश्रव-णकीर्तनः । हृद्यंतस्थो ह्यभद्राणि विधुनोति सुहृत्सताम् । दूसरो जन्म कैसे भयो ॥ आगमे ॥ कृष्णमन्त्रोपदेशेन माया दूरमुपागताः । कृपया गुरुदेवस्य द्वितीयं जन्म कथ्यते ॥ २ ॥ नारद पंचरात्रे ॥ श्लोक ॥ पितृ गोत्री यथा कन्या स्वामिगोत्रेण गोत्रिका ॥ श्रीकृष्णभक्तिमात्रेणाऽच्युत-गोत्रेण गोत्रिका ॥ ३ ॥ दियोफारो ॥ दोहा ॥ सामनहूं घनसार है, जेठ मास घनसार ॥ वनहू में घनसार है, झूठेको घनसार ॥ ४ ॥

विमलानंदप्रबोधवंशसंतदाससीवांधरम । गोपीनाथपदरागभो गछपनभुजाये । पृथुपद्धितअनुसारदेवदंपतिदुलराये । भगवतभ क्तसमानठौरद्वैकोबलगायो । कवित्तशूरसोंमिलतभेदकछुजातनपा यो । जनमकरमलीलायुगतिरहसिभक्तिभेदीमरम । विमलानंद प्रबोधवंशसंतदाससीवांधरम ॥ २२५ ॥ टीका ॥ बसतानिमाईग्राम श्यामसोंलगाईमति ऐसीमनआईभोगछपनलगाये हैं । प्रीतिकोसँ चाईयहजगमेंदिखाईसेवें जगन्नाथदेवआपरुचिसोंजिमाये हैं । राजा कोस्वपनदियोनामलैप्रगटकियो संतहीकेगृहमेंतोजेवोंयोंरिझायेहैं । भक्तिकेअधीनसबजानतप्रवीनजन ऐसेहैं रंगीनलालठौरठौरगायेहैं ॥

युगत तापै चना गेहूं के न्यायको दृष्टांत ॥ प्रीतिके सचान जगन्नाथ को छप्पनलगै हैं अपने ठाकुर को गोपीनाथ को मैं हूं लगाऊं घरको धन सब लगायो कर्जहू काढ्यो तब विचारो कैतो छप्पनहीं भोग लगाऊं नहीं

तो सबही उड़ाऊ सो भगवान् ने चोप करिकै राजा को स्वप्न दिखायो नामख्यात कियो झूंठोपन होतो छप्पन भोगी की नाई चनाहू न मिलते ॥ १ ॥ भक्ति दियो पावै उद्यम क्यों कियो सो वृत्तान्त हमने न जान्यो॥

मूल॥ मदनमोहनसूरदासकीनामशृंखलाजुरीअटल। गानकाव्य गुणराशिसुहृदसहचरिअवतारी । राधाकृष्णउपासिकरहसिसुखके अधिकारी। नवरसमुख्यशृँगारविविधभाँतिनकरिगायो। वदनउच्चर तवेरसहसपायँनह्वैधायो। अंगीकारकीअवधियहज्योंआख्याभ्राताज मल। श्रीमदनमोहनसूरदासकीनामशृंखलाजुरीअटल ॥ २२६ ॥ टीकासूरदासमदनमोहनजूकी ॥ सूरदासनाममनैनकंजअभिरामफू लेझूलेरंगपीकेनीके जीकेऔरज्यायेहैं । भयेसोअमीनयोंसंडीलेके नवीनरीति प्रीतिगुरुदेखिदामबीसगुणेलायेहैं । कहीपूवापावैंआपम दनगुपाललालपरेप्रेमख्यालछादिछकरापठायेहैं । आयोनिशिभयो इयामकियोआज्ञायोगलैकैअबहीलगावोभोगजरिफिरिपाछेहैं४९०॥ पयदलबनायोभक्तिरूपदरशायोदूरि संतनकीपानहींकोरक्षककहा ऊंमैं । काहूसीखिलयोसाधुलियोचाहैपरचेकोआयेद्वारमन्दिरकेखो लिकहीआऊंमैं। रह्यौबैठिजाइजूजीहाथमेंउठायलीनी पूरीआशमे रीअबनिशिदिनगाऊंमैं। भीतरबुलावैंजूगुसाईबारदोईचारि सेवासौंपी सारिकह्योजनपदध्याऊंमैं ॥ ४९१ ॥

शृंगार ॥ कवित्त ॥ लोल भये लटू भट ठाढ़े हैं अटाके नीचे लालची रह्यो लुभाइ टकीसी लगाइ कै । गोकुलकी बधू विधु मुखके अवलोकिबे को नीकी एक तान उठ्यो बांसुरी बजाइ कै । सुनि ध्वनि वाके श्रवण परी काशीराम अति अकुलाइ कै झरोखनि झांकी आइके । खोलिकै किंवारी ब्रजनारी तहां देखैं झांकि गिरि पर्‍यो है गोपाल फिरि-कीसी खाइकै ॥ १ ॥ पथिकनिहेरि पिय पाली रूप धारि दृग ऊरध कै वारी पान करै लखे वनको । बिरल सुधार करि अँगुरिन धारि पल गतिहि निवारि भावै अंतरन छिनको । त्योंहीं वह नारि प्रीति रीति उर

धारि छांड़ि असुन तरवारि देखी प्रेम दुहुन को । सुरति निहारि यह कीनों निरधारि छांडै तन तरवारि देखो प्रेम दुहुयनको ॥ पद ॥ सखी के पाछे ठाढ़ी बदन नीको लागत मानों कंचन गिरिते उदयराशि नवसित किये । सोहतरी माथे बिंदुला कुमकुमको दिये कर दीप लिये । नीलांब-र सजनी रजनी राजत कुरंग नयनी राकारी संगलिये । सूरदास मदन मोहनके लोचन आतुर चकोर नतृप्तहोत नाहिं मधपान किये ॥ ३ ॥ कवित्त ॥ चरण चिताय नख चंद्रिका पै आइ परे उछरति निहारि नाभि त्रिवली झकोर है । उरज उतंग पुनि पुनि पुनि रंग करि ढरि कटि ओर मुख छवौवैनी छोरहै । पाइ रंगभूमि रस झूमि रीझ खेल रच्यो मच्यो छवि पाइ मन डारत मरोर है । लाडिली को रूप अति लाडिलो मैं देख्यो आली लाल दृग गेंदन सों खेलैं निशि भोरहै ॥ ४ ॥ दृष्टांत पोस्तीकी रेचरी को पदलै बनायो ॥ पद ॥ मेरेगति तूही अनेक तोष पाऊं । चरण कमल नख मणि परि विषय सुख बहाऊं । घर घर जोडी लै हरि-तौ तुम्हैं लजाऊं । तुम्हरो कहाइ कहौ कौनको कहाऊं । तुम से प्रभु छांड़ि काहि दीननको धाऊं । शीश तुम्हैं नाइकै अब कौनको नवाऊं । कंचन उरहार छांडि कांचको बनाऊं । शोभा सब हानि करौं जगत को हँसाऊं । हाथी ते उतरि कहा गदहा चढि धाऊं । कुमकुमको लेप छांड़ि काजर मुँहु लाऊं । कामधेनु घरमें तजि अजाको दुहाऊं । कनक महल छांडि क्यों परमकुटी छाऊं । पाइँनि जोपै लौ प्रभूतौ अनत जाऊँ । सूरदास मदन मोहन लाल गुणगाऊं । संतन की पानहीको रक्षक कहाऊं ॥ २ ॥

पृथ्वीपतिसंपतिलैसाधुनखवाइदई भईनहींशंकयोनिशंकरंगपगइ । आयेसोखजानोलेनमानोंयहबातअहोपाथरलैभरेआपआधीनिशिभागेहैं । रुक्कालिखिडारेहामगटकेयेसंतननेयातेहमसटकेहैंच लेजबजागेहैं । पहुँचेहुजूरभूपखोलिकैसंदूखदेखे पेखेआंककागदमें

रीझेअनुरागेहैं ॥ ४९२ ॥ लेनकोपठायेकहीनिपटरिझायेहमैंमनमें नलायेलिखीबनतनडार्‍योहै । टोडरदिवानकह्योधनकोविरानकियो लावोरेपकरिमूढ़फेरिकैसेभार्‍योहै । लेगयेहुजूरनृपबोल्योमोंसोंदूरिरा खो ऐसेमहाक्रूरसोंपिदुष्टकष्टधार्‍योहै । दोहालिखिदीनोंअकबरदे खिरीझिलीनो जावोवाहीठौरतोपैद्रव्यसबवारयोहै ॥ ४९३ ॥

रुक्का ॥ दोहा ॥ तेरह लाख संडीलै उपजे, सब साधन मिलि गटके । सूरदास मदन मोहन जी आधीराति को सटके ॥ १ ॥ बनत न डार्‍यो है बडेही की चाकरी करैं तब बादशाह की करैं अब कृष्णकी करैं तापै चोरको दृष्टांत ॥ दोहा ॥ इक तनु अँधियारो करै, शून्य दई पुनि ताहि । इश तमते रक्षाकरौ, दिन मणि अकबर शाहि ॥ २ ॥ जावो वाही ठौर ॥ कवित्त ॥ सेइ देखे साहब सँभारि देखे बाम लोनी सोइ देखो भोरलौं सुगंध भूरि सों भरे । खाइ देखे पान पकवान पुंज बार बार पौढि देख्यो तिया संग निशि खलिका परे । चढि देख्यो हाथी हय हीरा उर धारि देख्यो भूषण विविध भांति क्रीट मणि सों जरे । मनन सिरानो किते विषय रस सानो मंद ताते बार बार क्यों न बोल तू हरे हरे ॥ ३ ॥

आयेवृन्दावनमनमाधुरीमेंभीजिरह्यो कह्योसोईपदसुनोरूपरस रासहै । जादिनप्रगटभयोगयोशतयोजनपैजनपैसुनतभेदवाटीज भ्यासहै । सूरद्विजद्विजनिजमहलटहलपायचहलपहलहिये युगलप्रकासहै । मदनमोहनजूहेइष्टदृष्टमहाप्रभुअचरजकहाकृपादृ ष्टिअनायासहै ॥ ४९४ ॥ मूल ॥ कात्यायनिकेप्रेमकीबातजातका पैकही । मारगजातअकेलगानरसनाजुउचारौ । तालमृदंगीवृक्षरी झिअंबरतहँडारौ । गोपनारिअनुसारिगिरागदगदआवेसी । जगप्रपं चतेदूरिअजापरसेनहिंलेसी । भगवानरीतिअनुरागकीसंतसाखिमेली सही । कात्यायनिकेप्रेमकीबातजातकापैकही ॥ २२७ ॥

उरझी नकबेसरि सों पीतपट वनमाला बीच आइ उरझे हे दोऊ जन । नयनन सों नैन बैन बैनन सों उरझि रहे चटकीली छवि देखे लपटात श्याम घन । होड़ाहोड़ी नृत्य करैं रीझ रीझ अंकभरें ततथेई २ कहत हैं मगन मन । सूरदास मदन मोहन रास मंडल में प्यारी को अंचल लेपोंछत दे श्रम कन ॥ १ ॥ कात्यायनी गौड़ देश की राज-कन्या ॥ दशमे ॥ कस्यांचित्स्वभुजंन्यस्य चलत्याहापराननु । कृष्णोहं पश्यतगतिंललितामितितन्मनाः ॥ २ ॥ सवैया ॥ खोइ गई बुधि सोइ गई सुधि रोइ हँसे उनमान जग्यो है । मौन गहे चक चौंकि रहे चलि बात कहे तनु दाह दग्यो है । जानि परै नहिं जानि तुम्हें लखि ताहि कहा कछु आहि पग्योहै । शोचतही पगिये आनंदघन हेत लग्यो किधौं प्रेत लग्यो है ॥ ३ ॥ पात्र जोई ॥ श्लोक ॥ यानैर्वापादुकैर्वापि गमनंभगवद्गृहे देवोत्सवाद्यसेवाचअप्रणामस्तदग्रतः ॥ १ ॥

कृष्णविरहकुंतीशरीरत्योंमुरारितनुत्यागियो । विंदितबिलोदा गांवदेशमुरधरसबजाने । महामहोछौमध्यसंतपरिषद्परवाने । पग नघूंघुरूबांधिरामकोचरितदिखायो । देशीशारँगपाणिहंसतासंगपठा यो । उपमाऔरनजगतमेंपृथाबिनानानाहिंबियो । कृष्णविरहकुंतीश रीरत्योंमुरारितनुत्यागियो ॥ २२८ ॥ टीकाश्रीमुरारिदासजीकी ॥ श्रीमुरारिदासरहैंराजगुरुभक्तदास आवतस्नानकियेकानधुनिकीजि ये । जातिकोचमारकरैसेवासोंउचारिकहैंप्रभुचरणामृतकोपात्रजोई लीजिये । गयेघरमांझवाकेदेखिडरकांपिउठोलावोदेवोहमैंअहोपान करिजीजिये । कहीमैंतौनूनतुच्छबोलेहमहूंतेसुच्छ जानेकोऊनाहिं तुम्हेंमेरीमतिभीजिये ॥ ४९५ ॥ वहैहगनीरकहैमेरीबड़ीपीरभई तुममतिधीरनहींमेरेयोगताई है । लियोईनिपटहठबड़ेपटसाधुतामें श्यामैप्यारीभक्तिजातिपांतिलैबहाई है । फैलगईगांववाकोनामलैच वावकरैं भरैंनृपकान सुनिवाहूनसुहाई है । आयोप्रभुदेखिबेकोगयो वहरंगउड़ि जान्योसोप्रसंगसुनो वहैबातछाई है ॥ ४९६ ॥

सन्निन्दासतिनामवैभवकथा श्रीशेशयोर्भिन्नधीरश्रद्धाश्रुतिशास्त्रदेशिकगिरानाम्न्यर्थवादभ्रमः । नामास्तीतिनिषिद्धवृत्तिविहितत्यागौचधर्मान्तरैस्साम्यंनामनिशंकरस्यचहरेर्नामापराधादश ॥ १ ॥ तद्धर्म्मनिरादराणामितितेनाम्नोपराधादश ॥ २ ॥ काशीखंडे ॥ ब्राह्मणःक्षत्रियोवैश्यःशूद्रोवायदिवेतरः । विष्णुभक्तिसमायुक्तोज्ञेयस्सर्वोत्तमोत्तमः ॥ ३ ॥

गयेसबत्यागिप्रभुसेवाहीसोंरागजिन्हें नृपदुखपागिगयोसुनीयहबातहै । होतहोसमाजसदाभूपकेवरषमांझदरशनकाहूहोतमानोंउतपातहै । चलेईलिवाइबेकोजहां श्रीमुरारिदासकरीसाष्टांगराशिनयनअश्रुपातहै । मुखहूनदेखेयाकोविमुखकेलेखेअहोपेखे लोगकहैंयहैगुरुशिष्यख्यातहै ॥ ४९७ ॥ ठाढ़ोहाथजोरिमतिदीनतामेंबोरिकीजेदंडमोपैकोरियोंबहोरिमुखभाखिये । घटतीनमेरीआपकृपाहीकीघटतीहै बढ़तीसीकरीतातेनूनताईराखिये ॥ सुनकेप्रसन्नभयेकहेलैप्रसंगनयेवाल्मीकिआदिदैनानाविधिसाखिये । आयेनिजग्रामनामसुनिसबसाधुआयेभयोईसमाजवैसोदेखिअभिलाखिये ॥ ॥ ४९८ ॥ आयेबहुगुणीजननृत्यगानछाईधुनिं ऐपैसंतसभामनस्वामीगुणदेखिये । जानिकैप्रवीनउठेनूपुरनवीनबांधिसप्तसुरतीनग्रामलीनभयेपेखिये । गायोरघुनाथजूकोगमनसमयतासँगगमनप्राणचित्रसमलेखिये । भयोदुखराशिकहापैयेश्रीमुरारिदासगयेरामपासयेतौहियेअवरेखिये ॥ ४९९ ॥

गये सब त्यागि ॥ दोहा ॥ साधक सिद्धको एकमत, जित चालै तित सिद्धि । हरिजन चिंता ना करै, मुखआगे नवनिद्धि ॥ १ ॥ गुरु शिष्य ख्यात है । गुरु निर्मोही चाहिये, शिष्य न छांडै प्रीति । स्वारथ छोड़े हरि मिलैं, यहै भजनकी रीति ॥ २ ॥ फलटूट्यो जल में पर्‍यो, खोजी मिटी न प्यास । गुरुतजिकै गोविंद भजे, निश्चय नरक निवास ॥ ३ ॥ सप्तसुर ॥ कवित्त ॥ केकीकी कुहक सों खरिज सुरजानि लीजे चात

कके बोलसों ऋषभ सुर लेखिये । उचरत छागजानि लीजे गंधारसुर ऊरजके बोलसर मध्यमही पेखिये । कोकिलाके वैनसुर पंचम लखी जैये नहीं सत तुरंग सुरधैवत विशेषिये । धनकी गरजसो निषाद सुरजानि लीजै कहै शिरदार सुर सतयों विशेषिये ॥ ४ ॥

मूल ॥ कलिकुटिलजीवनिस्तारहितबाल्मीकितुलसीभयो । त्रेताकाव्यनिबन्धकरीशतकोटिरमायन । इकअक्षरउच्चरेब्रह्महत्यादिपरायन । अबभक्तनसुखदेनबहुरिवपुधरिलीलाविस्तारी । रामचरणरसमत्तरहतअहर्निशिव्रतधारी । संसारअपारकेपारको सुगमरूपनौकालयो । कलिकुटिलजीवनिस्तारहितवाल्मीकि तुलसीभयो ॥ २२९ ॥

एक अक्षर ॥ रामायणे ॥ चरितं रघुनाथस्य शतकोटिप्रविस्तरम् । एकैकमक्षरं पुंसां महापातकनाशनम् ॥ १ ॥ रामचरण ॥ दोहा ॥ पलकनिमगमधि ध्यान धरि, बरुणी जटा बनाय ॥ नैन दिगंबर ह्वै रहै, रूप विभूति लगाय ॥

टीकातुलसीदासजूकी ॥ तियासोंसनेहबिनपूछेपितागेहगईभूलीसुधिवेहभजेवाहीठौरआयेहैं । वधूअतिलाजभईरिससोंनिकसगई प्रीतिरामनईतनुहाड़चामछायेहैं । सुनीजबबातमानोंह्वैगयोप्रभात वहपाछेपछितायतजिकाशीपुरीधायेहैं । कियोतहांबासप्रभुसेवा लैप्रकाशकीनोंलीनोंदृढ़भावनेमरूपकेतिसायेहैं ॥ ५०० ॥

तियासों सनेह ॥ दोहा ॥ सकल लोक अपवश किये, अपनेही बलवान ॥ सबलासो सबलाकहैं, मूरख लोग न जान ॥ ३ ॥ वाही ठौर आयेहैं ॥ दोहा ॥ तरसतहैं तुव मिलन बिन, दरशन बिन ये नैन ॥ श्रुति तरसैं तुव वचन बिन, सुनि तरुणी रसपैन ॥ ४ ॥ बड़ो नेह तुमसों लग्यो, और न कछू सुहाइ ॥ तुलसी चन्द चकोर ज्यों, तरफ तरै निविहाइ ॥ ५ ॥ कहां लग्यो मन भावतो, सदा रहै मन माहि ॥ देख्यो चाहै

नैन भरि, बातनिक्यों पतियाहि ॥६॥ सेवा ॥ श्लोक ॥ गोप्यः कृष्णेवनं यातेतमनुद्रुतचेतसः ॥ कृष्णलीलां प्रगायन्त्यो निन्युर्दुःखेन वासरान् ॥ ७॥

शौचजलशेषपाइभूतहाविशेषकोऊ बोल्यो सुख मानि हनूमान जूबतायेहैं । रामायणकथासोरसायनहैकाननको आवतप्रथमपाछे जातघृणाछायेहैं । जाइपहिंचानिसंगचलेउरआनिआयेवनमध्यजानि धाइपाइलपटायेहैं।करैंसीतकारकहीसकोगेनटारिमैंतो जानेरससार रूपधरयोजैसेगायेहैं ॥ ५०१ ॥ मांगिलीजैबरकहीदीजैरामभूपरूप अतिहीअनूपनितनैनअभिलाखिये । कियोलैसँकेतवाहीदिनहींसों लाग्योहेत आईसोईसमैचेतकविछबिचाखिये । आयेरघुनाथसाथलक्ष्मणचढ़ेघोड़े पटरंगबोरेहरेकैसेमनराखिये । पाछेहनुमानआयेबोलेदेखेप्राणप्यारेनेकुननिहारेमैंतोभलेफेरिभाखिये ॥ ५०२ ॥

शौचिजल ॥ श्रुतौ ॥ शौचांतेचपदांतेचतर्पणांतेतथैवच ॥ हस्ताद्धस्तेअधोहस्तेपंचतोयंसुरासमम् ॥ १ ॥ भूतविशेषदेवतनमें नीचहैं ॥ २ ॥ निहारिमैंतो ॥ पद ॥ लोचन रहेवैरीसोइ । जानिबूझि अंकाज कीनोंदयोभुवमेंगोइ । अवगतिजुतेरीगतिनजानोरह्योयुगमेंसोइ । सबैरूपकीअवधिमेरेनिकसिगयोढिगहोइ । कर्महीनहिपाइहीरादयोपलमेंखोइ । तुलसीदासजुरामबिछुरैकहोकैसीहोइ ॥ ३ ॥

हत्याकरिविप्रएकतीरथकरतआयो कहैमुखरामभिक्षाडारिये हत्यारेको । सुनिअभिरामनामधाममेंबुलाइलियोदियोलैप्रसादकियोशुद्धगायोप्यारेको । भईद्विजसभाकहिबोलिकैपठायोआपकैसेगयोपापसंगलैकेजैयेन्यारेको । पोथीतुमबांचोहियेभावनहींसांचोअजूतातेमतिकाचोदूरिकरैनअँध्यारेको ॥ ५०३ ॥ देखीपोथीबांचनाम महिमाहूकहीसांच ऐपैहत्याकरैकैसेतरैकाहिदीजिये । आवैजोप्रतीतिकहीयाकेहाथजेंबे शिवजूकैबैलतबपङ्कतिमेंलीजिये । थारमेंप्रसाददियोचलेजहांपानकियो बोलेआयनामकेप्रतापमतिभीजिये । जै

सीतुमज्ञानोतैंसींकैसेकैबखानोअहो सुनिकैप्रसन्नपायोजैजैध्वनिरीझिये ॥ ५०४ ॥

सुनिअभिराम नाम ॥ श्लोक ॥ रामरामेतिरामेतिरमेरामेमनोरमे ॥ सहस्रनामतत्तुल्यंरामनामवरानने ॥ ४ ॥ अँध्यारोको ॥ पद ॥ पढ़त पढ़ावतसोमनमान्यो । कौन काज गोविंद भक्ति बिन जो पुराणकहि जान्यो । घरघर भटकि फिरे कामिनि लगे गालफटाकि धन आन्यो। निशि दिन विषय स्वाद रस लंपट तजि पांचनि को कान्यो । स्वपनेहू हरि किये न अपने हेत हरिवंश बखान्यो । सुने न वचन साधुके मुखके चरण पखारि न अचयो पान्यो । सारासार विवेक न जान्यो मनसंदेह न मान्यो । दया दीनता दासभाव बिन व्यास नहीं पहिंचान्यो ॥ १ ॥ न्याये ॥ यस्यनास्तिस्वयंप्रज्ञाशास्त्रंतस्यकरोतिकिम् । नयनाभ्यांविहीनस्य दर्पणंकिंकरिष्यति ॥ २ ॥ नामकेप्रताप ॥ पद ॥ अद्भुतरामनामद्वैअंक । धर्मांकुर के पावन द्वै दल मुक्ति वधूताटंक । मुनिमन बरके पंख- उभय वर जपउड़ि ऊरधजात । जनम मरण काटिनको कांतीक्षण में बितवतपात । अंधकार अज्ञान हरण को रवि शशि युगल प्रभात । भक्तिज्ञान बीरजवर बोये प्रेम निरंतर भात ॥ ३ ॥

आयेनिशिचोरचोरीकरनहरनधन देखेश्यामघनहाथचापशर लियेहैं । जबजबआवैबाणसाधडरपावैयैतोअतिमड़रावैंएपैबलीद्वारि कियेहैं । भोरआयपूछेअजूसांवरोकिशोरकौनसुनिकरिमौनरहेआंस डारिदिये हैं । दईसबलुटाइजानीचौकीरामराइदई लईउन्हींदिक्षा शिक्षाशुद्धभयेहियेहैं ॥ ५०५ ॥ कियोतनुविप्रत्यागिलागचलीसंग तियादूरिहीतेदेखिकियाचरणप्रणामहै । बोलेयोंसुहागवतीमरचोप तिहौहुसतीअबतोनिकसिगईजाहुसेवोरामहै । बोलिकैकुटुंबकहीजो पैभक्तिकरोसही गहीतबबातजीवादियोअभिरामहै । भयेसबसाधु व्याधिमेटीलैविमुखताकीजाकीबासरहैतौनसूझेश्याममधामहै॥५०६॥

डरपावै मारे क्यों नहीं सद्गति करयो चाहै ॥ श्लोक ॥ येयेहता-

श्चक्रधरेणंराजंस्त्रैलोक्यनाथेनजनार्दनेन । तेतेगताविष्णुपुरीं नरेंद्राःक्रोधो पिदेवस्यवरेणतुल्यः ॥ १ ॥ गतिहोइ जैसे चनाचाबिके पेटभरे एक मोहन भोग खाइके सो तुलसीदासको उपदेश मोहन भोग भगवान्‌के बाण अमोघ झूठो क्यों परचो समुद्रहू पै बाण झूठो न परचो मारवाड़में डारचो फेरि कैसो इहां चोरन की अविद्या को मारचो ॥ २ ॥ लुटाइये कुंडलिया ॥ सुखसोवै नींद कुम्हारिया चोरन मटियालेहि । चोरन मटि-यालेहि भजन सब हाथहोय मन । लगेनअहड़ोतहां रहै सुसदीसंततजन । इंद्रीआराम न होइ सकल मिथ्या करि जानै । हरि लीला रसपान मत्त निर्भय गुण गानै । अगर बसत जो राम पद जमहि चुनौती देहि । सुख सोवै नींद कुम्हारिया चोर न मटिया लेहि ॥ ३ ॥

दिल्लीपतिबादशाहअहिदीपठायेलेनताकोसोसुनायोसूबैविप्र ज्यायोजानिये । देखिबेकोचाहेंनीकेसुखसोंनिबाहेआइकहीबहुविन यगहीचलेमनआनिये । पहुँचेनृपतिपासआदरप्रकाशकियो दियोउ च्च आसनलैबोल्योमृदुबानिये । दीजेकरामातिजगख्यातसबमातकि येकहीझूंठीबातएकरामपहिंचानिये ॥ ५०७ ॥ देखोंरामकैसोकहि कैदकियेकियेहियेहूजियेकृपालहनुमानजूदयालहौ । ताहीसमयफै लिगयेकोटिकोटि कपिनयेलौंचैंतनुखैंचेंचीरभयोयोंबिहालहौ । फो रेकोटमारेचोटकियेडारैलोटपोटलीजेकोनओटजाइमानोप्रलयकाल हौ । भईतबआँखेंदुखसागरकोचाखेंअबवेईहमेंराखेंभाखेंवारों धनमा लहौ ॥ ५०८ ॥ आइपाइलियेतुमदियेहमप्राणपावेआपसमझावेंक रामातिनेकलीजिये । लाजदबिगयोनृपतबराखिलियोकह्योभयोघर रामजूकोवेगिछोंड़िदीजिये । सुनितजिदियोऔरकरचोलैकैकोटन योअबहूंनरहैकोऊवामेंतनुछीजिये । काशीजाइवृन्दावनआइमिले नाभाजूसोंसुन्योहोकवित्तनिजरीझमतिभोजिये ॥ ५०९ ॥

दियोउच्चआसन ॥ दोहा ॥ व्यासबड़ाई जगतकी, कूकरकी पहिचा

नि । प्यारकिये मुखचाटई, वैरकिये तनुहानि ॥ १ ॥ हूजिये ॥ पद ॥ ऐसीतुम्हैं न चाहिये हनुमान हठीले । साहब सीतारामसे तुमसे जुवसीले । तेरेदेखत सिंहके शिशु मेडकलीले। जानतहूं कलि तेरेहू मनो गुण गणकीले। हांक सुनत दशकंधके बंधनभये ढीले । सोबलगयो किधौंभयो गहरगहीले सेवकको परदाफटै तुम समरथ शीले । अधिक आपते आपनो सुनमानस-हीले । यह गति तुलसीदासकी देखिसुयश तुहीले । तिहूंकाल तिनको भला जोरामरँगीले ॥ २ ॥

मदनगोपालजूकोदरशनकरिकही सहीरामइष्टमेरेहगभावपागी है । वैसोईस्वरूपाकियोदियोलै दिखाइरूपमनअनुरूपछबिदेखिनी कीलागीहै । काहूकह्योकृष्णअवतारीजूप्रशंसमहारामअंश सुनिबो लेमतिअनुरागीहै । दशरथसुतजानोसुंदरअनूपमानो ईशताबताई रतिकोटिगुणीजागीहै ॥ ५१० ॥

रामइष्ट ॥ दोहा ॥ कहाकहौंछबिआजकी, भलेविराजे नाथ । तुलसी-मस्तक जबनवै, धनुषबाणलेउहाथ ॥ १ ॥ वैसोई ॥ क्रीट मुकुट माथे धरचो, धनुषबाण लियोहाथ । तुलसी जनके कारणे, नाथ भये रघुनाथ॥ २ ॥

मूल ॥ गोप्यकेलिरघुनाथकी श्रीमानदासपरगटकरी । करुणा वीरशृँगारआदिउज्ज्वलरसगायो । परउपकारकधीरकवितकविजन मनभायो । कोशलेशपदकमलअनन्यदासनव्रतलीनो । जानकी जीवनसुयशरहतनिशिदिनरँगभीनो । रामायणनाटककोरहिसि उक्तिभाषाधरी । गोप्यकेलिरघुनाथकीश्रीमानदासपरगटकरी ॥ ॥ २३० ॥ श्रीवल्लभजूकेवंशमें सुरतरुगिरिधरभ्राजमान । अर्थध र्मकाममोक्षभक्तअनपायनीदाता । हस्तामलश्रुतिजानसबहीशास्त्र केज्ञाता । परिचर्य्याब्रजराजकुंवरकेमनकोकर्षै । दरशनपरमपु नीतसभातनअमृतवर्षै । विट्ठलेशनंदनसुभावजगकोऊनहिंतासमा न । श्रीवल्लभजूकेवंशमेंसुरतरुगिरिधरभ्राजमान ॥ २३१ ॥ श्री वल्लभजूकेवंशमेंगुणनिधिगोकुलनाथअति । उदधिसदाअक्षोभसह

जसुंदरमितभाखी । गुरुवत्तनगिरिराज भलपनसबजगसाखी । विट्ठलेशकीभक्तिभयोबेलाद्दढ़ताके । भगवततेजप्रतापनमितनरवर पद्जाके । निर्व्यलीकआसैउदारभजनपुंजगिरिधरनरति। श्रीवल्लभ जूकेवंशमें गुणनिधिगोकुलनाथअति ॥ २३२ ॥

जानकीजीवन ॥ कवित्त ॥ सखाढुरावैचौंर उरवशी उडावैंमोर सा-वित्री चरण सेवैं महसी महेशकी । वरुणधनेशराज उडुरविराजगंधर्वीकिन्या सुकवारी नागशेषकी । द्वारेपैआइसब ठाढी हैं सखी तिनमें दामिनिसी दमकि रही अबलानरेशकी । सूरति किशोर रतिपतिके समूहराज आस पास तिन वीच बेटी मिथिलेशकी ॥ ३ ॥ सवैया ॥ दुलहश्रीरघुनाथ बन्यो दुलही सियसुन्दरि मंदिरमाहीं । गावतगीत सबैमिलिसुन्दरि वेदजुवाजुरि विप्रपढाहीं । रामकोरूप निहारति जानकि कंकणके नगकी परिछाहीं ।। औरसबैसुधि भूलिगई करटेकिरहीपलटारतिनाहीं ॥ ३ ॥ उक्तभाषा हनुमन्नाटके ॥ आकृष्टेयुधिकार्मुकेरघुपतौवामोब्रवीद्दक्षिणं पुण्ये कर्मणिभोजनेचभवतःप्रागल्भ्यमस्मिन्नकिम् । वामान्यःपुनरब्रवीन्ममनभोः पृष्टंनिजंस्वामिनं छिंद्यांरावणवक्त्रपंक्तिमथवाप्येकैकमादिश्यताम् ॥ १ ॥

टीका गोकुलनाथजूकी ॥ आयोकोऊशिष्यहोनलायोभेंटलाख नकीभाषनकीचातुरीपैमेरीमतिरीझिये । कहूंहैसनेहतेरोजाकेमिले विनादेहव्याकुलताहोइजोपैतोपैदीक्षादीजिये। बोल्योआजुमेरोकाहू वस्तुसोंनहेतुनेकुनेतिनेतिकहीहमगुरुढूंढ़िलीजिये । प्रेमहीकीबात इहांकरहीपलटिजातगयोदुखगातकहौकैसेरंगभीजिये ॥ ५११ ॥ कान्हहोहलालखोरिघोरदियोमनलैकैश्यामरससागरमें नागररसाल है। निशिकोस्वपनमांझ निपुणश्रीनाथजीनेआज्ञादईभीतिनईभई ओटसालहै। गोकुलकेनाथजूसोंवेगिदैजताइदीजेकीजै याहीदूरिछ विपूरिदेखोख्यालहै। भोरजोविचारैनहींधीरजकोधारैवहांजाऊंकोऊ मारैपैड़पऱ्योयहुलालहै ॥ ५१२ ॥ ऐसेदिनतीनआज्ञादेतवैप्रवीन नाथहाथकहामेरेविनागयेनहींसरैगो । गयेद्वारद्वारपालबोलेजूविचा

रिएक दीजैसुधिकानसुनखीजैबातकरैगो । काहूनेसुनाइदईलीजिये बुलाइअहोकहौ औरदूरिकरोकरेंदुरिढरैगो । जाइवहीकहीलहीआप नीपिछानामिले सुनोमेरोनामश्यामकहौनहींटरैगो ॥ ५१३ ॥

कहूंहै सनेहतेरो ॥ दोहा ॥ इहांकियानहिं इश्कका, इस्तैमाल सँभार ॥ सोलासाहबसों इश्कवह,करक्यासकैगँवार ॥ २ ॥ रससागर ॥ माझ ॥ लोनासाँवरनागरसागरवरमुरलीधुनिगरजै । वल्लभ रसिकतानलहरैआवत-गावत मुरपरजै । मोरपक्षकरडलै डुलै कलगीत पुतरीलौंबरजै । रूपकहरद-रियाव आवजिन नावधर्मकी लरजै । प्रेमहीकी बातसों प्रेममोपे न बनै कलिपलटिदै जैसे जलको बरहा प्रेमहरि हूपै न बन्यो लहटू चकई डोरि-

छाछके स्वभावखट्टे मीठेकोस्वाद सब बनायें जो सनेह कृष्णसों है पुत्रनसों कियो सुतहित सो कियो बलदेव जाने ॥ २ ॥ ओट साल है नाथजीको भीतिकी ओटको. बड़ो दुःख भयो अरुलरिका कान्हा देखे विना हलाल ओरसों भली प्रीति करी ॥ ३ ॥ ख्यालहै तापै फकीरको अरु लरकाकी गुड़ीको दृष्टांत ॥

मूल ॥ रसिकरँगीलोभजनपुंजशुठबनवारीश्यामको । बातक-वित्तबड़चतुरचोखचौकसअतिजानै । सारासारविवेकपरमहंसनिपर वानै । सदाचारसंतोषभूतसबकोहितकारी । आरजगुनतनअमित भक्तिदशधाव्रतधारी । दरशनपुनीतआशयउदारआलापरुचिरसु-खधामको । रसिकरँगीलोभजनपुंजशुठबनवारीश्यामको ॥ २३३ ॥

बात ॥ कवित्त ॥ कीरतिको मूल एक रैनि दिन दानदेबो धर्मको मूल एक साधु पहिचानिबो । बढ़िबेको मूल एकऊंचो मन राखिबोई जानिबे को मूल एक भली बात जानिबो । व्याधि मूल भोजन उपाधि मूल हास्य जामो दारिदको मूल एक आरस बखानिबो ॥ हरिबेको मूछ एक आतुरी है रणमांझ चातुरी को मूल एक बात कहि जानिबो ॥ १ ॥ दोहा ॥ बात न हाथी पाइये, बातनि हाथी पाइ ॥ बातनि सों विष ऊतरै, बातनि विष ह्वैजाइ ॥ २ ॥ तापै केशवदास को अरु बीरबलो दृष्टांत ॥

कवित्त ॥ आयो एक पंडित अखंडित विचारवान वेद औ पुराण मंत्र यंत्रनि को गातुरी । ताने नुनिकही सही हाड़हू को सिंहाकरौं लावो लाइ दियो लियो अति हुलसातुरी । आप द्रुम चढ़्यो तिन पानी लैकै पढ़्यो पुनि छिरकेते जियो अति कियो जाको घातुरी । कीजिये विवेक एक चातुरीसों बच्यो याते एक ओर चारिवेद एक ओर चातुरी ॥ ३ ॥ दोहा ॥ बात विडारै भूत को, बात बचावै प्रान । बात अधिक भगवान ते, कही हंस अख्यान ॥ ४ ॥ हरि आवै पै बात न आवै जैसे ब्रह्माको सनकादिक पूछी चित्त विषयमें जाइ विषय चित्तमें जाइ न्यारो कैसे होय तब उत्तर न आयो तब हंसरूप धरिकै श्रीभगवानने जवाब दियो ॥ ५ ॥ दोहा ॥ कागा काको धनहरै, कोयल काको देइ ॥ मीठी वाणी बोलिकै, जग अपनो करि लेइ ॥ ६ ॥ प्रस्तावे ॥ हेजिह्वेरससारज्ञे मधुरं किंन भाषसे । मधुरं वद कल्याणि सर्वदा मधुरप्रिये ॥ ७ ॥ चतुराई बात कहा एक पंडित बीरबल पै आयो बात वासों पूछी कछू पढ़ोहौ पढ़ेहैं वेद शास्त्र पुराण कवित्त बात ॥ ८ ॥ कवित्त बड़े चतुर ॥ कवित्त ॥ मेह बरसाने तेरे नेह बरसाने देख एह बरसाने बर मुरली बजावेंगे । सांज लाल सारी लाल करै लाल सारी देखिबेकी लाल सारी लाल देखे सुख पावेंगे । तुही उरवशी उरवशी नाहिं आन तिय कोटि उरवशी तजि तोसों चित लावेंगे । सेज बनवारी बनवारी तनु अशुभूषण गोरे तनवारी बनवारी आज आवेंगे ॥ ९ ॥

भागवतभलीविधिकथनकोधनजननीएकैजन्यो । नामनरायन मिश्रवंशनवलाजुउजागर । भक्तनकीअतिभीरभक्तिदशधाकोआगर । आगमनिगमपुराणसारशास्त्रनसबदेखे । सुरगुरुशुकसनकादिव्यासनारदजुविशेखे । सुधाबोधमुखसुरधुनीजसवितानजगमेंतन्यो । भागवतभलीविधिकथनकोधनजननिएकैजन्यो ॥ २३४ ॥

भागवत ॥ छप्पय ॥ निगम कल्पतरु उदै सोई भागवत प्रमाना ।

द्वादश मोटी डार सोइ स्कंध बखाना । त्रिंशत पुनि पैंतीसऽध्यायसो छोटी शाखा । सूक्षम कली श्लोक सहस्र अष्टादश भाखा । यत्र अक्षर पुनि पंच लख सहस्र छिहत्तर और गनि । तत्त्ववेत्ता तिहुँ लोकमें ब्रह्मबीज भागवत पुनि ॥ २ ॥ भली विधि ॥ कवित्त ॥ भागवत कथन समुद्रको मथन हरि गुण नाम रूप जैसे अमृत उधारचो है । मृत्युप्राय जीर जग भक्ति दान दैकै दुस्तर भवसागर को पारलै उतारचो है । प्रेमरंग राते कहै नेह भरी बातें सब जगतके नाते करि हांते उबारचो है । करुणानिधान गुण रतननि की खानि मानो ते ज्ञान विज्ञान युक्ति जीव विस्तार्‍यो है ॥ ३ ॥ धन जननी जैसे माता एक पुत्र जनै तैसे एक इनहीं को श्री शुकदेव जीने भागवत दई है ॥ औरन पै कैसे आइसो पको फल सुवा डारै एकतौ कैसेहै मुखते गिरतेही ऊपरही लैलेहिं । एक जमीनमें ते लेहिं तिन को सवाद नहीं ऐसे सुआदनहीं ऐसे सुवा रूपी शुक तिनके मुखत लई ॥ ॥ ४ ॥ नाम ॥ दोहा ॥ नाम नरायण मिश्रसी, नवला वंश सुहात । कोटि जनमके तम हरै, आतपलों विख्यात । भक्तनकी ॥ दोहा ॥ साधुतहांहीं संचरै, जहांधर्मकी सीर । सरवर सूखे परशुराम, हंस न बैठतीर ॥ २ ॥ कवित्त ॥ राजा तहँ भक्तराज मानस समाज प्रेम रस नीर भीर गंभीर सुख छायोहै । हरिगुण रूप जालि मानिक रसाल मानों छायासों विशाल जस समूया सरसायो है । श्रेणी कलहंस मानो झूमि रहे परमहंस अतिही प्रशंस रंग रूप बिरमायो है । अलबेली अली आश विश्वास है रसिकन की प्रेमही की राशि सो उच्छिष्ट शेष पायो है ॥ ३ ॥ सारशास्त्रभागवते ॥ मन्येऽसुरान्भागवतानधीशे संरंभमार्गाभिनिविष्टचित्तान् । येसंयुगे चाक्षतताक्ष्यर्पुत्रमंशेसुनाभायुधमापतंतम् ॥ ४ ॥ सुधाबोध ॥ सवैया ॥ भक्तिसुधारसज्ञान वचन मुख सहजहि बोलैं ॥ परम प्रवीन विचित्र नवीन ग्रंथकी गूढग्रंथको खोलैं । नारायण जग तारण कारण भूमण्डल सुरसरि सँग डोलैं । जाकी जस शीतल छांह तरंग बिन अलबेली अलि हंस कलोलैं ॥ ५ ॥ कवित्त ॥ मिश्र श्रीनारायण

जू मथुपुरी बास कियो पुनि हरद्वार में नृसिंहारन सों मिले । तिनोंकी सुआज्ञा पाइ बद्रिकाश्रमहिं जाइ मिलि शुकदेव जू सों महासुखमेंझिले । आयेफिरि काशी सुखराशीवे संन्यासी पाये तिनसों जनमनि सुखमन में मिले । पंडित प्रवीण जिते तिनकी कथासों तिते चितेमोचिते रहे मानो महा अहिकिले ॥ ६ ॥

कलिकालकठिनजगजीतियोराघवकीपूरीपरी । कामक्रोधमदमोहलोभकीलहरनलागी । सूरजज्योंजलग्रहेबहुरिताहीज्योंत्यागी । सुंदरशीलस्वभावसदासंतनसेवाव्रत । गुरुधर्मनिषकनिर्वह्योविश्वमेंविदितबड़ोभृत । अल्हुरामरावकृपाआदिअंतधुकतीधरी । कलिकालकठिनजगजीतियोराघवकीपूरीकरी ॥२३५॥ हरिदासभलप्पनभजनबलबावनज्योंबढ्योबावनो । अच्युतकुलसोंदोषस्वपनहूउरनहिंआन्यो । तिलकदामअनुरागसबनगुरुजनकरिमान्यो । सदनमाहिंवैराग्यविदेहानिकीसीभांती । रामचरणमकरंदरहतिमनसामदमाती । योगानंदउजागरवंशकरिनिशिदिनहरिगुणगावनो ॥ हरिदासभलप्पनभजनबलबावनज्योंबढ्योबावनो ॥ २३६ ॥

अच्युत ॥ दोहा ॥ कामी साधुहि कृष्णकहि, लोभी वामन जानि । क्रोधीको नरसिंह कहि, नहीं भक्तकी हानि ॥ १ ॥ रामचरण ॥ जिहिघट नौबतनामकी, सोघटछीनीनाहिं । प्रगटे देखिकबीरज्यों, दीपकभी डलमाहिं ॥ २ ॥ जंगली कह्यो नाम न लियो सो नाभाजी एककुवांके मनखंडेपै बैठे हैं तहां माथे तिलकधारे मालामारवाड़ी आइगये जबह्वां छप्पैबनाई जंगली देशके कहे तिनको आचार्यजी पूछेको दृष्टांत ॥ ३ ॥

जंगलीदेशकेलोगसबश्रीपरशुरामकियेपारषद । ज्योंचंदनकोपवननींबपुनिचंदनकरई । बहुतकालतमनिबिड़उदयदीपकज्योंहरई । श्रीमटपुनिहरिव्याससंतमारगअनुसरई । कथाकीरतननेमरसनिहरिगुणउच्चरई । गोविंदभक्तिगदरोगगतितिलकदामसदवैदहद । जंगलीदेशकेलोगसबश्रीपरशुरामकियेपारषद ॥ २३७ ॥ श्रीपरशु

रामजीकीटीका ॥ राजसीमहंतदेखिगयोकोऊअंतलेनबोल्योजूअनं-
तहरिसगेमायाटारिये । चलेउठिसंगवाकेपहरिकोपीनअंगबैठिगिरि
कंदरामेंलागीठौरप्यारिये । तहांबनजारोआइसंपतिचढ़ाइदई औरसं
गपालकीहूमहिमानिहारिये । जाइलपटाइयोंपाइभावमेंनजान्योकछु
आन्योउरमांझआवैप्राणवारिडारिये ॥ ५१४ ॥

गदरोगगतिसुजान सुंदर वैद्यलगैतो भलेही रोगजाइ ॥ ४ ॥ ५ ॥ तिलक
दाम औषधि दई तिलक दोम इनकी सद औषधिहै ॥ १ ॥ श्लोक ॥
तुलसीकाष्ठमालांतुप्रेतराड्रूस्यदूतकाः । दृष्ट्वानश्यंतिदूरेणवातोद्धूतंयथादलम्॥
॥ २ ॥ किरातहूणांध्रि ॥ छप्पय ॥ संततिलक करता तिलक शंकर
शिरसोहै । ब्रह्माकेशिर तिलक तिलक बिन जग में कोहै । तिलक विना
शिर अशुभ तिलक राजा पदपावै । तिलक संत सनमान तिलकसों महंत
कहावै । जियेयुगतिमूये मुकति सुरगण मुनि जन शिर धरैं । तुलसी तिलक
सतगुरु कमल बसै भवसागर तरैं ॥ २ ॥ बैठि गुरूके पास तिलकलिल्लार
हि कीजै । विना तिलक जो अफल तिलक करि दिक्षादीजै । दान
पुण्य तप धर्म तिलक बिन निष्फल जावै । तिलकधार कछु करौ अनत
फल वेद बतावै।तिलक देखि यमहू डरै तिलक विना कहि दीनजन। तत्त्ववेत्ता
तिहुँ लोक में भोड़ो मुहड़ो तिलक बिन ॥ ३ ॥ तिलक है सत अस्नान
तिलक ब्राह्मण शिर सोहै । तिलक विना कछुकरौ सबै फल निष्फलजोहै ।
तिलकतिया शृंगार तिलक नृप शीश लगावै । तिलक वेद परमाण तिलक
त्रैलोक चढ़ावै । तिलक तत्त्व युग युग सदा तिलक मिले सिद्धि पाइये ।
परशुराम ब्रह्मांड में सुयश तिलक को गाइये ॥ १ ॥ दोहा ॥ बानो बड़ो
दयालु को, तिलक छाप अरु माल । यम डरपै कालूकहै, भय माने भू-
पाल ॥ २ ॥ माया टारिये ॥ मायासगी न तनुसगो, सगो न यह सं-
सार ॥ परशुराम या जीव को, सगो सुसिरजनहार ॥ ३ ॥ कहते हैं
करते नहीं, मुँहके बड़े लवार ॥ कारो मुहड़ो होइगो, सांईके दरबार ।
भावमैंन जान्यों आपही में आपभाव लायो आपु बोले तुम बड़े उपकारी हो ।

पद ॥ रैमन संत बड़े उपकारी । यद्यपि सकल सिद्धि इनके सँग जीवनसों हितकारी । निर्मलजल बोलै अति निर्मल निर्मल कथा दृढावै । निर्मल में मलदेखै कबहूं तो ततकाल छुड़ावै । माया मिलै महोत्सो माडै आनँद में दिन काटै । करि हरिभक्ति तरै भवसागर और न तारन माडै । त्यागे लेह देह पुनि त्यागे चित लालच नहिं काई । चतुर दास इन भक्तनि को सँग छांडि अनत नहिं जाई ॥ ५ ॥ आप तौ गुणग्राही हौ तापै ऊंट की नारीको दृष्टांत पै मैं अपराध कियो पै तुम ताही न निंदा पहुँच न अभाव पहुँचै ॥ ६ ॥ कुण्डलिया ॥ आकाशै विचुरीखिवै खरी चलावै लात । खरी चलावै लात विमुखकृत भक्तनि निंदा । उलटि परे तिहि छार छार परसे नहिं चंदा । ज्यों छाया उपहार प्रहारन लागै तनको । त्यों जमकी उपहास कहा पहुँचै हरिजन को । आगर श्यामके भृत्यसन दुनी देत घिसि जात । आकाशै विजुरी खिवै खरी चलावै लात ॥ ७ ॥ सत उपकारी पै शाहूकार को सुई दीनी सो दृष्टांत ॥

मूल ॥ गुणनिकरगदाधरभट्टअतिसबहिनकोलागैसुखद । सज्जनसुहृदसुशीलवचनआरजप्रातपाल । निरमत्सरनिष्कामकृपाकरुणाकोआलै । अनन्यभजनदृढ़करनधर्योवपुभक्तनकाजै । परमधर्मकोसेतविदितवृन्दावनगाजै । भागवतसुधावरषैवदनकाहूको नाहिंनदुखद । गुणनिकरगदाधरभट्टअतिसबहिनकोलागैसुखद ॥

निर्मत्सर ॥ दोहा ॥ बातें कहै निर्लोभको, भर्यो हिये अति लोभ । युगल प्रेम रस रूपकी, कैसे उपजै गोभ ॥ १ ॥ सो ऐसो वक्ता न होइ । श्रोता ऐसो चाहिये, जाके तन मन श्याम । वक्ताहू हरिको भगत, जाके लोभ न काम ॥ २ ॥ श्रोताऐसो न होइ ॥ कथा सुनै नहिं कीर्तन बकै आपनीवाइ । पापी मानुष परशुराम, कै औंधे उठिजाइ ॥ ४ ॥ श्याम ॥ पद ॥ सखीहों श्याम रंगरँगी । देखि बिकाइ गई वह मूरति सूरति माहिं पगी । संगहुतो अपनो सपनो सो सोइरही रसखोई । जागे हु आगे दृष्टिपरे सखीनेकु न न्यारो होई।एकजुमेराअँखियनि में निशि द्योस रह्यो करिभौ-

न । गाइचरावनजात सुनौसखी सोधौं कन्हैयावोन । कासों कहों को पतिआइरी कौन करै बकवाद । कैसेकै कह्योजात गदाधर गूंगेकोगुरुस्वाद॥ ॥ कवित्त ॥ मोरपक्ष धरे पटपीत वनमालगरे सांवरी सी मूरति प्रवीन मोसोंपगी है।टरत न टारी पल क्षणहूं न होतिन्यारी जेतिक बिसारी बिसरति नाहिं खगी है ॥ चलतिहौं तौ चलति है बैठीहौं तौ बैठीहै सोई हौं तौ सोई हैरी जागी हौं तौ जगी है । तुम सब मिलि मेरी आंखिनि को दोषदेत येऊतौ मैं मूंदिराखी तऊ तहां लगी है ॥५॥ कानन करति सीख कानन फिरति सुनि अतिही हठीली फिरि पाछे पछिताई है । धामभूलि जैहे काम अंगनि में ऐहै काम नैनशर लागै घूमि घूमि गिरिजाई है । अबलौं न मानती ही मेरीकही बात सुनि पाछे जलजातनि के पातनि बिछाई है । दीठिकहूं ऐहै मनमोहन मनोज छबि दौरि दौरि अटनिचढे को फलपाई है ॥ १ ॥

टीकागदाधरभट्टजूकी ॥ श्यामरंगरंगीपदसुनिकैगुसाईजीवपत्रदै पठायोउभयसाधुवेगिधायेहैं । रैनीबिनरंगकैसेचढ्योअतिशोचब ढ्यो कागजमेंप्रेममढ़ेउतहांलैकैआयेहैं । पुराढिगकूपतहांबैठेरसरूप लगेपूंछिबेकोतिनहींसोंनामलैबतायेहैं । रहौकौनठौराशिरमौरवृन्दा बनधामनामसुनिमूर्छाह्वैकैगिरेप्राणपायेहैं ॥ ५१५ ॥ कान्हकहोभ ट्टश्रीगदाधरजीयेईजानोमानोउहिपातीचाहफेरीकैजिवायेहैं । दियो पत्रहाथलियोशीशसोंलगाइचाइ बांचतहीचलेवेगिवृंदावनआयेहैं । मिलीश्रीगुसाईजीसोंआंखैंभरिआईनीर सुधनशरीधीरेधीरवहीगाये हैं । पढ़ेसबग्रंथसंगनानाकृष्णकथारंगरसकोउमंगअंगअंगभावछाये हैं ॥ ५१६ ॥ नामहोकल्यानसिंहजातिरजपूतपूत बैठाआइकथा सोअभूतरंगलाग्योहै । निपटनिकटबासधोरहराप्रकाशगांवहासपर हासतज्योतियादुखपाग्योहै । जानीभटसंगसोंअनंगवासदूरिभईक रौलैकैनईआनिहियेकामजाग्योहै । मांगताफिरतहुतीयुवतीओ गर्व वती कहीलैरुपैया बीसनेकुकहो राग्योहै ॥ ५१७ ॥

विषय महा दुरतही है ब्रह्मापुत्री के पाछे परयो चंद्रमा गुरुपत्नी के, महादेवजू श्रीमोहनी के ब्रह्माके रोगटाके फौंगटाकी मशीकी तुसी पै अध्याससों काढिये ॥ २ ॥ सवैया ॥ सूधेकहे तू अबै नहिं मानत तू इत फेरि न नेकु चितैहै। भूमि में आंक बनावत मेटत पोथियै कांखलिये दिनजैहै। सांचीहौं भाषति मोहिं ददा कीसौं प्रीतमकी गतितेरियै ह्वैहै। मोसों कहा अठिलात अजा सुत कैहौं ककाजूसों तोहूं पढैहै ॥ ३ ॥

गदाधरभट्टजीकोकथामेंप्रकाशकहौअहोकृपाकरोअबमेरीसुधि लीजिये। दईलौंडीसंगलोभगंगाचितभंगकियेदियेलैबताइअबमेरो कामकीजिये। बोलेआपबैठियेजूजापानितकरोहियेपापनहींमेरोग ईदरशनदीजिये। श्रोतादुखपाइभाखैझूंठोयहिमारिनाखै सांचोकही राखैसुनितनमनछीजिये ॥ ५१८ ॥ फाटिजाइभूमितौसमाइजाइ श्रोताकहैंबहैहगनीरह्वैअधीरसुधिआईहै। राधिकावल्लभदासप्रक टप्रकाशभासभयोदुखराशितबसुनिसोबलाई है। सांचाकहिदीजैना हीं अभीजीवलीजैडरसबैकहिदईसुखलियोसंज्ञाभाईहै। काढितरवा रितियामारिबेकल्यानगयोदयोसोप्रबोधहै मैं करीदयानाईहै॥५१९॥

मेरो काम कीजिये ॥ पद ॥ साधो जगमें कामिनि ऐसीरे। राजा रंक सबनिके घरमें बाघिनि ह्वैकै वैसीरे। बसती छोड़िरहै वन बासा चाबति सूखे पातारे। दांवपरै विनहूंको मारै दैछाती पर लातारे। ज्ञानी गुनी शूर वे पंडित येतो सबै सयानेरे। सूधे होइ परै फांसीमें युवती हाथ बिकानेरे। तीनिलोकमें कोउ न छांड्यो दियेदाढ़ तरसारे रे। हरीदास हरिसुमिरण लागे तब भगवंत उबारे रे ॥ १ ॥ दियो परबोधन्याय। कामांधा ये न पश्यंति जन्मांधश्च न पश्यति ॥ न पश्यंति मदोन्मत्ता अर्थी दोषं न पश्यति ॥ २ ॥ दोहा ॥ विषयचुगो जिनि चुगैमन, चुगतकछू सुखहोइ ॥ फिरिफांसी ऐसी परै, तिहि सम दुःख न कोइ ॥ ३ ॥ रेमन कबहूं जाइ जिनि, भूलि विषै वनरंग। मन्मथ ठगमारत तहां, लिये

बहुत ठगसंग ॥ ४ ॥ राधावल्लभ लालबिन, व्यास न पायो सुःख ॥ डार डार मैंहूं फिरयों, पात पातमें दुःख ॥ ५ ॥

रहैकाहूदेशमेंमहंतआयोकथामाहिंआगेलैबैठायेदेखिसबैसाधुभी जेहैं । मेरेअश्रुपातक्योंनहोतशोचसोतपरेकरेलैउपाइदैलगाइमिर्च खीजेहैं । संतएकजानिकैजताइदईभट्टजूकोगयेउपसबैजबमिलिअति रीझेहैं । ऐसीचाहहोइमेरेरोइकैपुकारकरी चलीजलधारनयन प्रेमआ इर्धीजेहैं ॥ ५२० ॥ आयोएकचोरघरसंपतिबटोरिगांठिबांधीलैमरो रिक्योंहूं उठैनाहिंभारीहै । आइकैउठाइदईदेखीइनरीतिनई पूँछौना मप्रीतिभई भूलो मैंविचारी है । बोलेआपलैपधारोहोतहीसवारी आवऔरदशगुणीमेरेतेरेयहीज्यारीहै । प्राणनकोआगेधरोआनिकैउ पाइकरोरहेसमुझाइभयोशिष्यचोरीढारीहै ॥ ५२१ ॥

जलधारि ॥ दोहा ॥ परसा हरियशसुनतही, स्रवै न जलभरि आंखि ॥ भरि भरि मूठी धूरिकी, तिन आँखिनमें नाखि ॥ १ ॥ हरियश सुनिकै नैनजो, स्रवै न भरि भरिवारि ॥ परसा मूठी धूरिकी, तिन आँखिन में डारि॥ ॥ २ ॥ फुटोनयन फाटोहियो, जुरौ सुनत किहिकाम ॥ स्रवैद्रवै पुलकै नहीं, तुलसी सुमिरत राम ॥ ३ ॥ सोरठा ॥ हरियश जीवनमूरि, तुलसी सुमिरत दगस्रवैं ॥ तिन नैननिमें धूरि, भरिभरि मूठीमेलिये ॥ ४ ॥

प्रभुकीटहलनिजकरनकरतआपभक्तिकोप्रतापजानैभागवतगाई है । देतहुतेचौकाकोऊशिष्यबहुभेटलायोदूरिहीतेदासदेखिआयोयों जनाई है । धोवोहाथबैठोआइसुनिकैरिसाइउठेसेवाहीमेंचाइयाकोखी जिसमुझाई है । हियेहितरासजगआशको विनाशकियो पियोप्रेमरस ताकीआशलैदिखाई है ॥ ५२२ ॥ मूल ॥ चरणशरणचारनभगतह रिगाइकयेताहुवा । चौमुखचौराचंडजगतईश्वरगुणजानैं । करमानं दअरुकोल्हअल्हूअक्षरपरवानैं । माधवमथुरामध्यसाधुजीवानँदसी वां । दूदानरायणदासनाममांडननतग्रीवां ॥ चौरासीरूपकचतुर्वाणीवर णतजूजुवा । चरणशरणचारणभगतहरिगायकयेताहुवा ॥ १३९ ॥

टीकाकरमानंदचारनकी ॥ करमानंदचारनकी वाणीकोउचारनमें दारुणजोहियोहोइसोऊपिघिलाइये। दियोगृहत्यागिहरिसेवाअनुरागभरेबटुवासुग्रीवहाथछरीपधराइये। काहूठौरजाइगाडवेहीपधराये वापैलायेउरप्रभु भूलिआयेकहांपाइये। फेरिचाहभईवई श्यामको जताइबात लईमँगवाइ देखिमातिलैभिजाइये॥ ५२३॥

निजकर॥ हृषीकेन हृषीकेशं सेवनंभक्तिरुच्यते ॥ ५ ॥ रामभक्ति शयमें नहिंदेखी॥ लोचनमोरपक्षकरलेखी॥ सोसमकुलिश कठोर सुछाती। रघुपतिचरित न सुनि हरषाती॥६॥ जगआश को विनाश कियो॥ ॥ सवैया॥ आशको दासरहै जबलौं तबलौं जगको नरदासकहावै॥त्यागी गुणी कविपंडित कोऊहो आशलिये सब को भरमावै॥स्वर्ग महीतल बासकहूं करो आश जहांलगि नाच नचावै। तातेमहा सुखपाइ निराशमें आशतजै भगवान को पावै॥ दिखाई है॥ कुंडलिया॥ आपुन जाई सासुरै, औरनको सिखदेइ। औरनको सिखदेइ हिया अपनो नहिं शोधै। नखशिख जटित अज्ञान मूढ जगको परमोधै। निजआंखिनके अंध गैल औरनि उपदेशै। भवजल भरचो अपार ताहि तरि सके न शेशै। अग्रकहै अप स्वारथी परमारथ पूजा लेइ। आपु न जाई सासुरै औरन को सिख देइ॥ २॥ दोहा॥ सीताराम सुजानतजि, करै और को जाप। ताके मुखमें दीजिये, नौसादर को बाप॥ ३॥ फेरि चाह भई॥ हरि सेवा राखिलई गुरुको त्यागि दियो माता पिता पुत्र स्त्री आदिक क्योंकि सबको त्यागि हरिकी सेवा करनी नहीं तौ धूरि लगाइके धूरिही फांकनी हरि सेवा घरहीमें क्यों न करी एकांत बिना न होइ गृहमें दुख आइ लगै॥ १॥ वनमें काहेको दुःख होइ लेना एक न देना दोइ॥ २॥ तापै दृष्टांत डुकरिया की हँसुलीको॥ श्लोक॥ गृहं भक्तपराधीनः॥

कोल्हअल्हू भाईदोऊकथासुखदाईसुनो पहिलोविरक्तमदमांसनहिंखातहै। हरिहीकरूपगुणवाणीमेंउचारकरै धरैभक्तिभावहियेताकीयहबातहै। दूसरोअनुजजानौखाइसबअनुमानोंनृपहोकोगावैंप्रभु

कभूगाइजातहै । बड़ेकेअधीनरहैजोईकहैसोईकरै ईशकरिचाहैआप दीनतामेंमातहै ॥ ५२४ ॥ बड़ेआयकहीचलौद्वारकानिहारिसही मिथ्याजगभोगयामेंआपुहीविहातहै । आज्ञाकेअधीनचल्योआयेपुरलीनभयेनयेचोजमंदिरमेंसुनौकानवातहै । कोल्हनेसुनायेसबजेजे नानाछंदगाये पाछेअल्हदोइचारकहैसकुचातहै । भरयोईहुंकारो प्रभुकहीमालगरेडारोलायपहरावोकह्यो मेरोबड़ोभ्रातहै ॥ ५२५ ॥ दयोपैनयाहिदयोबड़ोअपमानभयोगयोबूड़ोसागरमेंदुखकोनपारहै । बूड़तहीआवैंभूमिपाइचलोभूमिप्रीति सोंअनीतिभूलैनाहिं मानोंतरवारहै । सोईआयेलेनहरिजनमनचैनझिल्योमिल्योकृष्णजाइपायोअतिसुखसारहै । बैठेजबभोजनकोदईउभयपातरिलै दूसरीजूकैसीकहीवहीभाईप्यारहै ॥ ५२६ ॥

आपुही विहात है ॥ पद ॥ सुपनो सो धन आपनो श्याम ॥ आदि अंत तासों न बिछुरिये परत काल सों काम । तन धन सुत दारा गृह सर्वसु जाहि भजै लै नाम । देखि देखि फूलन जिनि भूलौ जग नटवाको धाम । ज्यों बछरा के धोखे गइया चाटति है वह चाम । ऐसे व्यास आश सब झूंठी सांचो है हरि नाम ॥ ४ ॥ कुंडलिया ॥ गिलति कटोरी वारिको गिली आपही जाइ । गिली आपही जाइ विषै भोगत अज्ञानी ॥ जानी परै न बात आप कित जात बितानी । पुनि जैसे जललैन थके दूरै जल बेली । ऐसेही सब विषै मिटै गुरु चेला चेली । एक छेद की यह दशा देहहि घने देखाइ । गिलति कटोरी वारिको गिली आपही जाइ ॥ पाछे अलू ॥ सवैया ॥ देश विदेश के देखे नरेशन रीझिकै कोऊ जो बूझ करैगो । याते तनय तन जात गिरयो गुण सो गुण अवगुण गांठि परैगो । बाँसुरी वारो बड़ो रिझवार है श्यामजु नेक सोढारढरैगो । लाड़िलो छैल छबीलो अहीर को पीर हमारे हिये की हरैगो ॥ नये नये चोज ॥ बिरक्त को आदर सत्कार मंदिर में भगवान सदा करै हैं सो न कियो विषयी को कियो यह नये चोज ॥

सबैंवि षभयोदुखगयोसोईहुवोनयोदियोपरवोधवाकीबातसुनिली जिये । तेरोछोटोभाईमेरोभक्तसुखदाईताकी कथालैबलाईजामें आपहीसोंधीजिये । प्रथमजननमांझबड़ोराजपुत्रभयोगयोगृहत्या गिसदामोसोंमतिभीजिये । आयोवनकोऊभूपसंगरागरंगरूपदे खिचाहभईदेहदईभोगकीजिये ॥ ५२७ ॥ तेरेईवियोगअन्नजलस बत्यागिदियोजियोनहींजातवापैवेगिसुधिलीजिये । हाथपैप्रसाददी नोआइघरचींह्निलीनोसुपनोसोगयोबोतिप्रीतिवासों कीजिये । द्वार काकोसंगसुनिआवतहीआगेचल्यो मिल्योभूमिपरिदृगभरिबहेदी जिये । कहीसबबातश्यामधामतज्योताहीक्षण कर्‌योवनवासदोऊ मतिअतिभीजिये ॥ ५२८ ॥ अल्हहीकेवंशमेंप्रशंसयाहिजा नि लेहु बड़ोऔरुभाईछोटोनारायणदासहै । दीरघकमाऊलघुउपज्यो उड़ाऊभाभीदियोसीरोभोजनलैभयोदुखरासिहै । देवोमोकोतातोक रिबोलीवहक्रोधभरियहूजाहूकरोभरवावैकियोहासहै।गयोगृहत्यागि हरियागकर्‌यो वैसेहीजुभक्तिवशश्यामकह्यो प्रगटप्रकाशहै॥५२९॥

दियो प्रबोध ॥ कुंडलिया ॥ पर्वतको कह देखिये, पाँइनतरकी देखि । पाँइन तरकी देखि बात जनि कहै पराई । आनि जरौ कोउ बरौ राखि उर जरतौ भाई । सारो राखत सती सुनो नहिं राखत यारो । अपनो पहरे जागि गांठितो सुतो उबारो । अगर असत आलापतजि हरि गुण हिरदेलेखि । पर्वतको कह देखिये पाँइन तरकी देखि ॥ २ ॥ गयो गृह त्यागि ॥ कवित्त॥ दूरैसेमीठी मीठी बातेंसो बनाइ कहै अंतर कपट तासों पलनपतीजिये । वाणी बिनपंडित विवेक बिन भूपति औ ज्ञानहीन गुरु ताकी दीक्षाहू न लीजिये । कहै हरि भक्त राजबिन कैसो रजपूत विना सनमान ताको दान कहा छीजिये । नदी बिन ग्राम हरिसेवा बिन काम कैसो जामें नहीं प्रीतिसोई मित्र कहा कीजिये ॥ १ ॥ दोहा ॥ या भव पारावारके, उलँघि पारको जाइ । तिय छबि छाया ग्राहिनी, बीचहि पकरैआइ ॥ २ ॥ रसन शिशन संयम करै, हरि चरणनतरबास ॥ तब

हीं निश्चय जानिये, राम मिलनकी आस ॥ ३ ॥ तज विलास जा विषयक, जौन प्रेमसोंजाहिं । भानु उदय तमरहै तो, वहै भानहीं नाहिं ॥

मूल ॥ नरदेवउभैभाषानिपुणपृथ्वीराजकविराजहुव । सवैया-गीतश्लोकबेलिदोहागुणनवरस । पिंगलकाव्यप्रमाणविविधविधिगायो हरियश । परिदुखविदुखसलाघ्यवचनरचनाजुविचारै । अर्थविचित्र निमोलसबैसागरउद्धारै ॥ रुक्मिणीलतावर्णनअनूपबागीशवदन कल्याणसुव । नरदेवउभैभाषानिपुणपृथ्वीराजकविराजहुव ॥ १४० ॥

उभयभाषानिपुण ॥ पंडित ह्वैके भाषाको प्रमाण नहींकरै जामें हरियश होइजाइ भाषाको विवेकी हैं ते सब प्रमाण करै हैं ॥ १ ॥ श्लोक ॥ साधुभिर्ग्रस्तहृदयो भक्तैर्भक्तजनप्रियः ॥ २ ॥ अज्ञानी नहीं प्रमाण करै हैं तापै दृष्टांत वैष्णवको अरु पंडितको ॥ ३ ॥ हरियश ॥ दोहा ॥ हरियश रसनहिं कवित महिं, सुनै कौनफल ताहि । शठ कठपुतरी संगघुरि, सोयेको फलकाहि ॥ ४ ॥ वचन रचना ॥ सुवरणको चाहत सदा, कवि व्यभिचारी चोर । पाँवधरत चिंता करैं, श्रवण सुहात न शोर ॥ ५ ॥

टीकापृथ्वीराजराजाकी ॥ मारवारदेशबीकानेरकोनरेशबड़ोपृथ्वीराजनामभक्तिराजकविराजहै । सेवाअनुरागअरुविषयवैराग्य ऐसो रानीपहिंचानीनाहिंमानोदेखीआजहै । गयोहोविदेशतहां मानसीप्रवेशकियोहियोनहींछुवैकैसेसरैमनकाजहै । बीतेदिनतीनि प्रभुमंदिरनदीठिपरैपाछेहरिदेखिभयोसुखकोसमाजहै ॥ ६३० ॥ लिखिकैपठायोदेशसुंदरसंदेशयह मंदिरनदेखेहरिबीतेदिनतीनि हैं । लिख्योआयोसांचुबांचिअतिहोप्रसन्नभयेलगेराजबैठेप्रभुबाहरप्रवीनहैं । सुनोऔरएकयोंप्रतिज्ञाकरीहियेधरीमथुराशरीरत्यागकरैरसलीनहैं । पृथ्वीपतिजानिकैमुहीमदईकाबिलकीबल अधिकाई नहींकालकेअधीनहैं ॥ ६३१ ॥ जीवनअवधिरहै निपटअलपदिनकलपसमानबीतिपलनविहातहै । आगमजनाईहै

योवाहैंइन्हेंसांचोकियो लियोभक्तिभावजाकेछायोगातगातहै।चल्यो चढ़िसांड़िनीपैलईमधुपुरीआनिकरिकैस्नानप्राणतजेसुनीवातहै । जयजयध्वनिभईव्यापिगईचहूंओर अहोभूपतिचकोरजसचंदादिनराति है ॥ ५३२ ॥ मूल ॥ द्वारकादेखिपालंटतीअचढ़िसीवैकीधीअटल। असुरअजीजअनीतिअगिनिमेंहरिपुरकीधौं । सांगनसुतनैसादराइरनछोरैदीधौं । धराधामधनकाजमरणबीजाहूमांडौ। कमधुजकुटकेंहुवौचौकचतुरभुजनीचाडौ ।बाढ़ेलवाढ़िकिवीकटकचांदनामचाढ़ैसवल । द्वारकादेखिपालंटतीअचढ़िसीवैकीधीअटल ॥

विषय वैराग्य कवित्त ॥ हांसी में विषाद बसे विद्यामें विवाद बसे भोगमाहिं रोग पुनि सेवामाहिं दीनता। आदर में मानवसे शुचि में गिलान बसे आवन में जान बसै रूप माहिं दीनता। योग में अभोग औ सँयोग में वियोग बसै पुण्य माहिं बंधन औ लोभ में अधीनता । निपट नवीन ये प्रबनिनि सुबीनलीन हरिजूसों प्रीति सबहीसों उदासीनता ॥ ६ ॥ सांवखाचि तो राजाने बाहर क्यों न देखे बाहरकी भावना नहीं प्रतिज्ञा देशकी भक्तनि को उपेक्षा नहीं है ॥ २ ॥

टीका ॥ क्वावापतिसीवांसुतसांगनकोप्यारोहरिद्वारावतिईशयों पुकारैरक्षाकीजिये । सदाभगवानआयभक्तप्रतिपालकरैंकरौप्रतिपालमेरोसुनिलतिभीजिये । तुरकअजीजनामधामकोलगाईआगि लईवागघोरकीआयेंद्रककीजिये । दुष्टसवमारेप्रभुकष्टतेउबारेनिजप्राणवारिडारेयहनयोरसपीजिये ॥ ५३३ ॥

करौ प्रतिपाल मेरो ॥ दोहा ॥ करैकरावैआपही, नाम न अपनो लेहि । साईहाथ बढ़ाइयो, जिहिभावै तिहि देहि ॥ ३ ॥ भक्त भूप बड़े बड़े राजा सबदिशानको जीतैं पै इंद्रिय न जीतिजाहिं ॥

मूल ॥ पृथ्वीराज नृपकुलवधूभक्तभूपरतनावती । कथाकीर्तन प्रीतिभीरभक्तनिकोभावै । महामहोछौमुदितनित्यनँदलाललड़ाव ।

मुकुंदचरणचितवन भक्तमहिमाधुजधारी । पतिपरलोमनकियोटे कअपनीनहिंटारी । भक्तपनसबैविशेषहीआवैरसदनसुनखाजिती । पृथ्वीराजनृपकुलबधूभक्तभूपरतनावती ॥ १४२ ॥ टीका रतनावतीजीकी ॥ मानसिंहराजाताकोछोटोभाईमाधोसिंहताकीजानोंतियाताकीबातलैबखानिये । ढिगजोखवासिनिसोश्वासनिभरत नाम रटति जटित प्रेमरानीउरआनिये । नवलकिशोरकभूंनंदकोकिशोरकभूंवृन्दावनचंदकहिआंखैंभरिपानिये । सुनतविकलभईसुनिबेकीचाहभईरीतियहनईकछूप्रीतिपहिंचानिये ॥ ५३४ ॥

भक्ति न होइ इन अवलाने इंद्रियजीति कै भक्तिकरी याते भक्तिभूपकह्यो ॥ १ ॥ कथा कीर्तन मांझ ॥ आहपावैं न निवाह कसीदा असीतिसी राहल्लां इश्क दिला देना लेना लेमहिं बूंदीगल्लां । साह जुलफछल्लों तिसछल्ले असीतिसी महल्ला तरसल्ला । वल्लभ रसिकरुमाललालपर झूमहमें सांझल्लां ॥ १ ॥ चाहभई ॥ कवित्त ॥ जादिनते श्रवण परयो है कान्ह तादिनते लग्योई रहत रसना में आठोयाम है । चोवाचीर पानीपान चंदन चमेली हार मांगतही मुख निकसत घनश्यामहै । शोचिकै सकोचनिरुमोचन सकल दुख सुखको दिनेश जियको सो निजधाम है । प्रीतिरीति तंत्रजग जीतिबेको यंत्र मनमोहनी को मंत्र मनमोहन को नाम है ॥ २ ॥ जाको जासों मनलग्यो, सोई जाको राम । रोमरोम में रसरह्यो, नहीं आन सों काम ॥ सुनिबेकी ॥

बारबारकहैकहाकहैउरगहैमेरो बहैदृगनीरहोशरीरसुधिगई है । पूछोमतिबातसुखकरौदिनरातियह सहैनिजगातरागीसाधुकृपाभईहै अतिउतकंठादेखिकहैसोविशेषसबरसिकनरेशनकीवाणीकहिदई है । टहलछुटाईओसिरानैलैबैठाईवाहिगुरुबुधि आई यहजानों रीतिनई है ।

बारबार ॥कवित्त॥ कबहुँ कबहुँ अंग अंगराइ डारत है अलिनपै रावै क्यौंहू कलन परति है । उत्तर सहेली लाई तिनके सँदेश सुनि करत प्रसिद्ध कवि ऐसेही अरति है । कैसे कैसे गई कहु कैसी कैसी बातैं भइ

कहां हैं ललन सुनि धीरनधरति है । एक बेर पूंछि फेरि पूँछि फेरि फेरि पूँछि बेर बेर वेई बातैं पूछिबो करति है ॥ १ ॥ पूछौ मति । हेरत वारहि बार उतै अजू बावरी बाल कहाधौं करैगी। जो कबहूं रसखानि लखै फिरि क्योंहु न बीररी धीर धरैगी। मानिहै काहूकी कानि नहीं जब रूप ठगी हरि रंग ढरैगी। याते कहूं शिख मानि भटू यह हेरनि तेरेई पैंड़े परैगी ॥२॥ दोहा॥ प्रीति कि रीति अनीतिहै, प्रीति करौ जिनि काइ। सुख दीपक कैसबरै, विरह नागजहँ होइ ॥ ३ ॥ विद्या आदर लक्ष्मी, और ज्ञान गुणगर्व । प्रेमपौरि पगधरतही, गये ततक्षणसर्व ॥ ४ ॥ नेह नेह सब कोउ कहै, नेहकरो मतिकोइ। मिलेदुखी बिछुरेदुखी, नेहीसुखी न होइ ॥ ५ ॥ नेहस्वर्गते ऊतरचो, भूपर कीनोंगौन । गली गली ढूंढत फिरैं विन शिर को धरकौन ॥ ६ ॥ जरेजरे सो जरिबुझे, बुझर जरेहू नाहिं । अहमद दाझेप्रेम के, बुझि बुझि कै सुलगाहिं ॥ ७ ॥प्रेम कठिस संसार में, नाकीजे जगदीश। जो कीजे तौ दीजिये, तन मन धन अरु शीश ॥ ८ ॥

निशिबिनसुन्योकरैदेखिवेकोअरबरै देखैकेसेजातजलजातदृगभरेहैं। कछुकउपाइकीजैमोहनदिखाइदीजैतबहींतौजीजैवेतौआनिउरअरेहैं। दरशनदुरिराज छोड़ैलोटैधूरिपैनपावैछविपूरिएकप्रेमवशकरेहैं । करौहरिसेवाभरिभावधरिमेवापकवानरसखानदैवखानमनधरेहैं॥ ५३६ ॥ इंद्रनीलमणिरूपप्रगटस्वरूप कियोलियोवहेभावयोंसुभावमिलिचलीहै । नानाविधिरागभोगलाड़कोप्रयोगयामेंयामिनीसुपनयोगभईरंगरलीहै । करतशृंगारछबिसागरनपारावाररहतनिहारियाहीमाधुरीसोपलीहै । कोटिकउपाइकरियोगयज्ञपारपरै एपैनहींपावैयहदूरिप्रेमगलीहै ॥ ५३७ ॥

सुपन ॥ दोहा ॥ सोयेढिग बातेंकरैं, जगे उठत गहै बाट ॥ कित है आवत जातकित, पौरीलगे कपाट ॥ १ ॥ नख शिख रूपभरे खरे, तऊ चहत मुसुकानि । लोचन लोभी रूपके, तजे नलोभीवानि ॥ २ ॥

देख्योईचहततऊकहतउपाइकहा अहाचाहबातकहौकौनकोसु नाइये। कहीजूबनावोढिगमहलकेठौरएकचौकोलैबैठावोचहुँओरस मुझाइये। आवैहरिप्यारेतिन्हैंआवैवोलिवाइइहांरहेतेधुवाइपाइरुचिउ पजाइये। नानाविधिपाकसामाआगेआनिधरेआप डारिचिकदेख्यो श्यामदृगनलखाइये॥ ५३८॥

चाहबात ॥ चौपाई ॥ कुँवरि कहै सखिको विसवर है । जहँ वह सांवर प्रीतमरहै ॥ सो दिश हाथसों सखिनि बताई । सो दिश जीवनमूर सिमाई । कमल पत्रल पक्ष बनावै ॥ उड़्योचहै सो क्यों उड़िआवै ॥ ममसों कहै कुटिल तू आइ । इकिलोई उठि पिय पै जाइ ॥ नेक तौ नैन निहूं संग लैरे। मोहन मुखको देखन दैरे ॥ ३ ॥

आवैंहरिप्यारेसाधुसेवाकरिटारे दिनाकिहूंपावँधारेजिन्हैंब्रजभूमि प्यारिये। युगलकिशोरगावैंनैननिबहावैंनीरह्वैगईअधीररूपदृगनिनि हारिये । पूँछीवाखवासिनिसोंरानीकौनअंगजाकेइतनीअटकसंगभं गसुखभारिये । चलीउठिहाथभयोरह्योनहींजातअहो सहोदुखलाज बड़ीतनकनविचारिये ॥ ५३९ ॥

आवैं ॥ पद ॥ चलिमन ढूंढन जैये सतगुरुके छोना । शिरके साटैं पाइये ये राम खिलौना ॥ प्रेमजँजीर जराय के गहि राखो भाई । इन सं- तनि के मोहते मिलि हैं रघुराई । कृष्ण कृष्ण तिन पढ़त हैं शुचिते चित लागे। पाईं टिके नहिं पाप के दुख सबही भागे । कहि मलूक सबछांडि कै गहि लै यह हाला । जोइ जोइ मराति संतकी सोइ देखि गुपाला ॥ १ ॥ युगल ॥ कवित्त ॥ वृन्दावन वास आश बढ़त हुलास रास विविध विलास सदा सुख हरिदास के । भाल पै तिलक श्याम बंदनी औ कंठमाल तुलसी रचत गुंज छापे दै प्रकाश के । युगल किशोर हिये मुखमें झकोर नाम नीर वोर झूमि कै सु सूचक विलास के । सदा सतसंग विनय अंग अंग पगे पुनि जगे जग माहिं नीके लागे आस पास के ॥

देख्योमैंविचारिहरिरूपरससारताकोकीजियेअहारलाजकानि

नोकेटारिये ॥ रोकतउतरिआईजहांसंतसुखदाईआनिलपटाईपाइँ विनतीलैधारिये । संतनजिमाइवेकी निजकरअभिलाषलाखलाख भांतिनसोंकैसैकैउचारिये । आज्ञाजोईदीजैसोईकीजैसुखवाहीमेंजु-प्रीतिअवगाहीकरोलागोअतिप्यारिये ॥ ५४० ॥ प्रेममेंननेमहेमथा रलैउमँगिचलीचलीहगधारसोपरोसिकैजिवायेहैं । भीजिगयोसाधुने हसागरअगाधदेखि नयननिमेषतजीभयेमनभायेहैं । चंदनलगा इआनिबोरीहूखवाइश्यामचरचाचलाइचषरूपसरसायेहैं । धूमपरी गावँझूमिआयेसबदेखिवेको देखिनृपपासलिखिमानसपठायेहैं ॥ ॥ ५४१ ॥ ह्वैकीरनिशंकरानीवंकगतिलईनई दईतजिलाजबैठीमो ड़नकीभीरमें । लिख्योलैदिवाननरआयेलैबखानकियो बांचिसुनि आंचलागीनृपकेशरीरमें । प्रेमसिंहासुतताहीकालसोरसालआ यो भालपैतिलकभालकंठीकंठतीरमें। भूपकोसलामकियोनरनजता इदियो बोल्योआवमोडीकेरेपरयोमनपीरमें ॥ ५४२ ॥

टारिये ॥ मेरी कुल पूजि तूही मानी ठकुरानी करि तूही नित आं खिनि में हिये में धरतिहौं । तेरेई संतोष देत दक्षिणा रसीले गुन मन मानि आलिनि की सीख निदरत हौं । आनि बन्यो योग अब मेरे बड़ भागि-नितैं ताहीते अधीनता लै दीनता करतिहौं । देखन दे नेक प्राण पीतम मुखारविंद हाय लाज आजु तेरे पाइँनि परतिहौं ॥ ३ ॥ प्रेम सिंह ॥ कवित्त ॥ सदा साधु सेवा रंग तिनही प्रसन्न सुनि भीजि जाइ हियो जान्यो प्रीतिको स्वरूप है। प्रेमसिंह नाम ताको अर्थ अभिराम सुनो सिंह सम भक्ति बल हिये श्याम रूप है । दोऊ मिलि नाम मानो जानो नृसिंहवत रति की बड़ाई याते भयो भक्त भूपहै । हरदेव इष्ट मिष्ट लागी संत सेवा याको सिष्टि गुण वैस लघु कीरति अनूप है ॥ १ ॥ प्रेम मैन मोर मुकुट पै प्रियादास गोविंद संग रहैं बरसाने ते वाइ एक मोहन भोग प्रभात करि लै गई पाटौ दांतन नहीं करी यह क्यों न खावो लकड़ी भली ॥ २ ॥

कोपभीरराजागयोभीतरतेशोचनयो पाछेपूंछिलियोकह्योनरनि बखानिकै । तबतोविचारीअहोमोड़ीहैहमारीजातिभयोसुखगातभ क्तिभावउरआनिकै । लिख्योपत्रमाजीकोतुप्रीतिहियेसाजीजोपै शी शपरबाजीआइराखोतजिप्रानकै । सभामध्यभूपकहीमोडोकोविरू पभयोरह्योअबमोडीकेहिभूलोमतिजानिकै ॥ ५४३ ॥ लिख्योदैप ठायोवेगिमानसलैआयेजहां रानीभक्तिसानीहाथदईपातीबाँचिये । आयोचढ़िरंगबांचिसुतकोप्रसंगबार भीजेजेफुलेलदूरिकियेप्रेमसांचिये । आगेसेवापाकनिशिमहलबसतजाइलाईवाहीठौरप्रभुनीके गाइनांचिये । अन्ननृपत्यागिदियोलिखिपत्रपुत्रदियो भाईमोडीआ जुतुमहितकरियांचिये ॥ ५४४ ॥

तजिप्राणको ॥ दोहा ॥ धनदै नीके राखितन, तनदैराखा लाज । लाज प्राण तजि दीजिये, एक प्रेम के काज ॥ नेह करैंते बावरे, करि तूरैं ते कूर । धुर निरबाहैं जे कोऊ, तेई प्रेमी शूर ॥ २ ॥ प्रेम कि चौपरि मढी है, तामें बाजी शीश । कायर ताको जे गहैं, तौ पावैं वह खीश ॥ ॥ ३ ॥ दूरि किये ॥ जबलगि शिर पर शिर हुतो, तब लगि फूलन हार नाहिं सँभारो जात है, शिर उतरे को भार ॥ ४ ॥ अन्न नृप त्यागि दियो ॥ पाद्मे ॥ प्रार्थयेद्वैष्णवस्यान्नंप्रयत्नेन विचक्षणः । सर्व पापविशुद्ध्यर्थंतदभावेजलंपिबेत् ॥ ५ ॥ मार्कंडेये ॥ आवैष्णवेगृहे भुक्त्वा पीत्वावाज्ञानतोयदि ॥ शुद्धिश्चांद्रायणे प्रोक्ताऋषिभिस्तत्त्वदर्शिभिः ॥ ॥ ६ ॥ शुद्धंभागवतस्यान्नं शुद्धंभागीरथीजलम् । शुद्धंविष्णुपरिक्षिप्तं शुद्धमेकादशीव्रतम् ॥ ७ ॥

गयेनरपत्रदियोशीशसोंलगाइलियो बांचिकैमगनहियेरीझबहु दईहै । नौबतिबजाईद्वारबांटतबधाईकाहूनृपतिसुनाई कहीकहारी तिनईहै । पूछैंभूपलोककह्योमिटेसबशोकभयेमोड़ीके जुयोगस्वांग कियोबनगईहै । भूपतिसुनतबातअतिदुखभयोगातलयोवैरभावच

ढ्यो त्यारीइमभईहै ॥५४५॥ नृपसमुझाइराख्योदेशमेंचवावहै है बुधिवंतजनआइसुतसों जनाई है ॥ बोल्योविषैलागिकोटिकोटितनु खोये एकभक्तिपरकामआवैयहैमनआईहै । पाइँपरिमांगिलई दई जूप्रसन्नतुमराजानिशिचल्योजाइकरोजियभाईहै । आयोनिजपुरढि गधारिनरसिलेआनि कह्योसोबखानिसबचिंताउपजाईहै ॥ ५४६ ॥ भवनप्रवेशकियोमंत्रीजोबुलाइलियो दियोकहिकटीनाकलोहूनिरखा रिये । मारिबोकलंकहूनआवोयोंसुनाईभूपकाहूबुधवंतनविचारिलै उचारिये। नाहरजूपींजरामेंदीजै छोंडिलीजैमारिपाछेतेपकरिवहबात दाविडारिये । सबनिसुहाईजाइकरीमनभाई आयोदेखोवाखवासि कहींसिंहजनिहारिये ॥ ५४७ ॥ करैहरिसेवाभरिरंगअनुराग दृग मुनीयहबातनेकनयनउतटारेहैं । भावहीसोंजानैउठिअतिसनमानै अहोभजूमेरेभागश्रीनृसिंहजूपधारेहैं । भावनासचाईवहीशोभालैदि खाईफूलमालपहराईरचटीकोलागेप्यारेहैं । भौनतेनिकसिधायेमानो खम्भफारिआयेबिमुखसमूहततकालमारिडारेहैं ॥ ५४८ ॥

नृसिंह जू पधारे हैं ॥ तब पूछहू लाई क्योंकि सूक्ष्म अलंकार ॥१॥ श्लोक ॥ कांतमायां तमालोक्य गता गुरुजनांतिकम् । करे कलितमंभोजं संकोचयति सुंदरी ॥ २ ॥ कवित्त ॥ बाँसुरी के बीच एक भौंर डारि लाई सखी मूँद्यो बहु यत्न वलय बुधि बल भारी सों। भनत पुराण यामें आपही सों ध्वनि होति कान दैकै सुनो कह्यो धरि सुकुमारी सों। रीझि रिझिवार अति मनमें मगन भई आप तनचाह मुख ढांक्यो श्याम सारी सों। अंचलमें गांठिदै बिहँसि उठि चली सखी प्यारी हँसि कह्यो आजु बसिये हमारी सों ॥ ३ ॥

भूपकोखबरिभईरानीजूकीसुधिलई सुनीनीकीभांतिआपनम्रह्वै केआयेहैं । भूमिपरिसाष्टांगकरिकैऊहरीमतिभईद्याआइवाके वचनसुनायेहैं । करतप्रणामराजाबोलीआजुलालजूको नेकफिरिदे खोएकठोरयेलगायेहैं । बोल्योनृपराजधनसबहीतिहारोधारोपातिपैन

लोभकहीकरौसुखभायेहैं ॥ ५४९ ॥ राजामानसिंहमाधवसिंहउभै भाईचढेनावपरकहूंतहांबूड़िबेकोभई है । बोल्योबड़ोभ्राताअबकी जियेयतनकौन भौनतियाभक्तकहीछोटेसुधिदईहै । नेकुध्यानकियोतबैआनिकैकिनारोलियो हियोहुलसायोजेठचाहनईलईहै । कह्योआनिदरशनविनयकरिगयोराजाअतिहीअनूपकथाहियेंव्यापिगई है ॥ ५५० ॥ मूल ॥ पारीषप्रसिद्धकुलकांश्रड्याजगन्नाथसीवाधरम । श्रीरामानुजकीरीतिप्रीतिपनहिरदाहिधारयो । संस्कारसमतत्त्वहंसज्योंबुद्धिविचारयो । सदाचारमुनिवृत्तिइंदिरापाधितउजागर । रामदाससुतसंतअनन्यदशधाकोआगर ॥ पुरुषोत्तमपरसादते उभैअंगपहरयोबरम । पारीषप्रसिद्ध कुल० ॥ १४३ ॥

मुनि वृत्ति ॥ राजधानी न लेहिं भारते ॥ एक ब्राह्मण सिलौकरैहौ तासां अज्ञानी ने कही हमारे राजा पै जाउ तौ बहुत द्रव्य मिलै तब रोइ उठयो कृष्ण सों कही तेऊ रोइ उठे युधिष्ठिर सों कही तेऊ रोइ उठे कृष्णसों पूछी याको हेतु कहा तब कही ब्राह्मण याते रोयो ऐसी निषिद्ध धान्य बतायो कलियुग में मांगेहू नमिलैगो उभै अंग कवच पहिरयो प्रगट अंगमें तौ लोहको राजा के प्रोहित याते यह हीरेके अंगमें ज्ञानको वचनबाण काहू को न लगै ॥ १ ॥

मूल ॥ करितनकरतकरस्वपनेहूमथुरादासनमंडियो । सदाचारसंतोषसुहृदसुठशीलसुभासै । हस्तकदीपकउदयमेटितमवस्तुप्रकासै । हरिकोहियविश्वासनंदनंदनबलभारी । कृष्णकलससोंनेमजगतजानैशिरधारी । श्रीवर्द्धमानगुरुवचनरतिसोसंग्रहनहिंछांडियो । कीरतनकरतंकरसुपनेहूमथुरादासनमांडियो ॥ १४४ ॥ टीका ॥ वासकौतिजारैमांझभक्तिरसराशिकरी करीएकबाततोकोप्रकटदिखाईहै । आमोभेषधारीकोऊकरैशालिग्रामसेवाडोलैसिंहासनपैआनिभीरछाईहै । स्वामीकेजुशिष्यभयेतिनहूंकोभावदेखिवाहीकोप्रभावकह्योआपहीयेभाईहै । नेकुआपचलौवहरीतिकोविलोकियेजू बड़े

सर्वज्ञकहो दूषैनहिंजाई है॥ ५५१ ॥ पाइँपरिगयोलैकेजाइढिगठाढ़े भये चाहतफिरायोपैनफिरैशोचपरयोहै । जानिगयेआपकछूयाहो कोप्रतापओपैमारोकरिजाययोंविचारमनधरयोहै । मूठिलैचलाइभक्तितेजआगेपाईनाहिं वाईलपटाइभयोऐसोमानोमरयोहै। ह्वैकरिदयालजाजिवायोसमझायोप्रीतिपंथदरशायोहियभयोशिष्यकरयोहै॥

सुपनेहूं ॥ सुपने में कौन मांगै है प्रकटही मांगै है दृष्टांत कलावत को अरु ब्राह्मण को विश्वास मुगल अरु बनिये को दृष्टांत ॥ १ ॥ ह्वै करि दयाल॥ चौ० ॥हरिजन हंस दिशनि यों डोलै।मुक्ता फल बिन चोंच न खोलै। मौन गहै कै हरि यश बोलै । असद अलाप न कबहूं लोलै । मानसरोवर तटके बासी । हरि सेवा रति और उदासी ॥ नीर क्षीरको करै निवेरा। कहै कबीर सोई गुरु मेरा ॥ २ ॥ वाहि यह उपदेश करयो चौरेहीमें ठाकुर को बैठावनो ऐसी क्रिया न कीजे ॥ ३ ॥

मूल ॥ नृतकनरायणदासकोप्रेमपुंजआगेबढो । पदलीनोप्रसिद्ध प्रीतिजामेंदृढ़नातो । अक्षरतनमयभयोमदनमोहनरँगरातो। नाचतसबकोउआइकाहिपैवहबनिआवै । चित्रलिखतसोरह्योत्रिभंगीदेशीजुदिखावै। हंड़ियासराइदेखतदुनीहरिपुरपदवीकोचढ़ो । नृतकनरायणदासकोप्रेमपुंजआगेबढ़ो ॥ १४५ ॥ टीका ॥ हरिहीकेआगेनृत्यकरैहियेधरैयहीठौरदेशदेशनमेंजहांभक्तभीरहै । हंड़ियासराइमध्यजाइकैनिवासलियो लियोसुनिनामसोमलेच्छजानिमीरहै । बोलिकैपठायेमहाजनहरिजनसबैआयोहैसदनगुनालावोचाहपीरहै। आनिकैसुनाईभईअतिकठिनाईअबकीजैजोईभावैवहनिपट अधीरहै ॥ ५३३ ॥

दृढ़ नातो पद ॥ सांचो एक प्रीति को नातो। कै जाने राधिका नागरी कै मदन मोहन रँग रातो । यह शृंखला अधिक बलवंती जिन बांध्यो मन गजमातो।मीराप्रभु गिरिधर सँग हिलि मिलि सदा निकुंज बसातो ॥ १ ॥ दोहा ॥ हितचित चाहन चतुरई, बोल न आवत गात। राधा

मोहन प्रेमकी, कहत बनै नहिं बात ॥ २ ॥ आइ कलाइक जगत हित, जानि सुदेश विदेश । परउपकारी साधु ये, नहिं अधरम को लेश ॥ ३ ॥ त्रिभंग देशी । सूधी जो कुछ उर गडै, सो निकसे दुख होइ । कुँवर त्रिभंगी जहँ गडै, सो दुख जानै सोइ ॥ ४ ॥ पण्डित कविता ढाढ़िया, कहिबे-हीलौं दौर । कहि कान्हा जूझै नहीं, जूझनवारे और ॥ ५ ॥ हँडिया सराइ प्रागते छह कोश ॥ ६ ॥ हरिहीकेआगे ॥ दोहा ॥ मनमजूस गुण रतन हैं, चुप कढि दै हट तार । पारखि आगे खोलिये, कूंची वचन रसाल ॥ ७ ॥ तापै दृष्टांत अकबर शाहको तानसेनको हरिही के आगे गावै ॥ ८ ॥

विनाप्रभुआगेनृत्यकरियेननेमयहैसेवावाकेआगेकहौकैसेविस्तारिये । कियोयोविचारऊंचेसिंहासनमालाधारितुलसीनिहारिहरि गानकरयोभारियै । एकओरबैठोमीरनिरखैननयनकोरमगनाकिशोर रूपसुधिलैबिसारिये । चाहैंकछुवारयोपरेऔचकहीप्राणहाथ रीझि सनमानकियोमीचलागीप्यारियै । ॥ ५५४ ॥ मूल ॥ गुणगणविशद गोपालकेयेतेजनभयेभूरिदा । वोहितरामगोपालकुँवरगोविंदमांडिल। क्षीतस्वामिजसवंतगदाधरअनंतानंदभल । हरिनाभमिश्रदीनदास बछपालकन्हरयशगायन । गोसूरामदासनारदश्यामपुनिहरिनाराय न । कृष्णजीवनभगवानजनश्यामदासबिहारीअमृतदा । गुणगण विशदगोपालकेयेतेजनभयेभूरिदा ॥ १४६ ॥ निर्वर्त्तभयेसंसार तेतेमेरेजिजमानसब । उद्धवरामरेणुपरशुरामगंगाध्रुवेतानिवासी । अच्युतकुलकृष्णदासविश्रामशेषसाहीकेवासी । किंकरकुंडाकृष्ण दासखेमसोंठागोपानंद । जयदेवराघवविदुरदयालदामोदरमोहनप रमानंद । उद्धवरघुनाथीचतुरोनगनकुंजओकजेवसतअब । निर्वर्त्त भयेसंसारतेतेमेरेजिजमानसब ॥ १४७ ॥

भूरिदा ॥ दशमे ॥ तवकथामृतंतप्तजीवनंकविभिरीडितं कल्मषापहम् । श्रवणमंगलं श्रीमदाततं भुवि गृणंतिते भूरिदाजनाः ॥ १ ॥ संत

जन बड़े दाता भक्ति संपत्तिके देनहारे जन तो सामान्य मनुष्यनको कहे हैं सो नहीं ॥ श्लोक ॥ सालोक्यसार्ष्टिसामीप्यसारूप्यैकत्वमप्युत ॥ दीयमानंनगृह्णंतिविनामत्सेवनंजनाः ॥ २ ॥ जे ऐसे जनतौ नहीं चुटकी टूक मांगत डोलैं ॥ दोहा ॥ राम अमल माते फिरैं, पीवैं प्रेम निशंक । आठ गांठि कोपीन में, कहैं इंद्र सों रंक ॥ ३ ॥

टीका ॥ झीथडैटिगहीमेंजैतारनविदुरभयोभयोहरिभक्तसाधुसेवामतिपागी है । बरषानभईसबखेतीसूखिगईचितानईप्रभुआज्ञादई बड़ोबड़भागीहै । खेतकोकटावोऔगहावोलैउड़ावोपावोदोहजार मनअन्नसुनी प्रीतिजागीहै । करीवहरीतिलोगदेखैनप्रतीतिहोति गायेहरिमीतराशिलागीअनुरागीहै ॥५५५॥ मूल ॥ श्रीस्वामीचतुरो नगनमगनरैनिदिनभजनहित।सदायुक्तअनुरक्तभक्तिमंडलकोपोषत पुरमथुराब्रजभूमिरमतसबहीकोतोषत । परमधरमदृढ़करनदेवश्री गुरुआराध्यो । मधुरबैनसुनिठौरठौरहरिजनसुखसाध्यो । संतमहंत अनंतजनयशविस्तारेजासुनित । श्रीस्वामीचतुरोनगनमगरैनिदिनभजनहित ॥ १४८ ॥ आवैंगुरुग्रेहयोंसनेहसोंलैसेवाकरैधरैहिये सांच भावअतिमतिभीजिये । टहललगाइदईनईरूपवतीतियदियो वासोंकहीस्वामीकहैंसोईकीजिये । सेवाकेरिझायेयतेप्रेमउरनितनयो दयोघरघरबधूकृपाकरिलीजिये । धामपधराइसुखपाइकैप्रणामकरि धरींब्रजभूमिउरबसेरसपीजिये ॥ ५५६ ॥

खेती सूखिगई ॥ वेषहरचो भयो बहुत चढिगयो बगवान् वेष बढायो चाहै तौ अकालपरै सो परचो तब विचारी कहूं उठि जाइये॥ १॥ मगन रैनि दिन सतोगुण वृत्तिते रजोगुण तमकी निर्वर्त भक्त मंडल को पोषत द्वारपै रमत ॥ सवैया ॥ डोलत हैं इकतीरथ एकनि बार हजार पुराण बकेहैं । एकलगे जपमें तप में यक सिद्धि समाधिनमें अटके हैं । बूझि जो देखतहौ रसखानि जू मूढमहा सिगरे भटकेहैं । सांचें हैं वे जिन

आपन ज्यों इहि सांवरे ग्वालपै वारिछकेहैं ॥ २ ॥ टहल लगाई लाहौर में कान्हा फकीर तुलसी खत्रानी सेवाकरै ॥ ३ ॥

श्रीगुविंदचंदजूकोभोरहीदरशकारि केशवशृङ्गारराजभोगनंदग्राममें । गोवर्द्धनराजाकुंडह्वैकेआवैवृन्दावन मनमेंहुलासनितकरैचारियाममें । रहैंगुनिपावनपैभूखदिनतीनिबीतेआयेदूधलैप्रवीणयेऊरँगेश्याममें । मांग्योनेकुपानीलावौफेरिवहप्रानीकिहां दुखमातिसानीनिशिकह्योकियोकाममें ॥ ५९७ ॥

मांग्यो नेकुपानी ॥ दोहा ॥ सबसों बुरो जु मांगिबो, मांगन निकसै जीव ॥ पानिपचाहैं आपनी, तो मांगि न पानीपीव ॥ १ ॥ मांगन जावै जाइये, जाके मुखमें लाज ॥ आगेते जु प्रसन्नह्वै, पूजै मनके काज २ ॥ आवत देखे साधके, पुलकि उठै सब अंग ॥ तुलसी जाके जाइये, कीजै तासों संग ॥ ३ ॥

पानीसोंनकाजब्रजभूमिमेंविराजदूधपियोघरघरआज्ञाप्रभुजूनेदईहै ॥ येतौब्रजबासीसदाक्षीरकेउपासीकैसेमोकोलैनदैहैकहीदैहैसुनीनईहै। डोलैधामश्यामकह्योजोईमानिलियोदियोलैपरचौहूप्रतीतितबभईहै । जहांजाछिपावैपात्रवेगिढूंढिआपलावै अतिसुखपावैकीनीलीलारसमईहै ॥ ५९८ ॥ मूल ॥ मधुकरीमांगिसेवैभगततिनपरहौंबलिहारकियो । गोमापरमानंदप्रधानद्वारकामथुराखोरा। कालुषसांगानेरभलोभगवानकोजोरा । बीटलटोडेषेमपंडागूनौरेगाजै । श्यामसेनकेवंशवीधरपीपारबिराजै । जैतारनगोपालकोकेवलकूवैमोललियो । मधुकरीमांगिसेवैभगततिनपरहौंबलिहारकियो ॥ १९१ ॥

क्षीरके उपासी ॥ माता यशोदाने तुमको डारि दूध उफनातो राख्यो ॥ सवैया ॥ जप यज्ञ सुदान सुमौन करैं बहुकूपरु वापी तड़ाग बनावैं । करैं ब्रत नेम सुइंद्रिय निग्रह उग्रह योग समाधि लगावैं ॥ कहै रसखानिहृदय जिनके कबहूं नहिं सों सुपने में न आवें । ताहि

अहीरकी छोहरिया छछिया भरि छांछि को नाच नचावैं ॥ ५ ॥ लक्ष्मी सी जहां मालिनि डोलै बंदनवारे बांधति पूजा पै दृष्टांत रुक्मिणी जी के बेटा को ॥ ६ ॥

टीका ॥ कहतकुम्हारजगकुलनिस्तारकियो केवलसुनामसाधु सेवाअभिरामहै । आवैंबहुसंतप्रीतिकरीलैअनंतजाकोअंतकोनपा वैऐपैसीधोनहींधामहै । बड़ीपैगरजचलेकरजनिकासिबेको बनियान देतकुँवाखोदोकीजोकामहै । कियोबोलिकहीतोलिलियोनीकेरोलि करिहितसोंजिमायेजिन्हैंप्यारोएकश्यामहै ॥ ५५९ ॥ गयेकुवाँखो दिबेकोसूवाज्योंउचारैनाम हुवाकामवानैजानीभयोसुखभारीहै । आईरेतभूमिझूमिमाटीदबिरहेवामें केतकहजारमनहोतकैसेन्या रीहै । शोककरिआयेधामरामनामध्वनिकाहूकानपरीबीत्योमासक हीबातप्यारीहै । चलेवाहीठौरसुरसुनिप्रीतिभौरपरे रीतिकछुऔरसु धिबुधिअतिटारीहै ॥ ५६० ॥

करज ॥एकादशे॥ मद्भक्तपूजाभ्यधिका वैष्णवोबंधुसत्कथा ॥ १ ॥ सम्बंधी को उधारचो लाइकै सब कोई सत्कार करैहै यह धर्म साधु सेवा धर्म ॥ २ ॥ आदिपुराणे ॥ येयेभक्तजनाः पार्थ ॥ ३ ॥ न्यारी-है ॥ कूवाजो माटीमें रहैं जैसे तिवारो महारावमैंपै एकहाथ ऊंचोजल प्रसाद पहुँचै माटी क्यों न दूरिकरी सिधाई लगै यातें तो महाराव क्योंन ऊंचीराखी । कूवां देखि कै यहबात यादिरहै जैसे सिद्ध को गुफामें बैठारै सिद्धाईको रंगद्वार खान पान पहुँचे ऐसे हरिने करी ॥ ४ ॥

माटीदूरिकरीसबपहुँचेनिकटतब बोलिकैसुनायोहरैबानीलागीप्या रियै।दरशनभयोजाइपाइँलपटाइरहे महरावऐसीहैकैकूवहूंनिहारियै। धरचोजलपात्रएकदेखिबड़ेपात्रजानेआनिनिजगेहपूजालागीअतिमा रियै । भईभीरद्वारनरउमडिअपारआये महिमाअपारबहुसंपतिलैवा रियै॥५६१॥ सुंदरस्वरूपश्यामलायेपधराइबेकोसाधुनिजधामआइ

कुवांजुकेबसेहैं । रूपकोनिहारिमनमेंविचारकियोआपकरैकूपामोंपै प्रभुअचलह्वैबसेहैं । करतउपाइसंतटरतननेकुकहूंकहीजूअनंतहरिरी झस्वामीऐसे हैं । धन्योजानराइनामजानिलईहियेबात अंगमेंनमा तसदासेवासुखरसेहैं ॥ ५६२ ॥ चलेद्वारावतिछापलावैयहमतिभ ईआज्ञाप्रभुदईफिरिघरहीकोआये हैं । करौंसाधुसेवाधरौभावहियेदृढ मांझटारौजिनिकहूंकीजैजेजेमनभाये हैं । गेहहीमेंशंखचक्रआदि निजदेहभये नयेनयेकौतुकप्रगटजगगायेहैं । गोमतीसोंसागरकोसंगम होरह्योसुन्योसुमिरनीपठाइके योदोऊलैमिलायेहैं ॥ ५६३ ॥ भये शिष्यशाषाअभिलाषासाधुसेवाहीकी महिमाअगाधजगप्रगटदेखाई है । आयेघरसंततियाकरतिरसोईकोई आयोवाकोभाईताकोखी रलैबनाई है । कुवाजूनिहारिजानीवाकोहितसादरसोंकीजियेवि चारएकसुमतिउपाईहै । कहीभरिलावोजलगइडरकलपैनलईतसमई सबभक्तनिजिमाईहै ॥ ५६४ ॥

कूवहूं निहारिये ॥ महीनाभरि भूमि में दबेरहे सो कूवाभयो रघुपति ने रक्षाकियो सो प्रसंग गोमती सों सागर को संगम रह्यो सुमरनीदै पठाई ॥ संगम भयो सो प्रसंग ॥ १ ॥ भयेशिष्य शाखाद्वै प्रकारके फरसाफूकी कानफूंका । २ । ३ । ४ । ५ ॥

वेगिजललाईदेखिआगिसीबराईहिये झांकिमुखभईदुखसागरबुड़ा ईहै । विमुखविचारितियाकूवाजूनिकारिदईगईपतिकियोऔरऐसी मनआईहै । परयोईअकालबेटाबेटीसोनपालिसके तकैकोअठौरमति अतिअकुलाईहै । लियेसंगकरयोजोईपुत्रपतिभूखभोई आइपरी झोंथडामेस्वामीकोसुनाई है ॥ ५६५ ॥

विमुख ॥ पद ॥ जिनके प्रिय न राम वैदेही ॥ सो त्यागिये कोटि वैरीलों यद्यपि परम सनेही ॥ तज्यो पिता प्रहलाद विभीषण बंधु भरत महतारी ॥ बलिगुरु ब्रजयुवतिन पतित्याग्यो जगभये मंगलकारी । नातो नेह रामसों सांचो हृदय सुशील जहांलौं । अंजनकहा आंखि जो फूटै

बहुतोकहौं कहांलौं ॥ तुलसी सोइ हितु बन्धु न प्रीतम पूजि प्राणते प्यारो ॥ जासँगबाढै नेह राम सों सोइ निज हितू हमारो ॥ १ ॥ दोहा ॥ साधोआया अनमनी, भाया आयासूरि ॥ केवल कूवायों कहैं, तू निकसि बाहरी पूरि ॥ पहिले तौ मूरख को संगहोई पाछेते सत्संग सो ज्ञान पाइकै त्यागकरे ॥ भर्तृहरिः ॥ यांचिंतयामिसततंमयिसाविरक्ता साप्यऽन्यमिच्छतिजनंसजनोन्यसक्तः ॥ अस्मत्कृतेतुपरितुष्यतिकाचिदन्या धिक्तांचतंच मदनंचइमांचमांच ॥

नानाविधिपाकहोतआवैसंतजैसेसोत सुखअधिकाईरीतिकैसेजातिगाईहै। सुनतवचनवाकेदीनदुखलीनमहानिपटप्रवीनमनमांझदया आईहै । देखिपतिमेरोऔरतेरोपातिदेखियाहिकैसेकैनिबाहिसकैपरी कठिनाईहै । रहौद्वारझारौकशैपहुँचैअहारतुम्हें महिमानिहारिहगधारलैबहाईहै ॥ ५६६ ॥ कियोप्रतिपालतियापूरीकोअकाल मासभयोजबसमौबिदाकोनीउठिगईहै । अतिपछितातिवहबातअब पावैकहां जहांसाधुसंगरंगसभारसमई है। करैंजाकोशिष्यसंतसेवाही बतावैंकरौ जोअनंतरूपगुणचाहमनभईहै । नाभाजूबखानकियोमोकोइनमोललियोदियोदरशाइअतिलीलानितनईहै ॥ ५६७ ॥

दया आई है ॥ साधवो दीनवत्सलाः ॥ ३ ॥ दोहा ॥ कबीरा ॥ साधु मिलैं तो हरिमिलैं, ॥ अंतररहीनरेष ॥ राम दुहाई सतकथा, साधूआय अलेष ॥ ४ ॥ हरिते अरु हरि जननिते, रंचक अंतरनाहिं । येइतोहिं पावनकरैं चितवतही क्षणमाहिं ॥ ५ ॥

मूल । श्रीअग्रअनुग्रहतेभये शिष्यसबैधर्मकीधुजा । जङ्गीप्रसिद्धप्रयागविनोदीपूरनबनवारी । भऌनृसिंहभगवानदिवाकरदृढ़व्रतधारी । कोमलहृदयकिशोरजगतजगनाथसुलूधो । औरौअनुगउदार खेमखीचीधर्मधीलधुऊधो ॥ त्रिविधतापमोचनसबै सौरभप्रभुजिनशिरभुजा । श्रीअग्रअनुग्रहतेभयेशिष्यसबैधर्मकीधुजा ॥ १५२ ॥ भरतखंडभूधरसुमेरटीलालाहाकापद्धतिप्रगट । अंगदपरमानंददा

सयोगीजगजागे । खरतरखेमउदारध्यानकेशवहरिजनअनुरागे स्फुटत्योलाशब्दलोहकरवंशउजागर । हरीदासकविप्रेमसबैनवधा केआगर । अच्युतकुलेसबैसदादासंतनदशधाअघट । भरतखंड भूधरसुमेरटीलालाहाकीपद्धतिप्रगट ॥ १९३ ॥ मधुपुरीमहोछौ मंगलरूपकान्हरकोसोकोकारै । चारिवरणआश्रमरंकराजाअन्न पावे । भक्तनिकोबहुमनविमुखकोऊनहिंजावै। बीरीचंदनवसनकृष्ण कीरंतनवरषै । प्रभुकेभूषणदेइ महामनअतिशयहरषै । वीठ लसुतविमलत्योफिरैदासचरणरजाशिरधरै । मधुपुरीमहोछौमंगल रूपकान्हर कोसोकोकरै ॥ १९४ ॥ भक्तनिसोंकलियुगभलै, निवाहीनिंवाखेतसी । आवहिंदासअनेकउठिबआदरहरिलीजै। चर णधोइदण्डवतसदनमेंडेरादीजै । ठौरठौरकरिकथाहृदअतिहरिजन भावे । मधुरवचनमहुलाइविविध भांतिनिजलडावै । सावधानसे वाकरैनिर्दूषणरतिचेतसो । भक्तनसोंकलियुगभलैनिवाहीनिंवाखेत सी ॥ १९५ ॥

त्रिविध ॥ तृतीये ॥ शारीरामानुषादिव्यादोषायेयेचमानुषे ॥ भौतिकाश्चकथंलेशाबाधंतेहरिसंश्रयान् ॥ १ ॥ कोऊ कहै दूरि कैसे होइँगे शरीर सों लगे हैं सत्संगतेआत्मज्ञान आत्मज्ञान ते मिटे ॥ २ ॥ अच्युतः ॥ दोहा ॥ पिंडसुपीडा परशुराम हितकारी कोउ एक और नगरकी शोभता आवैं जाहिं अनेक ॥ आवैं आहिं सुकौतुकी पूछै मनकी बात । परसाप्रीतम बाहरी कोपूछैकुशलात ॥ ३ ॥

मूल॥वसनबढ़ैकुंतीबधूत्योंत्योंवरभगवानके।यहअचरजभयोएक खांड़घृतमैदावरषै। रजतरुकमकीरेलसृष्टिसवहीमनहरषै । भोजन रासबिलासकृष्णकीरंतनकीनों । भक्तनिकोबहुमानदानसबहीको दीनों । कीरतिकीनीभीमसुतसुनिभूपमनोरथआनिकै । वसनबढ़ैकुं तीबधूत्योंत्योंवरभगवानके ॥ १९६ ॥ टीका ॥ बीततबरषमासआ वैमधुपुरीनेमप्रेमसोंमहोछोराशिहेमहीलुटाइये । संतनिजिमाइना।

पटपहराइपाछेद्विजानिबुलाइकछूपूजैपैनभाइये । आयोकोऊकालध नमालजाविहालभये चाहैपनपारचोआयेअलपकराइये । रहेविप्रदू खसुनिभयोसुखभूखबढ़ी आयोयोसमाजकरौधारीमनआइये ५६६॥

वसनबढे ॥ **कवित्त** ॥ ऐसी भीरपरे पर पीरको हरनहार गिरिको धरनहार सोई धीर धरि है । दीननिको बंधव विरद ताको सदा रह्यो दावानल पानकियो सोई पीर हरिहै । पंडुनिकी पत्नी कहत ठाढी पंच-निमें लपट्योहै चीर सोतौ कैसेकै निवरि है ।खैंचौ क्यों न आनि दुःशासन से दशक और मोरपक्ष धरि है सो मेरो पक्ष करि है ॥ १ ॥ पांडवकी रानी गहिरावर सों आनी शिरोमणि बिलखानी बिललानी पै न चेत हैं । घटत घटायें पट नघटत ऐंचेपट दुःशासन बार बार ढेरकैके लेत हैं । पांचतनु क्षिति आंच तनक न लागी तनु लखिकै विपति यदुपति कीनो हेत हैं । गोपिनके चोरि चोरि राखे पट कोरि कोरि तेई मानौं जोरि जोरि द्रौपदीको देतहैं ॥ २ ॥ आनि कुल वंशको अकरम उदय होत बाढ्यो छल दुहुँ ओर बंधुन के गृह में ॥ पंडवनको तौ मानखंडन सभा के बीच द्रौपदी पुकारि कह्यो गोविंद सनेह में । अंबरके ह्वैगये अटंबर आकाश लगि खैंचि खैंचि हारी खल पावत न छेह में । भक्तनके काज ब्रजराज लाज राखनको आपह्वै बजाज बैठे द्रौपदी की देहमें ॥ ३ ॥ होमहीं ॥ **कवित्त** ॥ जिनजिन करनाई तिन तिन करआई करनही नाई तानकरनहीं आई हैं । कागज लिखाई जिनकागरैलिखाई पाई धरामें धराई तिन धरा धूरिखाई है ॥ दैदै लवराई जिनलई है पराइ अब ताहू पास नैकहून रहति रहाई है । जिनजिन खाई जिनउदर समाती खाई जिन न खवाई तिनखाई बहुताई है ॥ १ ॥ **दोहा** ॥ बांसचढ़ी नटिनीकहै मतिकोउ नटनी होइ ॥ ३ ॥ मैं नटके नटिनी भई, नटैसु नटिनी होइ ॥ ॥ २ ॥ दीया जगत अनूपहै,दिया करौ सब कोइ । घरको धरचो न पाइये जोकरादिया न होइ ॥ ३ ॥ नारदते वरपाइकै, प्रथम सुंदरी होइ ॥ प्रति-

बरते भूरीभई, सुतबरते पुनिसोइ ॥ ४ ॥ तापै नारदजी को अरु ब्राह्मण को दृष्टांत ॥

अतिसनमानकियोलायेजोईसौंपिदियो लियोगांठिबांधितबविनतीसुनाइये । संतनिजिमावोभावैरासलैकरावोभावैजैवौंसुखपावौकी जैबातमनभाइये । सीधोलाइकोठैधरचोरोकहीसोथीलीभरचोद्विज निबुलाइदेतक्योंहूं निघटाइये । जितनोंनिकासैंताते सौगुनोबढ़त औरएकएकठौरबीशगुनादैपठाइये ॥ ५६७ ॥

निघटाइये ॥ दोहा ॥ बुरो विचारैं दुष्ट जन, चाहैं कियो बिगार ॥ जिनको काम न बीगरै, रक्षक नंदकुमार ॥ १ ॥ जै माल इनको बड़ो भइया सो बड़ो भक्तहो ॥ सोरठा ॥ बेटा बाषत नेह-जोपै चील्है चालनी ॥ जननी काहि जनेह, भांडमुखहि ओंडो तनहिं ॥२॥

मूल ॥ जसवंतभक्तिजैमालकीरूडाराखीराठवड़ । भक्तनसों अतिभावनिरंतरअंतरनाहीं । करजोरैंइकपाइमुदितमनआज्ञामाहीं। श्रीवृन्दावनदृढ़वासकुंजक्रीड़ारुचिभावै । श्रीराधावल्लभलालनित्य प्रतिताहिलड़ावै । परमधरमनवधाप्रधानसदनसांचनिधिप्रेमजड़ । जसवंतभक्तिजैमालकीरूडाराखोराठवड़ ॥ १५७॥ हरिदासभक्त नहितधनिजननीएकैजन्यो ॥ अमितमहागुणगोप्यसारचितसोईजानै ॥ देखतकौतुलाधारदूरिआवैउनमानै । देइदमान्योपैजाविदितवृन्दावनपायो । राधावल्लभभजनप्रगटपरतापदिखायो । परम धरमसाधनसुदृढ़कलियुगकामधेनुमेंगन्यो । हरीदासभक्तनहितध निजननीएकैजन्यो ॥ १५८ ॥ टीका ॥ हरीदासबनिकसोकाशीढि गवासजांको ताकोयहपनतनत्यागोब्रजभूमिहीं । भयोजुरनारीछीव छोड़िगयेवैदतीनिबोल्योयोंप्रवीनवृन्दावनरसझूनिही । बेटीचारिसंतनिकोदईअंगीकारकरौधरौडोलीमांझमोकोध्यानदृढ़झूमिही । चले सावधानराधावल्लभको गानकरैं करैंअचरजलोगपरोगामधूमिही ॥ ॥ ५६८॥ आवतहीमगमांझछूटिगयोतनपनसांचोकियोश्यामवनप्रग

टदिखायोहै । आइदर्शनकियोइष्टगुरुप्रेमभीरपरचोभावपूरोजाइचीरघाटन्हायोहै ॥ पाछेआयेलोगशोगकरतभरतनैन वैनसबकहीकहीतादिनाहिआयोहै ॥ भक्तिकोप्रभावयामेंभावऔरआनौंजिनि बिनहरिकृपायहकैसेजातपायोहै ॥ ५६९ ॥

श्रीवृन्दावन दृढ़वास ॥ अरिल्ल ॥ चिंतामणिकी राशि विपिन तजि पाइये । अंत मिलै हरि आपु तऊ नहिं जाइये । श्रीवृन्दावन की धूरिहु धूसर तनु रहै । अरिहां यह आशारहै चित्त कहूंको नाचहै ॥ ३ ॥ राठवड़ ॥ दोहा ॥ साधन मेटे भरि भुजा, पद रज धरी न शीश ॥ बड़ी बड़ी करणी करी, सो सबह्वैगइ खीस ॥ ४ ॥ बांधै सो बांधा मिलै, कबहूं छोड़ै नाहिं ॥ मिलै आनि निर्वर्त्त सो, छुटै जु पलके माहिं ॥ ५ ॥ येमे भक्तजनाः पार्थ नमेभक्तास्तुतेजनाः ॥ ६ ॥

मूल ॥ भक्तभारजूड़ैयुगलधर्मधुरंधरजगविदित । बावोलीगोपालगणनिगंभीरगुनारट।दक्षिणदिशविष्णुदासगाँवकासीरभजनभट । भक्तनिसोंयहभावभजैगुरुगोविन्दजैसे । तिलकदासआधीनसुवरसंतनिप्रतिजैसे । अच्युतकुलपनएकरसनिवह्योज्योंश्रीमुखगदित । भक्तभारजूड़ैयुगलधर्मधुरंधरजगविदित ॥ १५९ ॥ टीका ॥ रहैगुरुभाईदोऊभाईसाधुसेवाहियेऐसेसुखदाहनईरीतिलैचलाईहै । जाइजामहोछमेंबुलायेहुलसायेअंगसंगगाड़ीसामासोभँडारीदेमिलाईहै । याकोतातपर्यसंतघटतीनसहीजातिबातवेनजानैंसुखमानैमनभाईहै । बड़ेगुरुसिद्धजगमहिमाप्रसिद्धिबोलेविनैकैउचारीसोईकहिकै सुनाइहै ॥ ५७० ॥

जूडै युगल ॥ दोहा ॥ हरदी तौ जरदी तजै, चूना तजै सुदेत ॥ प्रीतिजु ऐसी चाहिये, दोउ मिलि एकै हेत ॥ १ ॥ दोऊ एक मन है भक्तिको बोझ उठावे तो उठ तो गुरु गोविन्द वैष्णव सब एक रूप है ॥ भक्त भक्ति भगवंत गुरु चतुर नाम वपु एक ॥ २ ॥

चाहतमहोछौकियोहुलसतहियोनितालियोसुनिबोलेकरौवेगिदै

तियारिये । चहूंदिशिडारचोनीरकसौंन्यौंतौंऐसेधीरआवैंबहुभीरसेत ठौरनिसवारिये । आयेहरिप्यारेचारौंखूंटतेनिहारेनैनजाइपगधारे शीशविनैलैंउचारिये । भोजनकराइदिनपांचलगिछायरह्योपटपह राइसुखदियोअतिभारिये ॥ ५७१ ॥ आज्ञागुरुदईभोरआवौफिरि आसपासमहासुखराशिनामदेवजू निहारिये । उज्ज्वलवसनतनुए कलेप्रसन्नमनचलेजातवेगिशीशपाइनिमेंधारिये । वेईदेवताश्री कवीरअतिधीरसाधु चलेदोऊभाईपरदक्षिणाविचारिये । प्रथमनि रखिनामहरापिलपटिपगलगिरहेछोड़तनबोलेसुनौधारिये ॥ ५७२ ॥ साधअपराधजहांहोततहांआवतनहोइसनमानसबसंततहींआइये । देखीसोप्रतीतिहमानिपटप्रसन्नभयेलयेउरलाइजावोश्रीकवीरपाइये । आगेजोनिहारैभक्तराजदृगधारैचलीबोलेहँसिआपकोईमिल्योसुखदा इये । कह्योहांजूमानिदईभईकृपापूरणयों सेवाकोप्रतापकहौकहां लगिगाइये ॥ ५७३ ॥

विनयलै उचारिये । महाराज संततौ बहुत आये सामा कहां येती ॥ गुरु बोले मन मानौं जितो देतजावो घटैगी नहीं देनहारो समर्थ है ॥ ॥ १ ॥ आस पास प्रदक्षिणा अश्वमेधी यज्ञको भोगको फेरि जन्मधरै दण्डवतसों जन्म कटैगो ॥ २ ॥

मूल ॥ कील्हकृपाकीरतिविशदपरमपारषदशिष्यप्रगट । आ शकरनऋषिराजरूपभगवानभक्तगुरु । चतुरदासजगअभयछा- पछीतरजुचतुरवर । लाषाअद्भुतराइमलषेममनसाक्रमवाचा । र- सिकराइमलगोंदुदेवादामोदरहरिरँगराचा । सबैसुमंगलदासदृढ़धर्म धुरंधरभजनभट । कील्हकृपाकीरतिविशदपरमपारषदशिषप्रग ट ॥ १६० ॥ रसुराशिउपासिकभक्तराजनाथभट्टनिर्मलवैन । आगमनिगमपुराणशास्त्रजुविचारचो । ज्योंपारोदैपुटहिसबहिको सारउधारचो । श्रीरूपसनातनजीवभट्टनारायण भाष्यो । सोस र्वसुउरसांचयतनकरिनीकेराख्यो । फनीवंशगोपालसुवरागाअनुगा

कौऐनं। रसराशिउपासिकभक्तराजनाथभट्टनिर्मलवैन ॥ १६१ ॥

रसराशि उपासिक ॥ कवित्त ॥ रसराशि शृंगार ताके उपासिक नाथभट्ट हैं शृंगार रस में चारौ रस हैं शांतमन की लगन निर्वल्य दास स्वामी के आधीन सख्यमित्रता समता विश्वास स्वभाव विपर्ययनहोइ ॥ वात्सल्य पुत्रवत लड़ाये ॥ शृंगार कांतकांता समप्रीति आशक्ति सो अस क्ति मैं चारौ रस रहैं जैसे पृथ्वी को गुण सुगन्ध अरु तत्त्व में न मिलै चारौ तत्त्व पृथिवीमें मिलैं अप तेज वायु आकाश ऐसेही रस राशि शृं- गार रस कहावै ॥ १ ॥ भागवते ॥ मन्येऽसुरान् भागवतानधीशे संरंभमार्गाभिनिविष्टचित्तान् ॥ येसंयुगे ऽचक्षतताक्ष्यर्पुत्रमंसेसुनाभायु धमापतंतम् ॥ २ ॥ फनी वंशं गोपाल दास के पुत्रनारायण दास ऊंचे गांववाले के पुत्र ॥ ३ ॥

कठिनकालकलियुगमेंकरमैतीनिहिकलंकरही । नश्वरपतिरति त्यागिकृष्णपदसोंरतिजोरी । राबैजगतकीफांसतरकितिनुकाज्योंतो री । निर्मलकुलकांथडाधन्यपरसाजिहिजाई । विदितवृन्दावनवास सन्तमुखकरतबड़ाई । संसारस्वादसुखबातकरिफेरिनहींतिनतनच ही । कठिनकालकलियुगमेंकरमेतीनिहकलंकरही ॥ १६२ ॥

कठिनकाल ॥ स्त्रीचून कोदियो है बाहर तौ रहै श्वानखावै ॥ भीतर रहै तौ मूसोखावै स्त्री की भलीकथा। कथा कहा हो या कठिन कालमें करमैतीही निष्कलंक रही सतयुगमें विषय में ब्रह्मा महादेव तपस्वी ऋषीश्वर इंद्रिचाल होतभये बड़े राजा दिशाजीतिपै इंद्रिय न जीतीजाहिं या अवलानें सबइंद्रियजीति कै मनवश करि वैराग्य कियो ॥ १ ॥

टीका ॥ सेखावतनृपकेपुरोहितकीबेटीजानौ बासहौंखड़ेलाकर मैतीसोबखानिये । बस्योउरश्यामअभिरामकोटिकामहूंते भूलैधाम कामसेवामानसीपिछानिये । बीतिजातियामतनबामअनुकूलभयो फूलअंगगतिमानोमतिछबिसानिये । आयोपतिगौनोलैनभायोपित मातहियेलियेचितचावपटआभरणआनिये ॥ ६७४ ॥

वस्यौउरश्याम ॥ संग न ध्यान श्याम कैसे बस्यो ॥ भागवते ॥ ततस्यात्सर्वत्र सर्वदा ॥ ज्ञानवैराग्य भक्तिसर्वत्र सब देशमें है सबके हृदयमें है घटिवढ़ि क्यों गिन्यो है सो सुनो श्री भगवानको नाम वासुदेव है शुद्धहृदय में झलकै है दर्पणमो रचाहोइ तौ न झलकै मज्यौहोइ तौ आइझलकै सो हृदय दर्पणविषे बासना मोरचे सो करमैती को हृदय उज्ज्वलहरि आइ झलकेसतसंगविना हृदय कैसे उज्ज्वलभयो कही पूर्वजन्मकी भक्ति अजररही सो उदयभई ॥ ऐसेअंधेरी कोठरीमें वस्तु धरिके विदेशकोगयो॥ आवतही तुरत उठाइ लीनी ऐसे पछिले जन्मकी भक्ति सिद्धकरी जानौ तौ संगकी उपेक्षानहीं ॥ ३ ॥ सानियै ॥ कवित्त ॥ अबहीं गईखरिक गाइके दुहाइवेको बावरीह्वैआई डारि दोहनी औ पानकी। कोऊकहै छरी कोऊ भौनपरी डरीकहै कोऊ कहै मरीगति हरीहैअयानिकी ॥ सासुव्रतठानै नंदबोलति सयानै धाइ दौरि दौरि आनै मानौ खोरि देवतानिकी । सखी सबहूँसै मुरझानि पहिचानी कहूँ देखी मुसिकानि वारँगीले रसखानिकी ॥१॥

परयोशोचभारीकहाकीजियेविचारी हाड़चामसोसँवारीदेहराति केनकामकी । तातेदेवोत्यागिमनसोवैजिनिजागिअरेमिटैउरदाग एकसांचीप्रीतिश्यामकी। लाजकोनकाजजोपैचाहैब्रजराजसुतबड़ोई अकाजजौपैकरैसुधिधामकी। जानीभोरनौनोहोतसानी अनुरागरंग संगएकवहीचलीभीजोमतिवामकी ॥ ५७८ ॥

हाडचाम सौस्तनौ मांसग्रंथी देहतौ मलीनमन ॥ सवैया ॥ यौवनजोर मलो ललिता सबदेखि थकी यह अगम अथाहै । बातचलै चहुंओरहुतै सुयहै मनमें अतिशोचमहाहै । सेवनहार पुकारकरै आलीमांझ की धार लखी परहाहै । नेहकीनाव कुदावपरी मनमेरे मलाह सलाह कहाहै ॥ ॥२॥यौवनकी सरितागहिरी अरुनैननिनीर नदी उमही है। पीतमको पति यांजु लिख्यो बिनकेवटियाकहुँ पारभईहै। मानको राजमहा झकझोरत प्रेम कीडोरि सो लागिरही है । मनमेरे मलाह मिलैतो बचो नाहिं बोरि अथाह सलाह यही है ॥ १ ॥ सोवेजिनि ॥ कुंडलिया ॥ ससा अंधेरी छां-

डिदै हरिभजि लाहोलेइ ॥ हरिभजि लाहोलेहि देह जिनि राचीतेरी ॥ नातर यमकेद्वार मूढ़ पैठेजुपवेरी । नादुपटैअतिचेतचेतचालैजो भाई । भूले-यमपुरजाइ समझि ध्रुवलोक वसाई । अगर आलकस जिनिकरो दुर्लभ मानुषदेह । ससा अंधेरी छाडि दै हरिभजि लाहोलेह ॥ २ ॥ जो दिन जाहि अनंदमें, जीवनको फलसोइ । जीवनको फलसोइ नंदनं दन उरधारै ॥ मंत्रीज्ञान विवेक असुर अज्ञान निवारै ॥ पद्म पत्रज्योंरहै कालसम विषैपिछानै । जगप्रपंचते दूरि सत्य सीतापति जानै ॥ अगर अजाके स्वादते तृप्तिन देख्योकोइ ॥ जोदिन जाइ अनंद में जीवनको फलसोइ ॥ ३॥ पानी को धननी करचो, ऊरनभयो गुवाल॥ ऊरनभयो गुवाल प्रभुहि मानुष तनु दीयो । भक्ति सुधारस छांड़ि जहर विषयारसपीयो ॥ श्रवण घ्रान मुख प्रान वरणदृग उमगी आपी । तिनको दीनी पीठि निलज्ज कृतघ्नी पापी ॥ अगर श्याम उपकार निधि भज्यो नहीं गोपाल । पानीको धननी करचो ऊरनभयो गुवाल ॥ ४ ॥

आधीनिशिनिकसीयोंबसीहियेमूरतिसोपूरतसनेहतनुसुधिबिसराईहै । भोरभयेशोरपरयोपितामातशोचकरयोकरिकैयतनठौरठौर ढूंढ़िआईहै । चारोंओरदौरेनरआयेढिगटरिजानीऊंटकेकरंकमध्य देहजादुराईहै। जगदुरगंधकोऊऐसीबुरीलागीजामें वहुदुरगंधसोसु गंधलैसराहीहै॥ ५७६ ॥

सुधि विसराई है ॥ **कवित्त** ॥ वैदनि बुलाइ लावो स्याननि अनेक भांति यर्पति यतन रूप लागति है नेरेमैं । योगी यती जोइसी उपासिक देव भैरौंके कामरूपके बासी पचिमीडो हाथ हेरेमैं । लोटि लोटि जाइ वीर बोलै न अनाज खाइ पनियांको निकसी आजु अधिक अँधेरे मैं । बावरी अनाहक यह भूतन वधाये फिरे आई ब्रजबालनंदलालजूके फेरेमें ॥ ५ ॥ चारौं ओर बातरस ठौर ठौर ढूंढिआयेहैं । कुयोगिनिको आत्मा अप्राप्त तैसे नमिली जगदुर्गंध कोऊ सेसी बुरी लागी जगत् दुर्गंधहू तैं डरी ।

ऊंटको करंक की सुगन्धमानी जगदुर्वासना करंकहूंते बड़ीमानी ॥ १ ॥

बीतेदिनतीनिवाकरंकहीमेंशंकनहीं बंकप्रीतिरीतियहकैसेकरि गाइये । आयोकोऊसंगताहीसंगगंगातीरआईतहांसोअन्हाई हैभूषण बनआइये । ढूंढ़तपरशुरामपितामधुपुरीआये पतेलैबतायेजाइमाथु रमिलाइये । सघनविपिनब्रह्मकुंडपरबरएकचढ़िकरिदेखी भूमिअँशु वाभिजाइये ॥ ५७७ ॥ उतरिकैआइरोइपाइँलपटाइगयो कटीमेरी नाकजगमुखनदिखाइये । चलौगृहवेगिसबलोकउपहासेमिटैसासुघर जावोमतिसेवाचितलाइये । कोऊसिंहव्याघ्रअजुवपुकोविनाशकरैत्रा समेरेहोइ फिरिमृतकाजिवाइये । बोलीकहीसांचबिनभक्ततनऐसोजा नौजोपैजियोचाहौकरोप्रीतियशगाइये ॥ ५७८ ॥

वैभूषणबनआई है ॥ जोगिनी को बानो करिकै वृन्दावन कहा- जाहि ॥ जैसे विदुरजी दुर्योधन की पौरिपै धनुष धरिकै निकसे श्रीधर- जीने लिख्योहै डरैनहीं । चक्रवर्ती लिख्यो बधिकको बानोतीर्थ यात्रा में कहाकरैं यह श्रीवृन्दावन धामहै वैकुंठहूते सर्वोपरिहै ॥ १ ॥ बरपर चढ़िकरि देखो शरीरमें पिंडोलमाटी लगाये हैं ॥ २ ॥ मृतक जिवाइये तुम सांची कही भक्ति बिना तौ प्राणी मृतकही तुल्यजानौ ॥ ३ ॥ नाग लोक स्वर्गलोकमेंहू भक्तिनहीं ॥

कहीतुमकटीनाककटै जोपैहोइकहूं नाकएकभक्तिनाकलोकमें नपाइये । वरषपचासलगिविषैहीमेंबासकियोतऊनउदासभयेचनेको चबाइये । देखेसबभोगमेंनदेखेएकश्यामतातेकामतजिधामतनुसेवा मेंलगाइये । रातितेज्योंप्रातहोतऐसेतमजातभयोदयोलैसरूपप्रभुग योहियेआइये ॥ ५७९ ॥

क्योंकि चारिकौड़ी की भांगसों बावरोह्वै जाइ है ॥ तापैपोस्ती को दृष्टांत अरु भंगी को जहां रागरंग अमृत भोगकैसे न बावरो होइ ताते विद्या धनराज्य पाइकै मत्तहोइ है जैसे चोखो धन को पाइकै बावरो

भयो ॥ आपुको आपही धिरकारहै ॥ १ ॥ वर्ष पचाश ॥ सप्तमे ॥ "मतिर्न कृष्णोपरतःस्वतोवा मिथोभिपद्येतहतव्रतानाम् । अदांतगोभिर्विशतातमोंधं पुनःपुनश्चर्वितचर्वणानाम् ॥ २ ॥ कवित्त॥ धनदियो धामदियो भाम सुत नाम दियो दियो जग यश ताके तू चल्यो न रुखमें । नरदेही दीनी सब सुरति सपूरी कीनी कामिनी नवीनी नहीं जान दीनों दुखमे । दामनको रोवै निशि वासर जनमखोवै हरि जो विसारैगी दी ऐसे तैंने सुखमें । धूरि परी कुल में बड़ाईमें अंगारपरे भारपरो बुद्धि छार परी तेरे मुख में॥ ३॥पुत्रकलत्र सों चौरासी सों छुटैगो सो नहीं ॥ ४ ॥ कुण्डलिया ॥ हाहाकरे न छूटि है वैरीवश परिजाइ ॥ वैरीवश परिजाइ कालयम के सँगहैगो । तात मात सुत बाम धीरकोउ नाहिं धरैगो ॥ दान पुण्य ओषधी तिनहुँते काजन-सरही । होनहारसो बड़ी उलट घटको अनुसरही ॥ अगर उवारै राम पद कै संतनि की बाह । हाहाकरै न छूटही वैरी वश परिजाह ॥ ५ ॥ बहुतगई थोरीरही थोरीहूमेंचेत ॥ थोरीहूमेंचेत अमल घटथोरै थोरै । मारग विषय विसार शीशदै सियपतिओरै ॥ द्वैघटिकामें अंग भूप गोविंद पदपायो । दुर्मतितजिकै पिंगला श्यामहठ सेजवसायो ॥ अगर आलकसजिनकरौ हरिभजिबेकेहेत । बहुतगई थोरीरही थोरीहू में चेत ॥ १ ॥ दयोलै स्वरूप ॥ पंचम ॥ कर्म करन उपजनिपुनिनाश । सुख दुख शोक मोहनितत्राश ॥ इनके हेत दियोहरिनेतन । ताहि अन्य-था करै कौन जन ॥ १ ॥ "जासुवेदवाणी बड़दाम । दृढ़गलबंधा कर्म गुणनाम ॥ तामेंबँधे हारिहि हम ऐसे । बहतहै बैल धनीको जैसे ॥ २ ॥ गुणकर्मनकरि दुख सुख जो जो । देत हैं हरि हम लेत हैं सोसो ॥ ताही-केवश रहत है ऐसे । अंधसआंखेंके वश जैसे ॥ ३ ॥ मुक्तहू निजतनु धारैतौलौं । गर्वत्यागि प्रारब्धहै जौलौं ॥ और देह पुनि धरै न ऐसे । स्वप्नको तनु जाग्यो जन जैसे ॥ ४ ॥ अहिवनहू में है भययाते । संगहैं छह इंद्रियरिपुजाते॥आत्माराम जितेंद्रिय महा॥ताबुधको गृहदूषण कहा ॥ ॥ ५ ॥ पहलेछह इंद्रिय वैरीजे । घर में रहि ऐसेजीतैंते ॥ ज्योंगढ में रहि

रिपुनि जीत जन । फिर तहां रहै जहां मानै मन ॥ ६ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ त्रिभुवनगुरुकी यह आज्ञा सुनि । अपनीहै हलिकई यदपि पुनि ॥ अति भागवत तऊप्रियव्रत जो । आदर सों शिरनाथ लईसो ॥ ७ ॥ विधि-हूमनु की पूजालै पुनि । लखि सनमान प्रियव्रत नारद मुनि ॥ मनवाणी व्यवहार अगोचर । ताब्रह्महि सुमिरत गमनेघर ॥ ८ ॥ पायमनोरथ वि-धिते मनुजो । नारद को सम्मतलैकै सो ॥ सुतहि राजदै अपुत्यागोघर । अतिही विषम विषय विषकोशर ॥ ९ ॥ यों निर्मल मानद प्रियव्रत जो । हरि इच्छाते पायराज्य सो ॥ जिहि प्रभाव जग बंधन हरै । तिह हरिपद में नित चितधरै ॥ १० ॥

आयेनिशिघरहारिसेवापधरायअतिमनकोलगायवहीटहलसुहाई है । कहूंजातआवतनभवतामिलापकहूं आयनृपपूछैद्विजकहांसुधि आईहै । बोल्योकोऊतनधामश्यामसंगपागेसुनि अतिअनुरागेवोगि खबरमँगाईहै । कहोतुमजायईशइहांईअशीशकरौ कहीभूपआयोहि यचाहउपजाईहै ॥ ५८० ॥ देखोनृपप्रीतिरीतिपूंछीसबबातकही नैनअश्रुपातवहरंगीश्यामरंगमें । वरजतआयोभूपजायकैलिवायल्या ऊं पाऊंजोपैभागमेरेवहीचाहअंगमें । कालिंदीकेतीरठाढ़ीभीरद्दग भूपलखी रूपकछुऔरैकहाकहैंवैंउमंगमें । कियोमनैंलाखबेरअयेअ भिलाषराजा कीनीकुटीआयेदेशभीजेसोप्रसंगमें ॥ ५८१ ॥

भूपआयो॥वनवारीदासमुन्शी अरु दाराशिकोह शहजादो ताको प्रसंग राजाको आशीर्वाद न कियो तापै फकीर अरु बादशाहको प्रसंग पाँय फइला-यदिये ॥ १ दोहा ॥ जबलग योगी जगतगुरु, तबलग आशनिरास ! तुलसी आशाकरतही, जगगुरुयोगी दास ॥ १ ॥ कवित्त ॥दुरित विदारनी सक-लजगतारनी यह नहिं प्रतिपारिनीहो प्यारी प्यारी नाहकी।वृन्दावन रसकेलि कारिनीहो हारिनीहो सबनिके नीकी भांति तनमनदाहकी । सूरति सुकवि रविनंदिनी कृपाकैदीजै लाडिली औ लालकी सुभक्ति उतसाहकी । और

जितीकामनाते सबै परवाहदेहु रहे परवाह एक तेरहीप्रवाहकी॥ १ ॥ छप्पय॥ प्राणजाहु तो जाहु जाहु यश सकल बड़ाई। होहुधर्मको नाश भ्रमहि मग-गहो जड़ाई ॥ आधि व्याधिके दुःख करें जेतनको जीरन । करो नहीं उपचारको हो नानापीरन ॥ बहु विधि वचन कठोर कहि सबै निरादर करो किन । श्रीवृन्दावनको छांड़िये यह आवो मन भूलिजिन ॥ ३ ॥

मूल ॥ गोविंदचंदगुणग्रन्थनकोखड्गसेनवाणीविशद ॥ गोपी ग्वालपितुमातुनामानिर्णयकियोभारी । दानकेलिदीपकप्रचुरअति बुद्धिउचारी ॥ सखासखीगोपालकाललीलामेंबितयो । कायथकुलउ द्धारभक्तदृढ़अनतनचितयो॥गौतमीतंत्रउरध्यानधरतनत्यागोमंडल रसद। गोविंदचंदगुणग्रन्थनकोखड्ग सेनवाणीविशद॥१६३॥टीका॥ ग्वालियरवाससदारासकोसमाजकरै शरदउज्यारीअतिरंगबढ्योभा रीहै । भावकीबढ़निदृगरूपकीचढ़नितत्ताथईकीरढ़निजोरी सुंदर निहारीहै । खेलतमेंजायमिलेत्यागितनभावनासों झेलतअपारसुख रीझिदेहवारी है । प्रेमकीसचाईताकीरीतिलै दिखाईभई भावकनि सरसाई बातलागीप्यारीहै ॥ ५८२ ॥

वाणी विशद ॥ पद ॥ द्वै गोपिन बिचबिच नँदलाला । श्याम मे-घके दुहूँ ओर राजत नवदामिनि बाला ॥ करत नृत्य संगीत भेद गति गर्जत मोर मराला । फहरत अंचल चंचल कुंडल थहर रहै उरमाला ॥ मध्यमिली मुरली मोहन ध्वनि गान वितान छयो तिहिं काला। चलिये झु-मकि झंकझंकारि वलयमिलि नूपुर किंकिणि जाला ॥ देवविमाननि कौतुक मोहे लखि भयो मदन विहाला । खड्गसेन प्रभु रैनिशर्दकी बाढ्यो रंगर-साला ॥ १ ॥ पदपद गावत गावतही प्राण त्यागे देहवारी है । देह छो-ड़िकें ताही भावको प्राप्त भयो । सनेहकी द्वैजाति एक विछुरनि पूरे सनेही तन मिलिहूंमें छोड़े विछुरनहूंमें ॥ १ ॥ दोहा ॥ चढिके मैन तुरंग पर,चलिबो पावकमाहिं। प्रेम पंथ ऐसो कठिन, सब कोउ निबहत नाहिं ॥ २ ॥

मूल ॥ सखाश्यामभनभावतोगंगाग्वालगँभीरमत ॥ श्यामाजू कीसखीनामआगमविधपायो । ग्वालगायब्रजगाँवपृथकनीकेकरिगायो ॥ कृष्णकेलिमुखझिलिमअघटउरअंतरधरई । तारसमेंनितमगनअसद्आलापनकरई ॥ ब्रजबासआशब्रजनाथगुरुभक्तचरणरजअनन्यगति । सखाश्याममनभावतो० ॥ १६४ ॥ टीका ॥ पृथ्वीपतिआयोवृंदावनमनचाहभई सारंगसुनावैकोऊजोरावरिल्याये हैं । वल्लभहूसंगस्वर भरतहीछायोरंग अतिहीरिझायोदृगअँशुवाबहायेहैं । ठाढ़ोकरजोरिविनैकरीपैनधरीहिये जियेब्रजभूमिहीसोंवचनसुनायेहैं । कैदकरिसाथलिये दिल्लीतेछुटायदिये हरीदासतौवरणैं आयेप्राणपाये हैं ॥ ५८ ॥

ब्रजबास आश ॥ कवित्त ॥ निकुंजको चंद अरविन्द रस सिन्धु को लाड़िली कुँवरि मोहिं यहै दीजै । आनन्द को धाम अभिराम या विपिन को जनम पर जनम कोउ जीव कीजै ॥ रहूं अति धूरि धूसर सदा प्रेम मय सुनत वर वाणि कल केलि जीजै । नवल नव कुंज में फिरौं अलबेलि दिन निरखि वन रूप भरि दृगन पीजै ॥१॥ परे जे पतौवा सूखे भख में पीयूष जैसे खाऊं रूख रूख तरे ऐसी तोको जीवका । प्यास ते बढ़ैजु पीर तरनि तनैया तीर अंजलि को भरि धीर क्षीर नीर पीवका । केलि कल जोहत विमोहत सु ह्वैहै कवि वृन्दावन कुंज कंज अमर अमीवका । आनँदमें रूमि घूमि बसोंगा बिलास भूमि आरती को दूमि जैसे सुख पावे हीवका ॥ २ ॥ ब्रजभूमि को लाल जू ने स्वाद अपने मुख सों लियो ब्रह्मांड घाटपै ॥ १ ॥ दृग अँशुवा ॥ दोहा ॥ रूप चोज की बात पुनि, और कटीली तान । रसिक प्रवीननके हृदय; छेदन करै वे बान ॥ १ ॥ बतरस नीर गँभीर अति, कोउ न पावत थाह । मीन लीनरस रसिक जो, सोई पावत ताह ॥ २ ॥

मूल ॥ सोतोश्लाघसंतनिसभाद्वुतियदिवाकरजानियो ॥ परमभक्तिपरतापधर्मध्रुजनेजाधारी । सीतापतिकोसुयशवदनशोभितअ

तिभारी॥ जानकीजीवनिचरणशरणथातीथिरपाई । नरहरिगुरूप्र सादपूतपूतैंचलिआई॥ रामउपासकछापदृढ़औरनकछुउरआनियो। सोतीइलाघसंतनिसभादुतियदिवाकरजानियो ॥ १६५॥ जीवतय शपुनिपरमपदलालदासदोनोंलही॥ हृदयहरिगुणखानिसदासतसँग अनुरागी। पद्मपत्रज्योंरह्योलोभकीलहरनलागी॥ विष्णुरातसम रीतिवघेरैंसोतनुत्याज्यों । भक्तबरातीवृंदमध्यदूलहज्योंराज्यों ॥ खरीभक्तिहरिषांपुरैंगुरुप्रतापगाढ़ीगही । जीवतयशपुनिपरमपदला लदासदोनोंलही॥ १६६॥

सुयश वदन शोभित ॥ दोहा ॥ तुलसी रसना जो भली, निशि दिन सुमिरै राम ॥ नहिं तो खैंचि निकारिये, मुखमें भलो न चाम॥ १ ॥ छापदृढ ॥ सवैया ॥ आगम वेद पुराण बखानत कोटिक निर्गुण जाहि न जाने । जे मुनि ते पुनि आपहि आप को ईश कहावत सिद्ध सयाने । धर्म सबै कलिकाल ग्रसे जप योग विराग लै जीव पराने।को करि शोक मरै तुलसी हम जानकीनाथके हाथ बिकाने॥ १॥जीवत यश ॥ कुंडलिया ॥ इक द्वैद्वै अरु चौपरी पुनि लाई दुहुँ हाथ॥पुनि लाई दुहुँ हाथ कथा हरिजन मिलिगावे । जीवत यश जगमाहिं बहुरि सदगति को पावे ॥ देव पितर विधि अवधि कोऊ बाधा नहिं करई । अनन्य भजन गुरु गदित ।न८५ गोविंद अनुसरई ॥ अगर उभै ताकी बनै द्वै संतनिके साथ । इक द्वैद्वै अरुचौपरी पुनिलाई दुहुँहाथ ॥ १ ॥दोहा॥ कायाकसो कै बन बसो, हँसो रहो गहि मौन । तुलसी मन जीते बिना, मिटै नहीं दुख जौन ॥ विष्णुराते वघेरेमें पारायण करवाई पूरी भई जब शरीर त्यागि दियो ॥ १ ॥

भक्तनहितभगवानरचीदेहीमाधौग्वालकी॥ निशिदिनयहैविचा रदासजिहिविधिसुखपावैं । तिलकदाससोंप्रीतिहृदयअतिहरिजन भावैं॥ परमारथसोंकाजहियेस्वारथनहिंजानैं । दशधामत्तमरालस दालीलागुणगानैं । आरतहरिगुणशीलसमप्रीतिरीतिप्रतिपालकी। भक्तनहित० ॥ १६७॥ अगरसुगुरुपरतापतेपूरीपरीप्रयागकी॥ मा

नसवींचककायरामचरणनचितदीनों । भक्तनसोंअतिप्रेमभावना करिशिरलीनो ॥ रासमध्यनिजांनिदेहद्युतिदशादिखाई । आड़ौच लियोअंकमहोछैपूरीपाई ॥ क्यारेकलशऔलीध्वजाविदुषश्लाघाभा गकी । श्रीअगरसुगुरु० ॥ १६८ ॥ प्रगटअमितगुणप्रेमनिधिधन्य विप्रजिननामधरयो ॥ सुंदरशीलसुभावमधुरवाणीमंगलकरु । भक्तनकोसुखदैनफल्योबहुधादशधातरु ॥ सदनबसतनिर्वेदसार भुकजगतअसंगी । सदाचारउदारनेमहरिदासप्रसंगी ॥ दयादृष्टिब शआगरैंकथालोकपावनकरयो । प्रकटअमितगुणप्रेमनिधिधन्य विप्राजिननामधरयो ॥ १६९ ॥

दयादृष्टिकरिकै जगत्को पार उतारै।याते वृंदावन निकट ताहि छोडिकै आगरे रहैं कथातो सबहीकहैं । पै क्रियावान जनकी सुनिकै पारलगैं ॥ कवित्त॥जैसे शशिनिशिको अकाश में प्रकाश पावै शीतलकरावै औ सि-रावै तापतनकी । तैसे रसिकाई औ अननताई बात मुख शोभित है क्रिया वान ज्ञानवान जनकी।जैसे धन धाम श्याम श्यामजूके लागेकाम होत अभिराम दुखग्राम नाशैमनकी । ऐसे हरि गुण कोऊ पुण्य न बखानकरै तौपै कान प्राणहरै गुणगणगनकी ॥ १ ॥ आगरे ॥ वृंदावन के घाटको, जल आवत इहिबाट । ताते यह है आगरो, और गांव सबघाट ॥ १ ॥

टीका ॥ प्रेमनिधिनामकरैसेवाअभिरामश्यामआगरोशहरनिशि शेषजलल्याइये । वरषासुऋतुजिततितअतिकीच भई भईचितचिं ताकैसेअपरसआइये । जोपैअंधकारहीमेंचल्योतौबिगारहोत चले यों विचारिनीचछुवैनसुहाइये । निकसतद्वारजबदेख्योशुकवारएक हाथमेंमसालयाकेपाछेचलेजाइये ॥ ५८४ ॥ जानीयहैबातपहुँचाये कहूंजातयहअबहींबिलातभलेचैनकोऊधरीहै । यमुनालौंआयो अचरजसोलगायोमन तनअन्हवायोमतिवाहीरूपहरीहै ॥ घटभरि धरयोशीशपटवहआयगयोआयगयोघरनहींदेखकहाकरीहै । लागी चटपटीअटपटीनसमाझिपरैपटभटिभईनईनैननहीरझरीहै ॥ ५८५ ॥

सुकुवार ॥ एक मशालमें कूपीते तेल डारिविकी शोभाहो न्यारी ॥ कवित्त ॥ लाल चहुचही पागबांधी अनुरागही सों तापै झुकि रह्यो तुर्रा अतिही विशालहै। झँगा घेरदार फेंटा बांध्यो अति चातुरी सों गरे गुंज माल शोभादेत प्रेम जाल है। बाहु ऊंचोकै चढ़ाय चूड़ा चमकाया अति औचकही आये जिस हाथ में मशाल है। आगे आगे चल्यो जाय मनको लगाय लियो सुधि बिसराय चित करत निहाल है ॥ १ ॥ सोरठा ॥ जामुखसों जो नाम, निकसत सो प्रगटतभयो। बहुरंगी वह श्याम, ह्वै स्वरूप अँखियन लग्यो ॥ २ ॥ दोहा ॥ पुतरीकारी आँखिकी, रूप श्यामको मानि ॥ वासों सब जग देखिये, वा बिन अंधोजानि ॥ ३ ॥ कारीदृगकी पूतरी, कारो हरिको अंग ॥ जिनसों सब जग देखिये, जिन बिनरूप न रंग ॥ ४ ॥ प्रेमकि निधि प्रतिप्रेमनिधि, भरयो प्रेम उरजाल। सोई मूरति धारकै, प्रगट भयो तिहिकाल ॥ प्रेमप्यारेमें अंतर नहीं ॥ १ ॥ प्रेम प्रीतिमें अंतर येतो। बीसीतीन साठहै तेतो ॥ २ ॥ कहाकरी है और तो अंधेरेके चोर याने मशालबरायकै चित्तचुरायो भजन भूलिगयो मशालहीको ध्यानरहै ॥ ६ ॥

कथाऐसीकहैंजामेंगहैंमनभावभरे करैंकृपादृष्टिदुहुजनदुखपायो है। जायकैसिखायोबादशाहउरदाहभयोकहीतियाभलीकोसमूहघ रछायोहै। आयेचोबदारकहैचलोयहीबारबार झारीधरयोप्रभुआगे चाहैशोरलायोहै। चलेतबसंगगयेपूछैंनृपरंगकहा तियनिप्रसंगक रौकहिकैसुनायोहै ॥ ५८६ ॥ काहूभगवानहीकीबातसोबखानकहौं आनिबैठेनारीनरलागीकथाप्यारीहै। काहूकोविडारैझिंझकारैनै कुटारिविषे दृष्टिकैनिहारैताकोलागैदोषभारीहै। कहीतुमभली लेरीगलीहींकेलोगमोको आनिकैजताईवहबातकछून्यारीहै। बो ल्योयाकोराख्योसबकरौनिरधारीकेकेचलेचोबदारलैकैरोकैप्रभुधारी है ॥ ५८७ ॥ सोयोबादशाहनिशिआयकैसुपनदियोकियोवाको

इष्टवेषकहीप्यासलागीहै। पीवोजलकायआबखानेलेबखानेतब अति हीरिसानेकोपिवावैकोउरागीहै । फिरिमारीलातअरेसुनीनहींबातमे रीआयफरमावोजोईप्यावैबड़भागीहै । सोतोतैंलैकैदकरयोसुनि अरबरयो डरयो भरयोहियेभावमतिसोवततैंजागीहै ॥ ५८८ ॥ बौ रेनरताहीसमैवेगिदेलिवायल्याये देखलपटायेपाँयनृपदृगभीजेहैं । साहिबतिसाथेजायअवहींपिवावोनीरऔरपैनपीवैंएकतुमहींपेरीझेहैं । लेबोदेशगावँसदापावँहीसोंलग्योरहौं गहोनहींनेकुधनपायबहुछीजे हैं। संगदैमशालताहीकालमेंपठायेयो कपाटजालखुलेलालप्यायो जलधीजेहैं ॥ ५८९ ॥

कथाऐसी कहै ॥ दोहा ॥ नातोनेहरस रंगभरि, कहैं कथा निर्वेद ॥ जैसे चिठी विदेशकी, बाचनहींमें भेद ॥ १ ॥ गहौं नहीं नेकु ॥ दोहा ॥ जबलगि भक्तिसकामता, तबलगि कच्चीसेव ॥ कहि कबीरवेक्योंमिलैं निहकामी निजदेव ॥ २ ॥

मूल ॥ दूबरोजाहिदुनियाकहैसोभक्तभजनमोटोमहंत । सदाचा रगुरुशिष्यत्यागिविधिप्रगटदिखाई । बाहरभीतरविशदलगीनहिंक लियुगकाई । राघवरुचिरसुभावअसदआलापनभावैं । कथाकीर्त ननेममिलेसंतनगुणगावैं ॥ताननोलिपूरोनषक ज्योंघनअहरनही रोसहंत। दूबलोजाहि० ॥ १७० ॥ दासनिकेदासंतकोचौकसचौ कीयेमंडी ॥ हरिनारायणनृपतिपदमवेरछैविराजै। गावँहुशंगाबाद अटलऊधोभलछाजै ॥ भलैतुलसीदासभटख्यावदेवकल्याने। वो हिथविगरामदाससुहेलैपरमसुजाने ॥ औलीपरमानंदकेधुजासबलध मकोगंडी। दासनिकेदासं० ॥ १७१ ॥ अबलाशरीरसाधनसबला येवइहरिभजनबल । दमाप्रगटसबदुनीरामबाईबीराहीरामनि । ला लीनारालक्षगगुलपारवतीजगतधनखीचानि । केसिधनागोमतीभक्त उपासिनि । बादररानीविदितगंगायमुनारैदासनि ॥ जेवाहरषाजोप सिनिकुँवररायकीरतिअमल । अबलाशरीरसाधन० ॥ १७२ ॥

कन्हरं दाससंतनिकृपाहरीहृदैलावोलह्यो । श्रीगुरुशरणैआर्यभक्ति मारगसतजान्यो । संसारीधर्महिछांड़िझूठिअरुसांचपछान्यो । ज्यों शाखाद्रुमचन्द्रजगततेइहिविधिन्यारो । सर्वभूतसमदृष्टिगुणगंभीरअतिभारो ॥ भक्तभलाईवदननितकुवचनकबहूंनहिंकह्यो। कन्हर० ॥

भजनवल ॥ हरिके भजन सों कलियुग में साधन सबल किये ॥ छप्पय ॥ महाकठिन कलिकाल में कहो लाज कैसे रहै ॥ जनम करम नितनेम प्रेमसों हरि गुण गावै ॥ ताहि कहत पाषंड काहि तू जगभरमावै ॥ लाबरलौंड लवार ताहि आदर करि लीजै । शीलवंत गुणवन्त साधु पकरि ताहि धक्कादीजै ॥ चतुर दास इक आशहरि सोई व्रतपन नाहिंनगहै ॥ महाकठिन० ॥ १ ॥ सहन शील संतोष तनक मनमें नहिं लावै । निष्प्रेही हरिशरण प्रेमसों हरि गुण गावे । रागद्वेष सों रहत रुचिर सतसंगति कीजै ॥ हरि गुरु साधुप्रसाद सोई हिरदै धरिलीजै ॥ चतुरदास राधारवन निशि वासर इहि विधि कहै ॥ महाकठिन कलिकालमें० ॥ २ ॥ कवित्त ॥ आजु कलिकाल ऐसो आयो है कराल अति राखै जो गुपाल टेक तौ तौ वृन्दजीजिये ॥ बोलिये न चालिये जु बैठि पिंड पालिये जु आंखि कान मूंद दोय मौन व्रत लीजिये ॥ देखी अनदेखी जानि सुनी अनसुनी मानि माला गहि पानि हानि लाभ न चित दीजिये ॥ कीजिये न रोष जोपै कहै कोऊ वीस शीष लीजै धरि शीश जगदीश साषि कीजिये ॥ ३ ॥ यह भक्तिको स्वरूप है साँचो लह्यो एक तौ देखत को बड़ो एक गुण में बड़ो जैसे गोरष की डीवीसो इनको हृदय गुण में बड़ो दश अंगुल को तापै दश हजार गारी समाय जाहिं क्षमा सों ॥ १ ॥ सबही ते धरणी बड़ी जापै नवखण्ड बसैं ताते बड़े सिन्धु तापै टापू दिखरात है । ताते बडे कुंभ ताते तीनही चुलू में किये ऐसेहू अकाशमें अलेषै लेषै जात हैं ॥ दीरघ गगन अनी पूरन पगन भयो माप्यो ब्रह्मांडगयो बामनको गात है ॥ हो तो तुम बड़े तुमहू ते बड़े सन्त जाके हृदय में जगन्नाथ जू मासि समात है ॥ १ ॥ दोहा ॥ सबही घटमें हरि

बसे, ज्यों गिरि सुतमें ज्योति ॥ ज्ञान गुरू चकमक विना, कैसे परगट होति ॥ २ ॥ झूठ अरु सांचसों संतसों ज्ञान होय जब पिछाने जैसे गुमास्ते के संगसों साहूकार के बेटे ने झूंठो जवाहर पिछान्यो तब फोरिडारचो ॥ एस सतसंग सों ज्ञान ह्वै जब संसार झूंठो जाने जब छोडि दे ॥ १ ॥ कुवचन कबहूं ॥ दोहा ॥ संतन निंदा अति बुरी, भूलि करो जिन कोय। किये सुकृत सब जनमके, क्षणमें डारै खोय ॥२॥

लटचोलटेराआनिविधिपरमधरमअतिपीनतनि ॥ कहिनीरहिनीएकएकप्रभुपदअनुरागी॥ यशवितानजगतन्योसन्तसम्मतबड़भागी ॥ तैसोइपूतसपूतनूतफलजैसोपरसा। हरिहरिदासनिटहलकवितरचनापुनिसरसा। सुरसुरानंदसंपुटायदृढ़केशवअधिकउदारमन। लट्योलटेराआनिविधि परमधरमअतिपीनतन ॥ १७४ ॥

केवलरामकलियुगकेपतितजीवपावनाकिया। भगतभागवतविमुखजगतगुरुनामनजाने। ऐसेलोगअनेकएँचिसतमारगआने। निरमलरतिनिष्कामअजातेसदाउदासी। तत्त्वदरशीतमहरणशीलकरुणाकीरासी। तिलकदासनवधारतनकृष्णकृपाकरिदृढदिया। केवलरामकलियुगकेपतितजीवपावनकिया ॥ १७५ ॥ टीका ॥ घरघरजायकहैंयहैदानदीजैमोकोकृष्णसेवाकीजे नामलीजैचितलायकै। देखेवेषधारीदशबीसकहुअनाचारो दियेप्रभुसेवनकेरीतिहिंसिखायकै। करुणानिधानकोऊसुनैनहींकानकहूं बैलकेलगायोसांटोलोटेदयाआयकै। उपन्योप्रगटतनमनकीसचाइअहोभयेतदाकारकहोकैसेसमुझायकै ॥ ५९० ॥

लटचो लटेरा ॥ दोहा ॥ कविरा हरिके भावतो, दूरिहिते दीखंत ॥ तन छीने मन उनमने, जग रूठडे फिरंत ॥ सोरठा ॥ कहा चीकने गात, रस पूछत खिसले परैं। सरस न आवे बात, राख उडै रूखे हिये ॥ २ ॥ और अनुमान करै जैसे मुजावर औ काजीने लँगरी भेडको अनुमान कियो तत्त्वदरशी तापै दृष्टांत बादशाह अरु सुथरा को घर। घर जाय कहै

क्योंकि करुणासिंधुहै ॥ जैसे कोऊ बेरी हथकरी वाले को जायकै छुटा- वै क्योंकि वह तो आपसकै नहीं ।। आपनहीं जायकै छुटावै। साधवो दीन वत्सलाः। जैसे चंद्रा सुथरा ने घर बैठेही बादशाह को तत्त्व दरशायो रीति दिखायके भोग लगाय के खायो ।। १ ।।

मूल ॥ श्रीमोहनमिश्रितपदकमलआशकरनयशविस्तरचो । धर्मशीलगुणसींवमहाभागवतराजऋषि । पृथ्वीराजकुलदीपभीम सुतविदितकील्हशिषि । सदाचारअतिचतुरविमलवाणरिचनापद । शूरधीरउदारविनयभलपनभक्तनिहद । सीतापतिपदराधासुवरभ जननेमकूरमधऱ्यो । श्रीमोहनमिश्रितपदकमल आशकरनयश विस्तऱ्यो ॥ १७६ ॥ टीका ॥ नरवरपुरताकोराजानरवरजानों मोहनजूधरियेसेवानीकीकरी है । घरीदशमंदिरमेंरहैरहैचौकद्वार पावतनजानकोऊऐसीमतिहरीहै । परचोकोऊकामआयअबहीं लिवायल्यावो कहैपृथ्वीपतिलोगकानमेंनधरीहै । आईफौजभारी सुधिदीजियेहमारीसुनि वहूबातटरीअतिपरीखरबरीहै ॥ ५९१ ॥ कहिकैपठाईकहौकीजियेलराईसुनिरुचिउपजाईचलिपृथ्वीपति आ योहै। पऱ्योशोचभारी तबबातयोंविचारी कहीआयएकजावोगयो अचिरजपायोहै । सेवाकरिसिद्धिसाष्टांगह्वैकेभूमिपरेदेखिबडीवेरि पावँखड़ेलगायोहै । काहिगईऐंड़ीऐंपैटेढीहूनभौंहकरीकरिनित नेमरीतिधीरजादिखायोहै ॥ ५९२ ॥ उठिचिकडारितबपाछे सोंनिहारिकियोमुजराविचारि बादशाहअतिरीझेहैं । हितकीसचा ईयहैनेकुनकचाईहोतचरचाचलाईभावसुनिसुनिभीजेहैं । बीतेदिन कोऊनृपभक्तसोसमायोपृथ्वीपतिदुखपायोसुनीभोगहारिछीजेहैं। करे विप्रसेवातिन्हैंगावँलिखिन्यारेदिये वाकेप्राणप्यारेलाड़करीकरौकहि धीजे हैं ॥ ५९३ ॥

पावत न जान कोऊ षटकेमें मनचट जाय ॥ १ ॥ छिनमें प्रवीन छिन माया में ॥ २ ॥ पै अठालौ मन न रहै मन लगाइये बांशकी गां-

ठिकी नाईं साधन करिये मन वश करिबेको जैसे ठाटी हरीने साधन कियो सो उलीचोंही धीरज फकीर शहजादे को दृष्टांत ॥ १ ॥

मूल ॥ निहकंचनभक्तनिभजै हरिप्रतीतिहरिवंशके ॥ कथाकीर्तनप्रीतिसंतसेवाअनुरागी । खरियाखुरपारीतिताहिज्योंसर्वसुत्यागी । संतोषोशुठिशीलअसदआलापनभावै । कालवृथानाहिंजायनिरंतरगोविंदगावै ॥ शिषसपूतश्रीरंगकोउदितपारषदअंशके । निहकंचनभक्तनभजैहरिप्रतीतिहरिवंशके ॥ १७७ ॥

खरिया खुरपा रीति ॥ भारत को इतिहास खरिया खुरपा सर्वसदान दीये । सो बदरिया वाही के शिरपर रही । बड़े बड़े राजनने बड़ो बड़ो दान दियो । पैखरिया खुरपा की बरोबर न भयो सर्वसु दियो ॥

हरिभक्तभलाईगुणगंभीरबाँटैपरीकल्यानके ॥ नवलकिशोरदृढ़व्रतअनन्यमारगईयकधारा । मधुरवचनमनहरणसुखदजानतसंसारा ॥ परउपकारविचारिसदाकरुणाकीरासी । मनवचसर्वसुरूपभुक्तपदरैनिउपासी ॥ धर्मदाससुतशीलशुठिमनमान्योकृष्णसुजानके ॥ हरिभक्तभलाईगुणगंभीरबाँटैपरीकल्यानके ॥ १७८ ॥

बीठलदासहरिभक्तकोदुहूँहाथलाडूलिया ॥ आदिअंतानिरवाहभक्तपदरजव्रतधारी । रह्योजगतसोंऐंड़तुच्छजानैसंसारी ॥ प्रभुतापतिकीपतिकीपधितप्रकटकुलदीपप्रकासी । महतसभामेंमानजगतजानैरैदासी ॥ पदपढ़तभईपरलोकगतिगुरुगोविंदयुगफलदिया ॥ बीठलदासहरिभक्तकोदुहूंहाथलाडूलिया ॥ १७९ ॥

हरि भक्त भलाई ॥ छप्पय ॥ गुरु भक्ता गुणवंत ज्ञान विज्ञान विचारै । पर उपकारी पिंडप्रान पर द्रोह निवारै । परिधन को परित्याग रहै परनारि उदासा । सर्वात्मा सर्वज्ञ सर्वउरमें नितवासा । तत्त्ववेत्ता तिहुँलोक में ऐसी धरनी जो धरे । ईको तरसै आपने पुरुष पुरातन उद्धरे ॥ ॥ १ ॥ तुच्छ जाने ॥ दोहा ॥ चाख्यो चाहै प्रेमरस, राख्यो चाहै मान इक द्वैद्वै अरु चोपरी, देत सुनो नहिं कान ॥ २ ॥

भगवन्तरचेभारीभगतभक्तनके सनमानको ॥ काहवश्रीरंगसु मनिसदानंदसर्वसुत्यागी । श्यामदासलघुबेअनन्यलाषाअनुरागी। मारुमुदितकल्याणपरसबंशीनारायन। चेताग्वालगुपाल शंकरलीलापारायन । संतसेयकारजकियातोषतश्यामसुजानको । भगवंतरचेभारीभगत भक्तनकेसनमानको ॥ १८० ॥ तिलकदासपरकामकोहरीदासहरिनिर्मयो । शरणागतकोसिवरदान दधीचिटेकबलि । परमधरमप्रहलादशीशजगदेवदेनकलि । बीकावतबानैतभक्तिपनधर्मधुरंधर । तूबरकुलदीपकसंतसेदानित अनुसर । पारथपीठअचरजकौनसकलजगमेंयशलियो । तिलक दासपरकामकोहरिदासहरिनिर्मयो ॥ १८१ ॥ टीका ॥ प्रह्लादआदि भक्तगायेगुणभागवतसर्वेइकठौर आयदेखेहरिदासमें । रीझजगदेव सोंयोंकहिकैबखानकियो जानतनकोऊसुनोकरैलैप्रकासमें । रहैएकनटीशक्तिरूपगुणजटीगावै लागैचटपटीमोहयाचैमृदुहासमें।राजा रिझवारकरैदेवेकोविचारिपैनपावैसारकाटचोशीशिराख्योतेरे पासमें ॥ ५९४ ॥ दियोकरदाहनोंमेंयासोंनहींयाच्योकाहू सुनि एकराजा भेदभावसोंबुलाई है। नृत्यकरिगाईरीझलेवोकही आयदेऊओटचो बायोंहाथरिसभरिकैसुनाईहै । येतोअपमानपानदक्षिणलैदियोयेहो नृपजगदेवजूकोऐसेकहांपाईहै । तासोंदशगुणीलीजैमोकोसोदिखाइदीजैदईनहींजायकाहूमोहींकोसुहाईहै ॥ ५९५ ॥

तोषत श्याम ॥ श्लोक ॥ भक्ते तुष्टेहरिस्तुष्टो हरौतुष्टेचदेवताः ॥ भवंति सिकताःशाखाश्वतरोर्मूलनिषेचने । रहै एकनटीसोकाली को अवतार रहै । सो वह नटीरूप गणगान । राई त्रिदोषता में आयकै कोन मरैं सो जगदेव पँवार मोह्यो सो मरयोही है ॥ १ ॥

कितौसमुझावैल्यावोकहै यहैजकलागीगईबड़भागीपासवस्तुमेरीदीजिये । काटिदियोशीशतनरहैईशशक्तिलखोल्याईबकशीशथा

रढांपिदेखिलीजिये। खोलिकैदिखायोनृपमूरछागिरायो तनधनकी नबातअबयाकोकहाकीजिये। मैंजुदीनोहाथजानिआनिग्रीव जोरि दईलईवहीरीझपदतानसुनिलीजिये ॥ ५९६ ॥ सुनीजगदेवरीतिप्री तिनृपराजसुतापितासोंबखानिकहीवाहीकोलैपीजिये। तबतोबुला येसमुझाये बहुभाँति खोलिवचनसुनाये अजूबेटीमेरी लीजिये॥ नटचोसतबारजब कहीडारोमारिवेलैमारिवेकोबोलीवहमरोमतिभी जिये। दृष्टिसोंनदेखेकहालयावोकाटिमूड़ल्याये चहेंशीशआँखिनि कोगयोफिररीझिये ॥ ५९७ ॥

रीझपद ॥ कवित्त ॥ नृत्यगाग अभिनय रूपरीझि रचिकरि विधिहू को शोच परचौ नेही कैसे बचैंगे। लाख लाख लोगन के घाट घर कैस कहूं पांच सात बनिआये तेऊ यामें पचेंगे। करत विचार शोच सागरन वारापार वेई करतार कछु बुद्धिवल रचेंगे। हियेही में आय कही मति पछिताहि तब वाहि वाहि रोयबो बनाय और सचेंगे ॥ सोरठा ॥ नेही अक्षर दोय, येतौ विधना ना रचे। सो पावैगो कोय, नेह पंथ नेही बिना ॥ १ ॥ प्रीत नृप राजसुताकै भई वाके रूप पै रीझि पादशाह की बेटी जाति पाँति न विचारी ॥ दोहा ॥ नृप विद्या अरु बेलि तिय, येन गनैं कुल जाति। जो इनके नियरे बसैं, ताहीको लपटाति ॥ ३ ॥ याको कहा कीजिये रीझके पचायबेको बाह वाड़कार है ॥ १ ॥ शाह- जहांको दृष्टान्त ॥ ३ ॥

निष्ठारिझवारिरीतिकीनीविस्तारियह सुनोसाधुसेवाहरिदासजूने करीहै। परदानसंतसोहैदेतहैंअनन्तसुखरह्योसुखजानिभक्तसुताचि तधरीहै। दोऊमिलिसोवैंऋतुग्रीषमकीछातपर गातपरिगातमोंये सुधिनहींपरीहै। दातनकेकरबेकोचढ़ोनिशिशेषआप चादरउठा यनीचेआयेध्यानहरीहै ॥ ५९८ ॥ जागिपरेदोऊअरबरदेखिचा दरकोपेखिपाहिचानिसुतापिताहीकीजानीहै। सन्तदृगनयेचलेवै ठेमगपगलयेगयेएकांतमें योंविनतीबखानीहै। नेकुसावधानह्वैकै

कीजियेनिशंककाज दुष्टराजछिईपाय कहैकटुवानीहै । तुम्हकोजु नावधूरेजरैसुनिहियोमेरोडरै निंदाआपनिहोतसुखदानीहै ॥ ५९९ ॥ इतनोजतावनीमेंभक्तिकोकलंकलगेऐपैशंकवहीसाधुघटतीनभाइये। भईलाजभारीविषयवासधोयडारीनीके जीकेदुखराशिचैहैकहूँउठि जाइये।निपटमगनाकेयेनानाविधि सुखदिये पैनजानिमिललियेलाल निलडाइये । गोविंदअनुजजाकेबांसुरीकोसांचोपन मनमेंनल्यायो नृपइहिविधिगाइये ॥ ६०० ॥

बांसुरीको सांचोपन ॥ छप्पय ॥ टेक एक वंशी तनी जनगोविन्द की निर्वही । युगलचंद किरपाल तासुको दारु कहावे । पादशाह सों पैज हुकुम नहिं वेणु बजावे । वोकावत बानेत भक्त वंशपांडव अवतारी । कपिज्यों बीरालियो उठाय शीश अम्बरके झारी । पीठपरीक्षित सार का सभाशापसन्तन कही । टेक एक बंशीतनी जन गोविन्दकी निर्वही । ॥ १ ॥ दोहा ॥ गोविन्दा गाढी गही, हुकुम किया बादशाह । कैमुरली। की टेरदै, कै अम्बर चुपवाह ॥ २ ॥ अम्बर चपुपे वाहसी, मुरलीबाजे नाह ॥ मुरलीबाजेनाह द, कै साधवके माह ॥ ३ ॥

मूल ॥ नंदकुँवरकृष्णदासको निजपदतेनूपुरदियो ॥ तानमा नसुरतालछंदसुंदरशुठसोहै ॥ सुवाअंगभ्रभंगगानउपमाकोकोहै।रत्ना करसंगीतरागमालारँगरासी । रीझेराधालालभक्तपदरैनिउपासी । स्वर्णकारखड्गसुवनभक्तभजनपनदृढलियो । नंदकुँवरकृष्णदास कोनिजपदतेनूपुरदियो ॥ १९२ ॥ टीका ॥ कृष्णदासयेसुनाररा धाकृष्णसुखसार लियोसेवाकरिपाछेनृत्यगानविस्तारिये ॥ ह्वैकरि मगनकाहूदिनतनसुधिभूली एकपगनूपुरसोगिरचोनसँभारिये । लालअतिरंगभरेजानियतभंगभईपायँनिजखोलिआपबांध्यो सुखभा रिये ॥ फेरसुधिआईदेखिधारालैवहाईनयनकीरतियोंछाईजगभक्ति लागीप्यारिये ॥ ६०१ ॥ मूल—परमधरमपतिपोषिके ॥ संन्या

सीयेमुकुटमनि । चित्तसुखटीकाकारभक्तिसर्वोपरिराषी । दामोदरती रथरामअर्चनविधिभाषी । चन्द्रोदयहरिभक्तनरसिंहहारनकीनी । माधोमधुसूदनसरस्वती परमहंसकीरतिलीनो । प्रबोधनंदरामभद्र जगदानंदकलियुगधनि । परमधरम० ॥ २८३ ॥ प्रबोधानंदस रस्वतीकीटोका॥श्रीप्रबोधानंदबड़ेरसिकआनंदकन्दश्रीचैतन्यचंद्रजू केपारषदप्यारेहैं । राधकृष्णकुंजकेलनिपटिनचेलिकही झेलरस रूपदोऊकियेदृगतारेहैं । वृन्दावनबासकाहुलासलैप्रकाशकियोदिये सुखसिंधुकर्मधर्मसबटारेहैं । ताहीसुनिसुनिकोटिकोटिजनरँगपाये विपिनसुहायोबसेतनमनवारे हैं ॥ ६०२ मूल ॥ अष्टांगयोगत नत्यागियोद्वारकादासजानेदुनी ॥ सरिताकूकसगांवसलिलमेध्या नधरचोमन । रामचरणअनुरागसुदृढजाकेसांचोपन । सुतकल त्रधनधामताहिसोंसदाउदासी । कठिनमोहकोफंदतरकितोरीकुल फांसी । कीन्हिकृपाबलिभजनकैज्ञानखड्गमायाहनी । अष्टांगयोग तनुत्यागियोद्वारकादासजानेदुनो ॥ १८४ ॥

राग माला ॥ कवित्त ॥ भैरों विलावल मिलावत ललित मांझ गू- जरी देव गंधार प्रातही विभासरी । प्रथम मेघ मलार रामकली टोड़ी म- लार आसावरी जैतशिरी अमर धनाशिरी । हिंडोल सारंग नट अड़ानो उपावें घटि कालिंगड़ो खंभायची सोहै चतुर मासरी । शिरी राग सिंध गोरी मालव बसंत टोड़ी सोरठ सदा रहत उदासरी ॥ १ ॥ दीपक सूहो कल्यान केदारो गान बखत बिहागरे को गावत बिलासरी । पंचम बड़े अपान जंगली काफी सयानो माल गौड़ मालकोश राग को निवासरी । कहत दयाल पै गुपाल के छतीसों राग ऐसी विधि मोहन बजाई बन बांसुरी । सोई तो सुजान हरिके गुण गाय जाने बाकीको बकत ज्यों भुवंग लेत सांसरी ॥ २ ॥ राग ज्ञान ॥ सुखिनिसुखनिवासो दुःखितानां विनोदः श्रवणहृदयहारी मन्मथस्याग्रदूतः।रतिरभसविधाता वल्लभः कामिनी

नां जगांति जयति नादः पंचमश्चोपभेदः ॥ १ ॥ भैरवःपंचमोनाट्यो मल्लारोगौड्मालवः । ललितोगुर्जरीदेशीबराड़ीरामकृत्तथा ॥ मतारागार्णवे रागयः पंचैतेपंचमाश्रिताः ॥ २ ॥ नटनारायणःपूर्वोगंधारः सारंगस्तथा । ततःकेदारकर्णाटौ पंचैतेपंचमाश्रयाः ॥ ३ ॥ मेघोमल्लारकोमालकेशकः प्रतिमंजरी। आसावरी च पंचैते रागामल्लारसंश्रयाः ॥ ४ ॥ हिंडोलश्रीगुलाधारी गौरीकोलाहलस्तथा । पंचैतेगौरनामानं रागमाश्रित्यसंस्थिताः ॥ ५ ॥ भोपालोहरिपालश्च कामोदाघोरणीस्तथा । वेलावलीच पंचैतेरागादेशाकसंश्रिताः ॥ ६ ॥ अन्येचबहवोरागा जातादेशविशेषतः । मारूप्रभृतयोलोके पंचभद्रादिकाःस्मृताः ॥ ७ ॥ सस्वरंसरसंचैवसरागं मधुराक्षरम्। सालंकारप्रमाणंचषड्विधंगीतलक्षणम् ॥ ८ ॥ स्वरेणपदसंयुक्तंछंदसाचसुसंयुतम् । समानकं सतालंचसंगीतंतेनभण्यते ॥ ९ ॥ वृंदावन बासको हुलास ॥ कवित्त ॥ परेजे पतौवा सूखे भूखमें पियूष जैसे खाऊं रूख रूख तरे ऐसी तोको जीविका । प्यासते बढ़े जु चार तरन तनैया तीर अंकौ भरि भरि धरि धरि नीर पीविका। केलि कल जोहत स ह्वैहै कवि वृंदावन कुंज पुंज भ्रमर अमर अमीवका। आनंदमें झूमि घूमि बसौंगों बिलास भूमि आरतको द्रुम जैसे सुखपावै हीवका ॥ २ ॥ छप्पय ॥ प्राण जाहुतो जाहु होहि यश सकल बड़ाई। होहु धर्मको नाश भरम मन गहै जड़ाई ॥ आधि व्याधिके दुःखकरै जेतनको जीरन। करौ नहीं उपचार कोटिहो नाना पीरन ॥ भगवान इहि विधि वचन कठोर कहि सबै निरादर करौ किन। श्री वृन्दावनको छाँड़िये यह आवो मन भूलि जिन ॥ २ ॥

पूरणप्रगटमहिमा अनंतकरिहैकौनबखान। उदयअस्तपरवतगहैरुमध्यसरिताभारी । योगयुगतिविश्वासतहांदृढ़आसनधारी । व्याघ्रसिंहगूजेंखराककछुशंकनमाने। अर्द्धनजातेपवनउलटऊरधको आने। शाखिशब्दानिर्मलकहाकथियापदनिर्बान । पूरणप्रगटमहिमा अनंतकरिहैकौनबखान ॥ १८९ ॥ श्रीरामानुजपद्धतिप्रतापभटल-

क्ष्मणअनुसरचो। सदाचारमुनिवृत्तिभजनभागवतउजागर । भक्तन सोंअतिप्रीतिभक्तिदशधाकोआगर । संतोषीशुठिशीलहृदयस्वारथ नहिंलेशी । परमधरमप्रतिपालसंतमारगउपदेशी । श्रीभागवतबखानिकैनीरक्षीरविवरणकरचो । श्रीरामानुजपद्धति प्रतापभटलक्ष्मण अनुसरचो ॥ १८६ ॥ दधीचिपाछेदूसरीकरीकृष्णदासकलिजीति । कृष्णदासकलिजीतिन्योतिनाहरपलदीयो । अतिथिधरमप्रतिपाल प्रकटयशजगमेंलीयो ॥ उदासीनताकीअवधिकनककामिनिनाहिंरात्यो। रामचरणमकरंदरहतनिशिदिनमदमात्यो ॥ गलितेगलितअमितगुणसदाचारशुठिनीति। दधीचिपाछेदूसरीकरी कृष्णदासकलि जीति ॥ १८७ ॥ टीका ॥ बैठेहोगुफामेंदेखेसिंहद्वारआयगयो लयो योंविचारहोअतिथिआजुआयोहै । दईजांघकाटिडारिकीजियेअहार अजूमहिमाअपारधर्मकठिनबतायोहै । दियोदरशनआयसांचमेंरह्यो नजाय निपटसचाईदुखजान्योनबिलायोहै । अन्नजलदेबेहीकोझीखतजगतनरकरिकौनसकै जनमनभरमायोहै ॥ ६०३ ॥

योगयुक्ति विश्वास ॥ कवित्त ॥ एंडीबामेपांव की लगावै इसीवन के बीच वाही जौन ठौर ताहि नीके करिजानिये। तैसेही युगतिकारि विधिसों प्रकार मेट मेटहूके ऊपर दक्षिण पावँ आनिये । सरलशरीर दृढ़ इन्द्रिय संयम करी अचल ऊर्ध्वदृश्यभ्रूके मध्य ठानिये। मोक्षके कपाट कोउ घोरत अवश्य मेव सुन्दर कहत सिद्ध आसन बखानिये ॥ १ ॥ छन्द ॥ दक्षिण ऊरू ऊपर प्रथम बामहिंपगआनिये। बायें ऊरू ऊपर तबहिं दक्षिण पगठानहि। दोऊ करि पुनि फेर दृष्टि पीछे कर आवय । दृढकै गहै अंगुष्ठ चिबुक नक्षस्थल लावय। इहिभाँति दृष्टि उनमेष करि अग्रनासिका राखिये। सब व्याधि हरण योगीनकी पद्मासन पहिंचानिये ॥ २ ॥ प्रथम अंग यमकहो दूसरो नेमबताऊं। त्रिविध सुआसनभेद सुतो अबतोहिं सुनाऊं। चतुर्थ प्राणायाम पंचम प्रत्याहारं । षष्ठंसुना यधीरण्यध्य,न सप्तंविस्तारं। पुनि अष्टंग समाधिके सो सबतोहिं सुनाइहौं । साव-

धानहै शिष्य सुनि भिन्न भिन्न समुझाइहौं ॥ ३ ॥ प्रथम अहिंसा सत्य जानि पुस्तेयं त्यागे । ब्रह्मचर्य दृढ़गहै क्षमा धृति सों अनुरागे । दया बड़ो गुण होय ओजजब हृदय आनै । प्रत्याहार पुनि करै शोचनीके विधि जानै । ये दश प्रकार के यम कहे हठ प्रदीपिका ग्रंथ में । जो पहिले इनको गहै सो चलत योगके पंथ में । तप संतोष गहै बुधि आस्तिक सो आनै।दान समझि करि देय मानि पूजा जो जानै । वचन सिद्धांतसु सुनो लाज मति दृढ करि राखै।जापक मुखसों असद कछु आलापनभाखै । पुनि होशकरै इहि विधि जहां जैसी विधि तहां तैसी विधि सतगुरु कहैं । दश प्रकार के यमकहे ज्ञान विन कैसेकहै ॥ १ ॥

मूल ॥ भलीभाँतिनिबहीभगतिसदागदाधरदासकी । लालविहारीजपतरहतनितबासरफूल्यो । सेवासहजसनेहसदाआनँदरसझूल्यो । भक्तनिसोंअतिप्रीतिरीतिसबहीमनभाई । ऐसीअधिकउदाररसमहरिकीरतिगाई । हरिविश्वासहियआनिकै सपनेहूआननआशकी । भलीभाँतिनिबहीभगति सदागदाधरदासकी ॥ १८८ ॥

टीका ॥ बुदानपुरढिगबागतामेंबैठेआयकरिअनुराग गृहत्यागपागेश्यामसों । गावँमेंनजातलोगकितेहाहाखातसुखमानालियोगात नहींकामअरुकामसों । परचोअतिमेहदेहवसनभिजायडारेतबहरि प्यारेबोलेस्वरअभिरामसों । रहेएकशाहभक्तकहीजायल्यावोउन्हें मन्दिरकरावोतेरोभरचोघरदामसों ॥ ६०४ ॥ नीठिनीठिल्याये हरिवचनसुनायेजबतब करवायोऊंचोमन्दिरसँवारिकै । प्रभुपधराये नामलालऔविहारीश्याम अतिअभिरामरूपरहतनिहारिकै। करैसाधुसेवाजामें निपटप्रसन्नहोतबासीनरहतअन्नसोवै पात्रझारिकै । करतरसोईसोईराखहीछिपायसामा आयेघरसंतकहीआयज्यायेप्यारिकै ॥ ६०५ ॥ बोल्योप्रभुभूखेरहैताकोलियेराख्योकछू भाष्योतबआपकाढोभोरऔरआवैगो । करिकैप्रसाददियोलियोसुख पायोतबसेवारीतिदेखिकहीजगयशगावैगो । प्रातभयेभूखेहरिगये

तीनयामटारिरहेक्रोधभरिकहैकबधौंछुटावैगो । आयोकोऊताहीसम यद्वैशतरुपैयाधरे बोलेगुरुशीशलैकेनारोकितोपावैगो ॥ ६०६ ॥

भलीभाँति निबही ॥ नवातहै इनको निर्वाह भयो ॥ निष्काम भक्ति स्वरूपकी है सहजके मन की वृत्तिलगै ॥ १ ॥ सोवैपात्र झारि ॥ दोहा ॥ सबतत्त्वनिको तत्त्वहै, सोच प्रगट संसार ॥ लगै न अहिंडो चोरको, ज्यों माटीतत्त्व कुम्हार ॥ सबको सार भजन ॥ १ ॥

ढ्यो वहशाहमतिमोपैकछुकोपकियो कियोसमाधानसबबात समुझाईहै ॥ तबतोप्रसन्नभयोअन्नलगैजितोदयसेवासुखलेतशाह रुचिउपजाईहै । रहेकोऊदिनपुनिप्रभुपुरीबासलियोपियोब्रज रसलीलाअतिसुखदाईहै । लालैलड़ायेसंतनीकेभुगताये गुणजाने जितेगायेमतिसुंदरलगाईहै ॥ ६०७ ॥ मूल ॥ हरिभजनसींवस्वामी सरसश्रीनारायणदासआति । भक्तियोगयुतसुदृढ़देहनिजबलकरिरा खी । हियेस्वरूपानंदलालयशरसनाभाखी । परचयप्रचुरप्रतापजा- नमनरहसिसहायक । श्रीनारायणप्रगटमनोलोगनसुखदायक । नि- तसेचबसंतानिसाहितदाताउत्तरदेशगाति । हरिभजनसींवस्वामीसरस श्रीनारायणदास आति ॥ १८९ ॥ टीका ॥ आयेबद्रीनाथजूतेम- थुरानिहारिनयनचैनभयोरहेजहांकेशवजूकोद्वारहै । आवैंदरशनलो गजूतिनकोशोगहियेरूपकोनभोगहोतकियोयोंविचारहै । करैरखवा रीसुखपावतहैंभारीकोऊजानैनप्रभावउरभाव सोअपारहै । आयोए- कदुष्टपोटपुष्टसोतोशीशदई लईचलेमगएसोधीरजहीसारहै ॥६०८॥

रहेकोऊ दिन ॥ सवैया ॥ कालकराल गयो सुगयो अजहूं सुनि जो छिनही छिनछीजै ॥ श्रीमथुरा यमुनातट बासकै जीवत जीवन को फललीजै ॥ नाथनिरंतर केशव सुन्दर लालको भागवतामृत पीजै ॥ छांडि सबै नतिया अँखिया भरिकै सबको मुख देखिबो कीजै ॥ १ ॥ जूतिनको शोग ॥ दोहा ॥ हरिके मंदिर जात हैं, हरिदरशन की आ-

श ॥ औंधोहोय पायँनिपरै, चित्तपन्हैयनपास॥ २ ॥ लै चलै॥ दोहा ॥ कायाकोठी लोहकी, पिय पारषत हमाह ॥रजवंतन सुखसों मढ़े, कंचन होती नाह ॥ २ ॥

कोऊबड़ोनरदेखिमगपहिंचानिलियोकियोपरनामभूमिपरिभूरिनेहको। जानिकैप्रभावलियेपावमहादुष्टहूने कष्टअतिपायोछूट्योअभिमानदेहको। बोलेआपचिंताजिनकरोतेरोकामहोत नैननीरसोतमुखदेखोनहींगेहको। भयोउपदेशभक्तिदेशऊनजान्योसाध शक्तकोविशेषयहीजान्योभावमेहको ॥ ६०९ ॥ मूल ॥ भगवानदास श्रीसहितनितसुहृदशीलसज्जनसरस । भजनभावआरूढ़गूढ़गुणबलितललितयश। श्रोताश्रीभागवतरहस्यज्ञाताअक्षररस । मथुरापुरीनिवासआशपदसंतनिइकचित। श्रीयुतखोजीश्यामधामसुखकरिअनुचरहित। अतिगंभीरसुधीरमतिहुलसतमनजाकेदरश। भगवानदासश्रीसहितनितसुहृदशीलसज्जनसरिश ॥ १९० ॥

धीरज को सार है ॥ विचारचो हरिहीने यह पोटि धरी है यह कौनहै श्रुतेः ॥ सर्वंखल्विदं ब्रह्म। ऐसो ज्ञान आवै तब सुखी होय नहीं तौ दुःखपावै जैसे चल्यो जाय काहू कही बैल मारैगो ॥ कही ब्रह्म सब में है ॥ बैलने मारचो कहने वालोभी तौ ब्रह्म है । अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतंकर्म शुभाशुभम् ॥ हरिकी सेवा में कहालाभ है जो कर्मभोगै कर्म क्षीण होय है सेवाते ॥ १ ॥ भावमेह को ॥ पद ॥ मुंडमुंड़ाये की लाज निबहियो ॥ माळातिलक स्वांगधरि हरिको मारि गारि सबही की सहियो ॥ विधि व्यवहार जारसों कलियुग हरिभरतार गाढ़ोकरि गहियो॥ अनन्य व्रत धरि सतजिन छांड़ो विमद संतकी संगति गहियो ॥ अगिन खाहि विषको लै पीवो विषयनिको मुख भूलि न चहियो। व्यास आश करि राधापति की वृन्दावन को वेगि उमहियो ॥ १ ॥

टीका॥ जानिबेकोपनपृथ्वीपतिमनआई योंदुहाईलैदिवाईमाळातिलकनधारिये। मानिआनिप्राणलोभकेतिलकनित्यागिदिये।छि

पेनहींजातजानिवेगमारिडारिये । भगवानदासउरभक्तिसुखराशि भरयोकरयोलैसुदेशवेष रीतिलागीप्यारिये । रीझ्योनृपदेखि रीझिमथुरानिवासपायोमन्दिरकरायोहरिदेवसोनिहारिये ॥ ६१० ॥

मूल ॥ भक्तपक्षउद्दारतायहनिबहीकल्यानकी । जगन्नाथकोदासनि-पुणअतिप्रभुमनभायो । परमपारषदसमझिजानिप्रियनिकटबुलायो-प्राणपयानोकरतनेहरघुपतिसोंजोरयो । सुतदाराधनधाममोहतिन काज्योंतोरयो । कोधनीध्यानउरमेंबस्योरामनामसुखजानकी। भक्तपक्षउद्दारतायहनिबहीकल्यानकी ॥ १९१ ॥

जानिबे को पति सो भगवानूदास के संगसों रसखान मीर माधव आदिभक्त बहुत होतभये रसखानि के कंठ में द्वैसैका माला रहै तिनसों जहांगीर कही कंठीमाला सब कोऊ पहिरै तुम एती क्यों पहिरी तब रसखान बोले ॥ दोहा ॥ तनपाहन जल अगम को, तनक काठ करैपार ॥ बड़ेकाठ ऊपरतरैं, जबतन पाहन भार ॥ १ ॥ अरु मीर माधव कृष्णनाम प्रेमसों जुलेय सुनिबेकोसैके रामलोग फिरयो करै तिनसों बादशाह कही नाम तो सब कोऊ लैहै तिहारेही पाछे क्यों फिरयो करै है तब मीरमा धवकही॥दोहा॥ मधुर वचन सुनिसुवा के, काहु न अचरज होय ॥ बोलनिकागाकी मधुर, सुनिधावै सबकोय ॥ १ ॥ तबपन देखिबे को दुहाई फिराई ॥ मालाकंठी न धारै करयो लै सुदेश वेश ॥ श्लोक ॥ यदि वातादि दोषेण मद्भक्तो मां च विस्मरेत् ॥ तर्हि स्मराम्यहं भक्तं सयाति परमांगतिं ॥ हरिको काहे को निहोरा कीजिये कंठीमाल पै शरीर छो-ड़िये ॥ १ ॥ दोहा ॥ कंठीमाला सुमिरणी, पहिरत सब संसार ॥ पन-धीरो कोउ एक है, औरविकियो शृंगार ॥ २ ॥

सोदरशोभूरामकेसुनौसंततिनकीकथा । संतदाससदव्रत्तजरात छोड़ंकरिडारयो । महिमामहाप्रवीणभक्तिवितधर्मविचारयो । बहु-रोमाधवदासभजनबलपरचोदीनो । करियोगिनिसोंबादवसनपा-वकप्रतिलीनो । परमधर्मविस्तारिहितप्रकटभयेनाहिंनतथा ।

सोदरशोभूरामकेसुनोसंततिनकीकथा ॥ १९२ ॥ बूड़ियेविदितक-
न्हरकृपालआत्मारामआगमदरशि ॥ कृष्णभक्तिकोथंभब्रह्मकुलपर-
मउजागर। क्षमाशीलगंभीरसर्वलक्षणकोआगर। सर्वसुहारिजनिजा-
निहृदयअनुरागप्रकाशे ॥ अशनवसनसनमानकरतअतिउज्ज्वल
आशे। शोभूरामप्रसादतेकृपादृष्टिसबपरबसी। बूड़ियेविदितक-
न्हरकृपालआत्मारामआगमदरशि ॥ १९३ ॥ ॥

योगीबोले तुमतौ मालाकंठी अंगनमें धरो हम शृंगी मुद्रामाधवदास बोले अचला कोपीनधरैंगे ॥ दोहा ॥ कंठी माला सुमिरणी, पहिरत सब संसार। पनधारी कोउएक है, औरन कियो शृंगार। शोभूमाला शोभकी पनकी माला नाहिं। एँड़ेकोसो तड़गडो, पाल रह्यो गलमाहिं ॥ २॥ अचला कोपीन बचगये ॥ शृंगी मुद्राजलगये पारथ के क्षमा शील ॥ दोहा॥ क्षमा बड़ेन को चाहिये, ओछेनको उतपात। कहा विष्णुको घटिगयो, जो भृगु मारी लात ॥ १ ॥ ऐसे क्षमावान् हैं सो नारायणही हैं शील गंभीर स्व-भाव गंभीर समुद्र सो घटै बढ़ै नहीं सर्व लक्षणको आगर सो भगवानूदास पारायण उज्ज्वल आशै निष्कपट विषय वासनाकी चाहै सो समान नाहींकरै है यह उज्ज्वल आशै ॥ ३ ॥

भक्तरत्नमालासुधनगोविंदकंठविकाशकिय। रुचिरशीलघननी-
ललीलरुचिसुमतिसरितपति। विविधभक्तअनुरक्तव्यक्तबहुचरित
चतुरअति। लघुदीरघसुरशुद्धवचनअवरुद्धउचारन। विश्ववसवि-
श्वासदासपरचैविस्तारन। जानजगतहितसबगुणनिसूसमनारायण
दासदिय। भक्तरत्नमालासुधनगोविंदकंठविकाशकिय ॥ १९४ ॥
भक्तेशभक्तभवतोषकरिसंतनृपतिबासोंकुँवर। श्रीयुतनृपमणिजगत
सिंहदृढभक्तिपरायण। परमप्रीतिकियसुवशशीललक्ष्मीनारायण।
जासुसुयशसहजाहिकुटिलकलिकल्पजुधायक। आज्ञाअटलसुप्रगट
सुभटकटकनिसुखदायक। अतिहीप्रचंडमारतंडसमतमखंडनदो-
र्दंडवर। भक्तेशभक्तभवतोषकरिसंतनृपतिबासोंकुँवर ॥ १९५ ॥
टीका ॥ जगताकोपनमनसेवाश्रीनारायणजूभयोऐसोपारायणरहै

डोलासंगही । लखेकोचलैआगेआगेसदाषाछेरहैल्यावैजलझीझई-झभर्योहियेरंगही । सुनियश्रवंतजयसिंहकेहुलासभयोदेख्योदिल्ली मांझनीरल्यावतअभंगही । भूमिपरिविनयकरीधरीदेहतुमहीनेजाते पायोनेहभीजिगयोयोंप्रसंगही ॥ ६११ ॥

विविधभक्त अनुरक्त पंचरसकी भक्ति सबहीमें अनुराग कोऊ दास्या कोऊ शृंगार के उपासिक ॥ १ ॥ धरीदेह ॥ कवित्त ॥ जिन हरि गढि गढि एतक बनायो ताहि तुलसी को दल काहेते चढायो नाहिं । खान प्रधान सब रचें तेरे भावते पै ऐसोमन भावतो जुतेरे मन भायो नाहिं । गाढी करिगह्यो व्रत प्रभुको नमान्योकृत प्रभुने रिझायो औ प्रभुते रिझायो नाहिं । लक्ष जगजीवनिके नेहविन देहधरी जावो जगमाहिं ऐसे मेरे जानि-जायो नाहिं ॥ १ ॥

नृपतिजयसिंहजूसोंबोल्योकहानेहमेरेतेरीजुबाहिनताकीगंधकोन पाऊंमैं । नामदीपकुँवरिसोबडीभक्तिमानजातवहरसखानिऐपैकछुक लडाऊंमैं ॥ सुनिसुखभयोभारीहुतीरिसवासोंटारीलियेगावकाटि फेरिदियेहरिध्याऊंमैं । लिखिकैपठाईवाईकरैसोईकरनदीजे लीजे साधुसेवाकरिनिशिदिनगाऊंमैं ॥ ६१२ ॥ मूल ॥ गिरिधरनग्वा-लगोपालकोसखासांचलोसंगको । प्रेमीभक्तप्रसिद्धगानअतिगद्गद वानी । अंतरप्रभुसोंप्रीतिप्रगटरहैनाहींछानी । नृत्यकरतआमोद विपिनतनुवसनबिसारे । हाटकपटहितदानरीझितत्तकालउतारे ।मा-लपुरैमंगलकरनरासरच्योरसरंगको । गिरिधरनग्वालगोपालको सखासांचलोसंगको ॥ १९६ ॥ टीका ॥ गिरिधरनग्वालसाधुसे वाहीसोंख्यालजाकेदेखियोनिहालहोतप्रीतिसांचीपाईहै । संततन छूटहूतेलेतचरणामृत जो औरअबरीतिकहोकापैजातिगाई है ॥ भयेद्विजपंचइकठौरसोऊपंचमानोआन्योसभामांझकहैछांडोनसुहाई है । जाकेहोअभावमतिलैवीमेंप्रभावजान्योमृतकयो बुद्धिताकोबा-रोसुनिभाई है ॥ ६१३ ॥

गद्गद ॥ एकादशे ॥ वाग्गद्गदाद्रवते यस्याचित्तंहसत्यभीक्ष्णं रुदतिकचिच्च ॥ विलज्जउद्गायतिनृत्यतेच मद्भक्तियुक्तो भुवनं पुनाति । सखिवत्समतानित्यं सखित्वंभावउच्यते ॥ द्वैमित्रनको दृष्टांत ॥ ऐसे विश्वास होय तो हरि सदा संगही रहैं ऐसे पांडवनके॥दोहा॥ समता शिष्य सुमित्रता, हिये सुदृढ विश्वास। पांडव द्रौपदि गज समय, प्रगट भये अनियास। सुई हाथिनको दृष्टांत॥ या वचनसों सत्यव्रत राजा को सन्देह भयो बाजीगरको दृष्टांत ॥ ३ ॥

मूल ॥ गोपालीजनपोषकोजगतयशोदाअवतरी । प्रगटअंगमें प्रेमनेमसोंमोहनसेवा ॥ कलियुगकलुषनलग्योदासतेकबहुँनछेवा ॥ वाणीशीतलसुखदसहजगोविन्दध्वनिलागी । लक्षणकलागंभीरधार संतनअनुरागी । अन्तरशुद्धसदारहैरसिकभक्तिनिजउरधरी । गोपालीजनपोषकोजगतयशोदाअवतरी ॥ १९७ ॥ श्रीरामदास सरसरीतिसोभलीभाँतिसेवतभगत । शीतलपरमसुशीलवचनकोमलमुखनिकसे । भक्तउदितरविदेखिउदौवारिजजिमिबिगसे । अति आनन्दमनउमँगिसंतपरिचर्य्याकरई । चरणधोयदण्डवतविविधभोजनविस्तरई । बछवननिवासविश्वासहरियुगलचरणउरजगमगत । श्रीरामदासरसरीतिसोंभलीभांतिसेवतभगत॥ १९८ ॥ टीका ॥ सुनिएकसाधुआयोभक्तिभावदेखिबेको बैठेरामदासपूंछैरामदासकौन हैं ॥ उठेआपधोयेपांवआवैरामदासअबरामदासकहांमेरेचाहिऔरगौनहैं । चलौजूप्रसादलीजैदीजैरामदासआनियहीरामदासपगधारोनिजमौनहैं। लपटानोपांयनसोंचायनिसमातनाहिं भायनिसोंभरयोहियोछाईयशजौनहैं ॥ ६१४ ॥

जन पोषको ॥ मल्लिंगमद्भक्तजनदर्शनस्पर्शनार्चनम् ॥ परिचर्य्या स्तुतिःप्राह गुणकर्मानुकीर्तनम् ॥ सो भगवान्को यशोदाजीने लड़ायो साधनीके लड़ाइबेकी मनमें अभिलाष रहीही गोपाली रूप धरिकै पूरणकरी ॥ १ ॥ भली भांति ॥ एकादशे ॥ मद्भक्तपूजाभ्यधिका० ॥ १ ॥ चाहै अभिमान तो जातहूरहै पैजाति अभिमान न जाय जन्मते मरणताईं रै

चिता में धरचो तऊ कहै ब्राह्मण हाथ लगावै और न लगावै यह सनौढिया ब्राह्मण साधु इष्ट माने बडो आश्चर्य है ॥

बेटोकोविवाहघरबड़ोउतसाहभयो कियेपकवानसबकोठेमांझधरे हैं। करैरखवारीसुतनातीदियेतारोरहैंऔरहीलगाइतारीखोल्योनहीं डरेहैं। आयेगृहसंततिन्हैंपोटनिबँधायदईपायोयोंअनन्तसुखऐसेभाव भरेहैं।सेवाश्रीविहारीलालगाईपाकस्वच्छताईमेरे मनमाईसबसाधुउ-रहरेहैं॥६१९॥मूल॥विप्रसारसुतघरजनमरामरायहरिरतिकरी। भक्तिज्ञानवैरागयोगअन्तर्गतिपाग्यो। कामक्रोधमदमोहलोभमत्सर सबत्याग्यो। कथाकीर्तनमगनसदाआनँदरसझूल्यो। सन्तनिरखिमन मुदितउदितरविपंकजफूल्यो। वैरभावनिजद्रोहकियतासुपागिषिस भैपरी। विप्रसारसुतघरजनमराम०॥ १९९॥ भगवंतमुदितउद्दा रयशरसरसनाअस्वादकिय। कुंजविहारीकेलिसदाअभ्यंतरभाशै। दम्पतिसहजसनेहप्रीतिपरमितपरकाशै। अनन्यभजनरसरीति पुष्टमारगकरदेखी। विधनिषेधबलत्यागिपागिरतिहृदयविशेषी। माधवसुतसम्मतरासिकातिलकदामधरसेवलिय। भगवंतमुदित उद्दारयशरस०॥ २००॥

रामराय॥ भगवान्दासजीके गुरु रहैं॥ गोकुलस्थ गोसांईजीको अरु भगवान्दासजी को प्रसंग॥ दोहा॥ सुतहित सुधिता हंस में, ताके अचरज नाहिं॥ कामदेह को हंसकरि, त्यहि देखन सब जाहिं॥ १॥ ऐराकी निजगति चलै, ताको अचरज नाहिं॥ पुनि खर ताकी गति चलै, त्यहि देखन सब जाहिं॥ २॥ तब गोसाईं जी सुनिकै बहुत प्रसन्न भये॥ साधुनके ये लक्षण हैं क्यों न आदर होय॥ १॥ वैरभाव॥ दोहा॥ कमलहृदय कोमलमिल्यो,नन्दन काटत ताहि॥ काठ कठोर हृदयमिल्यो,मधुकर काटत नाहि॥ २॥

टीका॥ सुजाकेदिवानभगवन्तरसवन्तभयेवृन्दावनवासिनकी सवाएसी करीहै। विप्रकेगुसांईसाधुकोऊब्रजवासीजाहुदेतबहुधन

एकप्रीतिमतिहरी है । सुनिगुरुदेवअधिकारीश्रीगोविंददेवनामह-रिदासजायदेखैचितधरी है । योगताईसीबाप्रभुदूधभातमांगिलियो कियोउतसाहतऊपैषैअरवरीहै ॥ ६१६ ॥ सुनीगुरुआवतअमावतनकिहूंअंगरंगभरितियासोयोकहोकहाकीजिये । बोलीघरबारपट संपतिभँडारसबभेटकरिदीजै एकधोतीधारिलीजिये । रीझेसुनिवानीसांचीभक्तितेहिजानीमेरे अतिमनमानीकहिआंखैंजलभीजिये । यहीबातपरीकानश्रीगुसाईंलईजानआयेफिरिवृन्दावनपनमतिधीजिये ॥ ६१७ ॥ रह्योउतसाहउरदाहकोनपारावार कियोलैविचारआज्ञामांगिवनआये हैं । रहेसुखलहैनानापदरचिकहैएकरसनिरवहै ब्रजवासीजाछुटाये हैं । कीनीघरचेरीतऊनेकुनासामोरीनाहिंबोरीमतिरंगलालप्यारीदृगछायेहैं । बड़ेबड़भागीअनुरागीरतिजागीजगमाधवरसिकबातसुनौपितापाये हैं ॥ ६१८ ॥

नेकुनासा मोरीनाहिं ॥ कवित्त ॥ धनलेहु जनलेहु अरधंगी हरिलेहु सागेतन देहुंजोपै उद्धट गामी हैं ॥ सुतहू को मारोतन टूकटूक करिडारौदुखहू न निवारो बड़ेमति ठामीहैं । ऐसे ब्रजबासी ताकी जगकरे उपहासी मेरेतौ अबासी येतौ सुकृत सुधामी हैं । पुनिहौतौ ज्ञानौ भगवंतइष्ट करिमानौ इनमें जो दोषआनौ बड़ी जियखामीहै ॥ ४ ॥ दोहा ॥ बांदर कांटेडीमदुख, ब्रजवासी अरु चोर ॥ षटकलेश याकुंज में, पै आशा युगल किशोर ॥ २ ॥

आयोअंतकालजानिबेसुधिपिछानिसब आगरेतेलैकेचलेवृन्दावनजाइये । आयेआधीदूरिसुधिआईबोलेचूरह्वैकेकहांलियेजातकूरकहीजोईध्याइये । कह्योफेरोतनबनजायबेकोपात्रनहींजरैवासआवे प्रियापियकोनभाइये । जानहारोहोइसोईजायगोयुगलपास ऐसेभावराशिचलिताहीठौरआइये ॥ २२ ॥ मूल दुर्लभमानुषदेहको लालमतीलाहोलियो । गौरश्यामसोंप्रीतिप्रीतियमुनाकुंजनसों । बंशीबटसोंप्रीतिप्रीतिब्रजरजपुंजनिसों । गोकुलगुरुजनप्रीतिप्रीतिघनबा-

रहवनसों । पुरमथुरासोंप्रीतिप्रीतिगिरिगोवर्द्धनसों । बासअटलवृन्दा विपिनदृढ़करिसोनगरीकियो । दुर्लभमानुषदेहकोलालमतीलाहो लियो ॥ २०१ ॥

दुर्लभ ॥ दोहा ॥ कहूं कटनकट प्रेमकी, सीखोलाल विवेक ॥ जैसे नौलख कामरू, पैदरवाजो एक ॥ १ ॥ एकादशे ॥ दुर्लभो मानुषोदेहो देहिनां क्षणभंगुरः ॥ २ ॥ गौरश्यामसों ॥ तस्माज्ज्योतिरभूद्द्वेधा राधामाधवरूपकम् ॥ तस्मादिदं महादेवि गोपालेनैव भाषितम्॥ २ ॥स ब्रह्महा सुरापी च स्वर्णस्तेयी च पंचमः ॥ एतैर्दोषैर्विलिप्येत तेजोभेदान्महेश्वरि ॥ ३ ॥सो लाडिलीलाल लड़ाये जातेनहीं लाहो लह्यो ॥ ४ ॥ यमुना ॥ कवित्त ॥ साँवल वरण गात न्हात जाको करै गौर आप जल रूपवाको करै कलिरूप है । आपनो प्रवाह वाहि करै थिर वन्दावन आप घटै बढै वह एकही स्वरूपहै ॥ आपरज राखैवाके खोवै रज तमतीनों कीनों और ठाट यह कौतुक अनूपहै ॥ कृष्ण पटरानी ऐसी यमुना बखानी कहिसकत न बानी नीके जानेभक्त भूप है ॥ ५ ॥ बास अटल ॥ दोहा ॥ छाँड़ि स्वाद सुख देहके, और जगत की लाज ॥ मनहिं न मारत हारिकै, वृन्दावननें गाज ॥ ६ ॥

कविजनकरतविचारबड़ोकोउताहिमनीजे । कौउकहैअवनीबड़ी जगतआधारफनीजे।सोधारीशिरशेषशेषशिवभूषणकीनो । शिवआसनकैलाशभुजनभरिरावणलीनो । रावणजीत्योबालिबालिराघौइकशायकगड़े । अगरकहैत्रैलोक्यमेंहरिउरधारेतेबड़े ॥ २०२ ॥ हरि सुयशप्रीतिहरिदासकेत्योंभावैहरिदासयश । नेहपरस्परअघटनिबहिचारौयुगआयो । अनुचरकोउत्कर्षश्यामअपनेमुखगायो । ओतप्रोतअनुरागप्रीतिवोहीजगजानै । पुरप्रवेशरघुवीरभृत्यकीरतिजुबखानै । अगरअनुगगुणवरणतेसीतापति तिनहोयवश । हरि सुयशप्रीतिहरिदासकेत्योंभावैहरिदासयश ॥ २०३ ॥

विचार करिकही ॥ अवनि बड़ी जैसे नारायण भृगु आदिक यज्ञ

करकें कहै ॥ समर्दनकौनकूंकरै जो बडो होय सो भृगु ने नारायणकी परी-क्षा करी सो क्षमाकरिकै नारायणही बडे ॥ ऐसे क्षमामें पृथ्वीबड़ी ॥ ॥ १ ॥हरि उरधारै ॥ कवित्त ॥ सबहीते बडीक्षिति क्षितिहूंतें सिन्धु बड़े सिन्धुहूं तें बड़े मुनि वारिधि अचैरहे ॥ तिनहूंते बड़े नभ तामें मुनिसे अनेक जाके बीच तारागण चारों ओर छैरहे। नभहूंते बड़े पग बावन बढाये जब तिनकी उँचाईदेख तीनों लोक नैरहे। तिनहूंते बडे संत साहिब अगम गति ऐसे हरि बड़े जाके हृदे घर करि रहे॥ १॥भागवते॥निरपेक्षं मुनिंशांत निर्वैरं समदर्शनम् ॥ २ ॥ जिनके चरणनिकी रज हरिने चाही यातेवही बडे ॥ ३ ॥ हरि सुयश नवमे ॥ साधवो हृदयं मह्यं साधूनां हृदयं त्वह-म् ॥ मदन्यं ते न जानंति नाहं तेभ्योमनागपि ॥ मनुष्यपाग पलटै हरिने हृदय पलटै हरि साधनके गुण कहै अरु सुनै जैसे साधु हरिके गुणकहै अरु सुनै पुरप्रवेश करत कहै तो भरतसों हनुमान् आदिकके सुने नारदजी सों पांडवनिके संतहू अनन्यहैं जैसे प्रह्लाद ऐसेही हरि अनन्य हैं ॥ ५ ॥

उत्कर्षसुनतसन्तनकोअचरजकोऊजनिकरौ । दुर्वासाप्रतिश्या मदासबसताहरिभाखी ध्रुवगजपुनिप्रह्लादरामशबरीफलसाखी । राजसुयशयदुनाथचरणधोयजूंठउठई । बहुपांडवविपत्तिनिवारिदि-योविषविषयापाई । कलिविशेषपरचौप्रगटआस्तीकहैकैचितधरौ। उत्कर्षसुनतसंतनकोकोऊअचरजजनिकरौ ॥ २०४॥ फलश्रुति सार ॥ दोहा ॥ पादपयेइहिसींचते, पावैंअँगअँगपोष । पूरबजाज्यों वरणते, सबमानियोसँतोष ॥२०५॥ भक्तजितेभूलोकमें, कथेकौनपै जाय। समुदपानश्रद्धाकरै, कहचिरियापेटसमाय ॥ २०६ ॥ श्रीमू-रतिसवैष्णव, लघुदीरघगुणनअगाध। आगेपाछेबरेतैं, जिनमानौंअप-राध ॥ २०७॥ फलकोशोभालाभतर, तरुशोभाफलहोय। गुरू शिष्यकीकीर्तिमें, अचरजनाहींकोय॥ २०८ ॥ चारियुगनमेंजे भगत,तिनकेपगकीधूरि। सर्वसुशिरधरिराखिहौं,मेरीजीवनमूरि२०९

कर्मानंद चारनकी छरी प्रभु लायदई यह हम न मानेंगे दुर्वासा प्रति

हरि ने वस्तुतःकही ।। नवमे ॥ अहंभक्तपराधीनो ह्यस्वतंत्र इव द्विज ।।
।। १ ।। पृथ्वीराजको प्रभुने द्वारकासों आयकै दरशनदीनो हम न मानेंगे
ध्रुवमधोर्वेनेदक्षति न्यागतः कौधीप्रेम निधिको प्रभुमसाल लैकैआये यह हम
न मानेंगे जैसे गजको प्रतिमाकूं नामदेवने दूधपिवायो वा इनके बोलते हरि
आयगये यह हम न मानेग जै प्रह्लाद कर्मांके खीचरीखाते ते त्रिलोचनकेघरमें
चौदह महीना प्रसाद पायो सो हम न मानेंगे जैसे शबरी सेनको स्वरूप
धरिकै राजाके तेल लगायो यह हम न मानेंगे राजसूय यज्ञमें कबीरकी
जगे जगे रक्षा प्रभुनेकरी सो हम न मानेंगे बहुपांडव विपत्ति निवार
अंगदको बहनने विषदियो और प्रभाव न भयो मीराको विष नँनदने दियो
सो प्रभाव न भयो सो हम न मानेंगे जैसे चन्द्रहासके अक्षर ऐसे प्रभाव
।। १ ।। कलि विशेष तीनियुगनमें तो परचे होयही हैं पर कलियुगमें
विशेष आस्तिकपै दृष्टांत महा पुरुषको अरु ऊंटको ।। २ ।।

जगकीरतिमंगलउदयतीनोंतापनशाय । हरिजनकोगुणवरन तेहरिहृदअटलबसाय ॥ २१० ॥ हरिजनकोगुणवरणतेजोजनक रैअसूय । इहांउदरबाढ़ैव्यथाअरुपरलोकनशाय ॥ २११ ॥ जोहरिप्राप्तकीआशहैतौहरिकोयशगाय । नातरुसुकृतभुजेबीजज्योंजनम जनमपछिताय ॥ २१२ ॥

जगकीरति ॥ एकादशे ॥ मल्लिंगमद्भक्तजनदर्शनस्पर्शनार्चनम् ॥
परिचर्य्या स्तुतिः प्राह गुणकर्मानुकीर्तनम् ॥ १ ॥ मेरो अरु मेरे भक्तको
गुण सामान्य है भक्त भगवन्त में भेद नहीं । वैष्णवो मम देहस्तु तस्मात्पूज्यो
महामुने ॥ अन्ययत्नं परित्यज्य वैष्णवान् भज शाश्वतम् ॥
॥ १ ॥ तृतीये मैत्रेयवाक्यम् ॥ शरीरा मानसा दिव्या वैयासेये च
मानषाः ॥ भौतिकाश्च कथं क्लेशाबाधंते हरिसंश्रयम् ॥ २ ॥ हरि जन
को मार्कंडेय वाक्यम् ।। यो हि भागवतां लोके उपहासं द्विजोत्तम ।।
करोति तस्य नश्यंति धर्ममर्थो यशः सुताः ।। ३ ।। निंदां कुर्वंति ये मूढा
वष्णवानां महात्मनाम् । पतितं पितृभिस्सार्द्धं महारौरवसंज्ञके ।। ४ ।।

आदिपुराणे ॥ मम भक्तजमान् दृष्ट्वा निंदां कुर्वंति ये नराः ॥ तेषां सर्वाणि नश्यंति सत्यं सत्यं धनंजय ॥ ५ ॥ दशमे ॥ भगवद्वाक्यम् ॥ राजसा घोरसंकल्पाः कामुका अहिमन्यवः । दांभिका मानिनःप्रायो हसंतिभगवत्प्रियान् ॥ ६ ॥ असूया पद ॥ श्रीपति दुखित भक्त अपराधे । संतन द्वेष द्रोहता करि नित आरति सहित मोहिं आराधे ॥ सबै सुनो वैकुंठ के बासी सत्य कहत मानो जिन खेदै ॥ तिनपर कृपा कैसे कै करिहौं पूजत पावँ कंठको छेदै । संतन द्रोह प्रीति मोहूसों मेरो नाम निरंतर लेहैं । अग्रदास भागौत वदत है मोहिं भजत पर यमपुर जैहै ॥ ॥ १ ॥ इहां उदर बाढ़ै वृथा जालंधर का रोग होय अथवा अनेक योनिनकी व्यथा होय ॥ १ ॥

भक्तदाससंग्रहकरैकथतश्रवणअनुमोद । सोप्रभुकोप्यारोपुत्रजो बैठेहरिकेगोद ॥ २१३ ॥ अच्युतकुलजसएकबैरहूजाकीमतिअनु-रागी । ।उनकी भक्तभजनसुकृतकोनिश्चयहोयविभागी ॥ २१४ ॥ भक्तदासजिनकथीतिनकीजूंठनपाय । मोमतिसारुअक्षरद्वै की न्होसिलौबनाय ॥ २१५ ॥ काहूकेबलयोगयज्ञकुलकरनीकीआ-स भक्तनाममालाअगरउरबसौनारायणदास ॥ २१६ ॥

इति श्रीभक्तमालमूलश्रीनारायणदासजीकृतमूलंसमाप्तम् ॥

टीकाकर्ताकेइष्टगुरुदेववर्णनम् ॥ कवित्त ॥ रसिकाईकविताई जाहिदीनीतिनपाईभईसरसाई हियेनवनवचाईहै । उररंगभवनमें राधिकारमणबसेलसैज्योंमुकुरमध्यप्रतिबिंबभाईहै । रसिकसमाज मेंविराजरसराजाकहैंचहैंमुखसबैफूलेसुखसमुदाईहै । जनमनहारिला लमनोहरनामपायोउनहूंकोमनहरिलीनोयातेराईहै ॥ ६२० ॥

भक्तिदास संग्रह करै॥नारदगीतायाम् ॥ तिष्ठते वैष्णवं शास्त्रं लिखितं यस्य मंदिरे । तत्र नारायणो देवः स्वयं वसति नारद।।१।।विभागो ॥ एक बापके चारिपुत्र कोऊ वर्षको कोऊ पांचवर्षको कोऊ एक वर्षको कोऊ आजको बांटो बरोबरि पावै ॥ माला श्रीनाभानभ उदित

वोमोहिंदुःखनहींपायवी । ब्रजजनप्राणकान्हबातयहकानकरौ भक्त सोंविमुखताकोमुखनदिखायवी ॥ ६२४ ॥

इतिश्रीभक्तमालटीकाभक्तिरसबोधनीसमाप्तम् ॥

अगिनिजरावो ॥ पद ॥ जो दुःखहोयविमुखघरआये । ज्योंकारो कारीलागैनिशि कोटिक बीछू खाये ॥ दुपहरि ज्येष्ठ परत बारूमें घायनिलोनलगाये । कांटनमांझ फिरै बिन पनहीं मूंड मेटोलाखाये । टूटत चाबक कोटिपीठपर तरवर बांधि उठाये । जो दुख होय अगिनिके दाहे सर्वसुधनहिं हेराये।। ज्यों बांझहि दुख होन सौतिके सुन्दर बेटाजाये।देखत ही सुख होत जितोवह विसरत नहिं विसराये । भटकत फिरत निलज बरजतही कूकर ज्यों झहराये । गारीदेत विलग नहिं मानत फूलत दमरीपाये । अति दुख दुष्ट जगतमें जेते नेकु न मेरे भाये । वाके दरश परश मिलवतही कहत व्यारा यों न्याये ।। दोहा ॥ दागजु लाग्यो नीलको, सौ मन साबुन धोय । कोटिन यतन प्रबोधिये, कौवा हंस न होय ॥ १ ॥ संगति भई तौ कहभयो, हिरदो भयो कठोर । नौनेजे पानीचढ़ो, तऊ नभीजीकोर ॥ ऐसे शठ कथामें क्यों आवैं हैं ॥ श्लोक ॥ देवोजातः क्षमावंतो गंधर्वो मधुरः स्वरः । मानुषं मतिचातुर्य्यं पिशाचो मतिनिर्गुणः । अक्षयंच भयं नास्ति राक्षसो उग्रतामसः । स्वरश्चवाकभृष्टं च मृगश्च मतिकातरः । मर्कटं मति चांचल्यां सर्वभक्षी च वायसी । एवंजाति मनुष्ये दशप्रकारमुच्यते ॥ १ ॥ तर्ककरबेको आवैंहैं तर्क कह्रा वक्ताकहै प्रह्लादकी अगिनिते रक्षाकरी विमुख बोल्यो वक्ताहूको डारिदेहु बचैतौ सांचोसांचो नहीं झूंठोवक्ताकहै रामनाम सों पाथरतरै विमुख है अबतरावोतो सांचो नहीं तौ झूंठ वक्ताकहै गंगाजलसों स्नानकरावो विमुख कहै मतिकरावो पादोदकी हैं वक्ताकहैं सूर्य्यको यमुना जलसों जल दानकरै विमुख कहै मतिकरौ पुत्री है पुत्री को जल कैसे लेगो वक्ताकहै तुलसा चरणामृत प्रसाद लेहु विमुख कहै मति लेहु उदर में विगरै याते इनसों न कहिये ॥ २ ॥ ब्रजजनप्राण॥

सवैया ॥ चंदन घोरिये बिंद लगाइकै कुंजनते निकस्यो मुसक्यातो । राजतिहै वनमाल गरे अरु मोरपखा शिरपै फहरातो । जबते रसखानि विलोकतही तबते कछु और न मोहिं सुहातो।प्रीतिकि रीति में लाज कहा कछुहै सो बड़ो यह नेहको नातो ॥ २ ॥ एक समय बंशी ध्वनिमें रस-खानि लियो कह नाम हमारो । ताक्षणते वह वैरिन सासु कितौ कियो झांकन देतिन द्वारो । होत चवाइ बलायसों आलीरी जो भरि अंक उरलीजत प्यारो । बाट चलत तबहीं ठटकी हियरे अटक्यो पियरे पटवारो ॥२॥ या लकुटी अरु कामरियापर राज्य तिहूं पुरको तजिडारों । आठो सिद्धि नवो निधिको सुखनंद कि गाय चराय विसारों । कोटि किये कलिधौतके धाम करीरके कुंजन ऊपरवारों । रसखानि कहै इन इन नयनन सों ब्रजके बनबाग तडाग निहारों ॥ ३ ॥ अहोभाग्य ॥ १ ॥ स्कंदपुराणको इतिहास कृष्णके पास एईगईवेनआये॥१॥सोरठा॥ जिन भक्तनकी माल, पहिराहै निशिदिनसदा।तेई रसिक रसाल, बसौ सो वृन्दा विपिननित॥३॥

इति श्रीभक्तमालसटीकं संपूर्णम् ॥